चितकबरा फैंटा

छबिनाथ पाण्डेय,
बी० ए०, एल० एल० बी०

सर्वोदय साहित्य मंदिर,
कोठी, (बसस्टैण्ड,) हैदराबाद द.

प्रकाशक—
सरस्वती मंदिर
जतनबर, बनारस।

१९४८]

[मूल्य ३॥)

विषय-सूची—

सबसे पहले स्टोक मोरन ही चलना चाहता हूँ। वहां चलने पर ही कुछ कहा जा सकेगा। लेकिन यह क्या ?

होम्स के मुँह से इन शब्दों के निकलने का कारण यह था कि ठीक उसी समय दरवाजे पर जोरों का धक्का लगा और एक तगड़ा आदमी भीतर घुस आया। उसकी पोशाक विचित्र तरह की थी। वह इतना लम्बा था कि उसकी टोपी चौकठ से टकरा गई। उसके चेहरे से शैतानियत साफ टपकती थी। कमरे में प्रवेश करते ही उसने पूछा—होम्स किसका नाम है ?

होम्स ने कहा-मेरा नाम है। पर आप कौन हैं ?

आगन्तुक—मेरा नाम डाक्टर ग्रिम्सवी रोमलाट है।

होम्स—आपकी बड़ी दया है। पधारिये !

डा०—मैं यहाँ बैठने नहीं आया हूँ। मेरी सौतेली बेटी अभी यहाँ आई थी ! उससे क्या बातें हुई हैं ?

होम्स—इतनी जल्दी क्या है ? बड़ी सर्दी है। जरा गर्मी तो लीजिये।

इसपर डाक्टर चीख उठा। मैं तुम सरीखे बदमाशों को खूब पहचानता हूँ।

होम्स— आपकी बड़ी दया है। अच्छा जाने लगियेगा तो दरवाजा बन्द करते जाइयेगा।

डा०—मुझे जो कुछ कहना है उसे कहता ही जाऊँगा। तुम मेरे रास्ते में मत आओ। मैं बड़ा ही खतरनाक आदमी हूँ। नहीं तो इसी से तुम्हारी खबर ली जायगी। इतना कहकर उसने अपने हाथ का चाबुक जोरों से फटकारा और कमरे से बाहर हो गया।

होम्स—विचित्र आदमी है। मैं उतना तगड़ा तो नहीं हूँ लेकिन यदि वह इस कमरेमें एक क्षण और ठहरता तो मैं उसे

पटके बिना न छोड़ता। बदमाश कहीं का ! मुझे चाबुक दिखलाता था। वाटसन ! अब देर नहीं करना चाहिये। जब तक यह बदमाश इधर ही रहे तब तक हम लोगों को वहां पहुँच कर अच्छी तरह देखभाल कर लेना चाहिये।

इसके बाद शार्लाक होम्स बाहर चले गये और करीब एक बजे वापस आये। उनके हाथ में कागज का एक पुलिन्दा था जिसमें आँकड़े भरे हुए थे। उन्होंने कहा:—मैं डाक्टर की मृत पत्नी का वसीयतनामा देखने गया था। उस समय उसे ग्यारह सौ पौण्ड की सालाना आमदनी थी। लेकिन गल्ले का मूल्य गिर जानेके कारण अब उससे सातसौ पचास पौण्ड की सालाना आमदनी है। शादी हो जानेपर प्रत्येक लड़की को डेढ़सौ पौण्ड सालाना मिलता। इससे यह प्रत्यक्ष है कि दोनों की यदि शादी हो जाती तो इसकी आमदनी एकदम घट जाती। इस एक की शादी हो जानेपर भी इसकी आमदनी को गहरा धक्का लगेगा। इससे इतना तो सिद्ध हो जाता है कि इनकी शादी न होने देने के रास्ते में यह सबसे बड़ा बाधक है। अब हम लोगों को क्षणभर भी विलम्ब नहीं करना चाहिये, खासकर जब बूढ़े को यह मालूम हो गया है कि यह मामला मेरे यहाँ तक पहुँच गया है। इसलिये यदि तुम तैयार हो तो हमलोगों को तुरत रवाना हो जाना चाहिये। अपना रिवाल्वर साथ लेते चलना। जो आदमी इतनी हिम्मत मेरे घरपर दिखा सकता है उससे सजग रहना ही चाहिये।

इस तरह तैयार होकर हमलोग स्टेशन पहुँचे। गाड़ी मिल गई। लेदरहेड स्टेशनपर आकर हमलोगों ने एक फीटन किराये पर कर ली और चल पड़े। दिन सुहावना था। हमलोग चुपचाप

चले जा रहे थे। सहसा होम्स ने अपनी जबान खोली। बोले—वह देखो!

सामने लम्बा चौड़ा मैदान था। उसके चारो ओर जंगली झाड़ियाँ उगी थीं। उनके बीचमें उस मकान की ऊँची छत दिखाई दे रही थी।

होम्सने कहा--यही स्टोक मोरन है!

कोचवान—जी हाँ, यही डाक्टर रोमलाट का मकान है।

होम्स—हमलोगों को वहीं जाना है।

कोचवान—तब तो आपको यहा उतरकर पैदल ही जाना अच्छा होगा, देखिये मकान के सामने एक औरत टहल रही है।

होम्स—(उसी तरफ गौर से देखकर) यही तो कुमारी स्टोनर है। उन्हीं से तो मिलना है।

इतना कहकर होम्स गाड़ी से उतर पड़े। किराया देकर हम लोग पैदल ही आगे बढ़े।

हम लोगों को देखते ही कुमारी स्टोनर हम लोगों की तरफ दौड़ पड़ीं। उनका चेहरा प्रसन्न था। उन्होंने हाथ मिलाते हुए कहा—मैं बड़ी उत्सुकता से आपका रास्ता देख रही थी। सभी बातें अनुकूल हैं। डाक्टर शहर गये हुए हैं। शाम से पहले उनके वापस आने की संभावना नहीं है।

होम्स--डाक्टर से मुलाकात का सौभाग्य मुझे प्राप्त हो चुका है। इतना कहकर उन्होंने सारी बातें संक्षेप में सुना दीं। यह सुनकर कुमारी स्टोनर थरथर काँपने लगीं। बोली--बाप रे बाप! वह वहाँ तक मेरा पीछा करता गया था।

होम्स--मालूम तो यही होता है।

कुमारी स्टोनर—कितना खूँखार है वह! हर वक्त मेरे

पीछे लगा रहता है। भगवान ही उससे मेरी रक्षा करें।

होम्स—अब तो उसे ही अपनी रक्षा करनी होगी, क्योंकि वह जान गया है कि उससे भी जबर्दस्त आदमी उसके पीछे लग गया है। आज रात को तुम ताला बन्द करके उससे अपने को बचाना। यदि उसने कोई उपद्रव किया तो हम लोग तुम्हें तुम्हारी चाची के पास पहुँचा देंगे। अब हमें ऊपर चलकर अपना काम कर लेना चाहिये। हमलोगों को उन कमरों में ले चलिये।

समूचा मकान भूरे पत्थर का बना था। बीच में ऊंची दालान थी। दोनों तरफ दो कतार कमरों के थे। एक तरफ की सभी खिड़कियां टूटी थीं जो लकड़ी से बन्द कर दी गई थीं। सबों की छतें भी टूट फूट गई थीं। पिछला भाग कुछ अच्छा था। दूसरे तरफ की हालत अच्छी थी। इसी तरफ ये लोग रहते थे। इसके भी कुछ हिस्से टूटे हुए थे और पत्थर चिनक गये थे। लेकिन उस समय कहीं काम नहीं लगा था। होम्स सामने के मैदान में धीरे-धीरे टहलने और खिड़की के बाहरी भाग की, जांच ने लगे। उन्होंने कुमारी स्टोनर से पूछा—इस कमरे में आप रहती हैं, बीचवाले कमरे में आप की बहन और उसके बगल में डाक्टर!

कुमारी—जी हाँ, लेकिन इस समय तो मैं बीचवाले कमरे में रहती हूँ।

"चूँकि आप के कमरे की तरफ से मरम्मत का काम शुरू होनेवाला है। लेकिन उस तरफ मरम्मत की तो ऐसी कोई जरूरत नहीं दिखाई पड़ती।"

"नहीं। मैं समझती हूँ कि मुझे उस कमरेसे इसमें लानेका बहाना मात्र है।"

"यही तो मालूम होता है। इसके दूसरी तरफ बरामदा है जिसमें तीनों कमरे के दरवाजे खुलते हैं।

खिड़कियाँ भी हैं ?"

"हैं, पर बड़ी छोटी। उनमें से कोई भी भीतर घुस नहीं सकता !"

"जब रातको हम दोनों बहिनें कमरा बन्द कर देती थीं तो उधर से कमरे में कोई आ जा नहीं सकता था।

क्या आप कृपा कर अपने कमरे में जाकर भीतर से दरवाजा बन्द कर लेंगी।"

कुमारी स्टोनरने वैसा ही किया। मि० होम्सने खुली खिड़की से अच्छी तरह देखभाल करके भीतर की सिटकिनी खोलने की भरपूर कोशिश की पर कामयाब न हो सके। एक भी झिलमिली ऐसी न थी जिससे होकर वे चाकू वगैरह भीतर डाल सकते। तब उन्होंने कब्जों की बारीकी से जाँच की। पर वे बड़ी मजबूती से लगे थे। इसपर उन्होंने झुंझलाहट से कहा:—"मेरा कयास तो गलत निकला क्योंकि भीतर से बन्द हो जाने पर सिटकिनी किसी भी तरह नहीं खुल सकती। शायद कमरे के भीतर चलने पर कोई सूराख मिले।"

इसके बाद हम दोनों बीचवाले कमरे में गये जिसमें आज-कल कुमारी स्टोनर सोती थीं। इसी कमरे में उनकी बहिन की मृत्यु हुई थी। छोटा-सा कमरा था। नीची छत थी और एक तरफ आग जलाने की जगह बनी थी। पुराने तर्ज की बनावट थी। एक कोने में आलमारी थी और दूसरे कोने में एक छोटा-सा पलंग था। खिड़की की बायीं ओर टेबुल था। उसीके पास दो कुर्सियाँ थीं। बीच में कालीन बिछा था। दीवाल में जो

वार्निश की गई थी वह जगह-जगह से झड़कर अपनी प्राचीनता का परिचय दे रही थी। होम्स कुर्सी खींचकर चुपचाप बैठ गया और कमरेका कोना अँतरा गौर से देखने लगा!

दीवाल में उसे एक घण्टी दिखाई दी। उससे एक रस्सी ठीक बिस्तरे के पास लटक रही थी। उसका एक कोना ठीक तकिये को छू रहा था। उसने पूछा:—"यह घण्टी यहाँ क्यों?"

"डाक्टर के कमरेसे इसका संबंध है!

"यह तो एकदम नई मालूम होती है?"

"दो साल पहले यह लगाई गई थी।"

"शायद आपकी बहिन की इच्छा से यह लगाई गई थी।"

"मैंने उसे काम में लाते हुए कभी भी नहीं देखा था। हम लोग जरूरत के वक्त सीधे डाक्टर के कमरे में चली जाती थीं।"

"तब तो इतनी सुन्दर घण्टी लगाने का कोई मतलब नहीं हो सकता। अब मैं फर्शकी जाँच करना चाहता हूँ।"

इतना कहकर वह फर्शपर बैठ गया और चारों ओर घूमकर उसकी जाँच करने लगा। उसके बाद वे पलंग पर बैठ गये और सावधानी से उसकी जाँच करने लगे। अन्तमें उन्होंने घण्टी की रस्सीको झटके से खींचा।

"अरे! यह तो बजती ही नहीं।"

"क्या उसमें से शब्द नहीं निकले।"

"नहीं, यह तो किसी तार से भी नहीं बँधी है। बड़ी मजे-दार बात है। यह तो रोशनदान के पास एक कील से बँधी है।

"यह तो अजीब बात है। मैंने इस पर कभी ध्यानतक नहीं दिया था।"

होम्स—इस कमरे में इस तरह की कई अजीब बातें हैं। पहले तो एक कमरे से दूसरे कमरे में रोशनदान की क्या जरूरत है। यदि यही बरामदे की तरफ होता तो रोशनी भी आती।

कुमारी—"यह भी हालमें ही खोला गया है।"

"शायद उसी समय जिस समय यह रस्सी लटकायी गई थी।"

"हाँ उसी समय कई छोटे-मोटे परिवर्तन किये गये थे।"

"यह भी एक तिलस्म है। गूँगी घण्टी और बिना रोशनी का रोशनदान। अब हम लोग भीतर चलना चाहते हैं।

इसके बाद तीनों डाक्टर के कमरे में गये। वह इन कमरों से कहीं बड़ा था। पलंग, किताबों से लदा एक रैक एक आराम कुर्सी, एक गोला टेबुल और लोहेकी एक बड़ी तिजोरी, यही उस कमरेकी प्रधान चीजें थीं। होम्स ने सावधानी से सभी चीजों की जाँच की।

तिजोरीको ठोकते हुए उन्होंने कहा:—"इसमें क्या है?"
"इसमें डाक्टर के कागजात बन्द रहते हैं!"

"तब तो आपने इसके भीतर की चीजों को देखा है।"

"बहुत दिन हुए एकबार देखा था। उस समय इसमें कागजों का पुलिन्दा भरा हुआ था।"

"इसमें कोई बिल्ली तो नहीं बन्द है।"

"नहीं, आप भी अजीब सवाल करते हैं?"

तिजोरी पर रखे हुए दूध के प्याले की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा:—"इससे मेरे मनमें वह बात उठी।

"उन्हें बिल्लीका शौक तो नहीं है। चीता और लंगूर उन्होंने अवश्य पाल रखा है।"

"चीता भी बिल्ली की तरह होता है। लेकिन एक प्याले दूध से उसकी तृप्ति नहीं हो सकती। यहाँ से चलने के पहले मैं एक बात की जाँच और कर लेना चाहता हूँ।

इतना कहकर वे आराम कुर्सी के पास गये और उसे गौर से देखने लगे। क्षण भरके बाद वे उठ खड़े हुए और बोले:—"एक और अजीब चीज यहाँ मिली है!"

चारपाई के एक कोनेमें एक छोटा चाबुक रखा हुआ था। वह लपेटा हुआ था। उसे देखकर उन्होंने वाटसन से पूछा:—"यह चाबुक यहाँ क्यों है?"

वाटसन—मेरी समझ में कुछ नहीं आया।

"तुम समझ भी नहीं सकते थे। यह दुनिया शैतानों से भरी पड़ी है। जब कोई पढ़ा लिखा आदमी शैतानियत पर कमर बाँधता है तो महा अनर्थ करने लगता है। सारी बातें मेरी समझ में आ गईं। चलो बाहर चलें।"

मैंने अपने जीवन में उनके चेहरे पर इतनी कठोरता कभी नहीं देखी थी। हम तीनों चुपचाप मैदान में टहल रहे थे पर किसी को मुँह खोलने का साहस नहीं होता था।' अन्त में होम्स ने ही कहा—कुमारी! आप की रक्षा के लिये यह आवश्यक है कि आप मेरे कहने के अनुसार चलें।

"मैं आपकी आज्ञा से बाहर नहीं हूँ।"

"मामला बहुत ही संगीन है। आप की जान जोखिम में है। यदि आपने जरा भी गफलत की तो सारा काम बिगड़ जायगा।"

"मैं हर तरह से आपके अधीन हूँ।"

"पहली बात तो यह है कि मैं और मेरे दोस्त दोनों आज रात को आपके ही कमरे में रहेंगे।"

मैं और कुमारी स्टोनर चकित होकर होम्सका चेहरा देखने लगे।

"आप घबराये नहीं। मैं सारी व्यवस्था समझा देता हूँ। इस गाँव में सराय तो जरूर होगी?"

"हाँ, है।"

"सराय से आपकी खिड़की दिखाई देती है?"

"हाँ।"

"आप शाम से ही सिर दर्द का बहाना करके कमरे में सो रहिये। जब डाक्टर सोने चला जाय तो आप अपनी खिड़की खोल दें और उसपर अपना लैम्प रख दें। यही हमारे लिए इशारा होगा। उसके बाद आप अपना ओढ़ना वगैरह लेकर अपने पुराने कमरे में चली जायँ। किसी तरह आप एक रात उसी में काटें।"

"जैसी आपकी आज्ञा।"

"इसके बाद जो कुछ करना है मैं कर लूँगा।"

"आप करना क्या चाहते हैं?"

आज रातको इस कमरे में रहकर मैं उस सीटी का पता लगाऊँगा जिसने आपको चौंका दिया था?"

होम्स के कन्धेपर हाथ रखते हुए कुमारी स्टोनर ने कहा:— मैं तो समझती हूँ कि आपने सब कुछ समझ लिया है।

"संभव है।"

"तब कृपाकर यह बतला दें कि मेरी बहन कैसे मरी।"

"कुछ कहने के पहले मैं अपने कथन की पुष्टि में प्रमाण संग्रह कर लेना चाहता हूँ!"

"मेरा अनुमान है कि कोई भयानक चीज देखकर वह डर गई और इसीसे उनकी मृत्यु हुई। क्या यह सच है?"

"नहीं, इससे भी भयानक बात है। अब हम लोगों को यहाँ से टल जाना चाहिये क्योंकि यदि डाक्टर ने हम लोगों को देख लिया तो मेरा सारा परिश्रम व्यर्थ हो जायगा। साहस से काम लीजियेगा। घबराइयेगा नहीं। यदि आपने मेरे कहे मुताबिक काम किया तो मैं आपका संकट सदा के लिये दूर कर दूँगा।"

हमलोग सराय में लौट आये और एक कमरा ठीक कर लिया। कमरा दो तल्ले पर था। वहाँ से वह महल साफ साफ दिखाई दे रहा था। शामको रोमलाट वापस आया।

रात को होम्स ने मुझसे कहा:—मैंने बहुत बड़ा खतरनाक काम हाथ में लिया है।"

"क्या मैं भी तुम्हारी कुछ सहायता कर सकता हूँ।"

"तुम्हारी सहायता की नितान्त आवश्यकता है।"

"तब तो मैं जरूर ही चलूँगा।"

"चलना ही होगा।"

"तुमने तो खतरे की बात कही है लेकिन मुझे तो उस कमरे में कुछ दिखाई नहीं पड़ा।"

"तुमने जो देखा वही मैंने भी देखा। शायद मैंने उनसे कुछ अटकल ज्यादा लगाया। मैंने वहाँ जो कुछ किया था वह तो तुम देख रहे थे।"

सिवा घंटीकी उस रस्सीके और कुछ असाधारण तो वहाँ था नहीं। अभी तक मैं यह नहीं समझ सका कि उस तरह वह रस्सी क्यों लटकाई हुई थी?"

"रोशनदान भी तो तुमने देखा।"

"लेकिन दो कमरोंके बीच इस तरहका रोशनदान का होना तो असाधारण बात नहीं है! वह तो इतना छोटा है कि उस में से चूहा भी नहीं घुस सकता।"

"यहां आनेके पहले ही मैंने अनुमान कर लिया था कि इन दोनों कमरों के बीच रोशनदान जरूर होगा।"

"यह कैसे?"

कुमारी ने कहा था कि उसकी बहन को डाक्टर के सिगार का धुंआ तंग करता था! इससे साबित हो गया था कि दोनों कमरों के बीच कोई सूराख अवश्य है। इसी लिये मैंने रोशन दान होने का अनुमान लगाया।" वह सूराख इतना छोटा है कि अदालतका उस पर ध्यान तक नहीं गया।

"पर इससे क्या?"

"रोशनदान का बनवाना, रस्सीका लटकाना और कुमारीकी बहनका मरना, तीनों घटनायें लगातार ही होती हैं। इस में कोई विचित्रता नहीं है?"

"कुमारी की पलंगको तुमने गौर से देखा था"

"नहीं"

"वह फर्श में गाडा हुआ था। क्या तुमने ऐसा कभी देखा है।"

"नहीं, ऐसा तो नहीं देखा है।"

"अर्थात् वह पलंग अपनी जगहसे हटाया नहीं जा सकता था। हरवक्त उसे उसी स्थान पर-याने रोशनदान और उस रस्सी के करीब रखना जरूरी समझा गया है।

"होम्स, मेरी समझ में अब कुछ कुछ आ रहा है। तब तो हम लोग एक भयानक काण्ड रोकने के लिये ठीक समय पर आ गये हैं।"

"बड़ाही पेचीदा और बडा भयानक ! यदि कोई डाक्टर पापपर उतारू हो जाता है तो वह बहुत भयानक हो जाता है। उसे जानकारी है और साथ ही साहस भी। यह व्यक्ति तो पामर और प्रिटचार्ड से भी बढ़ गया। मुझे विश्वास हो गया है कि अब वह हम लोगों के चंगुल से निकल नहीं सकता। लेकिन आज रातको भयानक तूफान का सामना करना पड़ेगा।"

करीब ९ बजे मोरन भवनकी सारी रोशनी बुझगई। चारों तरफ सन्नाटा छा गया। इसी दशामें दो घंटे बीते। ठीक ग्यारह बजे भवन के एक कोने में प्रकाश दिखाई पड़ा।

होम्स—"यह प्रकाश बीचवाले कमरे से आता है। यह हम लोगों के लिये संकेत है।"

हम लोग तैयार होकर सराय से बाहर निकले। चलते वक्त हम लोगोंने सराय वाले से कह दिया था कि हम लोग एक मित्र से मिलने जा रहे हैं। रात ज्यादा बीत गई है। इसलिये संभव है हम वहीं ही रह जायँ। दूसरे ही क्षण हमलोग सड़क पर आ गये। ठण्डी हवा चल रही थी। चारों ओर सन्नाटा था। केवल वही टिमटिमाता दीपक हमलोगों को रास्ता दिखला रहा था।

भीतर घुसना आसान था क्योंकि झाड़ी की टट्टी कई जगह से टूटी फूटी थी। थोड़ी दूर चलकर हमलोग मैदान में पहुँचे। वहाँ से ज्योंही आगे बढ़े कि झाड़ियों में से कोई निकला, लानपर लोटा और अँधेरे में एक तरफ चला गया।

मैंने कहा—होम्स ! किसी ने हम लोगोंको देख लिया। होम्स भी चौकन्ना हो गया। उसने अपनी मुट्ठी सम्हाली, लेकिन दूसरे ही क्षण वह हँस पड़े और मेरे कान में कहने लगे !—"वही लंगूर था !"

मैं इस बात को भूल ही गया था कि डाक्टर ने दो विचित्र जानवर पाल रखे थे। अब तो मुझे चीते का स्मरण हो आया और मुझे आशंका होने लगी कि कहीं वह मेरी गर्दन पर न टूट पड़े। इसलिये हम लोग पैर दबाकर चलने लगे। इस तरह हम लोग बीचवाले कमरे में पहुँचे। होम्सने भीतार से सिटकिनी बन्द कर दी, लम्पको टेबुल पर रख दिया और कमरेमें चारों ओर देखने लगा। कमरा उसी तरह था जैसा हम लोगों ने दिन में देखा था। उसके बाद वह दबे पाँव मेरे पास आये और मेरे कान में कहने लगे:—"हम लोगोंको एकदम चुप-चाप रहना है। एक आवाज भी हम लोगों के लिये घातक सिद्ध होगी।"

मैंने इशारेसे बतला दिया कि मैं चौकस हूँ।"

"हम लोगोंको रोशनी बुझा देनी चाहिये ताकि रोशनदान से उसका आभास उसे न मिले।"

"अच्छी बात है।"

"कहीं सो मत जाना ! जानका खतरा है। अपनी पिस्तौल सम्हाल कर रखना। शायद जरूरत पड़े। मैं बिस्तरे पर बैठूँगा और तुम उस कुर्सी पर।"

"मैंने पिस्तौल निकालकर टेबुल पर रख दिया।

होम्स अपने साथ एक लम्बा पतला बेंत लेते आये थे।

उसे उन्होंने बिस्तरे पर अपने पास रख लिया। उसके बाद उन्होंने रोशनी बुझा दी। कमरे में अँधेरा हो गया।

वह भयानक दृश्य आज भी मैं नहीं भूल सका हूँ। हम दोनों एक ही कमरे में कई अँगुल के फासले पर बैठे थे। लेकिन हम लोग एक दूसरे की साँस तक नहीं सुन सकते थे। कहीं रोशनीका नाम नहीं था। हम लोग उसी तरह अँधेरे में बैठे रहे। कभी कभी बाहर से उल्लूकी आवाज सुनाई दे जाती थी और बीच-बीच में खिड़की पर चपेटा लगनेसे हम लोगों को यह बोध होता था कि डाक्टर का चीता भी खुल गया है। सुदूर पर गिरिजा का घड़ियाल पन्द्रह मिनट पर अपनी कर्कश आवाज से हम लोगों को सचेत कर देता था। एक-एक मिनिट पहाड़ की तरह बीतता था। बारह, एक, दो और तीन बजे पर हम लोग उसी तरह साँस रोके बैठे रहे।

अचानक रोशनदान से रोशनीकी झलक आई। लेकिन वह दूसरे ही क्षण गायब हो गई। उसके बाद ही तेल के जलने की गन्ध आने लगी। बगल के कमरे में किसी ने रोशनी जलाई थी। उसके बाद किसीके पैरकी ध्वनि सुनाई दी। वह भी बन्द हो गई लेकिन रोशनी की गन्ध बढ़ती गई। आध घण्टे तक मैं कान लगाकर बैठा रहा। उसके बाद एक दूसरे तरह की आवाज सुनाई पड़ी, ठीक उसी तरह की जैसी आवाज बर्तन में पानी खौलने के वक्त होती है। आवाज सुनते ही होम्स उठकर खड़े हो गये और घंटीपर जोर से चाबुक मारने लगे। उन्होंने चिल्लाकर कहा:—वाटसन ! तुम उसे देख रहे हो या नहीं। लेकिन मैंने कुछ नहीं देखा। उसी वक्त होम्सने रोशनी जलादी। मेरे कानों में सीटीके मन्द पर स्पष्ट आवाज पड़ी। लेकिन

अचानक रोशनी के जलने से मेरी आँखें इस तरह चौंधिया गईं कि मुझे यह नहीं मालूम हो सका कि होम्स किस चीज पर तड़ातड़ बेंत चला रहा था। मैंने देखा कि उसका चेहरा पीला पड़ गया है और भय तथा घृणा से भरा हुआ है।

अब उसका बेंत का चलाना बन्द हो गया था और रोशनदान पर उसकी टकटकी लगी थी। उसी समय उस निस्तब्ध रात में किसी के चीखने की आवाज सुनाई पड़ी। चीख बराबर बढ़ती गई। वह इतनी तेज थी कि आस पास के लोग जाग पड़े। हम दोनों घबराकर एक दूसरे का मुँह देखने लगे। थोड़ी देर के बाद चीखना एकदम बन्द हो गया और चारों ओर सन्नाटा छा गया।

"यह क्या हो गया ?"

होम्स—"सब कुछ समाप्त हो गया। जो कुछ हुआ सब अच्छा ही हुआ। अपनी पिस्तौल सम्हालो। अब हम लोग डाक्टर के कमरे में चलेंगे।"

उसने लैम्प उठाया और बरामदे की ओर बढ़ा। उसने दो बार डाक्टर के दरवाजे पर धक्का मारा लेकिन कोई उत्तर न मिला। तब उसने स्वयं दरवाजा खोला और हम लोग भीतर दाखिल हुए। मैं अपनी पिस्तौल हाथमें लिये होम्स के पीछे था।

भीतर का दृश्य बड़ा ही कारुणिक था। टेबुल पर एक औंधी लालटेन थी जिसका आधा परदा खुला था। उसकी रोशनी तिजोरी पर पड़ती थी जिसका दरवाजा खुला था। टेबुल के पास डाक्टर रोमलाट कुर्सी पर बैठे थे। उसकी पलथी पर वही चाबुक पड़ा था जिसे हम लोगोंने दिनके समय देखा था।

उनकी आँखें छतसे लगी थी उनके सिर पर एक विचित्र चित-कबरा फेंटा लिपटा हुआ था। वे हिलते डोलते नहीं थे।

होम्स—देखो वही चितकबरा फेंटा है। मैं आगे बढ़ गया। फेंटे में हलचल पैदा हो गई। एक भयानक साँप फन काढ़कर खड़ा हो गया।

होम्स--यह हिन्दुस्तान का सबसे भयानक और जहरीला करैट साँप है। इसके डँसने के दस सेकेण्ड के भीतर यह मर गया। जो दूसरे के लिये गड्ढा खोदता है वह उसमें खुद गिरता है। पहले इस जानवर को तिजोरी में बन्द कर दिया जाय तब कुमारी स्टोनर को किसी सुरक्षित जगह में पहुँचाकर पुलिसको खबर दी जाय।

इतना कहकर उसने मृत डाक्टर की जाँघ परसे चाबुक उठा लिया। उससे साँप की गर्दन पकड़ कर उठा लिया और उसे तिजोरी में डालकर उसे बन्द कर दिया।

वहाँ का काम समाप्त कर जब हम लोग दूसरे दिन वापस आने लगे तो होम्स ने मुझसे कहा:--वाटसन! जब मैं घरसे चला उस समय मेरे मनमें दूसरा ही विचार था जो यहाँ की अवस्था देखते ही बदल गया। अधूरे सबूत पर किसी तरह के निर्णय का यही फल हुआ करता है। लुटेरों का डेरा डालकर रहना और चितकबरे फेंटे का दिखाई देना, ऐसी बातें थी जिससे यही अनुमान हो सकता था कि कोई ऐसी घटना घटी जिसे देखकर इनकी बहन डर गई और उसकी धुकधुकी बन्द हो गई। लेकिन जब यहाँ आकर मैंने कमरों की जाँच की तो मुझे यह निश्चय हो गया कि कमरा बन्द हो जानेपर बाहरसे कोई घटना नहीं घट सकती। तब मैंने

अपनी रायको बदला। यहाँ आते ही मेरा ध्यान उस रोशनदान और उसके सहारे लटकती रस्सी पर गया। घंटी में शब्द का न होना और पलंग को जमीन में गड़ा हुआ देखते ही मेरे मन में यह ख्याल पैदा हुआ कि यह रस्सी किसी चीज को उतारकर बिस्तरे पर लाने के लिये सहारामात्र है। तुरंत मेरे मन में साँप का ख्याल आया और जब मैंने यह सुना कि डाक्टर हिन्दुस्तान से जानवर मंगाया करता है तब तो मेरा विश्वास और भी दृढ़ हो गया। ऐसे जहर का प्रयोग, जिस का रसायनिक लोग सहज में पता न लगा सकें उसी आदमी के दिमाग में आ सकता है जो पूर्वी देशोंमें रहा है। इस जहर का असर बहुत जल्दी होता है, यह भी सुविधा की बात है। सांप के दांत का घाव इतना सूक्ष्म होता है कि साधारण अदालत की दृष्टि उस पर नहीं जा सकती थी। केवल सबेरा होने के पहले उसे सांप को वापस बुला लेना था। उसने सांप को इसकी ट्रेनिंग दे दी थी। वही दूध उसे वापस बुलाने की कुंजी था। अवसर देखकर वह सांप को तिजोरी से निकालकर रोशनदान पर रख देता था और सांप रस्सी के सहारे उतरकर बिस्तर पर सोनेवाले को डँस लेता था।

डाक्टर के कमरे में प्रवेश करने के पहले ही मैंने यह अनुमान कर लिया था। कुर्सी को देखकर तो मेरा विश्वास पक्का हो गया कि उसी पर खड़ा होकर वह सांप को रोशनदान पर रखता था। तिजोरी, दूध तथा चाबुक ने मेरे अनुमानको और बल दे दिया। जो धमाकेकी आवाज कुमारी स्टोनर ने ... थी वह इसी तिजोरी के तेजी से बन्द कर... अनुमान लगा लेने के बाद मुझे वह साहस हु...

उसीके अनुसार घटीं। ज्योंही मैंने सांप की फुफकार सुनी, मैंने बेंत से उसे मारना शुरू किया।

वाटसन—तुम चाहते थे कि वह उसी रोशनदान के रास्ते वापस चला जाय।

होम्स—वह भी और इस विचार से भी कि मारसे क्रुद्ध होकर वह अपने मालिक पर ही आक्रमण करेगा। मेरी चोट से वह गुस्सा हो गया और जो व्यक्ति उस समय उसे मिला उसी पर चोट कर गया। इस तरह डा० रोमलाट की मृत्यु मेरे ही कारण हुई, लेकिन मुझे इसके लिये जरा भी अफसोस नहीं है।

अनोखी चोरी

बहुत दिनों की बात है एक बार मि० होम्स को किसी घटना-चक्र मे पड़कर एक नगर में कई दिन के लिए रहना पड़ा। इस नगर में एक प्रख्यात विश्वविद्यालय भी था। एक दिन शाम को हम लोग बरामदे में बैठकर चाय पी रहे थे कि सेण्ट लूकस कालेज के प्रोफेसर मि० हिलून सोम्स ने प्रवेश किया। मि० सोम्स म लोगों के पुराने परिचित हैं, बड़े ही भावुक व्यक्ति हैं। बहुत जल्द उत्तेजित हो जाते हैं। इस समय की उनकी उत्तेजना देखने ही लायक थी। आते ही मि० सोम्स ने कहा:—मि० होम्स! मैं आप का बहुमूल्य समय लेने आया हूँ! मेरे कालेज में एक दुःखद घटना हो गई है। सौभाग्यवश आप यहाँ हैं। इसीलिये यहाँ दौड़ा चला आया नहीं तो न जाने क्या होता।

मेरे मित्र ने कहा:—मेरे हाथ में बहुत बड़ा काम है। मुझे क्षणभर का भी अवकाश नहीं है। इसलिये आप पुलिस की मदद लें।

मि० सोम्स—इस बात को पुलिसकी कानतक पहुँचना भी नहीं चाहिये। इसमें कालेज की मर्यादा का प्रश्न है। पुलिस तक इस घटना को पहुँचा देनेपर कालेज की मर्यादा की रक्षा नहीं हो सकेगी। आपकी शक्ति अपार है। आपकी ही मदद से समस्या भी हल हो जायगी और कालेज की इज्जत भी बेदाग रह जायगी।

घर छोड़ने के बाद से मेरे मित्र की मानसिक दशा प्रकृतिस्थ

नहीं थी। सभी साधनों से वञ्चित होने के कारण वे तीखे हो रहे थे। उन्होंने झुंझलाहट में अपनी गर्दन हिलाई पर मि० सोम्स को धैर्य कहाँ था। वे तो आपसे बाहर हो रहे थे। उत्तर की प्रतीक्षा बिना ही उन्होंने अपनी कथा शुरू कर दी :—

"फार्टेस्क्यू छात्रवृत्ति की परीक्षा कल से आरम्भ होनेवाली है। मैं भी परीक्षक हूँ। मेरा विषय ग्रीक भाषा है। पहले प्रश्न प्रत्र में ग्रीक भाषा का एक लम्बा अवतरण है जिस छात्रों को अनुवाद करना है। यदि यह अवतरण किसी छात्र को मालूम हो जाय तो उसे बहुत लाभ हो सकता है।"

आज तीसरे दिन की बात है। प्रेस से उस प्रश्न पत्र ; प्रूफ आया। मुझे ही प्रूफ देखकर अशुद्धियों को ठीक कर देना था ताकि अवतरण के भूल में भूल न रह जाय। मैं साढ़े चार बजे तक प्रूफ देखता रहा। काम पूरा भी नहीं हुआ था कि मुझे उठ जाना पड़ा। क्योंकि मुझे एक मित्र के साथ चाय पीना था। प्रूफ को अपने टेबुल पर ही छोड़कर मैं चला गया। चाय पीकर वापस आनेमें मुझे प्रायः घंटे भर लगे। कालेज के सभी कमरों में दो दरवाजे है भीतर शीशे का दरवाजा है और बाहर लकड़ी का। जब मैं वापस आया तो दरवाजे में कुंजी लगी देखकर मुझे विस्मय हुआ। पहले तो मुझे शक हुआ कि मैं अपनी ही कुञ्जी जल्दी में छोड़ गया था। पर मेरी कुञ्जी मेरी जेब में थी। इसकी दूसरी कुञ्जी मेरे नौकर के पास रहती है। मेरा नौकर बैनिस्टर दस साल से मेरे साथ है। मैंने सदा उसे ईमानदार पाया है। यह कुञ्जी उसी की थी। मैंने अनुमान किया कि चाय देने के लिये वह मेरे कमरे में घुसा पर मुझे वहाँ न पाकर बाहर निकला तो कुञ्जी उसी में भूल से छोड़ गया। मेरे जाने के कुछ ही मिनिट

बाद वह मेरे कमरे में आया होगा। यदि दूसरे अवसर पर उसने इस तरह कुञ्जी छोड़ दी होती तो कोई बड़ी बात नहीं थी लेकिन इस अवसर पर तो उसने सर्वनाश उपस्थित कर दिया।

"मैं कमरे में गया। मैंने देखा कि मेरी गैर हाजिरी में कोई यहाँ आया था और मेरे कागजों को उलटा-पलटा था। प्रूफ तीन पन्ने पर था। मैंने तीनों को लपेट कर रख दिया था। लेकिन इस वक्त तीनों पन्ने तीन जगह थे। एक मेरे टेबुल पर था, दूसरा फर्शपर था और तीसरा पन्ना खिड़की के पास बगल टेबुल पर था।"

इतनी देर के बाद होम्स सुग बुगाये:—"पहला पन्ना टेबुल दूसरा फर्श पर और तीसरा खिड़की पर।"

मि० सोम्स—आप का कहना ठीक है। पर मुझे इस बात का ताज्जुब है कि आपको यह बात कैसे मालूम हो गई।"

होम्स—अपनी अपनी बात कह डालिये।"

"पहले तो मेरे मन में यही बात समाई कि यह शैतानी वैनिस्टर की है। उसने मेरे कागजों को उलट पलट कर अक्षम्य अपराध किया है। लेकिन वह साफ इनकार कर गया और उसकी सचाई पर मुझे पूरा भरोसा है। दूसरी बात यह हो सकती है कि मेरे जाने के बाद कोई उधर से गुजरा, कुञ्जी को दरवाजे में लगा देखा और घुसकर कागजों को देखा। यह छात्रवृत्ति बहुमूल्य है। इसलिये इसे पाने की लालच से कोई भी अविचारी छात्र ऐसा कर सकता है।

"इस दुर्घटना से बिचारा वैनिस्टर एक दम घबरा गया।

जब उसे असली बात मालूम हुई तो वह बेहोश हो गया। मैंने उसे थोड़ी ब्रैण्डी पिला दी और उसी तरह कुर्सी पर छोड़कर कमरे की तलाशी ली। मैंने देखा कि कागजों के बिखेड़ने के अलावा आगन्तुक और भी निशान कमरे में छोड़ गया है। खिड़की के पास वाले टेबुलपर पैंसिल रगड़ने के कई एक दाग थे। वहीं पर पैंसिल का एक टूटा टुकड़ा भी पड़ा था। उसे नकल करने की जल्दी थी, इससे उसकी पैंसिल टूट गई थी और उसे पैंसिल बनाना पड़ा था।

ज्यों त्यों कथा में रोचकता आने लगी त्यों त्यों मेरे मित्र का मिजाज प्रसन्न होने लगा। उन्होंने कहा:—आप तो बड़े भाग्यवान निकले।

मि० सोम्स— इतना ही नहीं। मैंने अभी हाल में एक नया टेबुल खरीदा है। उसपर बढ़िया चमड़ा लगा हुआ है। पहले उसपर कोई दाग धब्बा नहीं था। लेकिन आज उसे तीन इञ्च कटा देखा। उस टेबुलपर काली मिट्टी का टुकड़ा भी पड़ा था जिसमें किसी चीज का था।

ये सब निशान उसी के बनाये हैं। जिसने इन कागजों को दिया है। दूसरा कोई भी निशान कमरे में नहीं है। जिससे कि वह पहचाना जा सके मैं तो क्षुब्ध था। सहसा मुझे आपकी याद आ गई और मैं सीधे दौड़ा आप के पास चला आया? आप मेरी कठिनाई समझ गये होंगे। या तो उस आदमी का पता लग जाय या परीक्षा रोकी जाय और प्रश्न पत्र नये सिरे से चुने जायँ। पर इसके लिये सभी बातों को प्रगट करना पड़ेगा। इससे कालेज की ही नहीं, बल्कि विश्वविद्यालय की बड़ी बदनामी होगी। मैं चाहता हूँ कि यह मामला चुपचाप हल हो जाय।

"मुझसे जो हो सकेगा करूँगा। मामला तो बड़ाही मजेदार है। प्रूफ आने के बाद आपके कमरे में कोई गया भी था ?"

"हाँ, दौलत राव नामका युवक भारतीय छात्र जो ठीक ऊपर रहता है परीक्षा के बारेमें कुछ पूछने आया था।"

"आपने उसे भीतर बुलाया था ?"

"हाँ"

"उस समय भी प्रूफ आपके टेबुलपर थे।"

"जहाँतक मुझे स्मरण है वे लपेट कर रखे हुए थे।"

"क्या कागजों को देखकर कोई समझ सकता था कि वे प्रूफ हैं।"

"सम्भव है।"

"कोई और भी आपके कमरे में था ?"

"नहीं"

"क्या प्रूफ आनेकी बात किसी को मालूम थी ?"

"प्रेसवाले को छोड़कर अन्य किसी को भी नहीं"

"क्या आपके नौकर बैनिस्टर को इसकी खबर थी ?"

"नहीं, कदापि नहीं। अन्य किसी को भी मालूम नहीं था"

"इस समय बैनिस्टर कहाँ है ?"

"उस की हालत बड़ी खराब थी। उसी दशामें मैं उसे कुर्सी पर छोड़कर चला आया।"

"आप अपना कमरा खुला ही छोड़कर चले आये ?"

"मैंने प्रूफको टेबुल के ड्रावर में बन्द कर दिया।"

"मि० सोम्स, तब तो इसका मतलब यह हुआ कि यदि दौलवराव ने प्रूफ को पहचाना नहीं तो जिस व्यक्ति ने यह काम किया है वह अचानक आपके कमरे में चला आया।"

"मालूम तो ऐसा ही होता है।"

इस पर होम्स मुस्कुरा पड़ा। मुझसे कहा—"वाटसन ! यह काण्ड तुम्हारे मतलब का नहीं। यदि तुम चाहो तो मेरे साथ चल सकते हो ! हम लोगोंको घटनास्थल पर चलना चाहिये।"

\+ \+ \+

मि० सोम्स का कमरा निचले तल्ले पर था। कालेज का प्रांगण की तरफ खिड़कियाँ थी। सीढ़ी के पास ही ऊपर जाने का दरवाजा था। ऊपर एक-एक तल्ले पर एक-एक छात्र रहते थे। जिस समय हम लोग घटनास्थल पर पहुँचे शाम हो रही थी। होम्स ने रुककर खिड़की को देखा, उसके पास गया और उचककर भीतर की तरफ झाँका।

मि० सोम्स—सदर दरवाजे से ही कोई भीतर गया होगा क्योंकि भीतर जानेका कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

होम्स फिर मुस्कुरा पड़ा और बोला—यदि यहाँ कोई मतलब की बात नहीं है तो हम लोगों को कमरे में चलना चाहिये।

मि० सोम्स हम लोगों को लेकर कमरे में दाखिल हुए। हम दोनों एक तरफ खड़े हो गये और होम्स फर्श की जाँच करने लगा।

उसने कहा:—फर्श पर तो कोई निशान नहीं है। इतनी गर्मी में निशान की संभावना भी नहीं हो सकती। आपका नौकर तो अब अच्छा हो गया सो मालूम होता है। आप तो उसे यहीं छोड़कर गये थे वह किस कुर्सी पर था ?"

"खिड़की के पासवाली कुर्सी पर।"

इस टेबुल केपास जो कुर्सी है।" अब आप लोग कमरे में आ सकते हैं। मैंने फर्श की जाँच कर ली। अब हम इस छोटे टेबुल से शुरू करते हैं। जो कुछ हुआ है, एकदम साफ है। एक आदमी कमरे में घुस आया। प्रूफ को एक एक पन्ना करके लिया। उसे खिड़की के पासवाले टेबुल पर ले गया क्योंकि वह वहाँ से आपको लौटते समय देख सकता था और इस तरह उसे भाग जाने का मौका मिल जाता।

"लेकिन यह संभव नहीं था क्योंकि मैं सदर फाटक से भीतर आया ही नहीं, बल्कि बगल के दरवाजे से घुस आया।

"यही बात मेरे मन में भी थी। अच्छी बात है। जरा मुझे प्रूफ तो दिखलाइये। इन पर भी अंगुलियों का निशान नहीं है। वह पहले इस पन्ने को ले गया और नकल किया। इस काम में उसे ज्यादा से ज्यादा कितना वक्त लगा होगा। पन्द्रह मिनिट से कम नहीं। तब उसने उसे फेंक दिया और दूसरा पन्ना उठाया। इसी समय उसे आपके पैर की आहट मिली और उसे तेजी से हट जाना पड़ा। उसे इतना भी समय नहीं मिला कि वह इन्हें लपेट कर उसी तरह रख दे। जिस समय आप लौट रहे थे। किसी के ऊपर चढ़ने की पद ध्वनि नहीं सुनाई पड़ी ?"

"इतना तो मुझे स्मरण नहीं है।"

"उसने इतनी तेजी से लिखा कि उसकी पेंसिल टूट गई और आपके अनुसार उसे पेंसिल बनानी पड़ी। वाटसन ! यह नोट करने की चीज है, पेंसिल साधारण पेंसिल नहीं थी। उस पेंसिल का शीशा मुलायम था। लकड़ी का रंग गहरा नीला था और बनानेवाले का नाम रुपहले अक्षरों में लिखा था। जो अंश उसके पास रह गया है वह डेढ़ इंच से ज्यादा नहीं है। ऐसी

पेंसिल की खोज कीजिये। आप चोर को आसानी से पकड़ लेंगे। उसके पास लम्बा दोहरा चाकू भी है, यह दूसरा प्रमाण है।

मि० सोम्स भौंचक्का से होकर होम्स का मुँह देखने लगे। बोले:—दूसरी बात तो मानो भी जा सकती है लेकिन पेंसिल का आकार आपने किस तरह बतलाया।

होम्स ने लकड़ी का एक छिलका सामने रख दिया। उसके अन्त में एन एन अक्षर थे और उसका अन्तिम भाग चिकना था। बोला—अब तो आपने समझा ?"

मि० सोम्स—मैं इतने पर भी······

"इसके अतिरिक्त भो सबूत हैं। एन एन अक्षर से क्या मतलब निकलता है। इस पेन्सिलके बनानेवाले का नाम जोहान फेवर है। इससे क्या नहीं मालूम होता कि पेन्सिल का उतना ही अंश बचा है जितने में 'जोहान' शब्द आ सकता है।"

उसके बाद वह उस टेबुल को बिजली की रोशनी के पास ले गया। बोला:—मेरा अनुमान था कि यदि उसका कागज पतला था तो टेबुल पर लिखने का निशान अवश्य होगा पर इसपर तो कुछ नहीं है। यहाँ और कुछ नहीं जाँचना है! तब बीचवाले टेबुलकी जाँच की जाय! यही वह मिट्टी का लोंदा है जिसकी चर्चा आपने की थी। इसका आकार कुछ गोला है, बीचमें खोखला है और उसमें लकड़ी के चूर के कण हैं। यह भी एक अनोखी बात है। और यह कटा हुआ अंश! यह पतला से शुरू होकर अन्त में बहुत मोटा हो गया है। इससे तो बहुत काम निकलेगा। अच्छा, यह दरवाजा किस लिये है?

"मेरे सोने के कमरे का यह दरवाजा है।"

"इस घटना के बाद आप इस कमरे में गये थे ?"

"नहीं, मैं तो सीधे आपके पास चला गया"

"मैं इस कमरेको देखना चाहता हूँ। वाह ! पुराने किनेका कौन सुन्दर कमरा है ! आपलोग बाहर ही ठहरें। मैं फर्शकी जांच कर लेना चाहता हूँ। यहां भी कोई निशान नहीं है। यह परदा किस लिये है ? इसके पीछे आप अपने कपड़े टांगते होंगे। यदि कोई अचानक इस कमरे में घुस पड़े तो इसी के पीछे अपने को छिपा सकता है। दूसरा कोई स्थान तो नहीं दिखाई देता क्योंकि पलंग बहुत नीचा है और दरवाजे का पीछा बहुत हो छोटा है मैं समझता हूँ कि इसके अन्दर कोई नहीं है।"

इतना कह कर उसने परदे को हटाया। उसे किसी वारदात की आशंका थी, इस लिये उस समय वह बहुत ही सजग हो गया था। परदे के पीछे तीन चार जोड़े कपड़ों के अलावा कुछ नहीं था। वहां से हटते ही उसकी नजर दरवाजे पर के किसी चीज पर पड़ी। उसने चिल्लाकर कहा ! यह क्या है ?

यह उसी तरह का मिट्टीका लोंदा था जैसा टेबुल पर मिला था। होम्स ने उसे उठा लिया और रोशनी के पास ले गया। बोला:—मि० सोम्स ! आपका मेहमान तो अपने-आनेका निशान आप की बैठक और सोने के कमरे दोनां जगह छोड़ गया है !

"भीतर वह किस अभिप्राय से गय होगा।"

यह तो बहुत साफ है ! आप अचानक आ पड़े। उसे भागकर निकल जाने का कोई रास्ता नहीं था। इसलिये वह उसी कमरे में जाकर छिप गया।

"तब तो इसका मतलब यह हुआ कि जब तक मैं वैरिस्टर से

बातें कर रहा था, चोर इसी कमरे में बैठा था और हम लोगोंको उसका कोई पता नहीं था।"

"मालूम तो ऐसा ही होता है।"

"एक दूसरी बात भी हो सकती है, मि० होम्स !" आपने मेरे सोने के कमरे की खिड़कियों को देखा ही होगा। उनमें से एक खिड़की काफी बड़ी है। क्या यह संभव नहीं है कि उसी खिड़की से चोर आया हो और अपना काम करके इधर से चला गया हो।

"इस बात पर मेरा दिल नहीं जमता ? खैर, आगे चलिये। आपके कमरे के ऊपर तीन छात्र रहते है। तीनों का आना इसी तरफ से होता है।

"हां"

और तीनों इस प्रतियोगिता परीक्षामें शामिल हो रहेहैं।"

"हां"

"इनमेंसे किसी पर भी आपको सन्देह होनेका कोई भी कारण है !"

बहुत ही कठिन प्रश्न है ? अकारण किसपर सन्देह किया जाय। मैं तीनों की प्रकृति का वर्णन कर देता हूं आप अपनी राय कायम कर लें।

"अच्छी बात है।"

"सबसे निचले तल्ले में गिलक्रिस्ट रहता है। यह पढ़ने में तेज और खेलाड़ी भी है। कालेज के रावी और क्रिकेट टीम में खेलता है। टट्टी की दौड़ और लम्बी कुदान में इनाम पा चुका है। यह लम्बा-चौड़ा जवान है। यह प्रसिद्ध सर जावेज़ गिलक्रिस्ट का पुत्र है। जिन्होंने टर्फ पर सारी सम्पत्ति

बरबाद कर दी यह निर्धन हो गया। यह परिश्रमी और उद्योगी है" इसका भविष्य उज्वल है।

दूसरे मंजिल पर दौलतराव रहता है। यह शान्त स्वभाव का है। यह भी पढ़ने लिखने में तेज है यद्यपि यह ग्रीक में कमजोर है। पर इसका काम चौकस और सिलसिलेवार होता है।

सबसे ऊपर के मंजिल पर माइल्स मैकलैटन रहता है। यदि यह परिश्रम करे तो बहुत अच्छा हो सकता है। विश्वविद्यालयका यह सबसे तेज छात्र है। लेकिन यह अस्पर्ट है और बिना किसी वसूल का है। पहले साल में एक कार्डको लेकर वह कालेज से निकाल दिया गया था। वह साल भर खेलता ही रहा इसलिये वह परीक्षा से जरूर घबराता होगा।"

"तब आपका सन्देह इसीपर होगा।"

"मैं इतनी दूर तक नहीं जा सकता। पर उन तीनों में सन्देह करने लायक यही है।"

"अच्छी बात है। अब जरा अपने नौकर बैनिस्टर को बुलावें। उससे भी दो एक बातें कर ली जायँ।"

बैनिस्टर की उम्र प्रायः पचास साल की थी। उसका कद नाटा और शरीर दुबला पतला था। उस समय तक भी वह चैतन्य नहीं हो सका था क्योंकि उसके हाथ काँप रहे थे।

मि० होम्स ने कहा:—हम लोग उसी दुर्घटना की जाँच कर रहे हैं।

"जी हाँ।"

मि० होम्स—मैं समझता हूँ कि तुम कुंजी दरवाजे में लगा छोड़ गये?"

"जी हाँ।"

क्या यह असाधारण बात नहीं है कि तुम इस तरह कुंजी उसी तरह ठीक उसी दिन छोड़ गये जिस दिन प्रूफ आये थे!

"मैं अपराधी हूँ। पर पहले भी ऐसा हो चुका है।

"तुम कब इस कमरे में आये?"

"करीब साढ़े चार बजे। यही इनके चाय पीने का समय है।

"कितनी देर तक कमरे में रहे!"

"जब मैंने देखा कि ये नहीं है तो तुरंत कमरे से बाहर चला गया।"

"टेबुल पर रखे इन कागजों को तुमने उलटा पलटा था।"

"जी नहीं, मैंने टेबुल को छूया तक नहीं।"

"तुम कुंजी दरवाजे में लगी हुई क्यों छोड़ गये?"

"चाय का तश्त मेरे हाथ में था। इसलिए मैंने सोचा कि इसे रखकर कुंजी बन्द कर जाऊँगा। लेकिन भूल गया।"

"क्या बाहरी दरवाजा स्पिंग पर है?"

"जी नहीं।"

"तब वह बराबर खुला ही था।"

"जी हाँ।"

तब तो कमरे में से कोई भी आदमी जा सकता था।

"जी हाँ।"

जब मि० सोम्स वापस आये और तुम्हें बुलाया तो तुम घबराये हुए थे?

"स्वाभाविक था! मैं प्रायः दस साल से इनकी सेवा में र

पर इस तरह की घटना कभी नहीं हुई। मुझे तो गश आते आते बचा।

"जिस समय तुम्हारे सिर में चक्कर आने लगा उस समय तुम कहाँ पर थे?

"यहीं दरवाजे के पास ही तो खड़ा था?"

यह भी अनोखी बात है कि तुम्हें चक्कर आने लगा दरवाजे के पास और तुम जाकर बैठे उस अन्तिम कुर्सी पर नजदीक की इन कुर्सियों को छोड़कर उतनी दूर क्यों गये?

"मेरा होश ठिकाने नहीं था। कुर्सी पर जाकर बैठ गया।"

मि० सोम्स—मैं नहीं समझता कि उस घटना से इसका कोई भी संबंध है। वह तो सुनते ही अवाक् हो गया था!

होम्स—जब तुम्हारे मालिक बाहर गये तब तुम यहीं थे?"

प्रायः एक दो मिनिट तक। उसके बाद ही मैंने दरवाजा बन्द कर दिया और अपने कमरे में चला गया।

"तुम्हारा सन्देह किसी पर है?"

"मेरा साहस नहीं है। मुझे विश्वास है कि यहाँ एक भी छात्र ऐसा नहीं है कि इस तरह के दुस्साहसिक काम से फायदा उठा सकेगा।"

होम्स—अच्छी बात है। एक बात और पूछना है। तुमने इस दुर्घटना की चर्चा उन तीनों छात्रों में से किसी से तो नहीं की है।

"मैंने कहीं मुँह भी नहीं खोला है?"

"तुमसे उन लोगों से भेंट भी नहीं हुई है?"

'जी नहीं।"

"मि० सोम्स ! यहाँ का काम तो हो गया। अब चल के जरा मैदान में टहला जाय।"

मैदान में खड़ा होकर हम लोगों ने देखा कि ऊपर के तीनों कमरों में रोशनी जल रही है।

उस तरफ देखकर होम्स ने कहा—आपकी तीनों चिड़ियाँ तो अपने अपने घोंसले ही में मालूम होती हैं। लेकिन उनमें से एक तो बहुत बेचैन दिखाई देता है।

दौलतराव का चेहरा शीशे में से बाहर की ओर साफ दिखाई दे रहा था। वह कमरे में तेजी से चल रहा था।

होम्स—"मैं तीनों से मिल लेना चाहता हूँ। क्या यह सम्भव है?"

सोम्स—इसमें बाधा क्या हो सकती है! यह कालेज का सब से पुराना भाग है। इसे देखने के लिये लोग प्रायः आया करते हैं। मैं स्वयं आपके साथ चलूँगा।"

होम्स—"पर किसी से मेरा नाम नहीं बतलाइयेगा।"

हम लोग सब से पहले गिलक्रिस्ट के कमरे में गये। उसने बड़े सत्कार से हम लोगों का स्वागत किया। उसके कमरे में बहुत सी मध्ययुग की मूर्तियां सजी रखी थी। मेरे मित्र को उनमें से एक इतना ज्यादा पसन्द आई कि उन्होंने उसका खाका अपनी नोटबुक पर उतार लेना चाहा। उनकी पेंसिल टूट गई। उन्होंने गिलक्रिस्ट की पेंसिल लेकर आगे का काम किया और अन्त में अपनी पेंसिल बनाने के लिये उसका चाकू लिया। इसके बाद हम लोग दौलतराय के कमरे में गये। वह सांवला और नाटा युवक था। उसकी नाक टेढ़ी थी। जब तक हम लोग उसके कमरे में थे वह हम लोगों को बराबर कनखियों से देखता रहा।

होम्स ने यहां भी अपनी खाका खींचने का सिलसिला जारी रखा। उसी तरह पेंसिल तोड़ा और पेंसिल तथा चाकू मांगा। हम लोगों के चले जाने से दौलतराव बहुत ही खुश था। इन दोनों जगहों तो होम्स को निराश होना पड़ा। जिस सबूतों की खोज में वह भटक रहा था वे यहाँ नहीं मिल सके। इसके बाद हम लोग तीसरे छात्र के कमरे के सामने दाखिल हुए। हम लोगों ने कितना भी खटखटाया पर उसने दरवाजा नहीं खोला। उलटे डाटते हुए कहा—"कल से परीक्षा होने वाली है। इस समय किसी से भी मिलने के लिये तैयार नहीं हूँ। अपना रास्ता नापो।"

नीचे उतरते हुए मि० सोम्स ने कहा—"बड़ी गुस्ताखी दिखलाई, इसने।" क्रोध से उनका चेहरा लाल हो गया।" यह मैं मानता हूँ कि उसने मुझे नहीं पहचाना पर तो भी उसमें साधारण सौजन्यता भी नहीं थी। इससे तो मेरा सन्देह बढ़ता है।"

होम्स ने इस पर जरा भी कान नहीं दिया। पूछा—क्या आप इसकी लम्बाई का अन्दाज कर सकते हैं?

"ठीक ठीक तो नहीं पर वह दौलतराम से बड़ा और गिल-क्रिष्ट से छोटा है। यही पांच फुट छ इंच लंबा होगा।

"यह भी काम की बात है। अच्छा तो अब मैं आपसे छुट्टी लेना चाहता हूँ।"

मेरे मेजमान ने चिल्लाकर कहा:—यह खूब! आप मुझे इसी तरह अंधकार में छोड़कर खिसक जाना चाहते हैं? जरा आपका सारी सिनियर विचार कर लेना चाहिये। कल से ही परीक्षा होने जा रही है। इसलिये रात को ही मुझे कोई निश्चित मार्ग

पकड़ लेना चाहिये। एक प्रश्न पत्र गायब हो गया है ऐसी हालत में चाहे जो भी हो परीक्षा तो नहीं ही ली जा सकती।

होम्स—आप सारी बातें ज्योंकी त्यों रहने दें। मैं अब तड़के ही आकर आपसे बातें करूँगा। संभव है उस समय मैं आपको कोई निश्चित सलाह दे सकूँ। तब तक आप इसे ज्यों का त्यों पड़े रहने दें।

"जैसी आपकी सलाह।"

"आप जरा भी चिन्ता न करें। मैं आपकी कठिनाई को हल करने का कोई न कोई रास्ता निकाल ही लूँगा। मैं वह मिट्टी का टुकड़ा और पेंसिल का छिलका अपने साथ लिये जा रहा हूँ।"

इसके बाद हम लोग वहां से बिदा हो गये। रास्ते में होम्स ने मुझ से पूछा—तुम्हारी समझ में कुछ आया, वाटसन! मुझे तो यह तिनतसवा के खेल के समान लगता है। तीनों छात्रों के ही बीच यह मामला है। अच्छा बोलो तो! तुम्हारा सन्देह किस पर है।

"मुझे तो सब से ऊपर वाले पर शक होता है। उसकी पढ़ाई भी अच्छी नहीं हुई है। लेकिन दौलतराम भी तो बड़ा धूर्त प्रतीत होता था। वह बेचैनी के साथ कमरे में टहल क्यों रहा था?

होम्स—यह कोई असाधारण बात नहीं है। किसी चीज को घोखते वक्त बहुत से लोग ऐसा करते हैं।

"हम लोगों की तरफ वह कनखी से क्यों देख रहा था।"

"यदि तुम्हें भी कल परीक्षा देने होती और तुम्हारे भी अमूल्य समय को नष्ट करने के लिये कुछ अजनबी अचानक आ जाते तो तुम भी ऐसे ही उन्हें देखते। कोई असाधारण बात मैंने

वहां नहीं देखी। उसकी पेंसिल और उसका चाकू भी सन्देह से परे थे। लेकिन उसकी हरकत मुझे अजीब मालूम हुई!"

"किसकी।"

"मि० सोम्स के नौकर बैनिस्टर की। इसमें उसका हाथ अवश्य है।"

"लेकिन मुझे तो वह एकदम ईमानदार प्रतीत हुआ।"

"मैं भी यही समझता हूँ। इसी से तो मैं और भी चक्कर में पड़ गया हूँ। ऐसा ईमानदार आदमी क्योंकर—अच्छा सामने परचून वाले की दूकान है। यहां से भी कुछ काम करना है।

उस शहर में चार बड़ी बड़ी परचून की दूकानें थीं। एक एक करके होम्स चारों में गये, पेंसिल का छिलका दिखलाया और वही पेंसिल मांगा। सभों ने एक ही बात कही। इस आकार की पेंसिल साधारणतः नहीं आतीं। यदि आप चाहें तो आर्डर देकर मंगा दी जायं। मेरे मित्र को निराशा नहीं हुई, केवल वे मुस्कुरा कर रह गये। उन्होंने कहा—वाटसन! यहाँ भी कोई काम नहीं निकला। लेकिन इससे क्या? जो सबूत मिल गये हैं उन्हीं से काम चलाया जा सकता है। अरे! नौ यहीं बज गये। उसने सात ही बजे भोजन देने का वादा किया था। तुम्हारी लापर-वाही और सुस्ती का परिणाम होगा कि हम लोग वहां से निकाले जायंगे। तुम्हारे चलते हमें भी ठोकर खाना पड़ेगा। लेकिन वहां से हटने के पहले तो इस पहेली को सुलझा ही लेना होगा।"

भोजन के बाद होम्स घंटों चिन्तामग्न बैठा रहा। उसने एक बार भी मुंह नहीं खोला। उसके बाद हम लोग सोने चले गये।

सवेरे मैं ज्योंही मुंह-हाथ धोकर कपड़ा बदलने जा रहा था कि होम्स मेरे सामने आकर खड़ा हो गया। बोला:—

"आठ बज रहे हैं। हम लोगों को इसी वक्त सेण्ट लूकस कालेज पहुँचना चाहिये। क्या बिना नाश्ता किये तुम चल सकते हो।"

"उपाय ही क्या है?"

"मैं मि० सोम्स की परीशानी की याद करके घबरा रहा हूँ।' इस समय उसे कुछ निश्चित उत्तर देना होगा।"

"क्या तुमने कोई रास्ता निकाल लिया है!

"मैं समझता हूँ।"

"तब तो तुम किसी नतीजे पर पहुँच ही गये होगे?"

"हाँ भाई हाँ, मैंने रहस्य का उद्घाटन कर लिया है।"

"क्या कोई नया सबूत तुम्हें मिला है?"

"और नहीं तो क्या! आज ६ बजे सबेरे मैं बेकार नहीं उठा था। सबूत लाने के लिये ही तो मैं सवेरे २ पांच मील का चक्कर लगा आया। यह देखो!"

इतना कहकर उसने अपना हाथ फैला दिया। उसकी हथेली पर मिट्टी के तीन टुकड़े थे।

मैंन पूछा:—वहां तो इस तरह के दोही टुकड़े मिले थे, यह तीसरा कहाँ से आया।"

"आज सबेरे यह मिला। इससे इतना तो साफ हो गया कि जहाँ से यह तासरा टुकड़ा मिला है वहीं से वे पहले वाले दोनों टुकड़े आये है। चलो! जल्दी करो। विचारे सोम्स की परीशानी जल्दी दूर कर दें।"

जिस समय हम लोग पहुँचे सोम्स चिन्ताग्रस्त दशा में अपने

कमरेमें बैठे थे। परीक्षा शुरू होने का समय निकट था। वह इसी उधेड़बुन में पड़े थे कि सारी बातें प्रकट करके परीक्षा रोक दी जाय या चोरको चुपचाप परीक्षा में बैठने दिया जाय। उनकी मानसिक दशा इतनी चंचल थी कि वे स्थिर नहीं बैठ सकते थे। होम्स को देखते ही वे कुर्सी से उछल पड़े। बोले:--भला, आप आ तो गये! मैं तो निराश हो चला था। अब मुझे क्या करना होगा? क्या परीक्षा का काम चालू किया जायगा?"

"अवश्य?"

"लेकिन उस बदमाश का क्या होगा?"

"वह परीक्षा नहीं दे सकेगा?"

"तब तुमने उसे पकड़ लिया है?"

"मैं समझता हूँ। यदि आप इस घटना को गुप्त ही रखना चाहते हैं तो हम लोगों को कानून अपने हाथ में लेना होगा और स्वयं अभियुक्त का विचार करना होगा। इसलिये हम लोगों को अदालत का अभिनय करना होगा। आप इस कुर्सी पर बैठें, वाटसन उस पर बैठेंगे और मैं आराम कुर्सी पर बैठूँगा। यह ढंग देखकर ही अभियुक्त घबरा जायगा। अब घंटी बजाइये।"

घंटी का शब्द होते ही बैनिस्टर कमरे में आया और हम लोगों की यह अदालत देखकर घबरा सा गया।

होम्स—बैनिस्टर! दरवाजा बन्द कर दो।···कल की घटना के बारे में सारी बातें सच सच कह डालो!

बैनिस्टर का चेहरा सफेद हो गया। बोला:—मैं जो कुछ जानता था कल ही कह गया।

"उससे अधिक तुम्हें कुछ नहीं कहना है?"

"जी नहीं।"

"अच्छा यह तो कहो कि तुम उस तीसरी कुर्सी पर क्यों बैठे ? क्या उस पर कोई ऐसी चीज थी जिससे चोर का पता लग सकता था और तुम उसे छिपाना चाहते थे ?"

बैनिस्टर का चेहरा सूख गया। उसने साहस करके कहा :—

"जी नहीं।"

"जो कुछ मैं कह रहा हूँ, अटकल से कह रहा हूँ। मेरे पास कोई सबूत नहीं है। लेकिन मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मि० सोम्स के सोनेवाले कमरे में कोई छिपा था और ज्योंही ये बाहर गये तुमने उसे भगा दिया।"

"बैनिस्टर के होंठ सूख गये। उन्हें चाटते हुए उसने कहा :—वहाँ कोई नहीं था, हुजूर।"

"बड़े अफसोस की बात है बैनिस्टर! तुम्हारे समान ईमानदार आदमी भी झूठ बोलने का साहस करे।"

उसके तेवर बदल गये। दृढ़ता से उसने कहा ?—वहाँ कोई नहीं था।"

"छिपाने से कोई लाभ नहीं बैनिस्टर।"

"मैंने कह तो दिया कि वहाँ कोई नहीं था।"

"तब तो तुमने कुछ न बतलाने का निश्चय कर लिया है। अच्छी बात है तुम यहीं ठहरो। सोने के कमरे के दरवाजे पर जाकर खड़े हो जावो। मि० सोम्स! आप कृपा कर ऊपर जावँ और गिलक्रिस्ट को अपने साथ ही लेते आवें।"

दूसरे ही क्षण मि० सोम्स ने गिलक्रिस्ट को हाजिर किया। गिलक्रिस्ट के चेहरे से परीशानी टपकती थी। उसने एक बार

हम लोगों की ओर देखा और अन्त में उसकी आँखें बैनिस्टर पर स्थिर हो गई।

होम्स—गिलक्रिस्ट! इस कमरे में जितने लोग हैं उन्हें छोड़कर बाकी किसी को नहीं मालूम होगा कि हम लोगों के बीच क्या बातें हुईं। इसलिये हम लोगों को साफ साफ बातें करनी चाहिये। मैं यह जानना चाहता हूँ कि आपके समान भला और सज्जन छात्र ने यह दुष्कर्म करने का साहस कैसे किया?

गिलक्रिस्ट कांप उठा। उसने भय और घृणा से बैनिस्टर की ओर देखा।

बैनिस्टर चिल्ला उठा:—गिलक्रिस्ट! मैंने एक शब्द भी अपने मुँह से नहीं निकाला है! मैंने कुछ नहीं कहा है।"

होम्स—लेकिन अब तो कह रहे हो। गिलक्रिस्ट! अभी बैनिस्टर ने जो कुछ कहा है उससे तुम पकड़ गये। अब तुम्हारी रक्षा इसी में है कि तुम अपना कसूर कबूल कर लो।

गिलक्रिस्ट ने अपने को सम्हालने का यत्न किया। दूसरे ही क्षण वह जमीन पर बैठ गया और दोनों हाथों से मुँह ढँककर बिलख-बिलख कर रोने लगा।

होम्स—इस तरह अधीर न हो गिलक्रिस्ट! मनुष्य से गलती हो ही जाया करती है। तुमने कोई जघन्य कर्म नहीं किया है। अच्छा, तुम कुछ मत कहो। मैं सारी घटना का वर्णन कर जाता हूँ। जहाँ मैं गलती करूँ, टोक देना ताकि मैं तुम्हारे साथ अन्याय न कर सकूँ।"

"जिस समय आपने (मि०सोम्स) मुझे यह बतलाया कि प्रूफ आने की बात बैनिस्टर को भी मालूम नहीं थी, उसी समय से मेरे मन में एक विचार उठने लगा कि यदि प्रेसवाले का यह काम होता

तो वह अपने दफ्तर में ही सब कुछ कर सकता था। इस रचना की क्या जरूरत थी! दौलतराव ने भी प्रूफ नहीं देखा था क्योंकि आपने उन्हें लपेट कर रख दिया था। इस बात की भी संभावना नहीं थी कि बिना समझे बूझे कोई कमरे में उसी दिन चला आया, जिस दिन प्रूफ आये। इसीलिये इतना तो मैंने स्थिर कर लिया कि प्रूफ को देखकर ही कोई कमरे में आया अब यह स्थिर करना था कि उसे प्रूफ का आना मालूम किस तरह हुआ?

"आपके कमरे में आने के पहले मैंने पीछेवाली खिड़की की जाँच की थी। आपने समझा कि मेरे मन में यह सन्देह है कि दिन दहाड़े कोई इससे होकर यहाँ आया। इसीलिये आपके रोकने पर मैं हँस पड़ा था क्योंकि इस बात की संभावना भी नहीं थी। मैं इस खिड़की की ऊँचाई नाप रहा था कि यदि इधर से कोई गुजरे तो बीचवाले टेबुलको देखने के लिये उसे कितना लम्बा होना चाहिये। मैं ६ फुट लम्बा हूँ। मुझे भीतर की चीज देखने के लिये पंजे के बल उचकना पड़ा था। इसलिये ६ फुट से कम लम्बे आदमी का यह काम नहीं हो सकता था। इसीलिये मैंने आपके इन तीनों छात्रों को देखना चाहा था क्योंकि जो तीनों में सबसे लंबा था उसी पर सन्देह जा सकता था।

"जब आपने मुझे यह बतलाया कि गिलक्रिस्ट कूदने फांदने में तेज है तब मेरी धारणा दृढ़ हो गई। लेकिन अपनी बात को पुष्ट करने के लिये मैं सबूत खोजने लगा। वह भी मुझे मिल गया।

"आज तीसरे पहर गिलक्रिस्ट खेल के मैदान में लंबी

कुदान का अभ्यास कर रहा था। वह कूदनेवाला जूता पहन कर इधर आया। इस जूते में कील लगे रहते हैं। जब यह आपके कमरे की तरफ से गुजरा तो लंबा होने के कारण इसने आपके टेबुल पर पड़े प्रूफ को देख लिया और समझ गया कि प्रश्न-पत्र के ही प्रूफ हैं। अगर आपका नौकर कुंजी छोड़ जाने की असावधानी न की होती तो महज देख लेने से वह कुछ नहीं कर सकता था। दरवाजे में कुंजी लगी देखकर इसके मन में लोभ समा गया और उसे देखने के लिये वह घुस पड़ा। इसमें कोई खतरा नहीं था क्योंकि वह कह सकता था कि वह आपसे कुछ पूछने के लिये चला आया है। लेकिन टेबुल पर प्रूफ को पाकर वह लोभ का संवरण नहीं कर सका। उसने टेबुल पर अपना जूता रख दिया! खिड़की के पासवाली कुर्सी पर तुमने क्या रखा था, गिल्क्रिस्ट?"

गिल्क्रिस्ट—अपना दस्ताना।

होम्स ने बैनिस्टर की तरफ देखा।

"कुर्सी पर दस्ताना रखकर वह एक-एक पन्ना प्रूफ लेकर नकल करने लगा। उसने सोचा कि आप सदर फाटक से ही आवेंगे और वह दूर से ही आपको देख लेगा। लेकिन आये आप पीछे के दरवाजे से। जब आप दरवाजे पर आगये तब आपके पैर की ध्वनि इसे सुन पड़ी। वह भाग नहीं सकता था। दस्ताना तो वह भूल गया लेकिन जूता लेते हुए वह आपके सोने-वाले कमरे में छिप गया। टेबुल का कटा अंश प्रगट करता है कि आरंभ में कटान पतला है लेकिन सोने के कमरे की तरफ गहरा होता गया है। यह साफ जाहिर करता है कि जूता उसी तरफ खींचा गया है और चोर ने वहीं शरण ली। कील से

सटी मिट्टी का एक टुकड़ा टेबुल पर था और दूसरा सोनेवाले कमरे के दरवाजे पर। इन दोनों टुकड़ों को लेकर आज सबेरे मैं खेलके मैदान में गया था और मिट्टी की जाँच की। मैंने इसी तरह की मिट्टी कूदने के मैदान में पाया। अपने साथ थोड़ी मिट्टी और उसपर छींटी जानेवाली लकड़ी का थोड़ा चूर भी अपने साथ लेता आया! क्या ये सब बातें सच हैं गिलक्रिष्ट!'

गिलक्रिस्ट उठकर खड़ा हो गया था। बोला—"जी हाँ"

मि० सोम्स, तुम्हें कुछ नहीं कहना है!"

गिलक्रिष्ट—मुझे तो कहना है। लेकिन पकड़ जाने के अपमान से मेरा सिर झुका जा रहा है। मेरी सारी रात बेचैनी से कटी। सबेरे ही मैंने आपके नाम यह खत लिखा है। तब तक मुझे नहीं मालूम था कि मेरे पाप का घड़ा फूट गया है। मैंने इस खत में लिखा है कि मैं परीक्षा में नहीं शामिल होऊँगा, मुझे रोडेसा में पुलिस की नौकरी मिल गई है और मैं दक्षिण अफ्रीका जाने की तैयारी कर रहा हूँ।"

मि० सोम्स--मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि तुमने इससे अनुचित लाभ उठाने का इरादा नहीं किया। लेकिन तुमने यह इरादा छोड़ क्यों दिया!"

गिलक्रिष्ट ने बैनिस्टर की तरफ इशारा किया। बोला—"उसी ने मुझे पाप मार्ग से विरत किया।"

होम्स—जो कुछ मैंने कहा है उससे साफ है कि तुम्हीं ने इस युवक को कमरे से बाहर किया क्योंकि तुम्हें कमरे में ही छोड़ कर मि० सोम्स मेरे पास दौड़े गये थे। बाहर जाने के वक्त तुमने कमरा जरूर ही बन्द कर दिया था। खिड़की से तो

वह भाग नहीं सकता था, क्योंकि पकड़ जाने का डर था। आखिर तुमने ऐसा क्यों किया। अब तो तुम्हें बतला ही देना चाहिये।"

बैनिस्टर—यदि आप सारी बातें जानते होते तो मुझसे यह प्रश्न न करते। पर आप उसे जान कैसे सकते थे। पहले मैं मि० गिलक्रिष्ट के पिता सर जावेज गिलक्रिष्ट का खानसामा था। उनके सर्वनाशके बाद मैंने यहाँ नौकरी कर ली। लेकिन मैं उन्हें भूल नहीं सका। उसी ममता के कारण मैं उनके लड़के की देख भाल सदा करता रहा। कल की घटना के बाद जब मैं पहले-पहल इस कमरे में आया तो इस कुर्सी पर गिलक्रिष्ट का दस्ताना पड़ा देखा। मैं उसे पहचान गया। सारी बातें मेरे दिमाग में आ गईं। यदि मि० सोम्स उन्हें देख लेते तो सारा खेल खतम हो जाता। इसलिये मैं लड़खड़ाकर उसी के ऊपर बैठ गया और जब तक मि० सोम्स चले नहीं गये मैं अपनी जगह से हटा नहीं। मि० सोम्स के जाते ही युवक गिलक्रिस्ट कमरे से बाहर निकले और मेरे पैरों पर गिरकर अपना अपराध कबूल कर लिया। अब आप ही बतलाइये कि मेरा क्या कर्तव्य था। इनकी रक्षा करना मैंने अपना कर्तव्य समझा पर इनके पिता के ही समान मैंने इस बात को भी इन्हें समझा दिया कि आप इससे अनुचित लाभ नहीं उठा सकते।"

होम्स—मैं तुम्हारी वफादारी की तारीफ करता हूँ। गिलक्रिस्ट। इस घटना से तुम शिक्षा ग्रहण करोगे और अपना भविष्य उज्वल बनावोगे।

एक नहीं अनेक—एक-दो-तीन

मि० साइमन ग्रान्ट असाधारण पुरुष थे। एक नहीं अनेकों लिमिटेड कम्पनियों का जन्मदाता समझे जाते थे। यदि एकाएक ये सब कम्पनियां एक साथ ही दिवाला मार दें तो मि० साइमन ग्राण्ट के परिवार पर विपत्ति का पहाड़ घहरा जाना स्वाभाविक होगा। शेयर बाजार में हलचल मच जाना तो कोई बड़ी बात न होती। लेकिन जिस दिन लोगों को यह मालूम हुआ कि उनकी स्थापित कांसालिडेटेड नाइट्रो फास्फेट्स कम्पनी केवल नाम के लिये रजिस्टर्ड थी, उसमें कोई दम नहीं था और एक ही दिन में मि० साइमन ग्राण्ट के साथ ही साथ उसकी सारी पूँजी न जाने कहाँ गायब हो गई तो संसार भर में तहलका मच गया और इसने आध घंटे के लिये मि० माण्टेगू एग को भी हिला दिया!

मि० माण्टेगू एग ने न तो इस कम्पनी का हिस्सा ही खरीदा था और न इसको संचालक मि० साइमन ग्राण्ट से इनकी जान पहचान ही थी। इस मोकदमे से उनका संसर्ग दैवात् हो गया। एक्सचेकर के चांसलर ने शराब पर कर बढ़ाने का प्रस्ताव किया जिसका बहुत बुरा असर शराब के व्यापार पर पड़ता था। मि० एग विकाडली के पामर रोज कम्पनी के एजेण्ट थे। व्यापार की नीति स्थिर करने के लिये कम्पनी के मालिकों ने तार देकर इन्हें बुलाया था। प्रधान कार्यालय पहुँचने पर इन्हें मालूम हुआ कि जिस गाड़ी से ले आ रहे थे उसी गाड़ी से मि० साइमन भी सफर कररहे थे और अचानक गायब हो गये थे।

उस समय एल० एम० एस० रेलवे कम्पनी की एक एक्सप्रेस गाड़ी रात को लण्डन जाती थी। वह बर्मिंघम से रात को ९-५ पर छूटती थी और यूस्टन १२-१० पर पहुँचती थी। बीच में वह कवेण्टरी और रुग्बी में ठहरती थी। कवेण्टरी के कुछ प्रधान व्यापारियों की ओर से मि० साइमन को दावत दी गई थी। उस दावत में उन्होंने ब्रिटिश व्यापार की प्रगत्ति पर भाषण भी दिया था। उसके बाद वे उसी एक्सप्रेस से रुग्बी के लिये रवाना हुए। रुग्बी में लार्ड वण्डल थार्प के वे मेहमान होनेवाले थे। वे प्रथम श्रेणी में यात्रा कर रहे थे। उन्हें पहुँचाने के लिये कवेण्ट्री के दो लखपती आये थे जो गाड़ी के छूटने तक उनसे बातें कर रहे थे। इसी डब्बे में संसार के प्रसिद्ध खेलाड़ी सर हिकिलबरी भी थे। बातचीत में मि० साइमन ने सर हिकिलबरी से कहा भी था कि उनका सेक्रेटरी बीमार पड़ गया है इसलिये वे अकेले ही जा रहे हैं। जब गाड़ी आधा रास्ता तै कर चुकी थी तो गर्मी का बहाना करके मि० साइमन बाहर बरामदे में चले आये थे। वे फिर भीतर नहीं देखे गये।

रुग्बी स्टेशन पर हलचल मच गई। चारों ओर मि० साइमन की खोज होने लगी। डब्बे के बरामदे का एक दरवाजा खुला मिला। और स्टेशन से कोई दो मील पर उनका ओवर कोट मिला इससे लोगों को यह ख्याल हुआ है कि वे गाड़ी से गिर गये। लेकिन तलाशी होनेपर न तो उनकी लाश का कहीं पता चला और न गाड़ी से किसी वजनी चीज के गिरने का ही कोई सबूत मिला। ओवर कोट की जेब में कवेण्ट्री से रुग्बी तक का प्रथम श्रेणी का टिकट था। मि० साइमन को लेने के लिये लार्ड वण्डल थार्प ने अपनी मोटर भेजी थी। ड्राइवर स्टेशन के

फाटक पर मोटर लगाकर खड़ा था और चपरासी स्टेशन पर इधर से उधर दौड़ रहा था। दोनों मि० साइमन को अच्छी तरह पहचानते थे। दोनों ने इस बातपर जोर दिया कि इस गाड़ी से मि० साइमन नहीं उतरे। बिना टिकट भी कोई आदमी नहीं गया था और न कोई गलत-सलत टिकट देकर ही पार हुआ था। बर्मिंघम तथा कवेण्ट्री से रुवी के लिये जितने टिकट बेंच गये थे सभी मिला लिये गये। किसी तरह की गड़बड़ी नहीं निकली।

दोही बात की संभावना थी। दोनों की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक था। यह एक्सप्रेस रुवी स्टेशन १२-२४ पर पहुँचती थी और १२-२८ पर रवाना हो जाती थी। इसी समय आयरिश मेल भी रुवी स्टेशन आती थी। यह वहाँ केवल तीन मिनट ठहरती थी और १२-२५ पर छूट जाती थी। यदि यह ट्रेन ठीक समय पर रुवी पहुँची तो यह संभव था कि साइमन उस गाडीसे उतर कर इस पर चढ गये। तब तो वे २-२५ पर हालीहेड पहुंच गये होंगे और स्टीमरसे ६-३५ पर डवलिन पहुँच कर चन्द घंटों में और न जानें कहां चल गये होंगे। लार्ड वंडल-थार्प के अर्दलीका कहना था कि वेष बदल कर उसे कोई भी ठग सकता है। चीफ इन्स्पेक्टर पीकाकको इस मामलेकी जांचका भार दिया गया था। उन्हें इस संभावना पर विश्वास नहीं था। उनका कहना था कि इस तरह छिप कर स्टीमरसे जाना कठिन था। घाट पर वह अवश्य ही पकड़ लिया जाता।

इसके बाद टिकटका प्रश्न आया। एक मिनिटमें मि० साइ-मन आयरिश मेलके लिये टिकट नहीं खरीद सकते थे! या जो उन्होंने पहलेसे ही टिकट खरीद रखा था या उनका कोई साथी

टिकट लेकर स्टेशन पर पहले से ही मौजूद था और उन्हें टिकट थमाकर चलता बना। चीफ इन्स्पेक्टर पिकाकको इस संवादसे बड़ाही सन्तोष हुआ कि लण्डन स्टेशन पर रुवी होकर डबलिनके लिये सालमन ग्राण्डीके फर्जी नाम पर उसी रात टिकट खरीदा गया था। मि० पिकाक ने अकसर देखा था कि जब धूर्तलोग फर्जी नामसे टिकट खरीदते हैं तो अपने ही नामके प्रथम अक्षर पर कोई नाम गढ़ लेते हैं। यदि वे लोग ऐसा न करें तो विजिटिंग कार्ड, सिगरेटकेस, सूटकेस वगैरह पर खुदे अपने नामके प्रथम अक्षर के कारण पकड़े जानेका भय रहता है लेकिन उनकी यही कमजोरी उनके विपत्ति को घटाने के बदले बढ़ा देती है। मि० पिकाक की उम्मीद और भी बढ़ गई जब उन्हें यह मालूम हुआ कि मि० साइमन ग्राण्डी ने टिकट घर में अपना जो पता लिखाया है वह भी फर्जी है। लेकिन इसी समय एक घटना ऐसी घटी कि उनकी सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया। जिस व्यक्ति ने इस नाम से टिकट खरीदा था उसने न तो उस टिकट से यात्रा ही की और न उसे टिकट घर में लौटाया ही और साथ ही यह भी साबित हो गया कि मि० साइमन ग्राण्ट आयरिश मेल पर सवार तक नहीं हुए। क्योंकि उस दिन वह एक्सप्रेस रुवी स्टेशन पर तीन मिनिट देर करके आई थी और तब तक आयरिश मेल खुल चुकी थी। यदि उन्होंने अपने भागने का यही नक्शा तैयार किया था तब तो वह बिगड़ गया था।

अब मि० पिकाक के सामने यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि तब मि० साइमन ग्राण्ट गये कहाँ? अपने सहकारियों से सलाह मशविरा करके मि० पिकाक इसी परिणाम पर पहुँचे कि मि०

साइमन ने आयरिश मेल ही पकड़ने का इरादा किया था और बरामदा में आकर ओवरकोट वगैरह बाहर फेंक देना पुलिस को फंसा रखनेका उनका जाल मात्र था। लेकिन जब उन्होंने देखा कि मेल तो चली गई थी तब उन्होंने क्या किया। वह कोई दूसरी गाड़ीसे ही वहां से जा सकते थे! मि० पिकाकने जांच पड़तालसे यह निश्चित कर लिया था कि वे फाटकसे बाहर नहीं गये। रेलकी लाइन पकड़ कर स्टेशनके कर्मचारियों की निगाह बचाकर निकल जाना उनके लिये असंभव था। दूसरे दिन सुबह तक वह स्टेशन पर रह नहीं सकते थे। पिछले सप्ताह में रेलसे आत्महत्याकी एक घटना हो चुकी थी। इसलिये स्टेशन के आसपास बेमतलब घूमने वालों पर रेलके कर्मचारी कड़ी निगाह रखते थे और लाइन पर कई जगह पहरा बैठा दिया गया था। इस लिये इस पहलूपर काम करने का भार अपने सहयोगियों को देकर वे उसके दूसरे पहलू पर विचार करने लगे।

वह यह था कि साइमन रुबी स्टेशन पर उतरे ही नहीं बल्कि वे सीधे यूस्टन चले गये। लण्डनमें छिप जाना असान था जब उन्होंने देखा कि आयरिश मेल चली गई है तो इसके अलावा उनके लिये दूसरा चारा ही क्या था। घड़ीसे उन्होंने गाड़ीके देर से पहुँचनेका अन्दाज लगा ही लिया होगा। इसलिये तुरत टिकट घर जाकर उन्होंने अपना टिकट बदलवा लिया होगा। लेकिन यहाँ भी उन्हें निराश होना पड़ा क्योंकि टिकटघरमें पूछताछ करने पर उन्हें मालूम हुआ कि उस दिन १०-१५ के बाद कोई टिकट बिका ही नहीं। और न बिना टिकटका कोई यात्री ही यूस्टन पहुँचा था। पहले से ही टिकट खरीद कर रखनेका प्रश्न भी नहीं उठ सकता था। क्योंकि इधर से भागनेकी बात ही नहीं

थी और इतनी दूरतक सोचकर कोई पहले टिकट खरीद कर रख भी नहीं सकता था।

मि० पिकाक तर्क करने लगे कि शायद इस तरह की संभावना समझ कर उन्होंने पहले से ही टिकट खरीद कर रख लिया हो। ऐसी हालत में इस बात को साबित करना कठिन होगा क्योंकि जितने पसेंजर थे उतना ही टिकट होगा। तो भी वे रुबी, कवेण्ट्री, लण्डन और बर्गिंघम के स्टेशनों से सप्ताह भर पहले से बेचे गये टिकटों की जाँच करने लगे कि शायद कोई वापसी टिकट का अद्धा मिल जाय तो उससे जाँच में सहायता मिलेगी। साथ ही उन्होंने अखबारों में एक अपील छपाई। इसी सिलसिले में मि० माण्टेगू एग भी इसमें आ गये! मि० पिकाक की अपील के उत्तर में उन्होंने निम्न लिखित पत्र भेजा:—

सेवा में,

चीफ कमिश्नर पुलिस

महोदय,

आज के समाचार पत्र में आप की अपीलसे यह मालूम हुआ कि आप उन लोगों का नाम और पता चाहते हैं जो चौथी तारीख को रात ६-५ की डाक गाड़ी से बर्गिंघम और लण्डन के बीच सफर किये हों। मैं आपको सूचित कर देना चाहता हूँ कि उसी गाड़ी से तीसरे दर्जे में मैंने कवेण्ट्री से यूस्टन तक का यात्रा की थी। मैं सदा आपकी सेवा के लिये प्रस्तुत हूँ। मैं पिकाडली के प्लमेट और रोज कम्पनी का एजेण्ट हूँ इसलिये मेरा स्थायी पता नहीं है। निकट भविष्य में मैं

जिन होटलों से ठहरूँगा उनका नाम और पता इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ।

आपका—

माण्टेगू एग,

इसी पत्र के फल स्वरूप एक दिन मि० माण्टेगू एग को अचानक मि० पिकाक के यहाँ से निमंत्रण आ गया।

ठीक समय पर मि० माण्टेगू एग मि० पिकाक के दफ्तर में हाजिर होकर बोले:—जो हुक्म हो उसे बजा लाने के लिये मैं हाजिर हूँ।

मि० पिकाक ने मि० एग के काम काज के बारे में अनेक सवाल किये और अन्त में पूछा कि आप इतनी रात को वहाँ क्यों आये ? मि० माण्टेगू ने बड़ी सफाई से सभी बातों का उत्तर देकर कहा कि मैं बहुत सबेरे ही स्टेशन पर आ गया था और गाड़ी के आते ही उसमें जाकर बैठ गया। इस गाड़ी में बड़ी भीड़ रहती है इसलिये जरा पहले आने से वाफियत की जगह मिल गई।

मि० पिकाक ने मुह बनाते हुए कहा—"हाँ भीड़ तो थी। मैं आपको बतला देना चाहता हूं कि उस गाड़ी से जितने आदमियों ने यात्रा की है मैं सबसे मिलकर बातचीत करना चाहता हूं।"

मि० माण्टेगू—काम तो बुरा नहीं है। लेकिन अब तक आपने कितनों से बातें की है।

"बहुतों से मिल चुका हूँ। इनमें कितने तो अफसर थे जो उस गाड़ी में थे भी नहीं, केवल नामवरी के लिये लिख दिया। अच्छा आप गाड़ी के किस हिस्से में थे ?"

गाड़ी के बिचले हिस्सेमें, डब्बे के बीचोबीच! आप जानते ही हैं कि दुर्घटना होने पर यही हिस्सा सबसे सुरक्षित माना जाता है। बरामदे की जगह कोने में इंजिन की तरफ मुँह करके मैं बैठा था। मेरे पीछे यार्क के पादरी थे। उनके साथ दो औरतें थी। उनके पहनावे को देखकर मुझे सन् १९०४ याद आ गया क्योंकि वही एक पुरानी चीज गाड़ी में थी, नहीं तो सब कुछ नया था।"

मि० पिकाक—"क्या आप बतला सकते हैं कि कवेण्ट्री में उस डब्बे में और कौन था।"

मि० माण्टेगू इस तरह अपना होंठ चबाने लगे मानों कुछ याद कर रहे हों। बोले:—"मेरी बगल में एक दो और मोटे और खल्वाट बैठे थे जो ऊँघ रहे थे। ये लोग वर्मिंघम से आ रहे थे। उनके बगल में एक छोकरा था जो बहुत ही चंचल था। कई बार तो उसने मेरा पैर कुचल दिया। किसी दफ्तर का किरानी मालूम होता था। कोने में एक जहाजी बैठा था। वह दूसरे कोने में बैठे हुए आदमी के साथ बराबर बातें करता रहा। यह देखने में किसी देहात का पादरी मालूम होता था, इसने कालर तो उलटा लगा लिया था। काला चश्मा लगाये था, मोंछे तनी थीं और बड़ा बातूनी था। उसके बगल में एक दूसरा आदमी बैठा था। उसके सिगार के धुएँ से दम घुट रहा था। कोई छोटा मोटा रोजगारी मालूम होता था। लेकिन मैं उसका चेहरा अच्छी तरह नहीं देख सका क्योंकि वह बराबर अखबार पढ़ता रहा। उसके पास एक बूढ़ा आदमी बैठा था। वह बहुत ही सीधा था। उसके लंबे केश चारों ओर बिखरे हुए थे। उसकी आँखों पर चश्मा था और वह किताबों में इस तरह

गढ़ा था मानों सारी फिलासफी उसी में हो। मेरे सामने एक दूसरा युवक था। वह पीले लबादे में था। उसको भूरी दाढ़ी थी। वह देखने में परदेशी मालूम होता था। यह और पादरी वर्मिंघम से ही सवार थे लेकिन अन्य दो मेरे बाद सवार हुए।"

मि० पिकाक ने अपनी डायरी के पन्नों को उलटते हुए कहा:—"आपकी याद की मैं तारीफ करता हूँ। आपके डब्बे में यात्रा करनेवाले अन्य सातों यात्रियों से आपका बयान एकदम मिलता जुलता है लेकिन इतना विस्तार-पूर्वक वर्णन किसी का नहीं था"

मि० एग—"ऐसा?"

मि० पिकाक—"मैं आपको यह बतला देना चाहता हूँ कि वह बूढ़ा आदमी लण्डन युनिवर्सिटी के प्रोफेसर ऐम्बुल फूट थे। उन्होंने आपका हुलिया यों बतलाया था:—सजीले केशवाला नेकचलन युवक।"

मि० एग—"मैं उनका कृतज्ञ हूँ।"

मि० पिकाक—जिन सातों की हुलिया आपने बताई है सबका पता मेरे पास है। मैं सबसे मिल चुका हूँ। सभी एबो के रहनेवाले थे। गाड़ी से उतर कर सभी अपने अपने घर चले गये। स्टेशन पर कोई भी नहीं रुका।

"ठीक है।"

मि० पिकाक—"इतने आदमी यहाँ आये, अपने अपने बयान दिये। उसके अनुसार मैंने जाँच की तो सभी का पता लग गया। मुझे एक भी आदमी ऐसा न मिला जो किसी ऐसे आदमी का हुलिया दे जो किसी निर्दिष्ट स्थान पर न पहुँचा

हो। क्या आपने किसी को गाड़ी के बरामदे में लगातार टहलते देखा था?"

"मि० एग—"लगातार तो नहीं, लेकिन वह दाढ़ीवाला युवक रह-रहकर उठकर खड़ा हो जाता था। वह चंचल था जैसे बेचैन था। लेकिन वह बाहर तो एक ही बार कुछ मिनटों के लिये गया था। वह बड़ा मनहूस दीखता था, रह-रहकर अपना नाखून दातों से काटता था और जर्मनी में कुछ बड़बड़ाता रहता था—"

"वह अपना नाखून चबाता था?"

"उसकी वह चाल मुझे बहुत बुरी लगी। नाखून को साफ सुथरा रखने से गाहक खुश रहते हैं लेकिन जिनके नाखून इस तरह कुतरे रहते हैं उन्हें देखकर गाहक भड़क जाते हैं। इसीलिये—" इतना कहते-कहते उन्होंने अपने नाखूनों को देखा और चुप हो गये।

"पर यह तो विचित्र बात आपने कही क्योंकि डाक्टर श्लाचर (यही दाढ़ीवाले का नाम था) के नाखून साफ सुथरे हैं। मैं कल ही उनसे मिलकर आया हूँ। एक ही दिन में नाखून चबाने की उनकी आदत छूट नहीं सकती थी। अच्छे लोग यह आदत कभी भी पसन्द नहीं करते। उनमें यह आदत कभी भी नहीं हो सकती। क्या आपने कोई और विशेष बातें उनमें देखीं।"

"और तो कुछ नहीं। लेकिन ठहरिये! वह सिगार बहुत ज्यादा पीता था। एक बार वह करीब आधा सिगार पीता हुआ बरामदे में गया और पाँच मिनट में ही लौटा तो उसके मुँह में

दूसरा सिगार था जो आधा से ज्यादा जल चुका था। उसके सिगार कीमती भी थे क्योंकि मुझे भी सिगार से शौक है।"

पिकाक ने एक बार घूरकर मि० एग की तरफ देखा और टेबुल पर अपना हाथ पटक कर बोले—इतना तो मैंने समझ लिया कि वह कौन था। अभी हाल में ही इस तरह के एक आदमी को मैंने देखा था। लेकिन वह कैसे········

मि० एग चुपचाप बैठे रहे।

पिकाक ने फिर कहना शुरू किया:—"वह मि० साइमन ग्राण्ट का सेक्रेटरी था। उस दिन सुबह से शाम तक वह शहर में था। पर मुझे क्या मालूम कि यह वही है! यदि वह था भी तो गाड़ी में इस तरह वेश बदल कर चलने से लाभ ही क्या था? और डाक्टर श्लीचर से उससे क्या सरोकार? हम लोग मि० साइमन ग्राण्ट की खोज में हैं और डा० श्लीचर मि० साइमन नहीं हो सकते।" मि० पिकाक क्षण भर कुछ सोचते रहे फिर बोले:—"डा० श्लीचर ही मि० साइमन नहीं हो सकते। यहाँ के सभी लोग उन्हें भली-भांति जानते हैं। यद्यपि वे परदेश ज्यादा रहते हैं पर उनकी पत्नी तो यहीं रहती हैं।

इस पर मि० एग ने कहा:—"ओह! वे पत्नीवाले भी हैं? मि० पिकाक मैं आप से एक सवाल पूछना चाहता हूँ। बुरा न मानियेगा। यदि कोई नकली दाढ़ी लगाकर आपके सामने अचानक आ जाय तो क्या आप उसे पहचान लेंगे?"

मि० पिकाक—यदि रोशनी पूरी रहे तो मैं पहचान लूँगा। पर आपका मतलब क्या है! यदि यह मान लिया जाय कि डा० श्लीचर ही मि० ग्राण्ट हैं तो वह आदमी कौन था जिसे नाखून चबाते हुए आपने गाड़ी में देखा था। ग्राण्ट को नाखून

चबाने की आदत नहीं है। उन्हें अपने वेष-भूषा और रहन-सहन का बहुत ज्यादा ध्यान रहता है। लोगों का ऐसा कहना है, मुझे कोई निजी ज्ञान नहीं है।

मि० एग—यदि आप मुझसे पूछना ही चाहते हैं तो मेरा कहना है कि वह आदमी तीनों क्यों नहीं हो सकता?"

"तीनों कौन?"

"ग्राण्ट, श्लीचर और सेक्रेटरी।"

"मैं आपकी बात नहीं समझ सका।"

"मेरे कहने का मतलब यह है कि यदि यह मान लिया जाय कि ग्राण्ट ही श्लीचर है जो इस तरह बनठन कर चलता फिरता है और तीन साल से इसी तरह घूम रहा है और श्लीचर के नाम से रुपया जमा करता जा रहा है। वह इस प्रतीक्षा में है कि जब मामला शान्त हो जाय तो अपनी पत्नी को लेकर एक दिन अपना रास्ता ले।"

"लेकिन सेक्रेटरी?"

"सेक्रेटरी ही तो गाड़ी में था। वही ग्राण्ट भी है, वही श्लीचर भी है।"

"लेकिन श्लीचर या ग्राण्ट कहाँ था!"

"वह भी गाड़ी में ही था।"

"क्या आपका कहना है कि दोनों उसी गाड़ी में थे?"

हाँ, मेरा यही ख्याल है। मैं जोर देकर कुछ कहना नहीं चाहता। आप स्वयं इसका निर्णय कर सकते हैं। सेक्रेटरी श्लीचर के रूप में बर्मिंघम से चलता है और ग्राण्ट, ग्राण्ट बनकर कवेण्ट्री से चलता है। कवेण्ट्री और एबी के बीच ग्राण्ट श्लीचर बन जाता है और प्लेटफार्म पर या बरामदे में टहलता रहता है

जब तक कि गाड़ी खुलती नहीं। वह फिर कहीं छिप जाता है। पूर्व निश्चय के अनुसार सेक्रेटरी अपनी जगह से उठता है, बरामदे में टहलने लगता है और कहीं अन्यत्र चला जाता है। ग्राण्ट आकर उसकी जगह बैठ जाता है। उसके बाद ग्राण्ट बरामदे में चला जाता है और सेक्रेटरी उस डब्बे में आता है। दोनों एक साथ कभी भी दिखाई नहीं देते। सिर्फ दो तीन मिनिट के लिये एकी स्टेशन पर यह संभव था जब ग्राण्ट गाड़ी में सवार हो रहा था। पर लोग तो यही कहेंगे कि श्लीचर बर्मिंघम में सवार हुए, बराबर अपने स्थान पर बैठे रहे और यूस्टन उतर कर सीधे अपने घर चले गये। दोनों श्लीचर में सिगार को छोड़ कर मैंने कोई भेद नहीं देखा।"

चीफ इन्स्पेक्टर इस बात को अपने मन में बैठाने लगे। बोले—यूस्टन पर जब दोनों उतरे तो श्लीचरके वेषमें कौन था ?

"ग्राण्ट ! क्योंकि सेक्रेटरी ने अन्त समय में अपना असली रूप धारण कर लिया होगा। यदि उसे कोई पहचान भी ले तो कोई हानि नहीं थी।"

पिकाक—यदि इस तरह की कोई बात हुई है तो उसका भी पता तुरन्त लग जायगा। तब तो यूस्टन में एक फाजिल तीसरे दर्जे का टिकट जरूर होना चाहिये। क्योंकि एक ही टिकट पर तो दोनों की यात्रा नहीं होती होगी।"

"यह भी संभव है। मैंने स्वयं कई बार ऐसा किया है। रेलवे कम्पनी को ठगने की नीयत से नहीं, बल्कि अपने एक साथी को यह दिखलाने के लिये कि उसके ही टिकट पर मैं बेदाग सफर कर सकता हूँ।"

"तब आप अपनी तरकीब का वर्णन तो कीजिये !"

"यदि मैं मि० ग्राण्ट का सेक्रेटरी होता तो मैं बर्मिघम से लण्डन का वापसी टिकट लेता। जब एवी स्टेशन पर जाने वाला हिस्सा जांच लिया जाता तो मैं उसे जेब में रखने का बहाना करता। लेकिन मैं उसे जेब में कभी भी न रखता। मैं उसे अपनी जगह पर गद्दे में घुसेड़ देता और टहलने चला जाता। पहचान के लिये मैं वहां पर अपनी कोई चीज रख देता। मि० ग्राण्ट दूसरी तरफ से टहलते आते, वहीं बैठ जाते और उस टिकट को उठाकर रख लेते। जब उतरने वाला स्टेशन नजदीक आता तो मैं अपनी बनावटी मोंछ और दाढ़ी उतार कर ओवरकोट की जेब में रख लेता और उसे कन्धे पर रखकर चलता बनता। गाड़ी से उतर कर मैं ग्राण्ट की प्रतीक्षा करता और उनके पीछे हो लेता। फाटक तक उनसे थोड़ी दूर पर रहता। वह अपना टिकट देकर बाहर चले जाते और मैं भीड़ में घुस कर धक्कम-धुक्की कर बाहर होने लगता। टिकट कलक्टर मुझे रोक कर कहता आपका टिकट कहां है। मैं उत्तर दे देता—दिया है। वह कहता मैंने नहीं पाया है! आप यहीं खड़े रहिये। तब तक मैं दूसरों का टिकट ले लूँ। मैं बिगड़ जाता। वापसी का आधा टिकट निकाल कर पेश करता और उसे उसका दूसरा आधा अपने टिकटों में देखने के लिये कहता। वह अपने टिकटों में देखता और पहले आधे को पाकर शर्मा जाता और माफी मांगते हुए मुझे छोड़ देता। यदि उसे शक भी होता तो वह कुछ कह नहीं सकता था क्योंकि मेरे पास सबूत मौजूद था, और मेरे साथी निकल कर चले जा चुके थे।

मि० पिकाक—आपने इस तरह का खेल कितनी बार किया है?

मि० एग—एक ही स्टेशन पर दो बार कभी भी नहीं। क्योंकि एक ही जगह इसे दोहराने में पकड़े जाने का खतरा रहता है।

मि० पिकाक ने व्यग्रता से कहा—अच्छा होगा कि मैं डाक्टर श्लीचर और उसके सेक्रेटरी से फिर मिलूँ। यदि आयरिश मेल लण्डन एक्सप्रेस से पहले नहीं चली गई होती तब तो मैं यही मान लेता कि मि० साइमन ग्राण्ट आयरिश मेल से चले गये। कभी कभी चोर इतने जबर्दस्त निकल आते हैं कि हम लोगों को हार खानी पड़ती है। मुझे आपको नेक सलाह देनी है।—इस तरह रेलवे कम्पनियों को ठगने की बुरी आदत न डालिये, नहीं तो संकट में पड़ जाना पड़ेगा।

इस पर मि० माण्टेगू एग ने हँसते हुए कहा—आप मेरी चिन्ता छोड़ दें। अपना काम सम्हालें! अभी आपको बहुत ठोकर खाना है।

तीन कुंजी (हीरे की चोरी)

हैटन बाग के एक तल्ले के एक कमरे में दो व्यक्ति दो टेबुल के पास अलग-अलग बैठे हैं। दोनों मौन हैं। हिलते-डोलते तक नहीं, केवल एक दूसरे को घूर रहे हैं। कमरे के एक कोने में नये तर्ज की एक तिजोरी दीवार से लगी खड़ी है। तिजोरी तथा उसके नीचेके चारों दराज खुले पड़े हैं। दोनों व्यक्तियों का ध्यान उसी तिजोरी पर है। उसी को लेकर बीस मिनिट पहले तक दोनों में घनघोर बहस चल रही थी। बहस के बाद से दोनों चुप हैं। दफ्तर की चहल-पहल और घड़ी की आवाज ही कभी-कभी इस सन्नाटे को भंग करती रहती है।

पहनावा के अतिरिक्त दोनों में और कोई मिलान नहीं था। एक अधेड़, नाटा मोटा तथा सांवले रंग का था, दूसरा युवक, लंबा पतला और काला था। दोनों कोई निकट संबंधी नहीं थे, लेकिन तीस साल से दोनों घनिष्ट मित्र थे।

सीढ़ी पर किसी के पैर की आहट मालूम हुई। उसके बाद ही दरवाजा खड़का और एक युवक को लिये एक छोटा लड़का कमरे में आया।

आगन्तुक स्काटलैण्ड यार्ड का खुफिया दारोगा पूल था। वे दोनों व्यक्ति लेवी वर्ज और फिलिप कम्पनी के हिस्सेदार थे। दारोगा ने कहा:—आपने पुलिस की मदद मांगी है?

इतना सुनते ही दोनों भागीदार बकने लगे। पर थोड़ी देर के बाद चुप हो गये और एक दूसरे को घूरने लगे। दारोगा ने

कहा—"अच्छा तो यह होगा कि मैं आप लोगों का बयान अलग-अलग लूँ।"

अपने मनके सन्देह को बड़ी कठिनाई से रोककर दुबले-पतले मि० वर्ज वहां से हट गये और तगड़े मि० लेवी ने अपना बयान देना शुरू किया।

"हम लोग हीरे के व्यापारी हैं। तीस साल से हमलोग यही काम कर रहे हैं। इस कम्पनी के तीन हिस्सेदार थे। मैं अरान और वज ! १५ साल से जार्ज फिलिप भी साझीदार हो गये हैं। जब यूरोपीय युद्ध हुआ तो जर्मन होने के कारण अरान कैद कर लिया गया, व्यापार की हालत बिगड़ने लगी। उसी हालत में जार्ज फिलिप ने रुपया लगाकर इसे सम्हाला और साझीदार बन गये। कुछ दिन बाद जार्ज फिलिप का भाई बतौर क्लर्क के यहां काम करने लगा।

पूल—क्या आप के साझीदार मि० फिलिप इस समय यहां हैं ?

लेवी—"कल रात को अपने भाई के साथ वे ईस्टरकी छुट्टी मनाने चले गये !"

"और दूकान की देख रेख का भार आप और मि० जार्ज पर छोड़ गये।"

"हां, हम लोग इसाई नहीं हैं, इसलिये ईस्टर की छुट्टी की जरूरत हम लोगों को नहीं थी।

साधारणतः इस तिजोरी में हम लोग खरादे और बिना खरादे पांच हजार से बीस हजार पाउण्ड तक के हीरे रखते हैं। इधर हम लोग एक बड़े गाहक से बात चीत कर रहे थे क्योंकि हम लोगों के पास कुछ बड़े बेशकीमती हीरे आ गये थे। कल

शाम तक इस तिजोरी में करीब तीस हजार पाउण्ड के हीरे थे। आज तीसरे पहर तिजोरी खोला तो एक भी नादारत !

इतना कहते कहते बूढ़ा उत्तेजित हो गया और उसके होंठ कांपने लगे।

"कल रात को तिजोरी को किसने बन्द किया था ?"

"इस बात को जरा विस्तार से कहने को जरूरत है। इस तिजोरी की तीन कुंजियां हैं। दोसे तिजोरी खुलती है और एक से उसके दराज, जिनमें हीरे रखे जाते हैं। तिजोरीके ऊपरी भाग में सिर्फ खाता और जरूरी कागजात रखे जाते हैं। तिजोरी की कुंजी वर्ज और फिलिप के पास रहती है और दराज की कुंजी मेरे पास। मेरे पास तिजोरी की कुंजी नहीं रहती। एक बार दराज और तिजोरी बन्द कर देने पर कोई भी एक आदमी दराज नहीं खोल सकता। वह तभी खुल सकता है जब मैं और फिलिप या मैं और वर्ज रहूँ। कुञ्जी सदा हम लोगों के पास रहती है। हम लोग इसे खोलने के लिये कभी भी किसी दूसरे को नहीं देते। जिसके पास जो कुञ्जी है उससे वही खोलता है। हिफाजत का सबसे उत्तम तरीका यही समझा गया।"

दारोगा ने खुली तिजोरी की तरफ देख कर अपने मन में कहा:—लेकिन यह तरीका भी पूरा सफल नहीं निकला।"

"कल तीसरे पहर वर्ज किसी काम से वर्मिंघम गया था। मैं और फिलिप ने शाम को रोकड़ मिलाया। उसके बाद मैंने दराज बन्द किया और फिलिप ने तिजोरी। इसके बाद हम दोनों साथ ही यहां से चले गये।

"आपने फिलिप को तिजोरी बन्द करते देखा था ?"

"जब हम दराज बन्द करते हैं तो वे हिला डुला कर देख लेते हैं। यह साधारण नियम है।"

"आप लोग इस कमरे को सूना छोड़ कर चले गये। इसमें दूसरा कोई नहीं था।"

"नहीं, इस कमरे की कुञ्जी इस लड़के को छोड़कर हम सब लोगों के पास है। क्लर्क के पास भी एक कुञ्जी है। मैं रात को यहीं सोता हूँ पर कभी कभो तीन चार घंटे तक गायब भी रहता हूँ। तिजोरी बनाने वाले का कहना है कि कुञ्जी के गुम हो जाने पर किसी भी उपाय से इसे खोलने में ६ घंटा से कम नहीं लगेंगे।"

पूल ने अपना सिर हिला दिया। मि० लेवी उसी तरह कहते गये—

"यहाँ से हम दोनों बाजार गये और ब्रिटिश स्पोर्ट क्लब में टर्किश स्नान किया। हम दोनों मोटे होते जा रहे हैं। इसलिये हर पन्द्रहवें दिन इस तरह का स्नान हम लोग लेते हैं। हम लोग प्रायः ६ बजे वहां पहुँचे और साढ़े सात बजे वहां से रवाना हुए। मैं लौट आया..................

"जब आप स्नान कर रहे थे उस समय आपकी कुँजी कहां थी?"

"मेरे पाकेट बुक के साथ एक ड्रावर में बन्द थी। उसकी रखवारी वह नौकर करता था जो हमें तौलिया देता है।

"और उस दराज की कुञ्जी?"

"वह मेरे कपड़ों में थी।"

"जब आपने कपड़े पहने तब भी वह उसी में थी।"

"हाँ।"

"स्नान करने के बाद आपका पाकिट बुक और आपकी कुञ्जी ठीक-ठीक मिल गई।"

"हाँ।"

उसके बाद मि० लेवी ने बतलाया कि वे किस तरह वापस आये, तिजोरी को आजमाया, उसे बन्द पाया, भोजन किया और एक पुस्तक लेकर आराम करने चले गये। सबेरे वे बाजार चले गये और दफ्तर में सिर्फ वर्ज रह गये थे। तीसरे पहर एक गाहक आ गया और उसे हीरा दिखाने के लिये तिजोरी खोली गई तो वह इसी हालत में मिली जिस हालत में मि० पूल उसे देख रहे थे।

"क्या उस वक्त भी दराज बन्द थे?"

"हाँ, दराज बन्द थे लेकिन खाली थे।"

"आप कुछ अनुमान कर सकते हैं?"

मि० लेवी ने वर्ज के टेबुल की तरफ इशारा करते हुए कहा :—

"दूसरा कौन यह काम कर सकता है। कल रात को मैंने उन्हें बन्द किया और आज जब वह अकेले दफ्तर में था तब हीरे गायब हो गये।"

"लेकिन दराज की कुञ्जी तो आपके पास रहती है।"

"किसी वक्त कुञ्जी उसके हाथ लग गई होगी और उसने दूसरी कुञ्जी बनवा ली होगी।

इतना कहते-कहते यहूदी लेवी का चेहरा लाल हो गया। उसने गुर्रा कर कहा:—ऐसी घटना कभी नहीं घटी थी। आप उन्हें रोकने का यत्न करें। यदि वे अमस्टर्डम पहुँच गये तो फिर वे हाथ से निकल जायंगे।

"अमस्टडेम ?"

हां, अमस्टर्डम खराद के लिये। खराद दिये जाने पर वे पहचाने नहीं जा सकते। वान डालिंग या जूम्ट कोई भी उन्हें बिना चूं किये भेज सकता ह।"

मि० पूल ने तुरन्त कोई कार्रवाई करना आवश्यक समझा इसलिये मि० लेवी से और कुछ पूछताछ करना छोड़ कर उसने मि० वर्ज को बुलाया। मि० वर्ज की कहानी भी इसी तरह की थी। उन्होंने फिलिप और लेवी को चोर ठहराया और कहा कि रात को ही वे लोग हीरा चुरा ले गये। और छुट्टी मनाने के बहाने फिलिप हीरा लेकर अमस्टर्डम चला गया। हीरों के अमस्टर्डम भेजे जाने के बारे में दोनों की राय एक थी।

मि० पूल ने वर्ज से पूछा:—क्या मि० फिलिप ने बतलाया था कि वे कहां जा रहे हैं ?"

"उन्होंने कहा था कि मछली का शिकार करने वे ह्विटचर्च-झील जा रहे हैं।"

घटना स्थल पर पहुँचते ही मि० पूल ने टेलीफून ... एक फोटोग्राफर, सर्जेण्ट गोवर तथा दो सादी वर्दीवाले पुलिस को बुला लिया था। तिजोरी तथा दराज पर अंगुली के जो निशान मशाला लगाने से उभरे उनका फोटो लिया और सादी वर्दी वाले दोनों पुलिस को आदेश दिया कि यहां से कुछ दूर रह कर वे दोनों भागीदारों पर नजर रखें! सार्जेण्ट गोवर को हालैण्ड रवाना किया वहाँ से पूल। अपने दफ्तर में आकर अमस्टर्डम के पुलिस विभाग को टेलीफून किया! वहां की पुलिस ने हीरा खरादने वालों की तालिका इन्हें दी और उनकी कड़ी निगरानी करने का वादा किया।

इस काम से छुट्टी पाकर मि० पूल ब्रिटिश स्पोर्ट क्लब पहुंचे। क्लब की सजावट देखकर मि० पूल चकित हो गये। उन्होंने वहां ऐसे लोगों को आनन्द मनाते देखा जिनको अन्यत्र गुजर नहीं हो सकती थी।

सेक्रेटरी से मिलकर उन्होंने टर्किश स्नान की इच्छा प्रकट की। उसने सारा प्रबन्ध कर दिया। वहां जाकर उन्होंने लोगों की विचित्र भीड़ देखी। दो शिलिंग फीस देकर मि० पूल ने टिकट और तौलिया लिया। एक दूसरे स्नानार्थी ने एक दराज में अपना रुपया पैसा रख दिया। साथ ही चपरासी ने दराज बन्द कर कुञ्जी उन्हें दे दी। स्नानागार के दरवाजे पर टिकट लेने के लिये एक आदमी खड़ा था। जो टिकट देते थे उन्हें वह अन्दर जाने देता था। भीतर छोटे-छोटे खाने बने थे जो परदे से घेरे थे। यदि दो दोस्त आमने सामने स्नान करना चाहते थे तो परदा हटा दिया जाता था। टर्किश स्नान और तैरने वाले दोनों के लिये एक ही टिकट घर और तौलिया घर था।

वहाँ के चपरासी से मालूम हुआ कि कल शामको मि० लेवी और फिलिप दोनों ने टर्किश स्नान का टिकट लिया था। वे पुराने ग्राहक थे। इसलिये वह उन्हें मजे में पहचानता था। दोनों को अपने अपने सामान रखने के लिये उसने दो दराज दिये थे। दराज बन्द कर उसकी कुंजी उसने उनके हवाले कर दी थी। किस दराज में उनके सामान बन्द थे वह उसे नहीं याद था। उसी समय एक ग्राहक ने दराज की कुञ्जी उसे दी तो उसने दराज खोलकर उनका सारा सामान निकाल कर उनके हवाले कर दिया! मि० लेवी और फिलिपके दराज उसने कल नहीं खोले थे क्योंकि वह सात से आठ बजे तक गैरहाजिर था। वे

साढ़े सात बजे बाहर निकले थे इसलिये जो पहरेदार उस समय था वही ठीक-ठीक बतला सकता था।

टर्किश स्नानागार के दरवाजे पर जो पहरेदार था उसने इन दोनों सज्जनों के आने और जाने का वही समय बतलाया—अर्थात् ६ और ७-३० जो लेवी ने बतलाया था। इस बीच में न तो वे लोग स्नानागार से बाहर ही निकले थे और न किसी से भेंट ही की थी। भीतर जाने का कोई दूसरा दरवाजा भी नहीं था।

वहां से निपट कर मि० पूल क्लब के दफ्तर में आये और वहां क्लब के सेक्रेटरी ने उन्हें बतलाया कि प्रायः ६ मास से फिलिप का भाई—हैरोल्ड फिलिप भी इस क्लब का सदस्य बन गया है। टिकट और तौलिया वाले दफ्तर का खानसामा मि० हैरोल्ड फिलिप को नहीं पहचानता था। टर्किश स्नानागार का खानसामा उन्हें पहचानता था लेकिन कल शाम को उसने उन्हें वहां नहीं देखा था।

सदर फाटक के दरवान ने सात बजे के बाद मि० हैरोल्ड फिलिप को क्लब में आते हुए देखा था। लेकिन उनके आने का वह ठीक वक्त नहीं बतला सकता था क्योंकि इतने ज्यादा मैंबर हैं कि उनके आने जाने का वक्त नहीं दर्ज किया जाता।

क्लब में जो कुछ सबूत मिले उससे मि० पूल ने अपने मन में इतना तो स्थिर कर लिया कि इस चोरी में फिलिप बन्धु का ही हाथ होने की ज्यादा संभावना है, इन दोनों हिस्सेदारों का नहीं। ईस्टर की छुट्टियों का पूरा उपयोग किया गया है कि इसी बहाने उनमें से एक अमस्टर्डम चला जायगा और हीरों को बेंच आवेगा। यदि यह बात न होती तो हैरोल्ड फिलिप को ऐसे समय

क्लब में जाने की क्या जरूरत थी जब मि० लेवी अपनी कुंजी अपने से अलग करके स्नान कर रहा था और जार्ज फिलिप वहां मौजूद थे। अब इस बात का पता लगाना है कि मि० लेवी की कुंजी इनके हाथ में क्योंकर आई क्योंकि अभी तक जो सबूत मिले हैं उससे तो यही साबित होता है कि न तो मि० हैरोल्ड फिलिप टर्किश स्नानागार में गये और न मि० जार्ज फिलिप स्नानागार से बाहर ही आये। जब मि० लेवी स्नान कर रहे थे उस समय क्लब के उस दराज की कुंजी ले लेना मि० जार्ज फिलिप के लिये आसान था। लेकिन इतने से ही तो काम नहीं चल सकता था। तिजोरी के दराज की कुंजी भी तो फिलिप को निकालना था। यदि यह बात होती तो स्नानागार से निकलने पर वह लेवी को न मिलती। इसके साथ ही लेवी वहां से सीधे दफ्तर गया था और बराबर वहीं था। इसलिये उस वक्त तिजोरी का खोला जाना सम्भव नहीं था।

क्लब से आकर मि० पूल आगे की बात सोचने लगे। सबसे पहला काम था फिलिप बन्धु का पता लगाना। इस बात की टोह लेना कि उनमें से कोई अमस्टर्डम तो नहीं गया है, क्योंकि उनकी पक्की धारणा थी कि डाक से ये हीरे कभी नहीं भेजे जायंगे क्योंकि हीरा खरीदने वालों पर पुलिस की कड़ी निगरानी रहती है।

सबसे पहले मि० पूलने दोनों भाइयों का फोटो प्राप्त करना आवश्यक समझा। इस लिये वे उनके डेरे पर गये। सौभाग्यवश उनका नौकर डेरे पर ही था। उससे मालूम हुआ कि दोनों भाई करीब नौ बजे रात को वापस आये और अपना असबाब बांधने लगे। आज सबेरे मि० हैरोल्ड फिलिप आठ बजे

के ठीक बाद ही अपने मोटर साइकिल पर ह्विटचर्च झील के लिये रवाना होगये और मि० जार्ज फिलिप साढ़े नौ बजे वाटरलू स्टेशन गये। वे वहां बुल सराय में ठहरेंगे। चलते समय दोनों प्रसन्न चित्त थे।

इसके बाद वह मि० पूल को फिलिप बन्धु की बैठक में ले गये भाग्यवश दोनों का चित्र कमरे में टंगा था। उससे एक फोटो मि० पूलने लेलिया कि स्काटलैण्ड यार्ड में इसे दुरुस्त कर इसकी कापी फौरन अमस्टर्डम भेज देंगे।

मि० पूल के मनमें यह आशंका भी उठी कि कहीं वह हवाई जहाज से न गया हो। इस लिये वे तुरत हवाई अड्डे पर पहुँच कर जांच पड़ताल करने लगे। वहां उन्हें मालूम हुआ कि साढ़े ग्यारह बजे एक हवाई जहाज अमस्टर्डम के लिये रवाना हुआ है जो दो बजे दिन को वहां पहुंच गया होगा। सब यात्रियों ने अपनी जगहें पहले से ही रिजर्व करा ली थीं। नया पैसेंजर कोई भी नहीं था। फिलिप बन्धु का चित्र देख कर उन लोगों ने यह भी बतलाया कि इस शकल सूरत और नाम का कोई भी यात्री जहाज में नहीं था।

यहां से पूल वाटरलू स्टेशन गये और वहाँ से विट चर्च झील के लिये रवाना हुए। वहां वह ७'४५ में पहुँचे। उसी सराय में उन्होंने डेरा डाला। जिस समय वे पहुंचे उन्होंने देखा कि प्रायः सभी आगन्तुक भोजन समाप्त कर जाने की तैयारी किये हैं। वहीं एक कोने में उसने फिलिप बन्धु को देखा जो बैठे बात चीत कर रहे थे।

मि० पूल भोजन करने बैठ गये और फिलिप बन्धु दूसरे कमरे में ताश खेलने चले गये। भोजन के बाद सुस्थ होकर मि०

पड़ गया था। उन्होंने अपने साथी को वह
जहाँ दो दिन पहलेवाली शाम को उन्होंने तथा मि० [illegible] ठीक
स्नान करने के लिये कपड़े बदले थे। उन्होंने वह स्थान के
दिखलाया जहाँ दोनों ने खूंटी पर अपने अपने कपड़े टाँगें थे।
दोनों में फुट दो फुट का फासला था।

यह सब देखकर पूल ने पूछा:—"पहले कपड़ा किसने उतारा?"

फिलिप—यह तो मुझे याद नहीं है।

तब पूल ने नौकर से पूछा "क्या तुम बतला सकते हो?"

उसने कहा!—जी हाँ, पहले दूसरे सज्जन ने कपड़ा उतारा और वे स्नानागार में चले गये। उनके जाने के दो मिनिट बाद मि० फिलिप गये।

"क्या वे सीधे स्नानागार में चले गये?

"जहाँ तक मुझे याद है वे पहले पे[illegible] में गये।"

"जरा वह जगह तो मुझे दिखलाओ।"

सब लोग उधर ही चले। कपड़ा बदलने वाले कमरे के बगल में ही पेशाबखाना था। पेशा[illegible] थी। हाथ मुँह धोने के सभी सामान [illegible] उस तरफ की दीवाल छत तक नहीं गई थी। [illegible] के ख्याल से उसे नीचा ही रख दिया गया था।

मि० पूल ने घुड़क कर पूछा:—मि० [illegible]! आप यहाँ आये थे!

जार्ज फिलिप ने पूल की तरफ घूम कर देखा लेकिन उसके कुछ कहने के पहले ही संगमर्मर के फर्श पर किसी चीज के

...ज हुई। सबों ने देखा कि एक कुंजी फर्श पर ... है।

... पूल ने कहा :—क्या इसी तरह तुम्हारे भाई ने मि० लेवीकी कुंजी तुम्हें नहीं दी थी ?

फिलिप कूद कर दरवाजे की तरफ आया और भाग कर निकल जाना चाहा लेकिन खुफिया के कांस्टेबुल राउटन ने उसे पकड़ लिया !

पूल ने ट्रेवर से कहा :—उस दूसरे आदमी को हाजिर करो।

ट्रेवर ने एक दूसरे कान्सटेबुल के साथ हेरोल्ड फिलिप को पेश किया। दोनों भाइयों ने इशारे से चुप रहने का निश्चय किया !

× × ×

मि० पूल ने अपने अफसर से घटना का इस प्रकार बयान किया :—जब पहले दिन मैं टर्किश स्नानागार की जांच करने गया तो मैंने उसमें एक ही दरवाजा पाया। मुझे यह भी मालूम हुआ कि स्नानागार में जाने के बाद जार्ज फिलिप बीच में दरवाजे के पास नहीं आया ! इसलिये मुझे विश्वास नहीं हुआ कि उसने मि० लेवी की कुंजी किसी बाहरवाले को दी होगी। लेकिन जब मुझे यह मालूम हुआ कि उसका भाई हेरोल्ड उसी समय क्लब में गया था और टर्किश स्नानागार के बगल में तैर रहा था तब मेरा सन्देह बढ़ने लगा। जब मैं दूसरी बार वहाँ गया तो मैंने देखा कि दोनों जगहों के पेशाब घर सटे हुए हैं और बीच वाली दीवाल छत से सटी नहीं है। बल्कि हवा और रोशनी के ख्याल से उसे नीचा ही रखा गया है।

हेरोल्ड क्लब में किस समय पहुँचा इसका पता लगाना कठिन था क्योंकि इतनी भीड़ में मेम्बरों के आने जाने का ठीक समय याद रखना कठिन है। और कभी कभी एक जगह के नौकर दूसरी जगह भेज दिये जाते हैं या खाने पीने को उन्हें छुट्टी दे दी जाती है और उनका काम दूसरा करने लगता है। उस दिन भी वैसा ही हुआ था। लेवी और जार्ज तिजोरी बन्द करके अपने दफ्तर से क्लब गये वहां जाकर लेवी ने अपना सारा सामान क्लब के दराज में बन्द कर दिया और कुंजी ले ली। जार्ज ने भी वैसा ही किया लेकिन तिजोरी की कुंजी इन्होंने अपने पास रखी। स्नानागार में घुसने के लिये जब दोनों ने कपड़े बदले तब किसी बहाने से जार्ज बाहर रह गया और लेवी भीतर चला गया। इसी वक्त जार्ज ने क्लब के दराज की कुंजी इनकी जेब से निकाल ली और पेशाबखाने में चला गया।

इधर आध घंटा पहले से ही हेरोल्ड वहाँ पहुँचा था। अपनी सफाई के लिये थोड़ी देर तक बिलियर्ड खेलता रहा। उसके बाद नहाने चला गया। कपड़ा बदल कर चाहे वह तालाब में कूदा या सीधे पेशाबखाने में घुस गया और जार्ज की प्रतीक्षा करता रहा। स्नानागार के पेशाबखाने में पहुँच कर जार्ज ने सीटी बजाई। उसके उत्तर में हेरोल्ड ने सीटी बजाई (यह मेरा अनुमान है) इसके बाद जार्ज ने तिजोरी की तथा लेवी के क्लब वाले दराज की कुंजी दीवाल के ऊपर से इसे थमा दी। वहाँ से हेरोल्ड सीधे कपड़ा बदलने वाले कमरे में गया और दराज की कुंजी नौकर को थमा दी। वहाँ उस समय इतनी भीड़ रहती है कि नौकरों को यह जानना कठिन हो जाता है कि किसने किसकी कुंजी दी। जिसने कुंजी थमाई उसी नम्बर

और दराज खोल कर वह उसका सामान उसके हवाले कर देता है।

इस तरह तिजोरी और दराज की कुंजी लेकर हेरोल्ड वहाँ से चम्पत होता है और हैटन बाग में पहुँचता है, तिजोरी और दराज खोलता है, हीरा निकाल कर फिर उसी तरह दराज और तिजोरी बन्द कर देता है और क्लब की ओर भागता है। वह सात बजे वहाँ पहुँचता है। लेवी की कुंजी, पाकेट बुक वगैरह दरबान को देता है वह उसे दूसरे दराज में बन्द कर उसकी कुंजी वापस कर देता है। हेरोल्ड कुंजी लेकर स्विमिंग क्लब की तरफ जाता है वहाँ से वह पेशाबखाने में घुसता है और उसी तरह कुंजी जार्ज को वापस कर देता है। कपड़ा पहनते समय जार्ज धीरे से कुंजी लेवी के पैण्ट की जेब में रख देता है। लेवी अपनी सब चीजें ठीक ठीक पा जाता है इसलिये वह यह नहीं देखता कि उसे किस दराज से मिली है। इधर हेरोल्ड अपनी कुंजी से अपना सामान दराज से निकालता है और अमस्टर्डम का रास्ता लेता है।

अन्त में वह पकड़ा जाता है और जेल की सजा पाता है।

मि० लैमटन-ग्रीन लण्डन स्काटिश मिडलैण्ड बंक के एक शाखा के मैनेजर थे। यह शाखा पैल स्ट्रीट और फलिंग एवन्यू के नोकड़ पर था। इस बंक का कारबार बहुत लम्बा चौड़ा था। बड़ी-बड़ी कम्पनियों का कारबार इससे होता था, जैसे, लूनर ट्रैक्शन कम्पनी, जिसमें तीन हजार आदमी काम करते थे, दी असोसियेटेड नोवेल्टी कारपोरेशन। यह भी एक बड़ा भारी कारखाना था और लाशफोन कम्पनी।

वोफे के दिन इन कारखानों के कर्मचारियों का वेतन दिन

था। इसलिये हजारों रुपये प्रधान कार्यालय से लाकर यहां रखे गये। जिस कमरे में नगद रुपये रखे जाते थे वह खास तौर से बनाया गया था। इसे बंक वाले स्ट्रांगरूम कहते हैं। यह कमरा मि० ग्रीन के दफ्तर के ठीक नीचे था। लेकिन इसके भीतर जाने का रास्ता सदर दफ्तर से था। इसके दरवाजे लोहे के बने थे। यह दरवाजा सड़क से दिखाई देता था। इस काम में सहायता पहुँचाने के लिये दरवाजे के ठीक ऊपर एक तेज रोशनी दीवाल से टंगी रहती थी। जिसका तेज प्रकाश बराबर दरवाजे पर पड़ता रहता था। रात के लिये मैलिंग नाम का एक पहरेदार यहां पहरा दिया करता था। मैलिंग सेना विभाग से पेंसन पाता था।

इस बंक के पास वाले थाने से प्रबन्ध कर दिया गया था कि हर ४० मिनिट पर पुलिस कांस्टेबुल बंक की तरफ से अवश्य ही गुजरेगा। बंक के सामने आकर वह रुक जायगा और मैलिंग को पहरा पर मुस्तैद देखकर ही आगे बढ़ेगा।

सत्रहवीं अक्टूबर की रात में कांस्टेबुल बर्नेट की ड्यूटी बंक वाले सड़क पर थी। नियमानुसार वह बंक के सामने आकर खड़ा हो गया और भीतर की तरफ झांकने लगा। उसे यह देख कर विस्मय हुआ कि स्ट्रांगरूम के फाटक पर वाला लंप बुझा हुआ था। बंक के पहरेदार का पता नहीं था। बर्नेट को दाल में काला मालूम हुआ इसलिये वह मैलिंग की प्रतीक्षा में ठहरा नहीं बल्कि सदर फाटक के पास वाली खिड़की पर गया। वहां जाकर उसने जो कुछ देखा उससे उसके विस्मय की सीमा नहीं रही। उसने देखा कि बंक का सदर फाटक खुला पड़ा है। वह धक्का

देकर भीतर घुस गया, मैलिंग को पुकारने लगा पर कोई उत्तर नहीं मिला।

भीतर घुसते ही उसे किसी चीज की मीठी महक मालूम पड़ी। सदर दफ्तर एक दम खाली था। इसलिये वह मैनेजर के दफ्तर की ओर बढ़ा। टेबुल पर जलते हुए लम्प के मन्द प्रकाश में उसने देखा कि फर्श पर कोई आदमीका चित्र पड़ा है। नजदीक जाकर देखने पर उसने पहचाना, वह मैलिंग था। उसके हाथ में हथकड़ियां थीं। उसकी टांगें रस्सी से बंधी थीं। उसके सिरहाने तस्वीरवाली खूंटी से एक तार बंधा था। उसमें एक पोटला लटक रही थी। उस पोटली से कोई रस टपक कर मैलिंग की नाक पर गिर रहा था—जो मोटे कपड़े से बंधा हुआ था।

बर्नेट को यह समझने में देर नहीं लगी कि वह रस क्लोरोफार्म का था और उसी की महक चारों ओर फैल रही थी। वह बेहोश मैलिंग को बाहर खींच लाया। उसके मुंह और नाक पर से कपड़ा हटा दिया और पुलिस दफ्तर को टेलीफोन करके उसे होश में लाने का यत्न करने लगा।

बात की बात में डिविजनल सार्जेंट पुलिस के दलबल के साथ घटना स्थल पर आ पहुंचे। बेहोश मैलिंग को होश में लाने का भरपूर यत्न किया गया लेकिन कुछ फल नहीं निकला। पुलिस विभाग के डाक्टर ने रिपोर्ट दी कि वह बहुत पहले ही मर चुका था। जांच में उसकी दाहिनी हथेली पर खरोज के कई निशान मिले। डाक्टर ने उसकी हथेली फैला दी। खरोच ताजे थे क्योंकि उनमें खून भरा था।

बंक के मैनेजर मि० ग्रीन को बुलाने के लिये बर्नेट भेजा गया फाटक से होकर बर्नेट ज्योंही आहाते में घुसा उसने कोच के भीतर से उनके कमरे में रोशनी जलते देखा। हुंकारा देते ही दरवाजा खुल गया और कपड़े लत्तो से सजग मि० ग्रीन दिखाई पड़े। उनके चेहरे पर परेशानी के लक्षण थे। बगल की कुर्सी पर एक छोटा सूटकेस, एक छाता और एक कम्बल रखा हुआ था।

बर्नेट ने बंक के लूटे जाने का समाचार उनसे कहा !

"क्या कहा ? बंक में डाका पड़ा है ! असंभव !" इसके बाद उनके मुंह से एक चीख निकली और वे लड़खड़ा कर गिरने ही वाले थे कि बर्नेट ने आगे बढ़ कर उन्हें सम्हाल लिया और सहारा देकर बंक में ले आया।

चलते-चलते उनके मुंह से अचानक निकल पड़ा :—मैं तो यहाँ से जा रहा था। मैं बंक से अलग हो रहा था। मैंने संचालकोंके नाम एक खत छोड़ दिया था।

लोग चारों ओर से उन्हें घेरे थे और वे कांप रहे थे। बड़ी मुश्किल से उन्होंने अपने टेबुल का दराज खोला। उसमें झांक कर तो वे और भी बेहोश हो गये। वे चीख उठे :—"ये भी गायब है ! मैंने चिट्ठी के साथ कुंजियों का गुच्छा इसी में रख दिया था।"

इसके साथ ही वे बेहोश होकर गिर पड़े। होश आने पर उन्होंने अपने को पुलिस की हिरासत में पाया। दो आदमियों ने उन्हें सहारा देकर एक मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया। उन पर बंक का एक लाख रुपया हड़प जाने तथा मैलिंग की हत्या का अभियोग लगाया गया।

जिस दिन मि० ग्रीन की पहली पेशी थी—उसी दिन मिस्टर जान जी रीडर अपना पुराना मकान छोड़ कर उस मकान में अपना दफ्तर ले आये जिसमें सरकारी वकील का दफ्तर था। मि० रीडर सभी सरकारी नौकरों को सन्देह की दृष्टि से देखते थे, इसलिये वे यहां अपना दफ्तर लाने के लिये बहुत खुश नहीं थे। इस मकान में आने के लिये उन्होंने एक ही शर्त रखी थी कि उनके ब्यूरो से यहां तक प्राइवेट टेलीफोन लगा दिया जाय।

इन्स्पेक्टर रीडर ने यह मांग पेश नहीं की थी। कुछ मांगने की उनकी आदत नहीं थी। उन्होंने बड़ी नर्मी से यह प्रस्ताव किया था। वे इतने नम्र थे कि लोग उनकी दयनीय दशा पर तर्स खाते थे। सरकारी वकील भी मन ही मन पछताते थे कि उन्हें यहां क्यों लाया। क्योंकि खुफिया का इन्स्पेक्टर मिस्टर हेलफोर्ड कहीं चुस्त और चालाक थे।

मि० रीडर की उम्र इस समय पचास के लगभग थी। उन्हें गलमोच्छा रखने का शौक था, उनकी नाक पर चश्मा शोभा देता था लेकिन पढ़ते वक्त वे उसे उतार देते थे। उनकी पोशाक विचित्र ढंग की थी। कहीं से भी मेल नहीं खाता था। उनका छाता चौबीस घन्टे का साथी था। उसे वे इस तरह लपेट कर रखते थे कि लोगों को छड़ी का भ्रम हो जाता था। जाड़ा बरसात सभी मौसिमों में वे उसे कांख तर दबाये रहते थे। कभी किसी ने उसे खोलते नहीं देखा था।

मिस्टर हेलफोर्ड ने चार्ज देते हुए कहा—"मुझे खेद है कि इससे पहले आपसे मुलाकात नहीं हो सकी थी। मैंने आपके बारे

में बहुत कुछ सुन रखा है। बैंक आफ इंगलैण्ड का जीवन आपके ही हाथ में था।"

मिस्टर रीडर ने धीमे स्वर से कहा—"जी हां, !" इतना कह कर उन्होंने गहरी सांस ली मानों उस काम को इस तरह अधूरा छोड़ कर यहां आने का उन्हें दुःख था। मिस्टर हेलफोर्ड की जिज्ञासा में सन्देह की बू थी।

मि० हेलफोर्ड—लेकिन यह पद आपके काम से एकदम भिन्न है। यद्यपि मुझे मालूम हुआ है कि आप लण्डन की बहुत ज्यादा जानकारी रखते हैं। यदि ये बातें सच हैं तो यह काम बहुत कठिन नहीं होगा। हम लोगों ने आज तक इस दफ्तर में प्राइवेट खुफिया को स्थान नहीं दिया है इसलिये आपकी नियुक्ति से यदि मैं.........

अपने छाते को सम्हालते हुए मि० रीडर ने कहा—यह स्वाभाविक है। यह पद मि० वेलिण्ड को मिलने वाला था। उनकी पत्नी को इसका खेद है। होना भी चाहिये। लेकिन उन्हें दुखी होने का कोई कारण नहीं है। वे स्वदयालु रमणी हैं। वेस्ट एण्ड के एक नाच घर से उनको बहुत ज्यादा प्रेम है। एकाध दिन में उस पर भी हमला होनेवाला है।

मि० हेलफोर्ड अवाक् रह गये। यह समाचार स्काटलैण्ड यार्ड में भी फैल गया था। इन्होंने पूछा :—आपको यह कैसे मालूम हुआ ?

मि० रीडर ने हँसते हुए कहा :—इधर-उधर से संवाद बटोरने का मुझे रोग है। मुझे हर जगह कुछ न कुछ धोखा दिखाई देता है। यही मेरी विचित्रता है। मैं काक बुद्धि वाला आदमी हूँ।"

ार्ड ने गहरी सांस ली। बोले:—इस मामले में बहुत ...नहीं है। ग्रीन सजायाफ्ता आदमी है। युद्ध के दिनों में उसे बंक में नौकरी मिल गई और तरक्की पाकर मैनेजर बन गया। चोरी का माल बदलैन करने के अपराध में उसे सात साल की सजा हुई थी।

मि० रोडर मुझे भी याद पड़ रहा है। उस मोकदमे में मैं ही प्रधान गवाह था। बंकों की चोरी के मोकदमों में मेरा मन बहुत लगता था। लहना लगाने वालों को लेकर वह संकट में पड़ गया। इससे बढ़कर मूर्खता और क्या हो सकती है। सबसे बुरी बात तो यह है कि वह अपना अपराध कबूल नहीं करता। अभागा आदमी। जब कि उसके जीवन मरण का प्रश्न है तो उसकी मूर्खताओं को भूला जा सकता है। इतना कहकर मि० रोडर ने गहरी सांस ली।

मि० हेलफार्ड ने मि० रोडर की तरफ घूमकर देखा। बोले:—उसकी हालत पर दया दिखलाने का प्रश्न कहाँ से उठता है। उसने बंक का एक लाख पौण्ड हड़प लिया है और एक झूठा बयान तैयार कर लिया है। यह है पुलिस की रिपोर्ट। यदि आप इन्हें पढ़ लें। मैलिंग के हाथ की चोट भी विचित्र तरह की है। दोनों हथेली पर एक ही तरह के घाव हैं घाव इतने गहरे भी नहीं है कि उन्हें देखकर यह भी अनुमान नहीं होता कि हाथापाई या मारपीट हुई होगी। ग्रीन का कहना है कि—

रोडर बीच में ही बोल उठे—उनका बयान कयास के बाहर की बात नहीं है। उन्हें किसी आदमी ने पहचान लिया जो डार्टमूर में उनके साथ काम करता था। उसने उनके पास खत लिखा कि या तो तुम मुझे खासी रकम दो या यहाँ से भाग जाओ नहीं

तो मैं तुम्हारा पर्दा खोल दूँगा। ग्रीन फिर उसी पापमय जीवन में प्रवृत्त होना नहीं चाहता था। इस लिये वह चुपचाप यहाँ से किसी अपरिचित देश को चला जाना चाहता था। उसने सारी बातें चिट्ठी में लिखकर कुंजी के गुच्छे के साथ अपने दराज में रख दिया था और बंक के खजानची के नाम एक पुर्जा लिखकर अपनी मेजपर रख गया था।

मि० हेलफोर्ड—लेकिन न तो दराज में कोई खत ही निकला और न टेबुल पर ही कोई पुरजा था। उसने झांसा देने का रास्ता निकाला था।

मि० रीडर ने व्यंग से कहा:—यदि ऐसी बात है तो सजा पावेगा।

मि० हेलफोर्ड—इसमें क्या शक !

हेलफोर्ड के चले जानेपर मि० रीडर ने अपना प्राइवेट टेलीफोन उठाया और बड़ी देर तक एक युवती रमणी से बातें करते रहे। समय के फेर ने उसकी हालत खराब कर दी थी। अन्यथा वह अपनी जवानी में ही थी। उसके बाद वह बंक वाले मोकदमे का कागज वगैरह पढ़ने लगे। जिसे मि० हेलफोर्ड ने इकट्ठा किया था।

तीसरे पहर सरकारी वकील टहलते हुए उनके दफ्तर में आये और कागज के बण्डलों के बीच उन्हें अरुझे हुए देखकर पूछा:—क्या पढ़ रहे हो? ग्रीन के मोकदमे के कागजात? मुझे खुशी है कि तुम मनसे इसमें लग गये हो। यह मुकद्मा तो साफ है। बंक के अध्यक्ष का खत मुझे मिला है। उनका कहना है कि ग्रीन का बयान एक दम सच है।

मि॰ रीडर ने बड़ी वेदना के साथ सरकारी वकील की तरफ देखा। परीशानी की हालत में उनके चेहरे पर यह भाव साफ झलक जाता था। उन्होंने कहा—मैं अभी कांस्टेबुल बर्नेट का बयान पढ़ रहा था। अपने बयान में उसने कहा:—बंक की इमारत से जब मैं कुछ दूर ही था मैंने सड़क के कोनेपर किसी को खड़ा देखा। उसी समय टाम की मोटर उधर से गुजरी उसकी रोशनी में मैंने उस आदमी की सूरत साफ साफ देखी। लेकिन मैंने उसपर ध्यान नहीं दिया। वह आदमी फिर दिखलाई नहीं पड़ा। इस आदमी के लिये संभव था कि मेरी आँख को बचाकर चक्कर काटता हुआ वह १२० फामर्लिंम एवेन्यु पहुँच जाता। मैं उसकी तरफ देख ही रहा था कि मेरा पैर पटरी पर पड़े लोहे के एक टुकड़े से टकरा गया। मैंने अपनी लालटेन को नीचे करके देखा वह घोड़े की नाल थी। शाम के वक्त मैंने इसे लेकर कुछ लड़कों को खेलते देखा था। जब मैंने दोबारा निगाह उठाकर उस ओर देखा तो वह आदमी गायब था। उसने मेरे लम्प की रोशनी देख ली होगी। मैंने और किसी को नहीं देखा। जिस समय मैं उधर से गुजरा ग्रीन के कमरे में रोशनी नहीं थी।

सरकारी वकील—इसमें तो कोई मार्के की बात नहीं है। मेरी समझ में तो ग्रीन ही उस मकान के चारो ओर घूम रहा था और अवसर पाकर कांस्टेबुल के पीछे हो गया।

मि॰ रीडर बेचैनी के साथ अपनी कुर्सीपर ओठँघते हुए बोले:—यदि मैं पुलिस से अलग होकर थोड़ी जाँच पड़ताल करूँ तो कोई आपत्ति न होगी? वे यह तो नहीं समझेंगे कि उनके काम में कोई बाहरी आदमी हस्तक्षेप कर रहा है।

सरकारी वकील ने उत्साह के साथ कहा:—इसमें आपत्ति की कौन-सी बात है। तुम स्वतत्र रूप से जांच पड़ताल कर सकते हो। यद्यपि मुझे विश्वास है कि तुम्हें कोई नई बात नहीं मिलेगी क्योंकि पुलिस ने अच्छी तरह छानबीन कर ली है। मैं चिट्ठी लिख देता हूँ। तुम उसे लेकर उस अफसर से मिलो जिसके जिम्मे यह मुकदमा है।

रीडर ने संकोच से पूछा:—"क्या मैं उस आदमी से भी मिल सकता हूँ।"

सरकारी वकील—तुम्हारा मतलब ग्रीन से है। हाँ, मैं उसका भी प्रबन्ध कर दूँगा।

शाम का वक्त था। टपाटप बूँदें पड़ रही थीं। उसी वक्त मि० रीडर वार्डर के साथ ब्रिक्सटन जेल के उस सेल में पहुँचे जिसमें ग्रीन बन्द था। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और हथेली पर गाल रखकर वह चिन्ता में डूबा था। वह सहसा चिल्ला उठा:—"मैंने जो कुछ कहा है वह अक्षरशः सच है।" इतना कहते कहते वह रो पड़ा।

ग्रीन का चेहरा एकदम बदल गया था तो भी रीडर ने उसे पहचान लिया। ग्रीन ने भी उसे पहचान कर कहा:—"मि० रीडर ! मुझे वह दिन याद है जब आपने मुझे गिरफ्तार किया था। लेकिन तब से मैं सदा नेक नियती से काम करता रहा। मैंने एक चित्ती कौड़ी भी नहीं ली है। मेरी पत्नी बिचारी क्या सोचती होगी ?"

मि० रीडर ने सहानुभूति के साथ पूछा:—"आपने शादी भी कर ली है।"

"कर तो नहीं ली है पर करने ही वाला था। यद्यपि वह उम्र में मुझसे तीस साल छोटी है पर उसके समान रमणी·····

इतना कहते-कहते ग्रीन के चेहरे पर वेदना के भाव उमड़ आये। उसने कहा:—"भाग्यवश वह अदालत में नहीं आई थी लेकिन उसे सारी बातें मालूम हो गई है। मेरा एक मित्र कहता कि वह अत्यन्त नवेली है।"

मि० गीडर ने करुणा से कहा—बिचारी औरत !

ग्रीन—सबसे दुख की बात तो यह है कि उसके जन्म दिवस के दिन ही यह घटना घटी !

गीडर—क्या उसे मालूम था कि तुम यहाँ से चले जा रहे हो ?"

ग्रीन—मैंने सारी बातें उससे कह दी थी। मैं उस मुकदमे में उसे घसीटना नहीं चाहता क्योंकि मेरे साथ उसकी सगाई नहीं हुई थी उसकी शादी हो चुकी है। उसने तलाक की दरखास्त अदालत में दे दी है लेकिन अभी तक वह मंजूर नहीं हुई है। इसीलिये मैं उससे बहुत मिलता जुलता नहीं था। यद्यपि वह उसी महल्ले में रहती है।'

गीडर—"क्या वह भी फिलिप एवेन्यू में ही रहती है।"

ग्रीन—"हाँ" उसकी शादी एक जल्लाद के साथ हो गई थी। उस समय उसकी उम्र केवल सत्रह साल की थी। अपने इस संबंध को छिपाकर रखने में मुझे बड़ी पीड़ा होती थी। न जाने कितने मनचले लोग उसके पास विवाह का प्रस्ताव लेकर पहुँचते थे। पर चुपचाप दांत पीस कर रह जाता था। कांस्टेबुल बर्नेट जिसने मुझे गिरफ्तार किया—वह भी उसके पीछे पागल था। उसके पास कविता लिखकर भेजा करता था। क्या आपको कभी इस बात पर विश्वास होगा कि पुलिस का सिपाही कविता करे।

मिस्टर रीडर ने नरमी से कहा:—"पुलिस का सिपाही भी तो इनसान ही है। क्या उसके हृदय में भाव नहीं हो सकते?"

मिस्टर रीडर ने कविता वाली बात को तो उस समय आसानी से टाल दिया। लेकिन अपने मन से वह उसे नहीं टाल सका। रात को जब वह जागता रहा उसी बातपर विचार करता रहा।

दूसरे दिन तड़केही मि० रीडर फलिंग एवेन्यू में आधमके। वे रात भर बक के दरवाजे पर रुके। पर दूसरे ही क्षण वे आगे बढ़ गये। सड़कके दोनों तरफ मकानों के कतार सिलसिले से सजे हुए थे। ग्रीनका मकान दाहिनी तरफ आठवाँ था। मकान में वह अपने रसोईदार के साथ रहता था। फूलोंसे उसे शौक नहीं मालूम होता था क्योंकि मकान के चारों ओर हरी भरी घास लहरा रही थी।

छब्बीस नम्बर की कोठी के सामने आकर मि० रीडर ठहर गये उस की खिड़कियों पर नीला परदा लगा था। मकान की मालकिन कुमारी मगडा ग्रेनको फूलोंका विशेष शौक था क्योंकि खिड़कियों पर चमेली की बेल लटक रही थी और जगह जगह गुलाब के पेड़ लगे हुए थे।

ज्योंही उन्होंने ऊपर निगाह उठाई त्योंही खिड़की का परदा थोड़ा हटा। उसमें से उन्होंने किसीकी सूरत देखी। वे इस तरह तेजी से आगे बढ़े मानों ऊपर की तरफ ताक कर उन्होंने अनुचित किया हो। वे उस सड़क के अन्तिम मकान के सामने आकर रुके। वह जखीरा था।

जखीरे की रेलिंग के सहारे वे कुछ देर खड़े होकर कुछ सोचते रहे। उनकी निगाह हरे भरे मकानों पर दौड़ रही थी।

वे वहां इतनी देर तक उसी मुद्रा में खड़े रहे कि जओरे वालेने उन्हें कोई ग्राहक समझा और सामने आकर पूछ ही बैठा। "आप किसकी प्रतीक्षा में हैं !"

मि० रीडर कई आदमियों की !

आगन्तुक भौंचकसा उनका चेहरा देखने लगा। उसे उसी हालत में छोड़कर मि० रीडर पीछे लौट पड़े और १७ नम्बर के बंगले में घुस गये। घंटी बजाते ही एक बालिका बाहर निकली और उन्हें बैठक में ले गई। बैठक में किसी तरह की सजावट नहीं थी। बैठक में साधारण सामान थे। कमरे की छत पर उन्हें पैरों की आहट सुनाई पड़ी और थोड़ी देर बाद एक लड़की ने कमरे में प्रवेश किया। उसका चेहरा बहुत ही सुन्दर पर उदास था। ऐसा मालूम होता था मानों वह अभी सोकर उठी है।

मि० रीडर उठकर खड़े हो गये और पूछा :—क्या आपही का नाम कुमारी मगडाप्रेन है।"

बालिका ने सिर हिला दिया। पूछा:—

"क्या आप पुलिस विभाग में काम करते हैं !"

'पुलिस विभाग में तो नहीं सरकारी वकील की ओर से मेरी नियुक्ति है ! यह मद पुलिस विभाग से एक दम स्वतंत्र है।"

"क्या मि० ग्रोनने आपको यहां भेजा है ?"

"उन्होंने मुझे भेजा तो नहीं है पर उनसे मुझे आपका पता मिला है !"

इतना सुनते ही उसका चेहरा फक हो गया। उसे देख कर मि० रीडर को विस्मय हुआ ! लेकिन वह भाव तुरत ही गायब

मि० रीडर उसे गौर से देख रहे थे। इसमें तो कोई शक नहीं कि इस घटना से वह दुखी और खिन्न थी। क्योंकि मनुष्य की भावनाओं का मि० रीडर ने सूक्ष्म अध्ययन किया था।

मि० रीडर—कितने दुख का विषय है कि आपके जन्म दिवस पर ही यह घटना घटी। आपका जन्म सत्रहवीं अक्तूबर को हुआ था ? आप अंग्रेज जाति की हैं ?"

"जी हाँ। मेरा जन्म वालपर्थ में हुआ था। मैं वहाँ बहुत दिनों तक रह चुकी हूँ।"

"आपकी उम्र क्या होगी ?"

"यही तेइस साल।"

मि० रीडर ने अपना चश्मा उतारा और उसे पोंछने लगे।

"इस घटना से मुझे अतिशय वेदना है। आपसे मिल कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मुझे आपकी दशा पर खेद है।"

इतना कहकर वे वहाँ से बिदा हुए !

मि० रीडर के बाहर होते ही वह द्वार बन्द करने आई। उसने देखा कि सड़क पर झुक कर मि० रीडर कुछ उठा रहे हैं। वह यही घोड़े की नाल थी जिसकी ठोकर मि० बर्नेट को उस रात को लगी थी। उस रमणी ने अपने मन में सोचा कि जिस लोहे के टुकड़े को मैंने खिड़की से बाहर फेंक दिया था उसे उसने उठाकर अपनी जेब में क्यों रख लिया है।

मि० रीडर वहाँ से आगे बढ़े और जखीरे के पास आकर रुके। वहाँ से वे थाना गये क्योंकि बर्नेट से भी उन्हें दो चार बातें कर लेनी थी। थाना में पहुँच कर मि० रीडर ने अपना परिचय दिया। दारोगा ने फौरन मि० बर्नेट को हाजिर किया। बोले:—यह वही युवक है जिसने हत्या का पता लगाया।

सरकार में इनकी बड़ी तारीफ हुई है और शीघ्र ही इसकी उन्नति होनेवाली है। बर्नेट ने मि० रीडर को सलाम किया और उनके सामने डट कर खड़े हो गये।

मि० रीडर—मैंने सुना है कि तुम कविता करते हो?"

बर्नेट का चेहरा शर्म से लाल हो गया। उसने नम्रता से कहा—जी हाँ, कुछ कुछ लिख लेता हूँ।"

"शायद शृंगार रस पर ज्यादा लिखते हो। रात को ही तो लिखने का समय मिलता होगा। बिना प्रेम के शृंगार का उदय कहाँ हो सकता है?"

"जी हाँ, रात को ही लिखता हूँ। पर अपने काम से कभी भी असावधान नहीं रहा।"

"इसमें क्या शक, तुम कवि हृदय हो। उसी ने शायद तुम्हें आधी रात को फूल तोड़ने के लिये प्रेरित किया था।"

'मैंने जमींदारेवाले की आज्ञा से फूल तोड़ा था। मैंने अपराध तो नहीं किया?"

"नहीं नहीं" तुमने रात को फूल तोड़े इससे तुम यह नहीं देख सके कि कौन फूल तुम तोड़ रहे हो। कई तरह के फूल तुमने तोड़ लिये। उसी की जड़ में अपनी कविता लिख कर लपेट दी और घोड़े के नाल में बाँध कर उस रमणी के द्वार पर रख आये? उस नाल का क्या हुआ होगा?"

बर्नेट—मैं रख नहीं आया, बल्कि उसकी खिड़की में फेंक आया। उसके मकान के निकट पहुँचने के पहले मेरे मन में यह ख्याल भी नहीं आया था।

मि० रीडर—मैं इसी बात की पुष्टि चाहता था। शायद घोड़े की नाल पाने के बाद तुम्हारे मन में वह विचार आया। उसके

बाद तुम वापस गये फूल तोड़ा। अपनी जेब से कविता निकाली। उसे बांधा और उस रमणी को खिड़की में फेंक आये।

मि० बर्नेट के चेहरे का रंग तेजी से बदल रहा था। उसने कहा, मेरी समझ में नहीं आता कि आपने यह अनुमान कैसे कर लिया पर बात एकदम सही है। पर मैंने कोई अपराध नहीं किया है?"

मि० रीडर ने गंभीर होकर कहा:—प्रेम करना पाप नहीं है। इसका स्मरण बड़ा ही मधुर होता है। मैंने किताबों में पढ़ा है।

× × ×

कुमारी मगडा ग्रेन कहीं बाहर जाने के लिये तैयार थीं। इसी समय उन्होंने सड़क पर मि० रीडर को देखा! उनके पीछे खुफिया पुलिस का वह आदमी भी जो इस मोकदमे की जाँच कर रहा था। मिस ग्रेन ने उसे पहचान लिया। नौकर बाहर गया हुआ था इसलिये सिवा उसके कोई दूसरा दरवाजा खोलने वाला नहीं था। वह आइनेदान के पीछे गई और खिड़की में से सड़क की ओर देखा। दूर पर उसने एक मोटर खड़ी देखी जिसमें दो चार पुलिस के सिपाही भी थे। सारी बातें समझने में उसे देर नहीं लगी।

उसने अपने बिस्तरे का बाहर उठाया। उसने नोटों के बण्डल को अपने बेग में रखा और दबे पैर सीढ़ी से नीचे उतरी। पीछे के कमरे में गई और खिड़की खोल कर रसोई घर की छत पर कूद पड़ी। उधर से वह पीछे के दरवाजे से भाग गई और सड़क पर जा पहुँची और गाड़ी पर सवार होकर

चम्पत बनी। इधर मि० रीडर उसका दरवाजा खटखटाते रहे मिस मगडा फिर हाथ नहीं आई !

(२)

मि० रीडर ने अपने अफसर से इस कहानी का वर्णन यों किया:— मि० ग्रीन सजायाफ्ता थे। उसने अपने बयान में चिट्ठी की जो चर्चा की है वह एकदम सही है। जो उसकी बदनामी करना चाहता था उसका नाम जार्ज क्रेटर था। उसी का नाम मिलांग भी था।

स० वकील—"क्या वही मिलांग जो रात को बंक में पहरा देता था ?"

मि० रीडर—जी हाँ ! उसी की बेटी कुमारी मगडा ग्रेन का जन्म १७ वीं अक्टूबर को वालवर्थ में १९०० ई० में हुआ था। अपने बयान में उसने पहले वालवर्थ का नाम लिया उसके बाद वालिंगटन कहा। लोग जब अपने खानदान का नाम बदल देते हैं तो अपना नाम भी बदल देते हैं और यह 'मगडा' शब्द इसका सबूत है।

मिलांग ने बंक को लूटने का उपाय बड़ी सावधानी से किया था। वह यहां अपनी बेटी मगडा को ले आया और मि० ग्रीन के यहां उसका प्रवेश करा दिया। मगडा ने ग्रीन के हृदय पर अधिकार कर लिया और उसका सारा भेद धीरे-धीरे जानने लगी। उसका प्रयास कुंजियों पर अधिकार पाना था। मि० ग्रीन की पहली सजाकी बात 'मिलांग को कैसे मालूम हुई यह नहीं कहा जा सकता। लेकिन जब उसे यह बात मालूम हो गई तो उसने दोनों काम सधते देखा कि वह बंक को लूट भी लेगा और मैनेजर को फंसा कर खुद बेदाग निकल जायगा।

इसी उद्देश्य से उसने अपनी लड़की को विवाहित बतला कर तलाक का बहाना करवाया। इसका कारण मेरी समझ में नहीं आया। पर बाद की घटना से मैंने समझा कि किसी भी हालत से मिलांग अपनी बेटी का ग्रीन से संबंध प्रगट नहीं होने देना चाहता था।

मिलांग ने सारी व्यवस्था कर ली थी। इसलिये सत्रह तारीख को ही उसने बंक को लूटने का बन्दोबस्त किया। मगडा से उसे पत्र की बात मालूम हो गई थी। उसने टेबुल पर के चिट को पढ़ा। दराज से कुंजी निकाली। स्ट्रांगरूम को खोला, जितना रुपया वह ले जा सका, ले लिया और अपनी बेटी के मकान में पहुँचा। वहां उसने रुपये का गुलाब के पेड़ की जड़ में गाड़ दिया। क्योंकि जब मैं पहले पहल मगडा के मकान में गया तो उस पेड़ को मुरझाते पाया। अब तो शायद वह सूख ही गया होगा। यद्यपि मैंने उसे सींचने की आज्ञा दे दी है।

सरकारी वकील को पेड़पौधों से कोई संदेह नहीं था। इससे उन्होंने अधीर होकर कहा :—आगे क्या हुआ!"

पेड़ उखाड़ने और गाड़ते समय असावधानी से मिलांग को हथेली कांटों से छिल गई। मैंने उसके मकान में जाकर गुलाब के उस पेड़ को गौर से देखा। इसके बाद वह बंक के पास पहुँचा और बर्नेट की प्रतीक्षा करने लगा। क्लोरोफार्म वगैरह का सारा प्रबन्ध उसने पहले ही से कर लिया था। बर्नेट के लम्प की रोशनी देखते ही वह भीतर घुस गया। दरवाजा खुला छोड़ता गया, जाकर अपने को हथकड़ी और रस्सी से जकड़ दिया और नाक और मुंह को बांध कर क्लोरोफार्म के नीचे सो रहा। उसे आशा

थी कि दूसरे ही क्षण बर्नेट वहां पहुँच जायगा और मिलांग मरने नहीं पावेगा।

इधर बर्नेट भी उसकी लड़की पर आंख लगाये हुए था। उसने भी इसे प्रश्रय दिया था। मिलांग के इशारे पर ही यह प्रेम अभिनय हो रहा था। बर्नेट कवि हृदय था, उस दिन उसकी प्रेयसी का जन्म दिवस था। घोड़े की नाल पाकर उसके मनमें एक नया विचार पैदा हुआ। वह लौट पड़ा, जन्गीरे से फूल तोड़ा। उसके जन्म दिवस के उपलक्ष्य वाली कविता उसके जेब में थी। उसने उसे बाहर निकाला। गुलदस्ता में उसे लपेटा और घोड़े की नाल में उसे बांधकर उसकी खिड़की में उपहार स्वरूप फेंक आया। यह सब करने में कुछ समय लग गया। इधर तो बर्नेट अपना प्रेम परिचय दे रहा था और उधर मिलांग तिलतिल करके मर रहा था। क्योंकि पड़े रहने के दो ही चार मिनिट बाद वह बेहोश हो गया होगा। क्लोरोफार्म उस समय भी इसी प्रकार चू रहा था जब बर्नेट वहां पहुँचा। इस तरह मिलांग का अन्त हुआ।

यह सब दास्तान सुनकर सरकारी वकील अपनी कुर्सी पर लेट गये और मिस्टर रीडर की तरफ घूर कर देखा। उन्होंने अवाक होकर पूछा :—इतनी बिखरी बातों को तुम एक सूत में किस प्रकार जोड़ सके ?"

मिस्टर रीडर ने उदास भाव से कहा:—यही मेरे मस्तिष्क का विकार है। मेरा यही दुर्भाग्य है। पर बात सच है। मैं मुरझाये गुलाब में, घोड़े की नाल में, जहां तक कि कवितामें भी मैं पाप की गन्ध पाता हूँ। मेरे दिमाग में ही पाप की छाया है। यही मेरा सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

नौलखाहार

(१)

मैंने पाइरट से कहा:—वायु परिवर्तन से तुम्हें बहुत लाभ होगा।

"क्या तुम्हारा सचमुच यही ख्याल है?"

"निश्चय।"

मेरे मित्र ने हँसते हुए—जब सब प्रबन्ध हो जायगा, तब? तुम्हें बुलाऊँगा।"

"तब मुझे कहाँ ले चलना चाहते हो?"

"ब्राइटन! बड़ी ही अच्छी जगह है।"

रुपयों की तो मुझे कमी नहीं। मेरा ख्याल है कि मैट्रोपालिटन होटल में एक में ही हम लोग हरे भरे हो जायँगे।

"मुझे तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार है। तुम्हें इस बूढ़े का इतना ख्याल है! हृदय पर उम्र का असर नहीं पड़े यही तो विशाल हृदयता का चिह्न है। लेकिन मैं कभी कभी इसे भूल जाता हूँ।"

"उसकी अन्तिम बात मुझे अच्छी नहीं लगी। मुझे ऐसा मालूम हुआ है कि पाइरट मेरी बुद्धि पर शक करता है। लेकिन उसकी प्रसन्नता में मैं अपना विषाद भूल गया।

"मैंने जल्दी में कहा:—तब यह तै रहा।"

तदनुसार हम लोग शनीचर को ब्राइटन पहुँच गये। वहाँ के होटलों की चहल पहल देखकर ऐसा मालूम होता था कि संसार भर के नर-नारी यहाँ जमा हो गये थे। उनकी पोशाक, उनका

ठाट बाट देखने लायक था, रमणियों के शरीर पर जो जवाहिरात लदे हुए थे वे शौक के लिये कम थे दिखावा के लिये ज्यादा थे।

इस भीड़ को देखकर पाइरट ने कहा:—कैसा विचित्र बयान है, इन लोगों की ? यह जगह केवल मालदारों के लिये ही है, हेस्टिंग्स ?"

हेस्टिंग्स—बहुत अंशों में तुम्हारा कहना ठीक है लेकिन यहाँ सभी मालदार ही नहीं आते ?

पाइरट आँखें फाड़-फाड़ कर अपने चारों ओर देखने लगा बोला:—इन जवाहिरातों को देखकर जी में आता है कि खुफिया होने के पहले मैं चोर क्यों नहीं हुआ। चोरों के लिये यह क्या ही उपयुक्त अवसर है। हेस्टिंग्स ! खंभे के पास वाली उस औरत को देखो। वह किस तरह जवाहिरों से लदी है।"

मैं उसी तरफ देखने लगा। सहसा बोल उठा—"यह तो श्रीमती ओपालसन हैं।"

"क्या तुम इन्हें जानते हो ?"

"कुछ कुछ ! इनके पति कम्पनी के हिस्सों के बड़े भारी दलाल हैं अभी हाल में उन्होंने तेल के हिस्सों के आय की बढ़ती में बहुत रुपया कमाया है।"

भोजन समाप्त कर हम लोग ओपालसन दम्पत्ति से मिले। पाइरटका परिचय कराया और साथही काफी पी पाइरट ने श्रीमती ओपालसन के जवाहिरों की बड़ी तारीफ की। श्रीमतीका चेहरा खुशीसे दमक उठा।

श्रीमती ने कहा:—जवाहिरों का मुझे बहुत बड़ा प्रेम है। ये मेरी इस कमजोरीको जानते हैं और हमेशा कुछ न कुछ लाते रहते हैं। क्या आप को भी इसका शौक है !"

पाइरट—इस थोड़ी सी जिन्दगी में मुझे इनसे बहुत सरोकार पड़ा है। मेरा पेशाही ऐसा है कि मुझे संसार के प्रसिद्ध जवाहिरोंको देखने का मौका मिला है।

इसके बाद उसने राजघराने के श्रीमती जवाहिरों का विस्तृत वर्णन आरम्भ किया। श्रीमती ओपालसन बड़े गौर से सुनने लगीं।

पाइरट की बातें सुन कर श्रीमती ने कहा:—आपने तो जैसे किसी नाटक की कथा कह डाली। मेरे पास कुछ ऐसी मोतियाँ हैं जिनका लंबा चौड़ा इतिहास है। वह संसार का सबसे उत्तम हार समझा जाता है। मोतियाँ इस खूबी से गूँथी गई हैं कि देखते ही बनता है। रंग इतना भड़कीला और चमकदार है कि आँखें चौंधिया जाती हैं। मैं अभी उन्हें लाती हूँ।

इस प्रस्ताव का विरोध करते हुए पाइरट ने कहा:—"श्रीमती जी! आप बड़ी सीधी मालूम होती हैं। आप अपने को खतरे में न डालें।"

"लेकिन मैं इन्हें तुम्हें दिखलाना चाहती हूँ।"

इतना कह कर वे लिफ्ट की तरफ लपकीं और उस पर सवार होकर दम भर में गायब हो गई। मि० ओपालसन-जो अभी तक मुझसे बातें कर रहे थे जिज्ञासा से पाइरट की तरफ देखने लगे।

उसने कहा:—आपकी पत्नी बड़ी सीधी हैं। वे हार दिखलाने पर तुल ही गईं।"

मि० ओपालसन—वह हार देखने ही लायक है। मुझे बहुत रुपया खर्च करना पड़ा है। लेकिन अमूनल्य चीज मिली है। यदि इस समय मैं उसे बेचना चाहूँ तो कीमत से कहीं ज्यादा

रुपये मिल सकते हैं। यदि यही हालत रही तो मुझे बेचना भी पड़े। क्योंकि रुपया बहुत महँगा हो रहा है। "इसके बाद वह बाजार की टेक्निकल बातें करने लगे जिन्हें मैं समझ नहीं सका।"

इसी समय होटल का खानसामा आया और उनकी कान में कुछ कह कर चला गया।

"मैं अभी आता हूँ। क्या हो गया उन्हें। अभी तो अच्छी थी!" इतना कह कर उन्होंने हम लोगों से विदा ली।

उनके इस तरह अचानक चले जाने से पाइरट को जरा भी विस्मय नहीं हुआ। उसने अपनी सिगरेट जलाई और खाली थालों को एक कनार में सजाने लगा। और मन ही मन कुछ सोचने लगा।

कई मिनिट बीत गये पर पति पत्नी में से कोई नहीं लौटा। मैंने घबरा कर कहा:—न जाने वे लोग कब तक लौटेंगे?"

ऊपर उठते हुए सिगरेट के धुँए को गौर से देखता हुआ उसने कहा:—वे नहीं भी लौट सकते हैं।"

"क्यों?"

"क्योंकि कोई दुर्घटना हो गई है।"

"कैसी दुर्घटना? तुमने कैसे समझ लिया?"

उत्तर में पाइरट ने मुस्करा भर दिया।

थोड़ी देर के बाद होटल का मैनेजर घबराया हुआ अपने दफ्तर से निकला और ऊपर चला गया। वह बेतरह घबराया हुआ था। लिफ्ट चलानेवाला एक खानसामा से बातें करने में इतना लीन था कि लिफ्ट की घंटी की टनटनाहट की उसे परवा

नहीं थी। तीन बार घंटी बज चुकी पर उधर उसका ध्यान ही नहीं है। सभी खानसामा लापरवाही दिखला रहे हैं। होटल के खानसामों को लापरवाह बनाना—पाइरट ने अपना सिर इस तरह हिलाया मानों उसे सब कुछ मालूम हो गया हो। बोलाः—मामला तो बहुत सगीन मालूम होता है। मैंने जो सोचा था वही हुआ। लीजिये! पुलिस भी आ पहुंची।"

इसी समय दो आदमियों ने होटल में प्रवेश किया! एक पुलिस के लिबास में था और दूसरा सादा कपड़ा पहने था। उसने एक खानसामा से कुछ कहा। वह उन्हें लेकर ऊपर चला गया। थोड़ी देर बाद वही खानसामा नीचे उतरा और हम लोगों के पास आकर बोलाः—मि० ओपालसन ने आप लोगों को ऊपर ही बुलाया है!

पाइरट इस तरह उठ खड़ा हुआ मानों बुलाहट की प्रतीक्षा में रहा हो। मैं भी उसके साथ ही उठ खड़ा हुआ।

मि० ओपालसन ने एक तल्ले पर कमरा लिया था। दरवाजे तक हम लोगों को पहुँचा कर खानसामा लौट गया। हम दोनों कमरे में घुसे। वहाँ का दृश्य देखकर मैं अवाक् रह गया। सभी लोग सोने वाले कमरे में थे। कमरे के बीचो बीच आराम कुर्सी पर पड़ी श्रीमती ओपालसन विलम्ब-विलम्ब कर रो रही थीं। उनकी आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी। मि० ओपालसन आवेश में इधर उधर आ जा रहे थे। दोनों पुलिस अफसर हाथ में नोट बुक लिये एक तरफ खड़े थे। आग के पास होटल की दासी खड़ी थी। वह थर थर कांप रही थी। कमरे के दूसरी तरफ एक फ्रांसीसी औरत खड़ी थी। शायद वह श्रीमती ओपालसन की दाई थी। वह भी विलख-

विलख कर रो रही थी। रोने और हाथ पैर फटकारने में उसने अपने मालकिन को भी दबा दिया था।

इस हलचल के समय भी पाइरट शान्त था और उसके होंठपर सहज मुस्कान थी। उसे देखते ही श्रीमती ओपालसन के शरीर में न जाने कहाँ की शक्ति आ पड़ी। वे झट उठकर खड़ी हो गईं और बोली:—"और लोग जो चाहें कहें पर मैं तो अपना भाग्य ही कहूँगी कि इस अवसर पर आप यहाँ मौजूद हैं। यदि आप चाहेंगे तो मेरा हार मिल जायगा, अन्यथा नहीं।"

उन्हें शान्त करते हुए पाइरट ने कहा:—"आप धैर्य धरें मैं आपकी पूरी सहायता करूँगा और सब ठीक हो जायगा।"

मिस्टर ओपालसन ने पुलिस इन्स्पेक्टर से पूछा:—"यदि आपको आपत्ति न हो तो मैं इन्हें बुला लूँ।"

उसने पूरी उदासीनता के साथ कहा:—जैसा आप चाहें। मुझे कोई आपत्ति नहीं है। अब तो श्रीमती जी सुस्थ मालूम होती हैं। इसलिये उन्हें अपना बयान देना चाहिये।"

श्रीमती ने असहाय की भाँति पाइरट की ओर देखा। उसने धीरे से उन्हें आराम कुर्सी पर बैठा दिया। बोला:—आप शान्त होकर यहीं बैठे बैठे सारा दास्तान हम लोगों को सुना दें।

श्रीमती ने कहना शुरू किया:—भोजन के बाद मैं अपना मोतियों वाला हार लेने कमरे में आई। उसे मैं मि० पाइरट को दिखलाना चाहती थी। सदा की भांति होटल की दाई और सेलेस्टाइन दोनों कमरे में मौजूद थीं।

पुलिस इन्स्पेक्टर ने बीच में ही रोककर पूछा:—"सदा की भांति से मैंने आपका अभिप्राय नहीं समझा।"

मि० ओपालसन ने कहा:—"सेलेस्टाइन की गैरहाजिरी में इस कमरे में कोई नहीं आ सकता। जब होटल की दाई कमरा साफ करने आती है, तब सेलेस्टाइन मौजूद रहती है। उसी तरह रात को बिस्तरा लगाने भी आती है।"

श्रीमती ओपालसन—जैसा मैंने अभी कहा है, मैं ऊपर आई। मैं टेबुल के दराज के पास गई। मैंने जवाहिरों का बक्स निकाला और उसे खोला। बक्स उसी तरह बन्द था लेकिन हार गायब था।

इतना लिखकर इन्स्पेक्टर ने पूछा—"अन्तिम बार आपने उसे कब देखा था।"

"भोजन के पहले! मैं उसीको पहन कर भोजन में शामिल होने जाना चाहती थी लेकिन उसे न पहन कर मैंने पन्ना वाला हार पहन लिया और उसी तरह इस बक्स में रख दिया।"

"इस बक्स में ताला किसने लगाया?"

"स्वयं मैंने। इसकी कुँजी सदा मेरी गर्दन में रहती है। इतना कहकर उन्होंने गर्दन में लटकती कुंजी को दिखला दिया।

पुलिस इन्स्पेक्टर कुंजी को भली-भांति देखकर गर्दन हिला बोला—"तब तो मालूम होता है कि चोर के पास इसकी दूसरी कुंजी थी। साधारण ताला है। इसे खोलना कोई कठिन काम नहीं है। सन्दूक में ताला लगाने के बाद आपने क्या किया?"

"मैंने उसे नीचे के दराज में रख दिया?"

"क्या आपने दराज में भी ताला लगाया?"

"नहीं, दराज में ताला नहीं लगाया जाता! मेरी अनुपस्थिति

में मेरी दाई सदा कमरे में रहती है। इसलिये ताले की जरूरत ही नहीं पड़ता।

इन्स्पेक्टर का चेहरा गंभीर हो गया। बोला:—"आपके कहने का मतलब यह हुआ कि जब आप भोजन करने जा रही थीं, तब हार इसी दराज में था और उसके बाद से आपकी दाई ने यह कमरा नहीं छोड़ा।"

इन्स्पेक्टर के मुंह से यह बात सुनकर दाई को पहले पहल अपनी खतरनाक स्थिति का बोध हुआ। वह चीख उठी और पाइरट के पैरोंपर गिरकर फ्रांसीसी भाषा में कहने लगी:—मेरे ऊपर शक करना सरासर अन्याय है। ये पुलिस वाले शैतान हैं। लेकिन आप फ्रांसीसी हैं आपको यह अन्याय नहीं बरदाश्त करना चाहिये। मुझे बदनाम किया जा रहा है और उस हराम जादी होटल की दाई को योंही छोड़ दिया जा रहा है। वह बड़ी चोट्टिन है। उसने अनेक बार खुदही इस बात को कहा है। वह जब कमरे में आती थी उसकी निगाह उसी दराज पर रहती था। उसकी तलाशी लीजिये, हार जरूर उसी ने चुराया है।

सेलेस्टाइन ने फ्रांसीसी भाषा में यह सब कहा था, लेकिन उसके इशारे से वह उसके कथन का आशय समझ गई। उनका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। बोली:—"वह सरासर झूठ कह रही है। मुझे तो उनके बारे में कुछ मालूम भी नहीं था।

सेलेस्टाइन—"उसकी तलाशी लीजिये। देखिये हार उसके पास से निकलता है या नहीं।"

होटल की दाई ने सेलेस्टाइन की तरह बढ़कर कहा:—"तू झूठी है। तूने खुद हार चुराया है और मेरे सिर खेलना चाहती है। मैं तो अभी ही कमरे आई हूँ। तू तो दिन रात

इसी कमरे में इस तरह दाँव लगाकर बैठी रहती है जैसे बिल्ली चूहे के घात में रहती है।"

इन्स्पेक्टर ने सेलेस्टाइन से पूछा:—"क्या यह सच है कि तुमने कमरे से बाहर कदम नहीं रखा था?"

"यह सच है कि मैंने उसे अकेले नहीं छोड़ा लेकिन इस द्वार से होकर अपने कमरे में दो बार गई थी, एक बार धागा लाने और दूसरी बार अपनी कैंची। उसी वक्त उसने चोरी की होगी?"

होटल की दाई ने क्रोध से कहा—तुझे एक मिनट भी नहीं लगा था। तू गई और चली आई। मेरी तलाशी ली न जाय। मैं इससे डरती थोड़े ही हूँ।

इसी समय किसी ने दरवाजे को थपथपाया। इन्स्पेक्टर दरवाजे पर गया। आगन्तुक को पहचान कर उसका चेहरा खिल उठा। बोला:— तलाशी लेने के लिये मैंने एक महिला को बुलाया था। वे आ ही गईं।

सेलेस्टाइन रो रही थी। पाइरट कमरे के चारों ओर अपनी नजर दौड़ा रहा था।

खिड़की से सिर बाहर निकाल कर उसने एक दरवाजे की तरफ इशारा करते हुए पूछा—यह दरवाजा कहाँ गया है?

इन्स्पेक्टर—दूसरे कमरे में गया होगा। लेकिन यह तो भीतर से बन्द है।

पाइरट दरवाजे तक गये, उसे देखा भाला, सिटकिनी निकाल कर दोबारा हिलाया डोलाया। बोला—यह तो बाहर से

भी बन्द है इसलिये इधर से किसी के आने का प्रश्न ही नहीं उठता।

इसके बाद उसने सभी खिड़कियों की जाँच की। वहाँ भी उसे कोई सूराख नहीं मिला। खिड़की में छज्जा तक नहीं था।

इन्सपेक्टर—"यदि छज्जा होता भी तो क्या हो सकता था जब दाई कमरे से बाहर गई ही नहीं।"

पाइरट ने सापेक्ष कहा—हाँ, जब दाई ने कमरा छोड़ा ही नहीं तब इस तरह के सबूत ज्यादा काम नहीं कर सकते।

इसी समय होटल की दाई को लिये हुए तलाशी लेनेवाली रमणी आई! बोली—"कुछ नहीं निकला।"

हो० दाई—मेरे पास था ही क्या! अब उस राड़ को इस तरह मेरी इज्जत लेने के लिये शर्म आनी चाहिये।

इन्सपेक्टर—तुम पर किसी को शक नहीं था। अपना काम करो।

वह अनिच्छा पूर्वक वहाँ से चली गई! जाते जाते उसने कहा—उस राड़ की भी तलाशी होगी?

जरूर इतना कहकर इन्सपेक्टर ने उसे बाहर किया और दरवाजा बन्द कर दिया।

सेलेस्टाइन की भी तलाशी ली गई पर कुछ मिला नहीं इन्सपेक्टर का चेहरा गम्भीर हो गया। उसने श्रीमती ओपालसन से कहा—मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि घटना की सारी परिस्थिति इसके खिलाफ है। इसलिये मुझे इसे गिरफ्तार कर ले जाना ही पड़ेगा। इसी ने हार को चुरा कर कहीं छिपा दिया है।

सेलेस्टाइन घिघिया कर रोने लगी और पाइरट को कस कर

पकड़ लिया। इसी समय पाइरट ने उसके कान में कुछ कहा। फिर इन्स्पेक्टर से कहा—अपने तसकीन के लिये मैं इससे दो एक बात पूछना चाहता हूँ।

इन्स्पेक्टर—पूछ कर देखिये!

पाइरट—तुम अपनी कोठरी में धागा लेने गई थी। वह कहां था?"

"उस आलमारी के ऊपर!"

"और कैंची!"

"वह भी वहीं थी।"

"जरा उसे जाकर ले तो आवो। जहां तुम पहले बैठी थी वहीं से उसी तरह उठना।"

सेलेस्टाइन अपनी पहली जगह पर बैठ गई। पाइरट के इशारे पर वह उठी, बगल के कमरे में गई। वहां से धागा लिया और लौट आई?

पाइरट घड़ी लेकर समय देखता रहा। बोला—एक बार फिर जावो आओ?"

उसके बाद उसने अपनी डायरी में कुछ लिखा और घड़ी जेब में रख ली। इन्स्पेक्टर को उसकी शिष्टता पर धन्यवाद दिया।

इन्स्पेक्टर शर्मिन्दा हो गया। उसने उस रमणी और सादी वर्दी वाले सिपाही के साथ सेलेस्टाइन को रवाना किया और आप कमरे का कोना कतरा देखने लगा।

मि० ओपालसन ने चिढ़ कर कहा—क्या आपको विश्वास है कि हार यहां छिपाया हुआ है?"

इन्स्पेक्टर—संभव है। उसे यहाँ से हटाने का समय तो

मिला नहीं। श्रीमती ने तुरत ही उस हार की खोज की इसलिये उसकी चाल काम नहीं कर सकी। दोनों में से एक ने तो जरूर ही हार चुराया है। होटल की दाई ने चोरी की हो, ऐसी संभावना कम है। इसलिये हार कहीं इसी कमरे में होगा।"

पाइरट ने शान्त भाव से कहा—"असंभव से भी ज्यादा।" इन्स्पेक्टर ने उनकी ओर घूर कर देखा।

पाइरट ने मुस्कुरा दिया। बोलाः—मैं अभी आपको करके दिखला देता हूँ। हेस्टिंग्स! मेरी घड़ी अपने हाथ में लेकर खड़े हो। मैंने सेलेस्टाइन से परेड कराकर देख लिया है।

कमरे से पहली बार बाहर वह दस सेकेण्ड लगा रही और दूसरी बार पन्द्रह! अब मेरी क्रिया पर ध्यान दो। श्रीमतीजी से-कृपा कर बक्स की कुञ्जी मुझे दे दें। हेस्टिंग्ज तुम जाने का आदेश देना।

हेस्टिंग्ज ने कहा—जावो!

पाइरट बिजली की तरह दराज की तरफ बढ़ा। उसमें से बक्स निकाला। उसे खोला। मोती वाला हार ले लिया फिर उसे बन्द कर उसी तरह रख दिया। पास आकर मुझसे पूछाः—कितना वक्त लगा।"

मैंने कहा—"कुछ ४६ सेकेण्ड!"

पाइरट—आप लोगों ने देखा। इतने कम समय में होटल को दाई के लिये हार निकालना भी असंभव था। छिपाने की बात तो दूर रही।

इससे इन्स्पेक्टर को और भी उत्साह मिला। बोलाः—"तब तो सेलेस्टाइन पर ही वार जाता है।" इतना कह कर उसने तलाशी का काम फिर शुरू किया। वह दाई की कोठरी में गया।

पाइरट कुछ सोच रहा था। सहसा उसने मि० ओपालसन से पूछा—"आपने इसका बीमा जरूर ही कराया होगा ?"

इस प्रश्न से मि० ओपालसन को आश्चर्य तो जरूर हुआ उन्होंने धीरे से कहा—"जी हां।"

इस पर श्रीमती ओपालसन ने रोते हुए कहा—इससे क्या? मैं अपना हार चाहती हूँ। वह मुझे बहुत ज्यादा पसन्द था। रुपयों से मुझे सन्तोष नहीं हो सकता।"

पाइरट ने सान्त्वना देते हुए कहा "मैं आपकी वेदना को भली भांति समझता हूँ। भाव ही प्रधान वस्तु है। लेकिन भाव प्रधान नहीं है उसे तो उसका मावजा पा जाने पर भी तसल्ली हो जायगी।"

उस पर मि० ओपालसन ने कहा—आपका कहना भी ठीक है तो भी......

इसी समय बिजली की भांति हाथ में चमकता हार लिये हुए इन्सपेक्टर ने कमरे में प्रवेश किया।

श्रीमती ओपालसन का चेहरा दमक उठा। उनकी सूरत बदल गई। वे चिल्ला उठी—मेरा हार !

उन्होंने उसे दोनों हाथ से अपनी छाती से दबा लिया। हम लोग उन्हें घेर कर खड़े हो गये।

मि० ओपालसन—"यह कहां था ?"

"दाई की चारपाई पर—"गद्दे के नीचे स्प्रिंग में अटकाया हुआ था। होटल की दाई के आने के पहले ही उसने चुरा कर वहां छिपा दिया होगा।

पाइरट ने श्रीमती के हाथ से हार ले लिया। उसे उलट पलट कर देखा और वापस कर दिया।

इन्स्पेक्टर—यह हार हम लोगों को सबूत में दाखिल करने के लिये अपने साथ ले जाना होगा। मोकदमा समाप्त होते ही हम लोग इसे वापस कर देंगे।

मि० ओपालसन ने मुंह बनाकर कहा—"क्या यह जरूरी है?"

इ०—"यही दस्तूर है।"

श्रीमती—ले जाने दीजिये। वहां वह सुरक्षित तो रहेगा। जब तक वह मेरे पास रहेगा, चोरी का डर बना ही रहेगा और चैन से सो नहीं सकूंगी। ओह! सेलेस्टाइन कैसी शैतान निकली। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि उससे ऐसा काम हो सकेगा।

उस पर इतना क्रोध न करो।

उसी समय किसी ने मेरा हाथ दबाया मैंने देखा कि पाइ-रट मेरे कान में कह रहा है।—अब यहां कोई काम नहीं है। हम लोगों को यहां से खिसक चलना चाहिये।"

बाहर निकल कर वह कुछ सोचने लगा। फिर बोला:—"मैं बगल वाले कमरे को देखना चाहता हूँ।"

कमरा खुला था। हम लोग उसमें घुस गये। उसमें इतनी इस कदर धूर जमी थी मानों बहुत दिनों से आबाद नहीं था। खिड़की के पास वाले टेबुल पर चौकोना निशान के चारों तरफ अपनी अंगुली फिरा कर पाइरट विचित्र रूप से खनखना उठा—कम्बख्तों ने यहां भी सफाई पर जरा भी ध्यान नहीं दिया है।"

वह गम्भीर होकर खिड़की से झांकने लगा मानों किसी चीज पर गौर कर रहा हो।

मैंने अधीर होकर पूछा:—यहां आने की क्या जरूरत थी?"

उसने मेरी ओर घूर कर देखा। बोला—मैं यह जानना चाहता था कि इधर से दरवाजा बन्द है या नहीं।

भीतरी दरवाजे को देखकर मैंने कहा—"बन्द तो है?"

पाइरट ने अपना सिर हिला दिया। वह विचारवान था।

"ओहो! यह किस्सा समाप्त हो गया। अब कहीं दूसरी जगह अपनी बुद्धि की आजमाइश करना। यह ऐसा मामला था कि बुद्धू से बुद्धू आदमी भी सफल हो सकता था।"

पाइरट ने अपना सिर हिलाते हुए कहा—मामला तो अभी खतम नहीं हुआ। जब तक चोर का पता न लग जाय तब तक खतम कैसे होगा।

"अब तो साफ हो गया कि उसी दाई का काम था!"

"यह कैसे कह सकते हो?"

"चूंकि माल उसी के कमरे से बरामद हुआ?"

पाइरट—"पर वे असली हार तो नहीं थे।"

"क्या कहा?"

"वह नकली था।"

"उसकी बात सुन कर मैं सन्नाटे में आ गया। पाइरट हँसने लगा।

विचारे इन्सपेक्टर को मोती पहचानने की तमीज कहां लेकिन एक दिन बवण्डर उठेगा ही।"

मैं उसे खींचते हुए ले चला।

मैंने पूछा—"कहां ले "चलोगे?"

"हम लोगों को ये बातें उनसे कह देनी चाहिये।

"मैं नहीं चाहता!"

"लेकिन वह गरीब औरत.........."

"वह तो उन्हें असली समझ कर और भी चैन से सोवेगी।

"और चोर उसे लेकर निकल जायगा।"

"तुम बिना सोचे समझे बक जाते हो। तुम कैसे जानते हो कि जिस हार को श्रीमती ने आज बन्द किया था वह नकली नहीं था। और असली चोरी बहुत पहले नहीं हो गई थी ?"

मैं घबरा कर कह उठा—"ऐसी बात !"

"हाँ।"

वहां से हम लोग बाहर निकले। वह फिर रुक कर कुछ सोचने लगा। तब बरामदे के आखिरी छोर पर गया और उस कोठरी के पास जाकर रुक गया जहां भिन्न भिन्न कमरों के खान-सामा इकट्ठा हुआ करते थे। हम लोगों की पूर्व परिचिता होटल वाली दाई कुछ लोगों को जमा कर अपना दास्तान सुना रही थी। पाइरट को देखते ही वह चुप हो गई। अपनी सहज नम्रता दिखलाते हुए पाइरट ने उसे सलाम किया। बोला—क्या कृपा करके आप मि० ओपालसन के कमरे का दरवाजा खोल देंगी।"

वह उठ खड़ी हुई। हम लोग उसके साथ ही लौट पड़े। मि० ओपालसन का कमरा शुरू में ही पड़ता था। उनका कमरा उनकी पत्नी के कमरे के सामने था। उसने अपनी कुंजी से उसे खोल दिया। हम लोग अन्दर चले गये।

हम लोगों को पहुँचा कर वह लौटने लगी तो पाइरट ने उस रोक लिया। पूछा—क्या आपने मि० ओपलसन के सामानों में इस तरह का कार्ड कभी देखा है ?"

पाइरट के हाथ में एक सादा कार्ड था। वह बहुत ही चिकना और असाधारण था। दाई ने उसे अपने हाथ में लेकर गौर से देखा। बोली:—मुझे तो स्मरण नहीं आता लेकिन उनके कमरे में खान सामा ही ज्यादातर आता जाता है।"

"ठीक है"

पाइरटने कार्ड वापस लेलिया। दाई चली गई। पाइरटने क्षण भर कुछ सोचा और सिर हिला दिया। बोला-हेस्टिंग्स ! तीन बॉर घंटी बजाओ।

मैंने चकित होकर उसकी आज्ञा का पालन किया। इधर वह रद्दीकी टोकरीको फर्शपर उलट कर रद्दी कागजों को टटोलने लगा।

दूसरे ही क्षण खानसामा आया। पाइरटने उसके हाथ में कार्ड देते हुए उससे भी वही सवाल किया। उसने भी वही उत्तर दिया। पाइरटने उसे भी बिदा किया। वह अनिच्छा पूर्वक वहां से गया और फर्शपर बिखरे कागजों की तरफ विस्मयसे देखता गया। उसके बाहर होतेही पाइरटने उसे सुनाते हुए कहा:—बहुत अधिक रूपये पर इसका बीमा हुआ था।"

मैं चिल्ला उठा—पाइरट मैं समझता हूँ कि—

पाइरट-तुम कुछ नहीं समझते दोस्त ! कुछ भी नहीं। इस पर कोई विश्वास नहीं करेगा पर बात यही है। चलो अपने कमरे में चलें।

हम लोग चुप चाप अपने कमरे में चले गये वह पाइरटने झट पट अपनी पोशाक बदली ! बोला:—मैं इसी वक्त लण्डन जाऊंगा नितान्त जरूरी है।"

"क्या ?"

दूसरा उपाय नहीं है। दिमाग का काम खतम हो गया। अब मुझे उन्हें तसदीक करना है। मैं उसका पता लगा लूँगा। पाइरट को कोई धोखा नहीं दे सकता।

उसके घमण्ड पर मनहीमन जलता हुआ मैंने कहा:—तुम बेवकूफ बनकर उलटे पांव लौट आवोगे ?"

मुझ पर क्रोध मत करो। मेरा एक काम कर देना।"

"मुझे अपने ऊपर क्रोध हो आया। मैंने पूछा:—"क्या काम है?" जो कोट मैंने अभी अभी उतारा है उसकी बाँह को साफ कर देना उसमें सफेद पाउडर लग गया है। तुमने देखा होगा कि ड्रेसिंग टेबुल के चारों तरफ मैंने अपनी अंगुली घुमाई थी।"

"मैंने नहीं ख्याल किया था।"

तुम्हें मेरे प्रत्येक काम पर ध्यान रखना चाहिये। अधिक जोश में आकर मैंने उसे अपनी बांह में पोंछदी, जो मुझे कदापि नहीं करना चाहिये था। मेरी वैसी आदत नहीं।"

पाइरट के वसूलों से मुझे कोई मतलब नहीं था। मैंने पूछा:—"वह क्या था?"

"जहर नहीं था। तुम्हारी कल्पना उड़ान लेने वाली है। वह साधारण खल्ली थी।

"खल्ली?"

"हां, लकड़ी वगैरह को चिकनी करने के लिये बढ़ई लोग उसे काम में लाते हैं।"

मैं हंस पड़ा। बोला:—तुम भी बड़े शरारती हो। मैंने समझा कोई बड़ा भारी काम है।"

इसके बाद उसने मुझसे हाथ मिलाया और चलता बना। और मैं उसका कोट साफ करने लगा।

× × ×

दूसरे दिन मैं अकेले घूमने निकला। कुछ पुराने मुलाकाती मिल गये। उनके ही साथ भोजन किया और दिन बिताया। शाम को लौटा तो देखा ओपालसन दम्पति से घिरा हुआ पाइरट

खड़ा है। वह मुझे देखते ही उछल पड़ा बोला:—दोस्त, सभी काम आप से आप हो गया।"

मैंने पूछा:—तुम्हारा मतलब है कि—

"मैं क्या कहूँ ? श्रीमती ओपालसन तो . . बाग हो गई थीं बोली—आश्चर्य जनक काम इन्होंने किया है। मैंने तो इसी समय कहा था कि यदि मि० पाइरट यह काम नहीं कर सकते तो दूसरा कोई नहीं कर सकता।"

इस पर मि० ओपालसन ने कहा:—तुम्हारी ही बात सच निकली।

मैं चकित होकर पाइरटको देखने लगा। उसने कहा—मेरे मित्र अथाह में पड़े हैं। मैं सारा दास्तान इन्हें सुना देता हूँ कि इस का किस तरह अन्त हुआ ?

"अन्त हुआ ?"

"हाँ, और वे गिरफ्तार भी हो गये ?"

"कौन गिरफ्तार हो गया ?

"होटल वाली दाई और खानसामा।" तुमने तो उन पर सन्देह भी नहीं किया होगा। खल्लीवाले मेरे इशारे पर तुमने ध्यान नहीं दिया ?"

"तुमने तो यही कहा था कि बढ़ई उसे काम में लाते हैं।"

"ठीक तो है ताकि दराज आसानी से भीतर बाहर आजा-सकें। जिसने खल्ली का प्रयोग किया था वह चाहता था कि दराज आसानी से खुलबन्द हो जायं और किसी तरह की आवाज न हो। यह उसी होटलवाली दाई का काम था। काम इतनी सफाई से किया गया था कि पहले वह मेरे ही मन में नहीं आया।"

"खानसामा बगलवाले कमरे में छिपा था। सेलेस्टाइन कमरे से बाहर गई। दाई ने चटपट दराज खोलकर सन्दूक निकाल ली और खानसामा की तरफ सरका दिया। खानसामाने इतमीनान से उसे खोला उसमें से हार निकाल लिया, फिर उसमें ताला बन्द कर दिया। जब दाई दूसरी बार कमरे से बाहर गई तो खानसामाने बक्स भीतर सरका दिया। होटल वाली दाईने चट पट उसे उठाकर अपनी जगह पर रखदिया।

इसी बीच में श्रीमती ओपालसन कमरे में पहुँची और चोरी का पता लग गया। होटल वाली दाई ने खाना तलाशी के वक्त बड़ी अनाकानी की। लेकिन उसके बाद उसके चेहरे पर जरा भी विषाद नहीं था। नकली हार का उन लोगों ने पहले से ही प्रबंध कर लिया था और उसे सवेरे ही सेलेस्टाइन के विस्तरे में छिपा दिया था। यह सबसे बड़ी चालाकी थी!

"लेकिन तुम लण्डन क्यों गये?"

"तुम्हें कार्ड वाली बात याद होगी?"

वह तो मेरे लिये उस समय भी पहेली थी और पहले ही बनी है। मैंने समझा था कि तुम—

मि० ओपालसन की तरफ देखकर मैं संकोच से चुप रहा।

पाइरट खिल-खिलाकर हँस पड़ा।

"वह खास तरह का कार्ड है। निशान लेने के काम में आता है। उस पर मैंने उस दाई और खानसामा के हाथ का निशान लिया और उसे लेकर सीधे लण्डन अपने दोस्त जैप के पास गया। वह स्काटलैण्ड यार्ड में इन्सपेक्टर हैं। उनसे मैंने सारा दास्तान कह दिया। जैसा मैंने अनुमान किया था ये दोनों निशान दो ठगों के निकले जिन्हें पुलिस कुछ दिनों से तलाश

रही थी। जैप मेरे साथ ही यहाँ आया। दोनों को गिरफ्तार किया। हार खानसामा के पास बरामद हुआ। चालाक तो दोनों खूब निकले लेकिन गलत तरीके से काम किया।

"मैंने तुमसे कम से कम छत्तीस बार कहा होगा कि बिना उत्तम तरकीब के—"

"छत्तीस ही क्यों? छत्तीस हजार बार कहा था।" पर मैं यह जानना चाहता हूँ कि उनकी तरकीब कहाँ असफल रही?"

"दाई और खानसामा बन जाना तो आसान है। पर अपने काम पर सावधान रहना भी जरूरी है। उन्होंने उस खाली कमरे में झाड़ू तक नहीं दिया था। इससे जब उसने टेबुल पर जवाहिरात की पेटी रखी तो उसका निशान टेबुल पर पड़ गया जो दरवाजे के पास ही रखा था।

"अब मुझे याद आया।"

उस समय तक मैंने अपना विचार स्थिर नहीं किया था लेकिन उसे देखने के बाद मेरे मन में जरा भी सन्देह न हो रहा

क्षण भर तक सन्नाटा रहा

श्रीमती ओपालसन ने कहा—मुझे तो मेरा हार मिल गया।

मैंने कहा:—मुझे बड़ी खुशी है। मुझे भूख लगी है। छुट्टी दीजिये।

पाइरट मेरे साथ हो लिया। मैंने कहा:—"तुम्हारी विजय हुई।"

"इसका श्रेय तो इन्सपेक्टर और जैप लेंगे। लेकिन मैं इतने से ही सन्तोष करूँगा। इतना कह कर उसने मेरे हाथ में वह चैक रख दिया जो मि० ओपालसन ने उसे दिया था। बोला—

यह रविवार तो बेकार चला गया। क्या अगले रविवार को फिर आया जायगा। अबकी मेरे खर्च से।

(२)

जनवरी का महीना था। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। मि० अण्ड्रूगफ चैन की नींद सो रहे थे। बिल्ली की म्याऊँ म्याऊँ ने सुन कर उनकी नींद खुल गई। उनके मन में आया कि उनकी बिल्ली ही सकट में पड़ कर चिल्ला रही है। वे बड़बड़ाते हुए नीचे की तरफ चले। रसोई घर में जाकर देखा तो उनकी मोटी बिल्ली चूल्हे के पास खर्राटा ले रही है। वे अपने कमरे में लौट आये और रोशनी बुझा कर सोने हो वाले थे कि रसोई घर की खिड़की की तरफ से फिर वही करुण शब्द सुनाई पड़ा। खिड़की का परदा हट गया था। उन्होंने देखा कि चौखट पर एक बिल्ली दरवाजा खोलने का यत्न कर रही है।

उसकी पीठ पाला से लदी थी। मि० गफ को दया आ गई। उन्होंने उठ कर खिड़की खोल दी। बिल्ली भीतर चली आई। उन्होंने श्यामी बिल्ली नहीं देखी थी। उसकी आँख की बनावट पर वे मुग्ध हो गये। बिचारी सर्दी से कांप रही थी। मजे में चल भी नहीं सकती थी।

उन्होंने एक थाली में दूध उड़ेला और उसके सामने रख दिया। वह दूध भी पी गई। मि० गफ सोचने लगे कि उसे खिड़की से बाहर रख दूँ या वहीं पड़े रहने दूँ। उसकी दयनीय दशा देख कर उनका हृदय पिघल गया। उन्होंने उसे वहीं रहने दिया और अपनी बिल्ली को उठा कर दूसरी जगह सुला दिया।

दूसरे दिन सुबह श्रीमती गफ की दृष्टि उस पर पड़ी। वे भी

उसे प्यार करने लगी। पति पत्नी को यह नहीं मालूम था कि यह बिल्ली है किसकी।

उन्होंने कहा:—बिचारी को भर पेट भोजन नसीब नहीं हुआ है। बड़ी भली बिल्ली मालूम होती है। उसकी आँखें कैसी सुन्दर हैं।

मि० गफ—मेरा ख्याल इसके विपरीत है। इसके लक्षण अशुभ हैं।

"सिर्फ काली ही बिल्ली शुभ होती है।"

"मुझे इसके मालिक का पता लगाना होगा।"

अड़ोस पड़ोस में पूछा गया पर बिल्ली के मालिक का पता नहीं लगा। इधर मि० गफ की बिल्ली के साथ उसका मेल जोल हो गया। इसलिये श्रीमती गफ उसे रख लेना चाहती थीं। लेकिन दो ही चार दिन के बाद १ व्यापारी ने आकर कहा कि उसने इस बिल्ली को साउथलैण्ड नामक मकान में देखा था। वहाँ सप्ताह भर पहले वह कोयला देने गया था। वह मकान वहाँ से करीब डेढ़ मील पर था। मि० टेलिंगर उसमें रहते थे।

श्रीमती को उसे अलग करते हुए वेदना हुई लेकिन मि० गफ ने घर में एक ही बिल्ली काफी समझा। तीसरे पहर बिल्ली को लेकर वहाँ जाने का उन्होंने निश्चय किया। वे उस मकान को जानते थे क्योंकि मि० टेलिंगर के पहले इनका एक परिचित आदमी उसमें रहता था।

मकान बहुत सुन्दर नहीं था उसमें पेड़ पौधे इतने निकट लगा दिये गये थे और वे इतने बड़े हो गये थे कि चारों तरफ मकान को घेर लिया था। कहीं कहीं खिड़कियों पर भी झाड़ उग आये थे। रास्तों पर भी घास उग आई थी।

मि० गफ पहले सदर दरवाजे पर पहुँचे। घंटी बजाई पर कोई उत्तर नहीं मिला। तब वे पिछले दरवाजे पर पहुँचे। वहां भी वही हालत रही। उन्होंने अनुमान किया कि इस समय घर पर कोई नहीं है, इसलिये बिल्ली को वे लेकर वापस चले गये। उनकी पत्नी को इससे बहुत ज्यादा प्रसन्नता हुई। दूसरे दिन सुबह वह फिर वहाँ गये। पर कोई काम न चला।

वे निराश होकर घर की ओर लौट रहे थे कि गली की मोड़ पर महल्ले के पुलिस कान्स्टेबुल से भेंट हो गई। उन्होंने सारा दास्तान उससे कह दिया।

उसने कहा:—"मि० टेलिंगर कहीं बाहर नहीं गये होंगे। यदि बाहर जाते तो मकान की रखवाली के लिये हम लोगों से जरूर कह जाते। कई बार ऐसा होता आया है। मैं गाँव में पता लगाऊँगा।"

गाँव में पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि आज से पाँच दिन पहले दरवाजे की सीढ़ीपर ग्वाले को एक पुर्जा मिला जिसमें लिखा था कि पाँच दिन तक दूध नहीं चाहिये। इससे विदित हुआ कि मि० टेलिंगर कहीं बाहर गये है। लेकिन बनिये को कोई सूचना क्यों नहीं दी गई। हर बीफे को उसके पास सप्ताह भर के सामानों की सूची पहुंच जाती थी। आज शुक्र था तो भी कोई लिस्ट क्यों नहीं पहुँची। दाई का भी पता नहीं था। अगर मि० टेलिंगर बाहर गये होते तो वह तो रहती। दाई कहीं बाहर से आई थी इसलिये किसी को उसका पता नहीं मालूम था। लेकिन इतना तो साबित हो गया कि बिल्ली उन्हीं की थी।

हर तरफ से निराश होकर कांस्टेबुल ने थाने में खबर दी। वहाँ से मकान में प्रवेश करने की आज्ञा मिली। पीछे की एक

खिड़की से वह भीतर गया। वहाँ जाकर देखता है कि कोचपर एक आदमी मरा पड़ा है। वह लाश मि० टेलिंगर की नहीं थी बल्कि किसी युवक की। उसकी छाती में गोलका घाव था।

इन्सपेक्टर मैक्लीन तुरत घटना स्थल पर पहुँच गये। उन्हें बतलाया गया कि सिवा लाश के किसी ने कोई चीज नहीं छूया है। जाँच के बाद डाक्टर ने कहा कि आठ दिन पहले इस आदमी की मृत्यु हुई। घाव घातक था मैक्लीन ने लाश की जाँच की। उसके शरीर पर जो कुछ मिला उसे अपने कब्जे में कर लिया तो लाश हटा दी गई।

कमरे में दम घुट रहा था। इसलिये ब्रूक ने पूछा:—"क्या मैं खिड़की खोल सकता हूँ।"

मैक्लीन—"अब कोई हर्ज नहीं है।"

खिड़की के प्रकाश में ब्रूक ने कहा:--विचित्र बात है। मालूम होता है कि बैठे में उसकी हत्या की गई है। क्योंकि इस कोच को छोड़ कर कहीं भी खून के निशान नहीं हैं।

मैक्लीन ने सिर हिला दिया। निशान लेने के लिये वह वहां की चीजों की जांच कर रहा था। यहां कुछ न पाकर वह फर्श की जांच करने लगा। ब्रूक की मदद से उसे कार्तूस के दो टोंटे मिले।

"एक बार जरूर खाली गया है। इसका पता लगाओ कि वह कहां लगा है।"

ब्रूक सावधानी से कमरे की जांच करने लगा। उधर मैक्लीन घर की जांच करने लगे कि चोर तो नहीं घुसे थे। सिर्फ सदर दरवाजा ही ऐसा मिला जिसको निकट भविष्य में काम में लाया गया हो। बिस्तरे अस्त व्यस्त पड़े थे। कुछ गहने बिखरे पड़े थे

अन्यथा नीचे के कमरे की तरह यहां भी सब कुछ साफ सुथरा था।

रसोई घर से सटा हुआ कमरा था जिसमें गैसका स्टोव था। वहां गैस की महक आ रही थी। जांच करने पर मालूम हुआ कि उसकी एक टोंटी खुली थी। उसके ऊपर एक बड़ी केतली रखी थी जो खाली थी। स्टोव एक दम छोटा था। उसकी जांच की गई तो मालूम हुआ कि उसमें का सारा गैस खर्च कर दिया गया है।

"हत्या के समय ही यह गैस खोला गया था, उसे यों ही छोड़ दिया गया था इसलिये केतली का सारा पानी जल गया। स्टोव यह साफ बतला रहा है।

इसके बाद ब्रूक हाल में गया और वापस आकर बोला—सभी बत्तियां बुझी हुई हैं। मालूम होता है कि हत्यारा सभी बत्तियां बुझाता गया। सिर्फ इसे बुझाना भूल गया।

ब्रूक—"उस गोली का तो कोई निशान नहीं मिलता।"

मैक्वीन ने सिर्फ 'हूँ' कह दिया।

(३)

उस मकान में मि० टेलिंगर के कई चित्र थे। सब से हाल के चित्र में उनको अवस्था प्राय: साठ साल की प्रतीत होती थी। छोटी-छोटी मूंछें और दाढ़ी और कोतही गर्दन।

जांच करने पर मालूम हुआ कि मि० टेलिंगर लंका में चाय के खेतिहर थे। दो साल से इस मकान में रहते थे। एक दाई के सिवाय दूसरा कोई उनके साथ नहीं था।

मैक्वीन—नौकर का पता लगाना चाहिये। ग्वाले को कागज

का जो टुकड़ा मिला था उसे भी तलाशना होगा। वह यहीं छोड़ गया था। कहीं इधर-उधर उड़ गया होगा।

घंटों की परीशानी के बाद ब्रूक को वह टुकड़ा मिला। उस पर लिखा था :—जब तक खबर न दी जाय, दूध मत दे जाना।"

मैक्वीन—यह स्लेट मिली है जिस पर घर का हिसाब लिखा है। मालूम होता है कि दाई लिखा करती थी। पर इससे तो यह हरफ मिलता नहीं। तो क्या खुद टेलिंगर ने वह पुरजा लिखा था। दराज में उसके चेक बुक का अद्धा मिला है। उससे मिलान करके देख लेता हूँ।"

लेकिन दोनों में कोई मोकाबला नहीं था।

ब्रूक—"तब इसे लिखा किसने ?" दूसरे ही क्षण शर्मिन्दगी से बोला—"मुझे बतलाने की आवश्यकता नहीं है।"

मैक्वीन—इस अज्ञात व्यक्ति की हत्या की गई है। यह तो वह जानता ही था कि ग्वाला और अखबार वाला रोज सवेरे आ धमकेगा। ग्वाले को भ्रम में रखने के लिये तो यह पुर्जा लिख दिया।

"और ग्वाले को यों ही छोड़ दिया।"

नहीं, देखो ! विगत पांचों दिन का अखबार पड़ा है। सदर दरवाजे में बड़ा-सा छेद है। उसी में से अखबार फेंक दिया जाता था। कई खत-बिल-भी उसी तरह भीतर आये हैं। हत्यारा यह जानता था कि अखबार वगैरह इसी तरह भीतर डाल दिये जाते हैं। इसलिये उसने सिर्फ ग्वाले के लिये वह पुरजा लिखा।'

तब तो कोई ऐसा आदमी होगा जो टेलिगर को भलीभांति जानता होगा।

"हाँ।"

"तब टेलिंगर कहां है।"

'टेलिंगर भी मारा गया।"

"लेकिन क्यों ?"

"तुम्हारी शंका उचित है। हत्यारा यह लाश यहीं छोड़ता गया और टेलिंगर की लाश इसलिये उठा ले गया जिससे लोगों को उसी पर हत्या का सन्देह हो जाय। दो गोलियां दागी गई थीं, ग्वाले वाला पुरजा, यह श्यामी बिल्ली, सभी इस बात के सबूत हैं। अखबार का पहला अँक हत्या का दिन भी प्रभावित कर देता है। २८ जनवरी सोमवार को हत्या की गई थी।

ब्रूक—"इतना तो साफ है।"

इसके बाद मैक्कीन उस कापी को खोजने लगा जिसमें से वह कागज का टुकड़ा फाड़ा गया था। कागज बहुत पतला था और फीके रूल के निशान उस पर थे। किसी किताब या कापी में से फाड़ा हुआ मालूम होता था।

ब्रूक ने लिखने का एक पैड दराज से निकाल कर मैक्कीन के सामने रख दिया। लेकिन दोनों कागज दो तरह के थे।

मैक्कीन ने पैड हाथ में ले लिया और उसे उलट-पुलट कर देखने लगा। सहसा उसकी निगाह पीछे की तरफ पड़ी। अन्तिम पन्ना गायब था। उस पर कड़ी पेंसिल से लिखा गया था इसलिये दूसरे पन्ने पर कुछ दाग उठ आये थे। मैक्कीन ने उभड़ा अँश पढ़ा:······उससे तंग आ गई······उससे कहा······अरे उसने किया·········मैंने उसे लेने दिया·········मुझे इसकी जरा भी परवा नहीं है·········पहली गाड़ी······फोर स्ट्रीट, हेस्टिंग्ज, तब तक नहीं············

'एडिथ'

इससे बहुत मदद मिलने की आशा है। डाकिये से दाई का पूरा नाम मिल सकता है। तुम जाकर उससे मिलो। तब तक बाकी चीजों की जांच मैं कर लेता हूँ।

डाकिये ने उसका पूरा नाम और हुलिया बतला दिया लेकिन उसका पता ठिकाना उसे भी नहीं मालूम था। उसका नाम एडिथ टकवेल था। उसकी उम्र २० साल के लगभग थी। डाकिये का ख्याल था कि टेलिगंर उसे भ्रष्ट करना चाहता था क्योंकि दाई ने एक बार डाकिये से कहा था कि वह बड़ा ही क्रूर है, वह मुझे अपनी दासी समझता है तो वह उसकी भूल है। मैं ऐसी औरत नहीं हूँ।

मैक्लीन—"हम लोगों को हेस्टिंग्ज चलना चाहिये। सम्भव है कि उस औरत से कुछ बात मालूम हो।"

वे सड़क से समुद्र के किनारे पहुँचे और फोर्सस्ट्रीट में पता लगाने लगे। इस काम में बहुत अधिक समय लग गया क्योंकि इसमें छोटी श्रेणी के लोग रहते थे। टकवेल का यहाँ कहीं पता न चला। अन्त में मैक्लीन को यह मालूम हुआ कि रोजर नाम की एक महिला यहाँ रहती है। जिसकी बहन हाल में ही कहीं बाहर से आई है। श्रीमती रोजर स्प्रेता उसके नाम से एक होटल चलाती थीं। पता लगाने पर मालूम हुआ कि वे टकवेल की बहिन थीं। उनका विवाह हो चुका है। टकवेल यहीं रहती हैं। उस समय वह बाहर गई थी लेकिन थोड़ी देर में वापस आई पुलिस अफसरों की बात सुनकर वह घबरा उठी। भय से काँपती हुई वह मैक्लीन के समीप आई और अपना परिचय दिया।

"तुम मि० टेलिंगर के यहाँ काम करती थी।"

"मैं दो साल से उनके यहाँ थी।"

"कब नौकरी छोड़ी ?"

"पिछले सोमवार को सुबह।"

"यानी अट्ठाइस जनवरी को" नौकरी छोड़ने का कारण। उनसे झगड़ा हो गया। उनका स्वभाव अच्छा नहीं है। दो साल तक मैं बरदाश्त करती रही। रविवार को मुझसे एक तश्तरी टूट गई। उन्होंने मुझे बुरी तरह डाँटा, गाली दिया। मुझे भी गुस्सा आया और कुछ बक गई। उन्होंने मुझे एक महीने की नोटिस दे दी,। मैंने कहा नोटिस की क्या जरूरत है। मैं कल ही चली जाऊँगी। नौकरी की कमी नहीं है।

"और तुमने नौकरी छोड़ दी ?"

हाँ, यहाँ मेरी बहन रहती हैं। उन्होंने कई बार मुझे बुलाया भी था। इसलिये मैंने तार से उन्हें सूचना दे दी।

"तुमने किसी और को भी लिखा था ?"

उसी दिन तीसरे पहर मैंने अपनी एक सखी को भी सारा हाल लिखकर भेजा था। वह लण्डन में रहती हैं।

तुमने किस समय वह डेरा छोड़ा ?

सवेरे दस बजे के लगभग। चलते वक्त उन्होंने मुझे बहुत समझाया पर मैं अपनी बात पर अड़ी रही।

"क्या उस दिन कोई मुलाकाती उनके यहाँ आनेवाले थे ?"

"उन्होंने मुझसे कुछ नहीं कहा था।"

क्या तुमने अपनी नौकरी छोड़ने की बात किसी दूसरे से कहा था ?"

"जी नहीं।"

"ठीक ठीक याद करो।"

"कहती कहां से ? झगड़ा के पहले तो मैं ही नहीं जानती थी कि मैं नौकरी छोड़ दूँगी।"

मैक्लीन चिन्ता में पड़ गया क्योंकि उसके अनुसार हत्यारे को यह मालूम हो जाना चाहिये कि इस बूढ़े के सिवा घर में दूसरा कोई नहीं है।

"तुम्हें मेरे साथ चल कर एक आदमी की पहचान करनी होगी।"

कौन आदमी ?"

"उसकी हुलिया मैं नहीं बतला सकता। शायद तुम पहचान कर सको। जब उसे ब्रूक से मालूम हुआ कि किसी मुर्दे की पहचान करना है तो वह जाने से इन्कार करने लगी।

"तुम्हें जाना ही पड़ेगा। जल्द तैयार हो।"

लाश को देखते ही उसे मूर्छा आ गई। होश आनेपर उसने कहा:—मैं इसे पहचानती हूँ। लेकिन मैं यह नहीं कह सकती कि इसे कहाँ देखा है।

"मि० टेलिंगर के मकान में तुमने कभी इसे देखा था ?"

उसने रोकर कहा—"मुझे याद नहीं पड़ रहा है।"

"याद करो ! अन्यत्र कहीं देखा होगा।"

हो सकता है। पर मैं ठीक ठीक नहीं कह सकती। थोड़ी देर तक सोचकर उसने कहा—याद आ गया। वहीं देखा था। बहुत दिन हुए वह यहाँ आया था और मि० टेलिंगर से प्रायः आध घंटे तक बातें करता रहा।

मैक्लीन के कई दिन बड़ी बेचैनी से कटे। मृतक के कपड़ों में धोबी के निशान वगैरह की जांच सावधानी से करके अख-

बारों में छपा दिया गया था। एक दिन एडिथ टकवेल ने अचानक आकर कहा—

मुझे एक बात अचानक याद आ गई ! उस दिन उस आदमी ने टेलीफोन इस्तेमाल किया था। उसने पेंसिल से दीवार पर एक नम्बर लिख दिया था। मैंने उसे मिटाने की कोशिश की पर मिटा न सकी।

मैक्कीन फौरन वहां पहुँचा। टेलीफोन के पास ही दीवार पर पेंसिल से कुछ लिखा था। बड़ी कठिनाई से उसने उसे पढ़ा, टेलीफोन के दफ्तर से मालूम हुआ कि जानलाइटली नाम के आदमी के मकान में वह टेलीफोन लगा था। उसका पता कैण्डनस्ट्रीट W. c. है।

जानलाइटली के यहां जाने के पहले ही उन्हें खबर मिली कि लाश पहचानी गई है। एक रमणी ने उसे अपना भाई बतलाया है। मैक्कीन पहले उसी रमणी से मिलने गया। पूछा—आपने अपने भाई हेरी टैगे की लाश पहचानी है।

"जी हाँ ?"

"आपको पूर्ण विश्वास है कि यह उन्हीं की लाश है ?"

"जी हाँ !"

"आपसे उनकी अन्तिम भेंट कब हुई थी ?"

"प्राय ६ मास होते हैं वे मुझ से और मेरे पति से मिलने आये थे।"

"वे क्या करते थे।"

"मुझे नहीं मालूम। इधर दस साल से हमलोग बहुत मिलते जुलते थे। ये प्रायः पेरिस, बर्लिन तथा अन्य बड़े शहरों में जाया करते थे। मैं नहीं जानती कि क्यों ?"

"क्या आपको मालूम था कि टेलिंगर नामक सज्जन से उनकी जान पहचान थी।"

"नहीं, यह नाम मैं आज पहले पहल आप से ही सुन रही हूँ।"

"क्या आप जानलाइटली को जानती हैं?"

"जी हाँ!"

"आप का उनसे कैसे परिचय हुआ?"

"दो साल की बात है। एक दिन मेरे भाई से अचानक लण्डन में मुलाकात हुई। उनके साथ एक दूसरे सज्जन थे। उनका नाम मेरे भाई ने जानलाइटली बताया।"

"आप को ठीक ठीक याद है?"

"जी हाँ, क्योंकि उनकी आकृति का मुझपर बहुत प्रभाव पड़ा"

"क्या आप उनके बारे में और कुछ जानती हैं।"

बड़ी घबराहट से उसने कहा—मेरे भाई की आँख बचाकर वह दो एक बार मेरे यहाँ आये। हम लोग साथ ही टहलने गये। जब मेरे भाई को यह मालूम हुआ तो वे मुझपर बिगड़े। उसके साथ मेरा आनाजाना उन्हें अच्छा नहीं लगा।

मैंने उनसे कहा—"मैं उसे चाहती हूँ।"

इसपर वे हँस पड़े और बोले—"तुम्हारी अक्ल मारी गई है, लाइटली बड़ा ही खतरनाक आदमी है। मैं उनका मतलब नहीं समझ सकी। लेकिन उन्होंने उसे जरूर मना कर दिया क्योंकि उसके बाद फिर कभी नहीं आया। साल भर तक मैं अपने भाई से बोली तक नहीं।"

आपकी बातों से मालूम होता है कि जितना आप बतला रही हैं उससे कहीं ज्यादा जानती हैं।

"नहीं, दस साल के भीतर ६ बार से ज्यादा भेंट नहीं हुई। उसका ज्यादा आना जाना इसी दो साल के भीतर हुआ था।"

"क्या आप लाइटली का पता जानती हैं?"

'मुझे नहीं मालूम कि आजकल वह कहाँ रहता है।"

उन्हें विदा करने के बाद मैक्लीन जान लाइटली का मकान खोजते हुए उनके यहाँ पहुँचे। मि० लाइटली डेरे पर नहीं थे। घंटे भर की प्रतीक्षा के बाद उनका दर्शन हुआ।

मैक्लीन—क्या आपका ही नाम जान लाइटली है।

"जी हाँ।"

"मैं पुलिस अफसर हूँ। आपसे कुछ पूछना है।"

लाइटली ने बड़े तपाक से कहा—भीतर चलिये।

उन्हें लिये हुए वह भीतर गया। मैक्लीन उसका चेहरा टैंगे की बहन के दिये हुए हुलिया से मिलाने लगा। उसकी आँखें सचमुच बड़ी रसीली थीं लेकिन उनसे शैतानियत टपकती थी।

मैक्लीन—क्या आप मि० टेलिंगर को जानते हैं?

टेलिंगर? कौन टेलिंगर! क्या आपका मतलब टोलर से है?

"नहीं, टेलिंगर से।"

"मैं किसी टेलिंगर को नहीं जानता।"

"क्या आप हैरी टैंगे को जानते हैं?"

लाइटली इधर उधर देखने लगा। मैक्लीन ने समझ लिया कि उसे हैरी के बहन की याद आगई। उसने बड़ी सावधानी से काम लेना जरूरी समझा।

लाइटली ने कहा:—"मैं उन्हें तो जानता हूँ।"

"आपसे उनकी कब मुलाकात हुई थी।"

"जरा याद करने दीजिये। शायद मंगल को। नहीं पिछले सोमवार को। वह मेरे पास आया था और अपनी मोटर पर समुद्रकी तरफ सैर करने के लिये आग्रह करता था। मुझे जाने की फुरसत नहीं थी थोड़ी देर ठहर कर वह अपनी मोटर पर चढ़कर चला गया।

"उसके बाद फिर आप से भेंट नहीं हुई?"

"नहीं"

"आपका उनके साथ किसी तरहका व्यापाराना संबंध था?"

"नहीं वह अपना स्वतंत्र रोजगार करता था।"

"और आप"

मैं इञ्जीनियर हूँ। इस समय बेकार हूँ। मैं शीघ्र ही दक्षिण अफ्रीका जाने वाला हूँ।

"मेरे पास तलाशीका वारण्ट आपके नाम है।"

"किस लिये?"

इस प्रश्न का उत्तर दिये बिना ही मैक्लीन ने तलाशी का काम आरंभ कर दिया। मकान में कोई ऐसी चीज नहीं मिली जिससे लाइटली फँस सके। न तो कोई पत्र वगैरह ही मिला और न रिवाल्वर ही। ऐसा मालूम हुआ कि उसने सारे निशान मिटा दिये हैं जिनका संबंध इस हत्या से हो सकता है।

लाइटली ने पूछा—क्या आपको इतमीनान हो गया?

मैक्लीन—मकान में तो कुछ नहीं मिला। पर मैं आपकी भी तलाशी लेना चाहता हूँ।

लाइटली आनाकानी करने लगा क्योंकि उसकी जेब में नोटों का बण्डल था। करीब ५०० पौंड के ताजे नोट थे।

मैक्लीन, ये नोट आपको कहाँ से मिले ?

"घुड़ दौड़ में ! मेरे भाग्य ने मेरा साथ दिया ।"

"भाग्यने तो आपका साथ अवश्य दिया ।"

उसके बाद उसने उसका ओवरकोट उठाया जिसे उतार कर लाइटली ने रख दिया था । उसमें बहुत बड़ा सबूत मिल गया । भीतरी जेब में एक नोट बुक थी जिसका कागज बहुत ही पतला था और उसपर फीकी नीली लाइन थी । मैक्लीन उसके पन्ने उलटने लगा । उसमें से एक पन्ना फाड़ा हुआ निकला । योंही चीर लिया गया था । इससे उसका एक हिस्सा वहीं रह गया था ।

मैक्लीन ने कहा:—अब तो तुम पकड़े गये ।"

इसके बाद उसने अपनी जेब से वह टुकड़ा निकाला जो टेलिंगर के आहाते में मिला था । वह इस फटे अंश से एक दम मिल गया । उसके अलावा लिखावट भी मिल गई ।

मैक्लीन ने कहा—मैं तुम्हें हैरी टैंगे की हत्याके अभियोग में गिरफ्तार करता हूँ । इतना कह कर उसने लाइटलीके दोनों हाथ में हथकड़ी पहना दी ।

दो दिन बाद टेलिंगर की लाश एक तालाब में मिली । हवा गाड़ी के पहिये में बाँध कर वह फेंक दी गई थी । इसकी छाती में गोली का घाव था । जैसा कि टैंगे की छाती में था । जिस पिस्तौल से गोली चलाई गई थी वह भी उसी मोटर में मिली । टेलिंगर की जेब में से एक चेक बुक भी निकली जिसकी एक अधकटी पर पांच सौ पाउण्ड का उल्लेख था । बंक में दरयाफ्त करने से मालूम हुआ कि लाइटलीने वह चेक भुनाया था ।

सारा सबूत एक साथ ही इकट्टा हो गया। इससे मैक्लीन को आशा हुई कि लाइटली अपना अपराध कबूल कर लेगा। लेकिन अपराध की भीषणता जानते हुए भी उसने साफ इन्कार कर दिया।

त्रूक ने पूछा:—इस घटना का आरंभ क्योंकर हुआ ?"

मैक्लीन—इन तीनों ने जुआ खेला था। टेलिंगर पाँच सौ पाउण्ड हार गया था। ये दोनों रुपया वसूल करने उसके यहाँ गये। टेलिंगर ने चेक लिखकर इनके हवाले किया। इसी समय दोनों लड़ पड़े। यह लाइटली को किसी तरह मालूम हो गया कि घर में दाई नहीं है केवल टेलिंगर यहाँ है। उसने सारी रकम हड़प जाना चाहा। उसने दोनों को मार डाला। हैरी की लाश वहीं छोड़ दी। पुरजा लिख कर सीढ़ी पर फेंक दिया और टेलिंगर की लाश हैरी की मोटर पर लाद कर उस तालाब के पास ले गया और मोटर के साथ ही तालाब में डुबो दिया। यदि दो चार दिन और इसी तरह बीत जाता तो लाइटली अफ्रीका चला गया होता। लेकिन वह श्यामी बिल्ली—जिस पर इसका ध्यान नहीं गया—उसकी काल बन गई। मैं उस बिल्ली को खरीद लेना चाहता हूँ।

रुपहला नकाब

नवम्बर का महीना—शनीचर का दिन था! शाम का वक्त था डाक्टर लुई राफेल अपने बैठक में बैठे चाय पी रहे थे। मैं पैथालाजिकल इंस्टीट्यूट से उनकी पुस्तक के लिये—जिसे वे लिख रहे थे—कुछ सामग्री लेकर लौटा था। रास्ते में अखबार भी खरीद लिया था। उसमें प्रकाशित एक समाचार की तरफ उनका ध्यान आकृष्ट करते हुए मैंने कहा—अभी तक पुलिस को उस रुपहले नकाबपोश का पता नहीं लग सका है। मुझे आशंका हो रही है कि उसे नहीं पकड़ पावेंगे। वह अपनी पाप की कमाई बटोर कर बैठ गया है और अब शान्तमय जीवन बिताना चाहता है।

एक घूँट चाय पीकर डाक्टर ने कहा:—अभी बैठा बैठा मैं उसी रुपहले नकाबपोश की बातें सोच रहा था कि तुमने उसकी चर्चा भी कर दी। यह विचित्र संयोग है। वह सचमुच बड़ा होशियार है।

मैंने कहा:—"होशियार शब्द उसके लिये उपयुक्त नहीं है। किसी बड़े होटल में घुस जाना और पिस्तौल दिखा कर उस पर अधिकार कर लेना, बड़े साहस का काम है। एक बार भी नहीं तीन तीन बार वही काम कर डालना साधारण बुद्धि का काम नहीं है।

उसके लिये उन उपमाओं का प्रयोग करने में मैंने अतिशयोक्ति से काम नहीं लिया था। उसने अपने चेहरे को

छिपाने के लिये सिर्फ रुपहले सिल्क के नकाब से काम लिया था। लेकिन उसने इतना काम किया था कि आज तक कोई भी उसे पहचान नहीं सका था। यद्यपि यह बात सच थी कि जितना अखबार वाले समझते थे उससे ज्यादा पुलिस को उसके बारे में मालूम था। चूँकि मैं डाक्टर का प्राइवेट सेक्रेटरी था इसलिये खुफिया विभाग से सम्पर्क होने के कारण मैं इतना तो जरूर सीख गया था कि जितना ये कहते हैं उससे कहीं ज्यादा पुलिस वाले खबर रखते हैं।

अपने ड्रेसिंग गाउन की जेब में हाथ डालते हुए डाक्टर ने गम्भीर होकर कहा:—मैं इस उलझन को सुलझाने में कई दिनों से लगा हूँ। समस्या का हल हो जाने पर वह बहुत सहज मालूम पड़ने लगता है। लेकिन जब तक उसका हल नहीं हो जाता तब तक वह उतना सहज नहीं मालूम होता। "इसके बाद अचानक प्रसंग को बदलते हुए उन्होंने कहा:—दो दिन पहले मैंने यहाँ जो भोज दिया था वह तो तुम्हें याद होगा?"

मैंने कहा:—भला दो दिन की बात कैसे भूली जा सकती है। डाक्टर ने मेरे उत्तर पर मुस्कुरा दिया।

मुझे उनकी सेवा में आये सिर्फ दो महीने हुए थे। वे रात दिन अपनी किताब के पीछे पड़े रहते थे। इस बीच में उन्होंने सिर्फ उन लोगों से ही भेंट की थी जिनसे इस पुस्तक का कोई संबंध था। उस दिन अपना काम भूल कर उन्हें यह योग देते देख कर अचरज हुआ था।

डाक्टर ने मेरी ओर सपेक्ष दृष्टि से देख कर कहा:—किसी के मन की बात जान लेने वाली विद्या मैंने नहीं पढ़ी है मेरेडिथ!

लेकिन उस दिन की प्रसन्नता का कारण मेरी समझ में आ गया है। "क्या उस सुन्दरी सेनोरिटा करडोवा को देखकर ही तुम खुश नहीं थे ? मैं तुम्हें दोष नहीं दे रहा हूँ। वह ऐसी सुन्दर है ही। श्रीमती ट्रेवेन ने उसे अपने साथ लाकर अच्छा ही किया।"

मैंने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। उस स्पेनिश रमणी के सौन्दर्य ने मुझे आकृष्ट किया था। इतना शोहरत होने पर भी बेदाग बची थी। नाचने में उसने कमाल हासिल किया था। उसके नाच पर लोग लट्टू थे। शहर भर में उसकी चर्चा थी। मार्किस होटल के मालिकों ने अपना सितारा चमकाने के लिये ही उसे बुलाया था। वह हालीवुड में किसी फिल्म में काम करने जा रही थी इसलिये यह उसका अन्तिम नाच था। उस शनीचर को मार्किस होटल में उसका अन्तिम नाच होने वाला था।

डाक्टर ने कहा:- मैं तुमसे अभी कहने वाला था कि तुम भी कुछ चुनी लड़कियों को लेकर उसका नाच देख आओ। मैंने तुम्हें छुट्टी दे दी।

"मैंने कहा:—आपकी बड़ी कृपा है।" पर मन ही मन पछताने लगा कि इस बूढ़े ने थोड़ी देर पहले क्यों नहीं कहा। इतने कम समय में एक भी सुन्दर लड़की को ढूँढ़ निकालना कठिन था।

"लेकिन अब तुम्हें चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि आज वहाँ उसका नाच नहीं होगा।" डाक्टर ने कहा !

मैं—क्या कहा ! आज करडोवा का नाच नहीं होगा ! आज के नाच की सूचना बड़े धूमधाम से दी गई थी। "क्योंकि लण्डन में यही उसका अन्तिम नाच होगा।"

उन्हें निराश होना पड़ेगा। वह आज रात नहीं नाच सकेगी क्योंकि बड़ी बातें बहुधा नहीं हुआ करतीं।"

इतना कह कर डाक्टर मेरी ओर गौर से देखने लगे। बोले:—मेरे साथ ऊपर चलो। मैं तुम्हें दिखला देता हूँ।

वे मुझे लेकर ऊपर वाले कमरे में गये जो लायब्रेरी के ठीक ऊपर था। पलंग के सिरहाने एक छोटे टेबुल पर धीमी रोशनी जल रही थी। उसके बगल में एक दाई खामोश बैठी थी। हम लोगों के प्रवेश करते ही वह उठ कर खड़ी हो गई। बोली:—"अभी तक तो वही हालत है?"

"कोई परिवर्तन नहीं।" इतना कह कर डाक्टर उसके सिरहाने बैठ गये। एक रक्तहीन बाल विस्तरे पर पड़ी थी। डाक्टर ने नब्ज पर हाथ रखा। क्षण भर बाद वे उठ खड़े हुए। दाई को कुछ हिदायत दिया और उसे समझाया कि चन्द घंटे बाद स्ट्रिकनीनका दूसरा इञ्जेक्शन देना होगा।" चलते चलते उन्होंने कहा:—यदि हालत में जरा भी परिवर्तन हो तो मुझे फौरन खबर देना।

यह सब देख कर मैं तो अवाक् था। मेरे मन में सवाल पर सवाल उठ रहे थे। करडोवा यहाँ कैसे आई? नाच के चन्द घंटा पहले उसकी यह हालत कैसे हुई। उसकी बेहोशी का क्या कारण है? उसे क्या हो गया? और डाक्टर इसमें कैसे आ पड़े। लेकिन मुझे एक भी सवाल पूछने का साहस नहीं हुआ क्योंकि डाक्टर के चेहरे से परीशानी टपक रही थी। वे बीमार के लिये चुप नहीं थे।

"उन्होंने कहा:— कैप्टेन वाइल्ड आते ही होंगे शायद उनसे कुछ ज्यादा मालूम हो जाय।'

कैप्टेन वाइल्ड ! यह नाम तो परिचित सा मालूम पड़ा। मुझे यकायक याद हो आया। इस नाम के एक सज्जन उस दिन भोज में श्रीमती ट्रेव के और करडोवा के साथ आये थे। वे लोग बड़े घनिष्ट प्रतीत होते थे। उस दिन यही सुनने में आया था कि शीघ्र ही दोनों की सगाई होने वाली है। पर इसका आधार यह भी हो सकता है कि लण्डन आने पर वे करडोवा के साथ बराबर घूमते रहते थे। बीफे के दिन जब उनसे मेरी भेंट हुई थी तो वे मुझे बड़े ही सज्जन प्रतीत हुए। बड़े भाग्यवान भी हैं।

डाक्टर राफेल ने कहा:—कर्डोबा पिकाडिली के नजदीक कहीं ठहरी थी। पाँच या छ बजे के करीब कैप्टेन वाइल्ड इससे मिलने गये। उस समय इसकी हालत खराब हो रही थी। इसकी दाई कहीं बाहर चली गई थी। यह अकेली थी। वाइल्ड ने अपने डाक्टर को टेलीफोन किया लेकिन उनसे भेंट नहीं हो सकी। उस दिन के भोज में वाइल्ड यहाँ आया था। इससे उसे मेरी याद आ गई। उसने तुरत मुझे टेलीफोन किया अपनी मोटर पर लाद कर मेरी ओर दौड़ पड़ा। उसने एक क्षण भर की भी देर नहीं की। रमणी की हालत बिगड़ चुकी थी। वह बेहोश थी।

"मैंने पूछा:—क्या आपको उसकी इस अचानक बीमारी का कारण मालूम हुआ ? जान खतरे में तो नहीं है।"

"यहाँ तक नौबत तो नहीं पहुँचनी चाहिये। मुझे पूरी उमीद है कि वह अच्छी हो जायगी। मैंने इस दुर्घटना का कारण समझ लिया है।"

इतना कह कर उन्होंने अपना सिगरेट केश खोला और

उसमें से मिस्र देश वाला सिगरेट निकाला और साथ ही दिया-सलाई जलाई। बोले—धोखा।

उनका यह उपक्रम देखकर मैं चिल्ला उठा:—आपका मतलब क्या है। क्या उसे यह बुरी आदत—

डाक्टर ने अपना सिर हिलाते हुए कहा:—नहीं, नहीं, इसका व्यसन नहीं पर धोखा अवश्य! या तो उसने स्वयं खा लिया या किसी ने उसे दिया। भाग्य की बात है कि मुझे तुरत यह बात सूझ गई। यह नयी अमेरिकन दवा है। इसका नाम इरीथ्रोक्साइन है। यह तरल पदार्थ है। देखने और पीने में पोर्ट शराब की सी मालूम होती है। लेकिन जहाँ यह लग जाती है वहाँ शरीर पर पीले-पीले दाग हो आते हैं। उसके होंठ के कोने पर इसी तरह का एक दाग देखकर मेरा ध्यान उसी तरफ गया। उसमें एक तरह की सुगन्ध भी होता है जो इसके मुँह से आरही थी। इस दूसरे सबूत ने तो मेरा अनुमान दृढ़ कर दिया। मालूम होता है किसी ने पोर्ट शराब में मिला कर उसे यह दवा पिलाई है।

"मैंने पूछा:—यह किसका काम हो सकता है?"

"डाक्टर—कैप्टेन वाइल्ड का कहना है कि जब वह ऊपर जा रहे थे तब एक आदमी नीचे उतर रहा था।"

"मैंने कहा:—क्यों कोई आदमी ऐसा करेगा।"

डाक्टर—मैं भी तो यही सोच रहा हूँ। वाइल्ड ने जिस आदमी को नीचे उतरते हुए देखा था, उसके बारे में यदि मैं कुछ जानता होता तो तुम्हें निश्चय पूर्वक बतला देता।······ खैर जो हो, मैंने ज्योंही बीमारी को पहचाना मैंने तुरत आवश्यक

प्रबन्ध कर दिया और स्ट्रीकुनीन का इंजेकशन दे दिया। होश में आने पर शायद वही कुछ बतला सके। वह नहीं भी बतला सकती। शायद उसने आत्महत्या की चेष्टा की हो।...... इस घटना के पीछे जो कुछ भी हो बिचारी को संकट का सामना करना पड़ा है।

इसी समय मकान के सामने एक मोटर आकर रुकी और उसमें से कैप्टेन वाइल्ड उतरे। कैप्टेन वाइल्ड की उम्र पैतालीस साल की थी। उनका बदन गठीला और हृष्ट-पुष्ट था। उनका चेहरा देखने से साफ झलकता था कि इस घटना का उन पर काफी प्रभाव पड़ा है।

आते ही उन्होंने कहा:—डाक्टर! बड़ी भयानक बात हो गई। वह अब कैसी है?

"उसी तरह! बीमारी बढ़ी नहीं, यही कम सन्तोष की बात नहीं है। क्या कुछ और पता लगा।"

"कुछ नहीं, मैं तो हार गया। पाँच और छ बजे के बीच में उसकी दासी कहीं बाहर गई थी और जो आदमी मुझे सीढ़ी पर मिला था उसका कुछ भी पता नहीं चलता।" उस मकान में लिफ्ट है नहीं और नीचे के लोग कुछ नहीं बतला सके। वह इतनी तेजी से निकल गया कि यदि उससे भेंट भी हो जाय तो मैं पहचान नहीं सकूँगा।

इतना कह कर उन्होंने गहरी साँस ली और फिर बोले:— ईश्वर को धन्यवाद है कि उसकी हालत बिगड़ी नहीं। मैंने मार्किस होटल के मैनेजर को टेलीफोन से कह दिया कि वह अचानक बीमार पड़ गई इसलिये नहीं नाच सकेगी। इससे ज्यादा कुछ कहना मैंने उचित नहीं समझा।

"अच्छा ही किया, लेकिन यदि किसी दुर्भावना की जरा भी आशंका हो तो पुलिस को खबर दे देना उचित होगा।"

"मैं इसे खूब समझता हूँ। यदि इस घटना को लेकर अखबारों में तूफान भी उठ जाय तो इसको कोई लाभ नहीं हो सकता। आपका क्या अनुमान है। उसे कितनी देर में होश होगा।"

डाक्टर—कई घंटे लग सकते हैं। लेकिन पुलिस को सूचना न देकर हम लोग अपने को खतरे में डाल रहे हैं। मान लो कि उसने आँख खोली ही नहीं तब—"

कैप्टेन वाइल्ड के होंठ कांप उठे। वे दो कदम आगे बढ़ गये और अधीर होकर बोले—तब तो उसकी हालत पहले से खराब है—

क्षण भर कुछ सोचने के बाद डाक्टर ने कहा:—नहीं, उसकी हालत पहले से कहीं अच्छी है। कल सबेरे तक वह ठीक हो जायगी। यदि वह चाहेगी तो अपना दास्तान भी कह सकेगी।

अपने माथे को सहलाते हुए वाइल्ड ने कहा:—"भगवान! जितनी जल्दी उसकी जबान खुलती उतना ही जल्दी मेरा हृदय हलका होता। डाक्टर! मैं तो एक दम डर गया हूँ।"

"देखने में तो वह अवश्य ही वैसा दीखता था। उसकी दशा एक दम दयनीय थी। मुझे उस पर दया आ गई।"

डाक्टर चुपचाप कमरे में टहल रहे थे। उन्होंने रुक कर कहा:—जिस आदमी को सीढ़ी से उतरते हुए आपने देखा था उसके बारे में मैं अभी सोच रहा था। क्या रुपहले नकाब

बाले से उसका कोई संबंध तो नहीं है। "यह मेरी कल्पना मात्र है। मैं गलती पर हो सकता हूँ।"

इतना कह कर वे कमरे के कोने में रखी आलमारी की तरफ बढ़े। बोले:-जाने के पहले थोड़ी शराब तो पी लीजिये—"

उनकी बात पूरी भी नहीं होने पाई थी कि यकायक दरवाजा खुलने पर शक हुआ। लोगों ने देखा कि डेहरी पर एक अजनबी खड़ा है हम लोग चकित होकर उसे देखने लगे। मालूम होता था कि डाक्टर के दरवान को धक्का देकर वह भीतर घुस आया था क्योंकि दरवान का चेहरा घबराया हुआ प्रतीत होता था। भीतर आते ही उस अजनबी ने दरवाजा बन्द कर दिया।

उसने बड़ी नरमी से कहा:—इस तरह धँस पड़ने के लिये आप लोग मुझे क्षमा करेंगे! डाक्टर साहब?

डाक्टर ने उसकी ओर देख कर सिर हिला दिया। बोले:— इस समय मुझे फुसरत नहीं है।

अपनी हैट पर अंगुली फेरते हुए उसने कहा—मुझे आपसे बहुत जरूरी काम है।"

उसकी उम्र लगभग पचास के थी। वह लम्बा और दुबला पतला था। वह सुन्दर पोशाक में था। उसका चेहरा पीला पड़ गया था लेकिन उसकी आँखों में मादकता थी।

डाक्टर ने तेज होकर कहा—कह दिया कि इस समय मुझे फुरसत नहीं है।

उसने फिर नरमी से कहा—आपके काम में बाधा देने का मुझे कोई हक नहीं है। लेकिन मेरी दोस्त सेनारीटा कर्डोबा आपके यहां है!

डाक्टर ने रुखाई से पूछा—किसने कहा कि वह यहां है ?

अजनबी ने धीरे से कहा—मै उसके निवास स्थान पर गया था। उसकी दासी ने कहा कि उनकी तबीयत अचानक खराब हो गई और उसी हालत में उन्हें यहां लाया गया। मैं उनका दोस्त हूँ। उनकी हालत जानने का मुझे हक है।"

इसी समय कैप्टेन वाइल्ड सामने दो कदम आगे आये। वे उसको ओर घूर कर देख रहे थे। बोले—तुम्हारा कहना है कि तुम उसके निवास स्थान से आ रहे हो। क्या तुम पाँच और ६ बजे के बीच में वहां थे ?"

उसने जान बूझकर "पाँच और ६" शब्द को कई बार दोहराए। उसने अपने होंठ चाटे, डाक्टर को, उसके बाद मुझे देखा और तब वाइल्ड की ओर घूम कर बोला—नहीं, उस वक्त मैं वहाँ नहीं हो सकता था। मैं तो लण्डन से अभी वापस आया हूँ।"

मैंने अपने मनमें कहा—यदि यह झूठ बोल रहा है तो पूरी शैतानियत के साथ वह उसमें प्रवृत्त है।" क्षण भर के लिये कमरे में सन्नाटा छा गया। अचानक डाक्टर राफल उसकी तरफ बढ़ कर बोले—मैं आपको जानता तक नहीं। सम्भव है आप कर्डोवा के दोस्त हों लेकिन इस समय वह मेरी देख-रेख में है और आप उससे नहीं मिल सकते।

अजनबी ने कहा—क्या आप आज्ञा नहीं दे सकते ?

डाक्टर ने दृढ़ता से कहा—असम्भव ! यदि आप चाहें तो अपना नाम और पता छोड़ सकते हैं। उन्हें—

कमरे से बाहर पैर रखते हुए उसने कहा—कोई फायदा नहीं। मैं किसी समय टेलीफोन कर लूंगा।

वाइल्ड—विचित्र आदमी मालूम होता था। आपकी क्या राय है ?

डाक्टर के चेहरे पर परेशानी थी। उन्होंने गम्भीर होकर कहा:—उसका परिचय आपही आप मिल जायगा। इस समय अधिक कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। ज्योंहीं उसकी हालत सुधरेगी मैं आपको खबर दूंगा। अच्छा ही होगा आपतो मार्किस होटल में ठहरे हैं ?

वाइल्ड ने अपना सिर हिलादिया बोला: -कहीं उससे मेरी भेट हुई। दूसरे ही क्षण सकुचाकर बोला:—हम लोग नये परिचित हैं, लेकिन मैं यह निःसंकोच स्वीकार करता हूँ कि मेरे लिये उसका बहुत मूल्य है।"

डाक्टर ने नरमी से कहा:—मैं समझता हूँ।

× × ×

डाक्टर ने चुप चाप भोजन किया और सीधे ऊपर चले गये। मैं भी अपने लिखने के काममें लग गया। मामूल से अधिक समय बीतने पर भी डाक्टर नीचे नहीं उतरे। लेकिन नीचे आते ही उन्होंने मुझे चकित कर दिया। बोले:—मेरेडिथ ! चलो मार्किस होटल की सैर कर आवें। आज का जलसा बहुत रोचक होगा।"

उनके मन की बात न समझ सकने के कारण मैं अजीब उलझन में था। चुप चाप मैंने मोटर शहर बाहर निकाली। थोड़ी देरमें हम लोग होटल के फाटक पर पहुँच गये। हमलोग सदर फाटक तक साथ ही आये। डाक्टर गफेल सीधे रिसेप्सन डेस्क पर गये और कैप्टेन वाइल्ड के बारे में पूछा।

क्लर्क—क्या आप ही का नाम डाक्टर राफेल है। आपका फोन उन्हें मिल चुका है। मैं उन्हें खबर दे देता हूँ।"

दूसरे ही क्षण कैप्टेन वाइल्ड दौड़ते हुए आये। उनका चेहरा उसी तरह चिन्तायुक्त था। आते ही उन्होंने पूछा:—इस समय उसकी हालत कैसी है डाक्टर !

डाक्टर—अभी तक बेहोश है लेकिन नाड़ीकी गति पहले से अच्छी है।"

"ईश्वर को धन्यवाद है। आजके जलसे के उपलक्ष में मैं भोज दे रहा था। लेकिन मेरे लिये तो अब उसमें किसी तरह का आनन्द नहीं रहा। उसकी जगह पर नीला पगलानी नाचेगी। मैं उसी समय से रूपहले नकाबपोश की बातें सोचता रहा हूँ। आपका ख्याल है कि शायद इसमें उसका हाथ हो। संभव है आज उसका नाच रोकने में उसका कोई खास मतलब रहा हो। लेकिन मुझे तो समझ नहीं पड़ता। लेकिन तो भी यह बात मेरे दिमाग से नहीं हट रही है।" इतना कहते कहते वह चौंक पड़ा और नीचे बरामदेकी तरफ अंगुली उठाई जिधर से जलसे में लोग जा रहे थे। पूछा:—'क्या आपने उसे देखा ? इसकी शकल सूरत ठीक उस आदमी से मिलती है जो शाम को आपके यहां गया था।"

डाक्टरने अपनी आंखें चमकाते हुए कहा:—"अच्छा ! वह यहां पहुंच गया। कैप्टेन वाइल्ड—हम लोगों से भारी भूल हो गई है। हम लोगों को पुलिस में रिपोर्ट कर देनी चाहिये थी। मैंने कहा था कि हम लोग खतरा खरीद रहे हैं। हम लोगों ने कर्डोवाके ख्याल से वैसा किया, लेकिन यदि आज रातको यहां कुछ गोलमाल हुआ तो मैं विपत्ति में पड़ जाऊंगा।"

उनकी आवाज धीमी पड़ गई और वे अपना होंठ चबाने लगे। बोले:—मैं यहीं रहता हूँ। यदि कोई विपत्ति आवेगी तो आपकी मदद की पूरी आशा करता हूँ। मेरेडिथको मिलाकर हम लोग तीन हो जाते हैं। अगर रुपहला नकाबपोश वाला आज यहां प्रगट हुआ तो मैं—

वाइल्ड—म आपकी सेवा में सदा उपस्थित हूँ। पर मैं समझता हूँ कि आज यहां किसी तरह का गोलमाल नहीं होगा—कर्डोवा तथा अपने लोगों के खातिर—"

इतना कह कर वह अपने मेहमानों का स्वागत करने चला गया। हम दोनों नाच घर की तरफ बढ़े। आधे दर्जन जोड़े रंगमंच पर उतर चुके थे। बैंड बज रहा था। देखते देखते सारा हाल भर गया। इस समय तक सबको मालूम हो गया था कि कर्डोवाको जगह पर नीना पगलानी नाच रही है। लोगोंने इसीसे पूरा आनन्द ले लेना चाहा लेकिन मेरी आँखों के सामने कर्डोवाकी वही तस्वीर नाच रही थी जिसे मैं अभी देखकर आया था। वही मुर्झाया चेहरा! आंखें बन्द! पलग पर मृतक के समान पड़ी हुई!

ठीक समय पर जलसा शुरू हुआ। करीब आधा दर्जन लड़कियां नाचने और गाने लगीं। पियानोकी सुरीली तान अलग मस्त बना रही थी। इण्टरवल में कैप्टेन वाइल्ड की आंख से मेरी आंख मिली। उन्होंने उदासी से सिर हिला दिया। अबतक डा० राफेल चुप चाप बैठे शराब को एक एक घूंट पी रहे थे और ग्लास में उठते हुए फेन को देखते जाते थे। इसी समय नीना पगलानी के नाचके लिये रोशनी नीची की गई।

रोशनी के प्रकाश में रंगमंच दमक उठा। रोशनीका गोलाकार फोकस उस तरफ दिया जाने लगा जिधर से नर्तकी को रंगमंच पर प्रवेश करना था। धीरे धीरे सभी रोशनी गुल कर दी गई। सिर्फ वही गोलरोशनी परदे पर रह गई। क्षण भर शान्ति रही। इसी समय उस कमरे में कुछ गोलमाल सुनाई पड़ा जहां बैठा आपरेटर रोशनीको खोलता और बन्द करता था। वह गोली रोशनी भी बन्द हो गई। अंधेरा हो जाने से बैण्ड का बजना भी बन्द हो गया। चारों ओर श्मशानकासा सन्नाटा छा गया।

डाक्टर राफेल ने अपनी सांस धीमी कर ली और मैंने टेबुल का कोना पकड़ लिया। इसी समय किसी रमणीकी चीख सुनाई पड़ी और फिर चारों ओर सन्नाटा छा गया। दूसरे ही क्षण किसी के टार्च का प्रकाश हाल में नाचने लगा और उसी से सटी एक रिभ्वौल्वर की रेखा भी दिखाई पड़ी। टार्चवाले आदमी ने चिल्लाकर कहा—आपका पुराना परिचित सुनहला नकाब वाला फिर आ गया है आप लोग चुपचाप अपनी जगह पर बैठे रहें।"

इतना कह कर वह भीड़ में घुस गया, किसी के गले से हार उतारा, किसी की अंगूठी और किसी का दूसरा कोई जेवर! इस तरह लूटते खसोटते वह हम लोगों के टेबुल के पास पहुँच गया। वहाँ उसने एक रमणी के कान से मोती की सिकड़ी झपट ली।

पहले तो डाक्टर राफेल अपनी जगह से उठे। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि वह उस पर टूट पड़ेंगे। मैं भी उनके साथ ही झपटने के लिये तैयार हो गया। लेकिन विचित्र गुर्राहट के साथ वे चुप चाप बैठ गये।

टार्चकी रोशनी बुझगई। अंधेरे में केवल पैरों का शब्द सुनाई पड़ रहा था। मालूम हुआ कि बीच हाल में कुश्ती हो रही है। अंधेरे में किसीने डाकू पर हमला कर दिया था। अब डाक्टर राफेल क्षणभर भी नहीं रुके। वे उसी ओर झपट पड़े और मुझे भी ललकारा। हम लोगों के पहुँचने तक किसी के धम्म से गिरने की आवाज आई और साथ ही किसी का धीमा शब्द सुनाई पड़ा। इसी समय रोशनी भी हो गई।

हम लोगों ने एक आदमी को जमीन पर से उठकर खड़े होते देखा। उसकी टाई फट गई थी और उसके केश बिखड़ गये थे। क्षण भर अस्त व्यस्त रहने के बाद वह शान्त हुआ। बोलाः—मैं तो उसे पकड़ ही चुका था। क्षण भर की देर हो गई। वह गया किधर ?

वाइल्ड ने उपरोक्त बातें कहीं थी। क्रोधसे उसकी आंखें लाल हो रही थीं। उसके साहसकी मैं मनही मन तारीफ करने लगा। हम लोगों को पास खड़े देखकर उसने डाक्टर से कहाः—"यदि एक सेकेण्ड पहले आप पहुँच गये होते तो वह पकड़ लिया गया होता।"

इसके उत्तर में राफेल ने जो कुछ कहा उसे मैं नहीं सुन सका क्योंकि हाल में कुहराम मचा हुआ था और लोग चारों ओर से भाग रहे थे। इस तरह रुपहले नकाब वाला एक बार फिर माल मार कर निकल गया।

× × ×

कैप्टेन वाइल्ड हम लोगों के साथ ही डाक्टर के डेरे पर आये। हम लोगों का चेहरा उतरा हुआ था।

डाक्टर ने बैठक का दरवाजा खोल दिया। बोलेः—"आप लोग बैठें मैं क्षण भर में वापस आता हूँ।" इतना कह कर उन्होंने अपनी पीठ फेरी ही थी कि उन्होंने अपने सामने उसी आदमी को खड़े पाया जो शाम के वक्त आया था और कर्डोवा का मित्र बनता था। मैंने देखा कि उसके ओवरकोट के नीचे उसकी रात की पोशाक थी। उसने कहा:—देखिये! मैं आ गया। मैं आज ही यहाँ से जा रहा हूँ और जाने के पहले कर्डोवा से मिल लेना चाहता हूँ।

डाक्टर—तब आप बाहर जा रहे हैं। क्या बहुत दिन तक बाहर रहना होगा।"

"संभव है। इसीलिये मैं कर्डोवा से मिल लेना चाहता हूँ।"

"यदि कल तक उनसे भेंट न हो सके तो क्या आप ठहर सकते हैं?"

उसने परीशानी दिखाते हुए कहा:—"मुझे आज जाना ही होगा।"

"क्या एक घंटा पहले आप मार्किस होटल में थे? मेरे दोस्त ने वहाँ आपको देखा था। क्यों कैप्टेन?"

"जी हाँ! मैं शपथ पूर्वक कह सकता हूँ।"

अजनबी ने आँखें मटकाते हुए कहा:—"इससे क्या?"

डाक्टर राफेल इस उत्तर से हँस पड़े। बोले:—उससे बहुत बड़ा मतलब है। मैं जो कुछ कहने जा रहा हूँ उसे ध्यान से सुनिये। "आज शाम को कर्डोवा बेहोशी की हालत में यहाँ लाई गई।" इतना कह कर डाक्टर चुप हो गये। फिर बोले—"आपको इस बात पर जरा भी विस्मय नहीं हो रहा है।"

"आप अपनी बातें कहते चलिये, मैं चकित होने वाला आदमी नहीं हूँ।"

"पर मैं आपको चकित कर देना चाहता हूँ।" रुपहले नकाबपोश का नाम तो आप ने सुना ही होगा। आज रात को उसने मार्किस होटल पर फिर छापा मारा। कुल मिला कर यह उसका चौथा धावा था।

उसने डाक्टर की आँख से आँख मिला कर कहा:—इससे सेनोरिटा कर्डोवा से क्या संबंध है।

डाक्टर दो कदम आगे बढ़ कर उसके निकट चला गया। बोला:—बहुत ज्यादा संबंध है। मैं पहले आप से यह बतलाना चाहता हूँ कि उसे वह बेहोशी की दवा क्यों दी गई। मान लीजिये कि अचानक उसे यह मालूम हो गया कि रुपहला नकाबपोश उसका परिचित है। मान लीजिये कि उसे यह भी मालूम हो गया कि वह उस होटल पर चौथा धावा भी मारना चाहता है। नकाबपोश के लिये यह स्वर्ण सुयोग था। क्योंकि कर्डोवा का यह सबसे बड़ा नाच था। मान लीजिये कि धमकी देकर नकाबपोश उसका मुँह बन्द रखना चाहता है। लेकिन वह उसका परदा खोल देने की धमकी देती है। ऐसी दशा में जो घटना होगी, उसका आप स्वयं अनुमान कर सकते हैं।"

उस आदमी ने गम्भीर होकर कहा—अच्छा!

"शाम को पाँच और छः के बीच में कर्डोवा प्रतिदिन एक ग्लास पोर्ट शराब और एक बिस्कुट खाती है। उस आदमी ने कर्डोवा का मुँह बन्द रखने का इरादा कर लिया है। उसके लिये वह तैयार होकर आता है। उसकी शराब में वह इरी

ओक्साइन नामक बेहोशी की दवा मिला देता है। जिसका उसे पता नहीं लग सकता क्योंकि मार्किस होटल पर यह उसका अन्तिम धावा था। उसके बाद वह चुपचाप यहाँ से खिसक जाना चाहता है। लेकिन उसे डर हो जाता है कि उसने ज्यादा मात्रा में दवा दे दी है। हत्या के अभियोग की कल्पना से वह कांप उठता है। वह घबराहट में कुछ ऐसा काम कर बैठता है जिससे उसकी कलई खुल जाती है। "आप मेरी बातों को समझ रहे हैं?"

"खूब मजे में! आप कहते चलिये।"

"मान लीजिये कि इस समय वह मेरे पास यह जानने के लिये आया है कि उसे कितनी देर में होश होगा अर्थात् वह यह जानना चाहता है कि यहाँ से चुपचाप भाग जाने के लिये उसे कितना समय मिल जाता है।......मैं अपनी बातें साफ साफ कह रहा हूँ न?" इतना कह कर उन्होंने घंटी का बटन दबाया। इसी समय दाई ने कमरे में प्रवेश किया। डाक्टर ने कहा:—नर्स! हम लोग तैयार हैं। "इतना कह कर वह अजनबी की तरफ फिर घूम पड़े। बोले:—मैं समझता हूँ कि आपके मन में यह प्रश्न उठता होगा कि मैं किस आधार पर यह कह रहा हूँ कि रुपहले नकाबपोश ने ही बेहोशी की दवा दी थी।" इस दवा में एक गुण यह भी है कि चमड़े से जहाँ कहीं यह छू जाती है वहाँ पीला धब्बा पड़ जाता है। यह धब्बा जल्दी मिटता नहीं। उस समय होटल में जब रुपहले नकाबपोश ने मेरे टेबुल के पास वाली रमणी का हार उतारने के लिये अपना हाथ फैलाया तो उसकी अंगुली में मैंने उसी तरह का धब्बा देखा। बड़ी साधारण बात थी। लेकिन आज शाम को इसी कमरे में उसी

तरह का धब्बा मैंने एक आदमी के हाथ में देखा था। इसी समय दरवाजा खुला। हम लोगों की आँखें उधर ही घूम गईं। मैंने उस समय वहाँ जो कुछ देखा उस पर सहसा मुझे विश्वास नहीं हुआ। डेहरी पर नर्स के सहारे कर्डोवा खड़ी थी।

डाक्टर मुस्कुरा पड़े। बोले—मुझे यह कहते प्रसन्नता होती है कि कई घंटा पहले ही इन्हें होश आ गया था। इनके होश आने के बाद ही मैं मार्किस होटल के लिये रवाना हुआ था। लेकिन मैंने यह बात सिर्फ अपने तक रखी। इसलिये इस समय मैंने कर्डोवा को बुलाया कि वह यहीं आकर उस आदमी की पहचान करे।

डाक्टर ने मतलब भरी दृष्टि कर्डोवा पर डाली।

"उसने धीमे स्वर से कहा—यही वह आदमी है।"

डाक्टर ने अजनबी से कहा—सार्जेण्ट! तुम्हारा असामी तुम्हारे सामने हाजिर है। तुम उसे गिरफ्तार कर सकते हो।

इतना सुनते ही वह अजनबी कैप्टेन वाइल्ड की तरफ झपट पड़ा दोनों भिड़ गये। अजनबी ने वाइल्ड की गरदन को दबाई और दूसरे ही क्षण हथकड़ियाँ उसके दोनों हाथ में झनझना उठीं। उसकी तलाशी ली गई तो सभी जेवर जो रात को मार्किस होटल से झपटे थे बरामद हो गये। उसकी जेब में पिस्तौल भी निकली और सिल्क का एक रुपहला नकाब भी।

डाक्टर ने कहा—कैप्टेन वाइल्ड! आपने सोचा होगा कि स्वयं कर्डोवा को यहाँ लाने के कारण लोग आप पर किसी तरह का सन्देह नहीं करेंगे पर यह आपकी भूल थी।

डाक्टर ने अजनबी की तरफ घूर कर देखा। फिर बोले—इन्होंने काम तो बड़े साहस का दूरदर्शिता के साथ किया था।

थ अपने काम में सफल भी हो गये होते। लेकिन जरा सा बात में वे चूक गये और उसी से चित्त हो गये।

इतना कह कर डाक्टर ने कैप्टेन वाइल्ड के अंगुली की तरफ इशारा किया। उसके कोने पर पीला धब्बा देखकर उसका चेहरा स्याह हो गया।

डाक्टर ने हँसते हुए कहा—सार्जेण्ट ! मैं तुम्हारी भी तारीफ किये बिना नहीं रह सकता। आदि से अन्त तक तुमने बड़ी सावधानी और सतर्कता से काम लिया। असामी का कोई निशान या पता न पाने पर भी तुमने धैर्य नहीं छोड़ा और ठीक तरह से काम करते गये। थाने में ले जाते समय इन्हें समझा देना कि यह दवा बड़ी धोखेबाज है और नये आदमी को इसका प्रयोग करने में बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिये।

अनोखी घटना

मि० विलसन के कमरे का दरवाजा धीरे से खोलकर जवेन्स ने प्रवेश किया और बोला—"आप से मिलने एक महिला आई हैं। वह अपना नाम बतलाना नहीं चाहती।"

विलसन भुनभनाने लगे। उन मुअक्किलों से—खासकर औरतों से—उन्हें सख्त चिढ़ थी, जो मुसीबत के समय भी अपना नाम छिपाकर रखना चाहते थे। उन्होंने पूछा—"कैसी महिला है ?"

जवेन्स—उम्र तीस साल के लगभग होगी। बढ़िया पोशाक में हैं। स्वभाव बहुत शान्त है। वे बहुत ही परीशान मालूम पड़ती हैं।

सामने के कागज पत्र को अलग रखते हुए उन्होंने कहा—"उन्हें भीतर भेज दो, लेकिन अच्छी तरह समझा देना कि मैं बहुत ही व्यस्त हूँ"। इतना कहकर वे उठ गये।

दूसरे ही क्षण उस महिला ने कमरे में प्रवेश किया। उसकी सूरत पहचानी सी मालूम हुई, लेकिन विलसन को याद नहीं हो रहा था कि उन्होंने उसे कहाँ देखा था। बोले—"मैंने इससे पहले भी आप को कहीं देखा है।"

"मेरे पतिका नाम मैन्सफील्ड है। पिछले सप्ताह में उन्हें लिवा ले जाने के लिये यहाँ आई थी।"

"ठीक है। आज तो वे भी यहाँ आनेवाले थे! वे कुशल से तो हैं ?"

इस प्रश्न से उस रमणी का हृदय व्यथित हो उठा। बड़ी वेदना से उसने कहा—"वे लापता हो गये हैं। मुझे तो दाल में काला मालूम होता है।

मि० विलसन ने चकित होकर पूछा—लापता। यहाँ बैठ जाइये और सारा दास्तान कह डालिये।

"क्या आप को कुछ नहीं मालूम!

जानने की बात तो दूर रही, मुझे इस बातपर सहसा विश्वास भी नहीं हो सकता था।

रमणी के मुँह से एक आह निकल पड़ी। मुझे अभी तक यही विश्वास था कि आप को अवश्य कुछ न कुछ मालूम होगा। पिछले सप्ताह वह आप से सलाह लेने आये थे। पर मुझे उन्होंने उसका भेद नहीं बतलाया।

विलसन—अपने व्यवसाय के संबंध में मुझसे सलाह लेने आये थे। लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि उनके लापता हो जाने का उससे क्या संबंध हो सकता है। आप सारी घटना को विस्तार से वर्णन कर जायँ, एक भी बात छोड़े नहीं।

विलसन दोनों मुट्ठी बाँधकर बैठ गये और उस महिला ने अपनी कथा आरंभ की। बीच-बीच में वे उससे एकाध सवाल पूछ लिया करते थे।

उसने अपनी कथा यों शुरू की :—

"कल रात की बात है। वे मामूल समय पर वापस आये। पर उनका चेहरा उदास था। जब वे परीशान रहते हैं तो गुन-

गुनाया करते हैं। कल भी उसी तरह गुनगुना रहे थे। उन्होंने चुपचाप भोजन किया। हम लोग भोजन करके उठे ही थे कि उनके घनिष्ठ मित्र टामप्वाइण्टर का पुरजा उन्हें मिला। आपने टामप्वाइण्टरका नाम सुना होगा।"

"वही थेटरका मैनेजर तो।"

"हाँ, वे हमारे पतिके घनिष्ठ मित्रों में हैं। उन्होंने अपने घर पर ब्रिज खेलनेके लिये बुलाया था। स्पेनी यार्डवे को दूसरी तरफ मेरे घर से नजदीक ही उनका मकान है। रात सोहावनी थी। इसलिये वे बिना कपड़ा बदले ही चले गये। मुझ से कहते गये कि लौटने में देर हो सकती है इसलिये प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं है। करीब ग्यारह बजे मैं सोने चली गई और सुबह उठी तो देखा कि वे वापस नहीं आये हैं। मैंने उसी वक्त मि०प्वाइण्टरको टेलीफोन किया। तब तक वे सोये हुए थे। वे उठ कर आये। मेरा प्रश्न सुनकर वे अवाक् हो गये। मैंने पूछा:—क्या वे आप के यहां नहीं हैं? वे वहां से कब वापस हुए? उन्होंने घबरा कर कहा:—कल तो वे मेरे यहां आये ही नहीं?" उन्होंने उस चिट्ठीको भी इन्कार किया। उनका कहना है कि वे शाम से ही बाहर गये हुए थे और बहुत देर में लौटे।

"क्या आपके पास वह पुर्जा है?"

"नहीं, उसे तो वे अपने साथ ही लेते गये थे?"

"क्या आपने उस पुरजे को देखा था! आप उसका अक्षर पहचानती हैं। क्या वे प्वाइण्टर के अक्षर थे!"

"मैं निश्चय कुछ नहीं कह सकती। ओह! कौन उन्हें बहका कर ले गया!"

"सैकड़ों तरह की शंकायें उठ सकती हैं! लेकिन अभी मैं कुछ नहीं कह सकता। मि० प्वाइण्टर से बातें करने के बाद आपने क्या किया!"

"मैं सीधे थाना गई और रिपोर्ट कर आई। उसके बाद मुझे याद आया कि पिछले सप्ताह वे आपसे सलाह लेने आये थे। इसलिये आप के पास दौड़ी आई कि शायद आप कुछ जानते हों।

"क्या आपने थाने में जाने की बात मि० प्वाइण्टर से कहा था?"

"जी हां, उन्होंने भी सलाह दी बल्कि वे मेरे साथ जाने के लिये तैयार थे। उन्हें कपड़ा बदलने में देर लगती इस लिये मैं अकेली हो चली गई। थाने से मैं सीधे आपके पास आई।"

"पुलिस इन्स्पेक्टर ने इस मामले के बारे में क्या कहा?"

"उसने मुझसे सैकड़ों सवाल पूछे। और पूरा जांच पड़ताल करने का वचन दिया। लेकिन उसकी बातों से मालूम होता था कि उसकी धारणा है कि उनके इस तरह लापता होने का रहस्य कुछ दिन बाद आप ही आप खुल जायगा। वह समझता है कि वे भाग कर कहीं चले गये हैं।"

इसका कोई उत्तर विलसनने नहीं दिया क्योंकि यह भी संभव था। पूछा:—क्या टाम प्वाइन्टर ने आप से यह भी बतलाया कि कल रात को वे कहां गये हुए थे?"

"हां, उन्होंने बर्नी होटल में भोजन किया और लागी में सिनेमा देखने चले गये।"

क्या वे अकेले थे!"

"उन पर आपको सन्देह नहीं करना चाहिये। वे मेरे पति के सबसे घनिष्ठ मित्रों में हैं।"

विलसन भलीभांति जानता था कि किसी का घनिष्ट मित्र उसे इस तरह अपनी पत्नी के पास से इस अवस्था में गायब होने में मदद दे सकता है। लेकिन उस समय उन्होंने कुछ कहा नहीं और न तो श्रीमती की बात से ही उन्हें सन्तोष हुआ। बोले—न तो मैं किसी पर सन्देह करता हूँ और न किसी को निर्दोष समझता हूँ। अभी यह प्रश्न मेरे सामने है ही नहीं।"

२ "पर मुझे पूरा विश्वास है कि इस मामले में टाम प्वाइन्टर का हाथ नहीं है। वे अकेले भी नहीं थे। उनके भाई अडल्फस प्वाइण्टर भी उनके साथ थे।"

वही अडल्फस प्वाइण्टर ही तो आपके पतिका माल बनाता है।

"जी हाँ"

"आपके पति कितने बजे घर से निकले ?"

"करीब नौ बजे। मेरे मकान से टाम के मकान पर जाने में तीन मिनिट लगता है।"

"ठीक है। कृपाकर आप मुझे दोनों मकानों का पता दे दें।

"मेरा मकान 'दी हेविन' हीथ उड रोडपर है और प्वाइण्टर लान उड रोड में रहते है। यह नार्थ एण्ड रोडके पास है।"

"जिस समय आप के पति घरसे निकले उनके शरीर पर कौन वस्त्र था।

"वे आफिसका मामूली कमीज पहने हुए थे। सबसे मार्केकी चीज उनके शरीर पर हीरे की सेफ्टी पिन थी जिसे वे हरवक्त लगाये रहते हैं। इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं जानती। इधर मैं

जिसमें प्वाइण्टर बन्धु रहते थे। छोटा-सा मकान माल्डरग्रोन चौराहा के जरा आगे था। इसे देखने से मालूम होता था कि यह किसी के मकान का एक भाग है जो उससे काट-छांट कर इस तरह निकाला गया है। जांच आरम्भ करने के पहले मि० विलसन ने सड़क पार किया और वहां से हीथ उड रोड तक टहल आये जो करीब २०० गज था। इस सड़क की छोर पर मैन्स्फील्ड का मकान था। इतने कम फासले पर से नव बजे की चांदनी रात में कैसे कोई भगाया जा सकता है? इसकी संभावना इतनी कम थी कि यह संभावना अन्त में ही काम में लाने लायक होनी चाहिये। इसलिये वे जानबूझ लौट आये और घर के पास ही झाड़ी में छिप कर बैठ गये। जब मकान की सब रोशनी बन्द हो गई तो उसमें घुसने की चेष्टा करने लगे। इसके लिये उन्हें अधिक परीशानी नहीं उठानी पड़ी। पाखाने के बाहरी दरवाजे की सिटकिनी कांटी से उभाड़ते ही खुल गई। दबे पांव वे भीतर घुसे और टार्च की रोशनी में कुछ ऐसे निशान खोजने लगे जिससे कल रात का मैन्सफील्ड का वहां जाना साबित हो या प्वाइण्टर बन्धु का उनके लापता होने में किसी तरह का संपर्क साबित हो। लेकिन उन्हें ऐसा कोई निशान नहीं मिला। वे वापस आने वाले ही थे कि उनके टार्च की रोशनी उन परदों पर पड़ी जो मकान की पिछली तरफ इसलिये लगाये गये थे कि जरूरत के वक्त उन्हें खींच देनेसे दो कमरे बन जाते थे। उस परदे की तह में उन्होंने कोई चमकती चीज देखी। जांच करने पर वह हीरे की सेफ्टी पिन साबित हुई।

दो मिनिट तक वे उसे गौर से देखते रहे। श्रीमती मैन्स्फील्ड ने अपने पति के हीरे की जिस पिन का वर्णन किया था उससे

यह साबित होता था कि कल रात को मैन्स्फील्ड इस मकान में जरूर आये थे। तब इस समय वे कहाँ हैं ? इसी समय ऊपर के दरवाजे के खुलने का शब्द सुनाई पड़ा। जल्दी से पिन को छिपाने के लिये उन्होंने परदे को उसी तरह मोड़ दिया और जिधर से भीतर घुसे थे उधर से ही चुपचाप बाहर निकल गये। वे चुपचाप झाड़ी में छिप कर बैठ गये। उन्होंने देखा कि दो तीन आदमी नीचे उतरे और फर्श पर किसी चीज को खोजने लगे। उन लोगों ने पाखाने का दरवाजा भी खोला और वहीं खड़े होकर धीमें स्वर में दो चार बातें भी कीं। भाग्यवश वे लोग वहीं से वापस चले गये, आगे नहीं बढ़े। संभव है वे लोग पुलिस को खबर देने गये हों, ऐसी हालत में विलसन ने वहां से तुरत हट जाना ही उचित समझा क्योंकि अभी वे पुलिस से सामना नहीं करना चाहते थे।

उन्होंने बड़ी गम्भीरता से विचार किया। यदि प्वाइण्टर बन्धु अथवा अन्य कोई उन्हें धोखा देकर यहां बुला लाया है तो वे अब तक इसी मकान में तो नहीं हो हैं; क्योंकि सबसे पहले इसी मकान की तलाशी की संभावना है। लेकिन तब वे हैं कहाँ ? वे मारे गये क्या ? कैद भी हो सकते हैं। मरे या जिन्दा, या तो वे यहीं कहीं आस-पास रखे गये हैं या मोटर पर लाद कर कहीं दूर पहुँचा दिये गये। किधर वे ले जाये गये होंगे, इसकी जांच तो दिन में ही हो सकती है। इसलिये उन्हें उस समय केवल एक ही विश्वास लेकर चलना था कि वे अभी मरे नहीं हैं और कहीं आस-पास छिपाये गये हैं।

विलसन का ध्यान इस मकान के उत्तर तरफ वाले खंडहर पर गया। यह मकान बहुत दिनों से खाली पड़ा था।

इसलिये इसे आसानी से इस तरह के काम में लाया जा सकता था।

विलसन दोनों मकान के बीच वाली दीवाल के पास गये और जांच करने लगे। दीवाल के पासवाली पगडण्डी की मिट्टी इतनी कड़ी थी कि उस पर पैर का निशान उगता नहीं था। इस लिये थोड़ी दूर तक तो उन्हें कोई निशान नहीं मिला। लेकिन आगे चल कर उन्हें कुछ निशान मिले। इससे वे दीवाल पर चढ़ गये। दीवाल की दूसरी तरफ फूल लगाने के लिये खाने बने थे। उसकी मिट्टी पर ताजे पैर के निशान थे। उनमें से कोई कोई तो बहुत ही गहरे थे। इससे इतना तो निश्चय हो गया कि एक दो दिन के भीतर इधर से कोई जरूर गया है और एक के सिर पर भारी वजनी चीज थी।

दबे पांव वे मकान की तरफ बढ़े। चारों ओर सन्नाटा और अन्धेरा था। दूसरे किनारे पर खिड़की से मन्द प्रकाश आ रहा था जिससे उन्होंने समझा कि पहरे वाला अभी जाग रहा है। वे तब तक चुपचाप छिप कर बैठे रहे जब तक रोशनी बुझ नहीं गई। उसके बाद उन्होंने अपना काम शुरू किया। बड़ी कठिनाई से वे बिलियर्ड रूम की छत पर चढ़े और एक खिड़की खोली। पैर की ध्वनि को छिपाने के लिये उन्होंने दोनों पैरों में कपड़े बाँध लिये जो वे अपने साथ लेते आये थे। वे चारों तरफ घूम आये पर कुछ नहीं मिला। अन्त में वे एक द्वार पर पहुँचे जो पहरे-दार की कोठरी में जाता था। वह बाहर से साफ-साफ दिखाई देता था। इसलिये वे निचले मंजिल पर उतर पड़े और एक खिड़की के पास खड़े होकर सोचने लगे कि क्या इसी खिड़की से बाहर चले चलें।

उसी समय उन्हें अन्दर से रोशनी की झलक दिखाई पड़ जो घास पर पड़ रही थी। साथ ही किसी के चलने और फुस फुसाने की आवाज सुनाई पड़ी। उन्होंने अनुमान किया कि दोनं ध्वनि मकान के कोने से आ रही है। सारी बातें जानने के लिये वे इतने उत्सुक हो गये कि अपने को संकट में डाल कर उन्होंने खिड़की का दरवाजा खोल दिया। भाग्यवश कोई शब्द नहं हुआ। दीवाल से सटकर दबे पांव वे आगे बढ़े। थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर उन्होंने एक आदमी को घास पर खड़े होकर मकान की तरफ ऊपर की ओर ताकते देखा। वह धीरे से सांस रोक कर किसी से कह रहा था—नीचे आवो!

क्षण भर के बाद एक दरवाजा खुला। किसी अधेड़ आदमी ने पूछा—क्या बात है?

पहले आदमी ने कहा—डाली को शक हो रहा है कि कोई लानवुड में घुस आया था लेकिन कोई चीज ले नहीं गया है उसका ख्याल है कि पुलिस पीछा कर रही है। मैं थाने में जाकर पुलिस को खबर देने का नाटक रचकर यहाँ आया हूँ। इसलिये तुम उसे इसी वक्त मोटर पर लाद लो और यहाँ से ५०–६० मील दूर देहात में छोड़ आवो। यदि कल उसका पता लग भी जाय तो कोई हर्ज नहीं। उसे लेकर यहाँ से किसी तरफ चलते बनो और लोगों की नजर बचाकर कहीं ढकेल दो।

"मुझसे यह नहीं होगा। डाली ही अपने इस जघन्य काम को क्यों नही पूरा कर डालता।" इसे लेकर मैं पचास मील मोटर पर नहीं जा सकता।

"यदि तुम्हें यही पसन्द है कि पुलिस उसके साथ तुम्हें यहीं गिरफ्तार कर ले, तो पड़े रहो।"

उस आदमी ने कहा—फोस्टर, मुझे यह झंझट पसन्द नहीं। मैं तो उसे छोड़कर यहाँ से भाग जाना चाहता हूँ।

फोस्टर—बेवकूफी मत करो। कोई काम अधूरा छोड़ना अच्छा नहीं।"

"जहन्नुम में जाय! तुम भी क्यों नहीं चलते। एक आदमी से यह नहीं हो सकता।"

"कैसे चलूँ। वह मुझे पहचान लेगा। सब ठीक है न?"

"एकदम। मैंने खुद उसे बाँध दिया है।"

"क्या उसे मालूम है कि वह कहाँ है?"

"जरा भी नहीं। मैंने उससे कह दिया है कि हम लोग इस समय यार्कशायर में हैं। इसपर उसने बड़े मधुर स्वर में एक गीत गाया। इतना कहकर वह गुनगुनाने लगा।

फोस्टर—चुप।

दूसरे ने कहा—होने दो मैकडफ।

फोस्टर—"बेहोशीवाली एक गोली उसे और खिला देना। मैं नहीं चाहता कि वह मोटर में भी गावे। उसके बाद हम लोग उसे उठाकर मोटर में लाद देंगे। जल्दी करो।"

विलसन ने दूसरे आदमी को भीतर जाते सुना। फोस्टर घास पर ही खड़ा रह गया। थोड़ी देर के बाद खिड़की से किसी ने पुकार कर कहा—सब ठीक है। उसे उठाकर नीचे ले चलो न?

विलसन दीवाल से और भी चिपक कर खड़े हो गये। सीढ़ियों से उतरने की पगध्वनि उन्होंने सुनी। फिर लोग बाहर आये। तब वे धीरे से कोने में सरक गये। वहाँ से उन्होंने देखा कि दो आदमी स्ट्रेचर उठाये मोटर की तरफ बढ़ रहे हैं।

वह भी छिपकर उनके पीछे चलने लगे। थोड़ी दूर चलकर फोस्टर रुक गया। बोला—

"स्ट्रेचर को लेकर बाहर चलना खतरनाक होगा। मैं मोटर यहीं लाता हूँ।" इतना कहकर उसने स्ट्रेचर जमीन पर रख दिया।

"जो कुछ करना हो जल्दी करो। मेरा जो ऊब गया है।"

फोस्टर पेड़ों की आड़ से होकर बाहर की तरफ चला और दूसरा आदमी स्ट्रेचर के पास ही टहलने लगा। इस अवसर से लाभ उठाकर विलसन पिस्तौल ताने उसके पास पहुँच गये। उन्हें देखते ही उसने घबराकर चिल्लाना चाहा। विलसन ने पिस्तौल को उसकी छाती से सटाकर कहा—अगर मुँह से एक भी शब्द निकला तो दाग दूँगा।" इसके बाद वे स्ट्रेचर के पास जाकर गौर से देखने लगे। फिलिप मैन्सफील्ड बेहोश थे और रस्से से बँधे पड़े थे।

उसने पूछा—आखिर आप हैं कौन? क्या पुलिस के आदमी?"

विलसन—मैं कोई भी होऊँ। तुम्हें इतना ही जान लेना काफी है कि तुम्हारा परदा खुल गया। मैं मैन्स्फील्ड को अपने साथ ले जाऊँगा। यदि तुम जिन्दा रहना चाहते हो तो मेरी मदद करो। मैं छिप जाता हूँ। जब वह आवे तो मेरे बारे में कुछ नहीं कहना। मैन्सफील्ड को लेकर गाड़ी में बैठ जाना। तुम किसी बहाने उसकी पीठ मेरी तरफ कर देना ताकि मैं भी चढ़ जाऊँ। उसके बाद जहाँ मैं कहूँ वहीं मोटर ले चलना। यदि तुमने जरा भी गोलमाल की तो मैं तुम दोनों को खतम कर

"आप लोगों ने बड़ी मुस्तैदी से काम लिया। पर फोस्टर कहाँ है ? सार्जेण्ट को खामोश देखकर विलसन ने पूछा—आपकी मोटर का क्या नम्बर है ?

व्वाइण्टर—मेरी मोटर का नम्बर ? उसे जानने के लिये आप क्यों इतने व्यग्र हैं ? उसका नम्बर X P. ७२५६ है।

"क्या मोटर गराज में है ?"

"आप तो बड़े उत्सुक मालूम होते हैं। मोटर गराज में नहीं है। आज रात भर के लिये मैंने अपने एक दोस्त को मँगनी दी है।"

"आप के दोस्त का नाम क्या है।"

"फोस्टर। पर इससे आप को क्या मतलब ?"

विलसन ने सार्जेण्ट से कहा—"यह वही दूसरा आदमी है, जो मोटर चलाकर ले गया, यह नहीं।

व्वाइण्टर—यदि आपको कुछ कहना है तो भीतर चलकर बातें करें, इस तरह डेहरी पर मुझे खड़ा रखने से क्या लाभ ? अब तक मैं नहीं समझ सका कि आप किस अभिप्राय से ये बातें पूछ रहे हैं।

उसके साथ साथ वे लोग एक कमरे में पहुंचे जो धुँआ से भरा था। घंटे भर पहले विलसन इसी कमरे में आ चुका था। बैठते हुए व्वाइण्टर ने पूछा—"आप लोग मुझ से क्या चाहते हैं ?"

विलसन—हम लोग फिलिप मैन्स्फील्ड के बारे में आप से कुछ पूछने आये हैं।

व्वाइण्टर—वे यहाँ तो नहीं है। कइ दिन से तो उन्हें देखा भी नहीं। क्या अभी तक उनका पता नहीं लगा।

"आप से उनकी आखिरी भेंट कब हुई थी ?"

"तीन दिन पहले।"

"कल रात को आपने उनके पास कोई पुर्जा भेजा था?"

"नहीं तो।"

"जो हो, पर यह बात आप अस्वीकार नहीं कर सकते कि कल रात को वे यहाँ थे।"

"क्या वाहियात बातें आप बक रहे हैं। वे यहाँ कभी नहीं थे।"

वि०—मि० प्वाइण्टर! क्या क्षण भर के लिए आप मेरे साथ इधर आवेंगे।

प्वाइण्टर चुपचाप विलसन के साथ परदे के पास गया। विलसन ने परदे का एक परत हटा दिया। मैनस्फील्ड की हीरे वाली पिन उसी तरह वहाँ अँटकी थी। बोले—"क्या आप बतला सकते हैं कि यह यहाँ किस तरह आई?"

प्वाइण्टर ने झुककर उसे निकाल लिया। बोले—यह तो फिलिप की पिन है। पर मैं इसके बारे में कुछ नहीं कह सकता। लेकिन आप को कैसे मालूम हुआ कि वह यहाँ है?"

विलसन—क्योंकि आज रात को मैंने आप के मकान की तलाशी ली थी।"

प्वाइण्टर—यह तो एक ही रही। आप हैं कौन?"

"मेरा नाम विलसन है। मुझे फिलिप मैन्स्फील्ड का पता लगाने का भार उनकी पत्नी ने सौंपा है।"

"क्या आप ही डिटेक्टिव विलसन है?"

"जी हाँ, हम लोग आप से यह जानना चाहते हैं कि यह पिन यहाँ किस तरह आई?"

"मैं कुछ नहीं कह सकता। यदि कल रात को मैन्स्फील्ड यहाँ आया था तो भी मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता क्योंकि मैं शाम से ही बाहर था।"

"आप कब वापस लौटे ?"

"करीब बारह बजे रात को।"

पहले "तो" प्राइण्टर को यह जिरह अच्छी नहीं लग रही थी और वह तेवरी बदल रहा था लेकिन पिन के बरामद हो जाने से वह नर्म पड़ गया था चाहे वह घबराहट के कारण हो या पकड़े जाने के भय से।

विलसन—क्या आपके भाई आपके साथ बराबर थे ?"

"हाँ, क्यों ? हम लोग ग्यारह बजे तक साथ रहे। घर वापस आने के समय ही वह मुझसे अलग हुए।"

"तागी सिनेमा में !"

"तब तो आप बहुत सारी बातें जानते हैं। सिनेमा से हम लोग साथ ही काफे रायल गये। वहीं से हम लोग अलग हुए। उनसे आपको क्या मतलब है ?"

"उसके बाद से आपने उन्हें देखा है ?"

"जरूर ! वे इसी मकान में मौजूद हैं।"

"क्या हम लोग उनसे दो चार बातें कर सकते हैं ?"

यह सब देखकर प्वाइण्टर चकित था। वह अपने भाई को बुलाने के लिये भीतर गया। दो मिनिट के बाद वे अकेले ही लौटे। वे पहले से अधिक परीशान थे। बोले—मालूम होता है कि वे चले गये। लेकिन आज रात तो वे यहीं रहनेवाले थे। बात मेरी समझ में नहीं आ रही है।

"क्या फोस्टर भी यहीं था ?"

"हाँ, वह मेरे भाई के साथ ही आया। थोड़ी देर पहले वह थाना जाना के लिये यहाँ से निकला। मैं तो विचित्र गोरखधन्धे में पड़ गया हूँ।"

विलसन—यह तो निश्चित है कि कल रात को फिलिप मैन्स्फील्ड को आपके दस्तखत का एक पुरजा मिला और वे आपके मकान पर आये। यहीं पकड़ कर वे बेहोश किये गये और उन्हें गिरफ्तार करनेवाले यहाँ से घसीट कर उन्हें ले गये और बगलवाले मकान में उन्हें बन्द कर दिया। आज रात को बेहोशी की हालत में आपकी मोटर पर लाद कर वे आपके मित्र फोस्टर की आज्ञा से कहीं ले जाये गये। हम लोग यह जानना चाहते हैं कि इस संबंध में आपको क्या कहना है।

"ये बातें सच नहीं हो सकतीं ?"

"ये बातें एक दम सच हैं और ऐसी अवस्था में पुलिस को आपको अपने हवाले लेना पड़ेगा।"

इस पर सार्जेण्ट ने कहा—मुझे खेद है पर यह मेरी लाचारी होगी।"

टाम प्वाइण्टर—मेरा विश्वास मानिये ! मैं इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता।"

विलसन ने सार्जेण्ट से कहा—यहां का काम हो चुका। आप मि० टाम प्वाइण्टर का बयान लिखकर इनसे हस्ताक्षर करा लें। मैं जाता हूँ।" इतना कह कर वे वहां से चल पड़े और सीधे अस्पताल पहुँचे। उस समय तक मैन्स्फील्ड होश में नहीं आये थे। इसलिये उनका बयान नहीं लिया जा सकता था। वहां से विलसन मैन्स्फील्ड के मकान पर पहुँचे और दरवाजे पर जोर से

धक्का दिया। श्रीमती मैन्सफोल्ड ने खिड़की से झाँक कर पूछा—"कौन है?"

"मैं हूँ, विलसन! सब ठीक है। आप नीचे आवें।"

"क्या उनका पता लग गया? जीवित तो हैं?"

"जीवित हैं? कोई संकट नहीं है। आप नीचे आवें तो सारी बातें कहूँ।"

क्षण भर बाद उन्होंने नीचे उतर कर दरवाजा खोला और विलसन को लेकर भीतर गईं

विलसन ने संक्षेप में सारा दास्तान सुना दिया। बोले—अभी काम पूरा नहीं हुआ है। आपके पति को कहीं चोट नहीं है, लेकिन होश आने में कई घण्टे लगेंगे। होश में आने पर भी वे इतने कमजोर हो गये हैं कि उनसे बातचीत नहीं की जा सकेगी। फ़ास्टर की बातों से मुझे मालूम हुआ कि कल शाम तक के लिये वे उन्हें यहाँ से दूर रखना चाहते थे। इसमें जरूर कोई गूढ़ रहस्य है। जब तक इस रहस्य का उद्घाटन न होगा तब तक उनकी चाल का भण्डाफोड़ नहीं हो सकेगा।'

"क्या आपने पुलिस को खबर दे दी है। आप उन्हें गिरफ्तार कर सकते हैं!"

"अस्पताल से मैं सीधे थाने गया। वे लोग फोस्टर और अडल्फस व्वाइण्ट की खोज में हैं। वे लोग शीघ्र ही उनका पता लगा लेंगे। लेकिन जब तक उनके उद्देश्य का पता न लग जाय तब तक उन्हें गिरफ्तार करके भी हम उसे रोक नहीं सकेंगे। क्य आपको ऐसी कोई बात याद आ रही है जिसके लिये फोस्टर, व्वाइण्टर या कोई तीसरा आदमी आपके पति को कल शाम तक गायब रखना चाहे।

"मुझे तो कोई ऐसी बात याद नहीं आ रही है ।"

"मैंने आपसे कहा था कि पन्द्रह दिन पहले कुछ सलाह मशविरा करने मि० मैन्स्फील्ड मेरे पास गये थे। यदि वे बातें मैं आपको बतला दूँ तो शायद आपको कोई कारण याद आ गया। बात यह है कि उन्हें मालूम हुआ कि उनकी कम्पनी के बारे में उन्हें ठगा जा रहा है। मेरी सहायता से उन्हें यह मालूम हो गया था कि फोस्टर या अडल्फस प्वाइण्टर या दोनों ने मिलकर उन्हें ठगा है। परसों मैंने उनके पास कुछ और भी सबूत भेजे। उसके उत्तर में उन्होंने मेरे पास लिखा कि कोई कार्रवाई करने से पहले मैं कागज पत्र फिर एक बार देखकर अपनी निश्चित राय उन्हें दूँ। उसके चौबीस घटा बाद ही वे गायब किये गये और उसी रात को वे बेहोशी की हालत में फोस्टर की आज्ञा से कहीं हटाये जा रहे थे। क्या इससे आप कोई बात निकाल सकती हैं ?"

सारी बातों पर श्रीमती मैन्स्फील्ड सरसरी तौर से सोच गईं पर कुछ काम नहीं निकल सका। "बोलीं—मुझे तो कुछ याद नहीं पड़ता। उन्होंने भी मुझसे कुछ नहीं कहा था।"

विलसन ने फिर कोशिश की—क्यों ऐसी कोई भी बात याद नहीं पड़ती जो आपके या आपके पति के संबंध में कल होने वाली थी ? ऐसी भी कोई बात जिसका संबंध इस घटना से न हो।

"हाँ, एक बात तो है पर उससे कोई मतलब नहीं निकल सकता। दो दिन हुए मेरी बहन यहाँ आई थी। वह मेरे नाम का एक खत रख गई और कहती गई कि कल शाम से पहले मैं इसे नहीं खोलूँ।"

"आप उस खत को इसी वक्त खोल डालिये। मैं संशय में नहीं रहना चाहता।"

"लेकिन मैंने उसे वचन जो दिया है।"

"ऐसी हालत में वचन की फिक्र नहीं की जाती। आप उसे खोलें ही।"

"पर बात बड़ी बुरी होगी।" इतना कहती हुई वे भीतर गईं और लिफाफा खोल कर पढ़ने लगीं। उसे पढ़ते ही वे चिल्ला उठीं। विलसन ने पूछा– बात क्या है ?

"मेरी बहन कल सुबह डाली प्वाइण्टर से शादी करने जा रही है। यह बात वह मुझसे इसलिये नहीं बतलाना चाहती है कि यदि मेरे पति को यह बात मालूम हो जायगी तो वे दोनों की शादी रोक देंगे। पर इससे इस घटना से क्या संबंध है ?"

"क्या आपकी बहन के पास कुछ सम्पत्ति है !"

"दो हजार पाउण्ड की सालाना आमदनी है।"

"ठीक तो है। तब तुम्हारे पति अपने साढ़ू के ऊपर जालसाजी का मोकद्दमा चलाने में संकोच करेंगे। इस शादी को तो किसी न किसी तरह रोकना ही होगा। आपकी बहन का पता क्या है ?"

श्रीमती ने पता तो दे दिया। बोली—डाली प्वाइण्टर को मैं अच्छी तरह जानती हूँ। उसने ऐसा काम नहीं किया होगा।

दूसरे दिन सुबह मि० विलसन इन्स्पेक्टर ब्लैकी से मिलने स्काटलैण्ड यार्ड गये। ब्लैकी ने उनसे पूछा—उस मोकद्दमे का क्या रंग ढंग है। सारी घटना तो नजर के सामने आ गई। लेकिन इन सबों की सजा किस तरह कराई जाय। फोस्टर और

अडल्फस प्वाइण्टर तो गिरफ्तार कर लिये गये। टाम प्वाइण्टर को जब चाहे तभी गिरफ्तार कर सकते हैं लेकिन वह तीसरा आदमी गिरफ्तार नहीं हो सका और हम लोगों को उसका पता भी नहीं है। हम लोगों के पास सबूत इतने काफी नहीं हैं कि सजा दिलवा सकें। आपका कहना है कि टाम प्वाइण्टर का हाथ इसमें नहीं है। लेकिन मि० मैन्स्फील्ड की जेब से जो पुर्जा निकला है उसे जांच के लिये भेजा गया था। जांच करनेवालों का कहना है कि उसके हरफ टाम प्वाइन्टर के हैं। फोस्टर के खिलाफ आपको छोड़ कर दूसरा कोई गवाह नहीं है। मैन्स्फील्ड ने उसे वहां देखा तक नहीं। अडल्फस प्वाइण्टर के खिलाफ तो केवल उतना ही सबूत है जितना आपने फोस्टर के मुंह से सुना है। हाँ, मैन्स्फील्ड को गायब करने में उसे लाभ अवश्य था। पर क्या यह आरोप अदालत में ठहर सकता है? मैं इसी चिन्ता में पड़ा हूँ। उस रोजगार को लेकर उन पर जालसाजी का मोकदमा चलेगा पर मैं उन्हें यह भी सिखला देना चाहता हूं कि अपहरण करके काम नहीं चलाया जा सकता।"

विलसन—यदि वह आदमी मिल जाय तो हम लोगों का काम बन जाय! हम लोग उसे पकड़ने की कोशिश करेंगे। चलो, आज शाम को टाम प्वाइण्डर का नया खेल देख आया जाय।

"अच्छी बात है।"

विलसन—वारण्ट साथ लेते चलना।

ब्लैकी अपनी जगह से उठ कर खड़ा हो गया। बोला—वारण्ट! किसके नाम वारण्ट! तुम क्या क्या सोचते रहते हो?"

"हेनरी रुबिनस्टेन के नाम।"

"यह नाम तो आज तक सुना भी नहीं। पर तुम जैसा कहते हो वैसा कर दूँगा ।"

ब्लेकी ने उस नाटक के सभी पात्रों का नाम एक एक करके सावधानी से पढ़ डाला। लेकिन उस नाम का कोई भी आदमी उसमें न मिला। वह कभी तमाशा देखता और कभी विलसन को। उसे पक्का विश्वास था कि विलसन किसी की प्रतीक्षा में है। इसी समय डोगलस गोर्डन नाम का पात्र मधुर स्वर में उस रात वाला गाना गाते रंग मंच पर आया।

विलसन झट अपनी जगह से उठा और ब्लैकी को लेकर रंगशाला की तरफ बढ़ा। बोला—पात्रों की नामावली तो देखो। डोगलस गोर्डन का ही नाम हेनरी रुवीनस्टेन है। चटपट वारण्ट निकालो।

इतना सुनते ही ब्लैकी ने उसके पास पहुँच कर उसे गिरफ्तार कर लिया।

विचारा अभिनेता आवाक् होकर ब्लैकी की तरफ देखता रह गया। अचानक उसकी निगाह विलसन पर पड़ी। बोला—ओह! यह आप की ही कृपा है। मैंने आप पर जो विश्वास किया उसी का यह इनाम मिल रहा है। आखिर तो ठहरे पुलिस के आदमी। पर आप यहाँ तक पहुँच कैसे गये ?

विलसन—"आप अपने उस गाने से पकड़े गये।"

यह सुनकर वह चौंक पड़ा! ऐं! क्या कल रात को मैं इसी गाने को गुनगुना रहा था।

"हाँ, आपकी आवाज पहचानी सी मालूम हुई। पर उस वक्त मुझे याद नहीं आया कि मैंने कहाँ इसे सुनी है। सवेरे अचानक याद आ गया।"

"इस सफलता के लिये आप को बधाई।"

"मुझे सन्तोष है कि आप डरे नहीं हैं। आप जेल जाना भी नहीं चाहते होंगे। इसलिये मैं चाहता हूँ कि आप सरकारी गवाह बन जायँ और हम लोगों की मदद करें।

"नहीं, यह तो उचित नहीं होगा। तब तो सारा खेल बिगड़ जायगा, इतना कहकर उसने अपनी घड़ी की ओर साभिप्राय देखा।"

विलसन—तुम्हें शायद असली बात मालूम नहीं होगी। डाली प्वाइण्टर ने मैन्स्फील्ड की कम्पनी का बहुत सा रुपया गबन कर लिया है। उसपर मोकद्दमा चलनेवाला है। उससे बचने के लिये वह मैन्स्फील्ड की साली से शादी करना चाहता था।

रूविनस्टेन—मुझसे तो उन्होंने केवल इतना ही कहा था कि यदि मैन्स्फील्ड स्वतन्त्र रहेंगे तो यह शादी कभी नहीं होने देंगे। इसलिये शादी होने तक के लिये उन्हें छिपाकर रखना होगा। उन्हें चोट पहुँचाने का जरा भी इरादा नहीं था। बस, इतने समय के लिये उन्हें छिपाकर रखने मात्र का भार मैंने अपने ऊपर लिया था। लेकिन टाम-प्वाइण्टर के कमरे में जब मैन्स्फील्ड भिड़ गये और छूटकर निकल जाने ही वाले थे तो फोस्टर ने उनपर वार कर गिरा दिया था। मुझे यह अच्छा न लगा। मैंने इसका विरोध भी किया पर इतना आगे बढ़ जाने के बाद मुझे पीछे लौटने का रास्ता नहीं मिला। फोस्टर के साथ मिलकर मैंने उसके हाथ पाँव बाँधे। लेकिन उसी बीच में उन्हें होश आ गया होगा और उन्होंने चुपके से अपनी पिन परदे में खोंस दी होगी ताकि पुलिस को पता लगाने के लिये एक आधार

मिल जाय। उसके बाद हम दोनों मिलकर उन्हें उस मकान में ले गये। मुझे रखवाली करने के लिये छोड़कर फोस्टर कहीं चला गया और रात को उन्हें कहीं हटाने के लिये वापस आया।

विलसन ने सारा किस्सा गौर से सुना। रूविनस्टेन ने जो कुछ कहा उससे डाली प्वाइण्टर के खिलाफ सिर्फ इतना ही सबूत था कि उसने अपने भाई की गाड़ी मँगनी ली थी। उसने पूछा—"तुमने यह तो बतलाया ही नहीं कि किस की आज्ञा से तुमने इस काम में हाथ डाला था ?"

राबि०—मैं समझता था कि यह आपको मालूम है। डाली प्वाइएटर की आज्ञा से। सब कुछ उन्हीं की रचना थी।

"क्या टामप्वाइण्टर का भी इसमें हाथ था।"

"नहीं, वे ऐसे आदमी नहीं हैं। डाली ने सारी बातें उनसे छिपाकर रक्खीं।"

"तब उनके हाथ का लिखा वह पुरजा कहां से आया। जिसे पाकर मैन्स्फील्ड तुम लोगों के जाल में फँसा।"

रूविनस्टेन हँस पड़ा। बोला—"पुरजा असली था। पर उस समय का लिखा नहीं था। किसी दिन टाम ने यह पुरजा लिखा था, लेकिन भेजा नहीं। उनके टेबुल से यह पुरजा डाली ने उठा लिया था और मौका पाकर उसी का उपयोग किया।"

उसने घड़ी देखकर कहा—उसने इस समय तक विवाह कर लिया होगा। उसे किसी तरह रोका नहीं जा सकता ? फोस्टर मौज उड़ाता होगा।

विलसन—किसी तरह संप्रति तो विवाह हम लोगों ने

रोक दिया है। लेकिन यदि तुम मदद करो तो उसे सदा के लिये रोक सकते हैं।"

अडल्फस प्याइण्टर की शादी तो रुक गयी। उसने अपने मोकदमे की पूरी पैरवी की। वह सारा दोष फोस्टर के मत्थे मढ़ना चाहता था। फोस्टर ने अपने बयान में कहा कि वह अडल्फस के हाथ का पुतलो मात्र था। उसने यह भो साबित कर दिया कि गबन के रुपयों का अधिक हिस्सा अडल्फस को ही मिला था। रुबिनस्टेन का बयान अडल्फस के खिलाफ गया। अडल्फस को कड़ी सजा मिली और फोस्टर को हलकी। सरकारी गवाह बन जाने के कारण रुबिनस्टेन छोड़ दिया गया।

चिट्ठी

बहुत दिनों की बात है। उस समय मैं पेरिस में था। एक दिन अपने एक मित्र के घर पर बैठा एकाग्रता का अभ्यास कर रहा था। प्रायः घंटे भर तक हम दोनों चुपचाप बैठे रहे। यदि कोई हम लोगों को उस दशा में देखता तो यही समझता कि हम लोग सिगरेट के धुँए की चाल को देखने में व्यस्त हैं। लेकिन बात ऐसी नहीं थी। शाम को हम दोनों मित्रों ने किसी समस्या पर बहस की थी। इस समय मैं उसी पर विचार कर रहा था। रू मार्ग्यू की घटना के साथ ही साथ मेरी रोगेट की हत्या हो जाती है। दोनों घटनायें एक साथ ही होती हैं। मैं यही सोच रहा था कि दोनों में कुछ मेल है या नहीं। इसी समय कमरे का दरवाजा खुला और हम लोगों के पुराने परिचित मि० जी०—ने कमरे में प्रवेश किया। ये पेरिस के पुलिस विभाग के प्रधान अफसर थे।

कई साल के बाद उनसे मिलने का मौका मिला था इसलिये हम लोग उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न हुए यद्यपि उनका व्यवहार कभी-कभी बहुत ही बुरा होता था तो भी वे मजेदार आदमी थे। हम लोग अधेरे में ही बैठे थे। इसलिये डूपिन रोशनी जलाने के लिये उठा। लेकिन उसी समय आगन्तुक ने कहा कि वह किसी सरकारी मामले में मेरे मित्र की सलाह लेने आया है। इतना सुनते ही डूपिन अपनी जगह पर बैठ गया। बोला—यदि किसी मामले पर प्रकाश डालना है तब तो अँधेरे में ही अच्छा प्रकाश पड़ सकता है।

"आगन्तुक—तुम्हारी बेवकूफी का यह भी एक नमूना है।" जो बात उनकी समझ में नहीं आती थी उसे वे बेवकूफी ही कह कर टाल देते थे।

आगन्तुक की तरफ आराम कुर्सी सरकाते हुए डूपिन ने कहा— "बात तो तुमने पते की कही।"

मैंने पूछा—आपकी मुसीबत क्या है? किसी की हत्या का सवाल तो नहीं है।

"नहीं, नहीं, वैसी कोई बात नहीं है। बहुत सीधा सादा मामला है। हम लोग ही इसे निपटा सकते थे लेकिन मैंने सोचा कि डूपिन को सब कुछ सुना देना चाहिये। क्योंकि मामला जरा टेढ़ा है।"

"डूपिन—सीधा और टेढ़ा, दोनों एक साथ ही?"

"नहीं, नहीं, ठीक वैसा नहीं, बात यह है कि यह मामला इतना सीधा है कि हम लोग चक्कर में पड़ गये हैं। हम लोगों की बुद्धि काम नहीं कर रही है।"

डूपिन—मैं समझता हूँ कि इसकी सरलता ने ही आप लोगों की बुद्धि मार दी है।

आगन्तुक ने हँसते हुए कहा—तुम भी विचित्र बातें करते हो।

डूपिन—"शायद मामला एक दम पेचीदा नहीं है।"

आगन्तुक—यह कौन कहता है?

"तुम्हारी बातों से तो ऐसा ही मालूम होता है।"

इस पर आगन्तुक ठहाका मार कर हँस पड़ा। बोला—डूपिन, तुम इस तरह मेरे पीछे क्यों पड़ जाते हो?"

मैंने पूछा—कुछ काम की बात भी कहोगे या पहेली ही बुझाते रहोगे।

मेरी बात सुन कर आगन्तुक ने सिगरेट का एक कमजोर कश खींचा और अपनी कुर्सी पर लेट गया। बोला—संक्षेप में ही मैं उसका वर्णन कर दूँगा। लेकिन इसका ध्यान रखना कि इस बात को एकदम गुप्त रखना होगा। यदि यह मालूम हो जायगा कि मैंने किसी दूसरे से यह बात कही है तो मेरी नौकरी चली जायगी।

"मैं—कहो भी।"

"डूपिन—नहीं कहना चाहिये।"

आगन्तुक—मुझे पक्की खबर मिली है कि एक बहुत कीमती दस्तावेज शाही घराने से एक आदमी उड़ा ले गया है। वह जाना हुआ आदमी है क्योंकि उसे ले जाते हुए लोगों ने देखा है। वह दस्तावेज अभी तक उसके पास मौजूद है।"

"यह बात कैसे मालूम हुई है?"

वह दस्तावेज बहुत ही उपयोगी है यदि चोर के हाथ से वह कागज निकल कर दूसरे के हाथ में चला जाय तो कई नयी बातें पैदा हो जायँगी। इसी उद्देश्य से उसकी चोरी कराई गई है। लेकिन अभी तक कोई नई बात पैदा नहीं हुई है इससे मानना पड़ता है कि अभी तक वह चोर के ही हाथ में है।

मैंने कहा—अपनी बातें जरा साफ साफ कहो।

"उस दस्तावेज से किसी व्यक्ति को किसी स्थान में जबर्दस्त अधिकार मिल जाता है। वह अधिकार उस स्थान में बहुत महत्व रखता है।" आगन्तुक को जटिल भाषा प्रयोग करने का रोष था।

डूपिन—अभी भी मैं तुम्हारा अभिप्राय नहीं समझ सका।

आगन्तुक—"इस दस्तावेज में एक बहुत ही बड़े आदमी की प्रतिष्ठा का प्रश्न है। यदि वह किसी के हाथ में पड़ जाय तो दस्तावेज को अपने अधिकार में करके वह उसे नीचा दिखा सकता है।"

मैंने कहा—यह प्रभुता तो तभी संभव है जब चोर को यह मालूम हो जाय कि इस बड़े आदमी को यह मालूम हो गया है कि दस्तावेज किसने चुराया है। यह साहस कौन करेगा......"

आगन्तुक ने कहा—मिनिस्टर डी० चोर हैं जो घृणित से घृणित काम कर सकते हैं। चोरी का तरीका भी बेशर्मी का ही था। यह दस्तावेज एक पत्र है जो महारानी के यहां किसी ने भेजा था। वह खत पढ़ रही थीं कि मिनिस्टर डी० वहां पहुँच गये। वे इस खत को उनसे छिपाना चाहती थीं। लेकिन उन्हें समय नहीं मिला कि वे उसे दराज में रख सकें। इसलिये उसी तरह टेबुल पर पड़े रहने देना ही उन्होंने उचित समझा। मिनिस्टर डी० की आंख पत्र पर पड़ी। वे अक्षर पहचान गये और साथ ही महारानी को परेशान भी पाया। इससे उन्हें सन्देह हुआ। इसके बाद वे काम की बातें करने लगे। बीच में उन्होंने इसी तरह का दूसरा पत्र अपनी जेब से निकाला और उसे पढ़ कर उसी खत के पास रख दिया। थोड़ी देर तक इधर उधर की बातें करने के बाद जब वे चलने लगे तो अपना खत वहीं छोड़ कर वह दूसरा खत उठा लिया। महारानी ने उसे अपनी आंखों देखा पर रोकने का साहस उन्हें नहीं हुआ। क्योंकि वहां एक तीसरा आदमी भी था।

डूपिन—इस तरह तुमने यह बात साबित की है कि चोर भी जानता है कि मालिक को चोर का पता है।

आगन्तुक ने कहा—हां, और उस पत्रके कारण मिनिस्टर डी० के हाथ में जो प्रभुता आ गई है उसका उपयोग वे राजनीतिक मामलोंमें करना चाहते हैं। श्रीमतीजी उस पत्रको पाने के लिये व्यग्र हो उठी हैं। लेकिन मांग तो वे सकती नहीं। अन्त में हताश होकर उन्होंने मेरे ऊपर यह भार दिया है।"

डूपिन—उचित ही तो किया है। तुम से बढ़ कर बुद्धिमान आदमी न मिल ही सकता है और न उसकी कल्पना ही की जा सकती है।"

"तुम मुझे बना रहे हो, लेकिन इस तरह का ख्याल असंभव नहीं है।"

मैंने कहा—तुम्हारी बातों से प्रगट होता है कि वह पत्र अभी भी मिनिस्टर डी० के ही हाथमें है और उसने उस पत्र का कोई उपयोग नहीं किया है क्योंकि प्रयोग करने पर तो महारानी का वह अधिकार नहीं रह जायगा।

आगन्तुक ने कहा—आपका सोचना एक दम सही है।

इसी विश्वास पर मैंने इस काम में हाथ डाला है। मेरे लिये सबसे बड़ी कठिनाई थी मिनिस्टर डी० के जाने बिना ही उस होटल की तलाशी लेना जिसमें वह रहता था—क्योंकि यदि उसे किसी भी तरह हम लोगों का अभिप्राय मालूम हो जाता तो मेरी नौकरी जाने का भय था।"

मैंने कहा—इस तरह के मामलों का पता लगाने में तो पेरिस की पुलिस बहुत दक्ष है। तुम लोगों ने इस तरह के कई मामलों का पता लगाया है।

मि० जी०—इसीलिये तो मैं निराश नहीं हुआ। उसकी कुछ बँधी आदतें हैं। वे भी सहायक ही हुईं। कभी कभी वह रात रात भर गायब रहता है। उसके पास बहुत ज्यादा नौकर चाकर भी नहीं है। अपने मालिक के कमरे से वे दूर सोते बैठते हैं और शराब पीने के आदी हैं। मेरे पास जो कुंजियां हैं उनसे मैं पेरिस का कोई भी ताला खोल सकता हूँ। मैं तीन महीने से प्रति दिन उसी के फिराक में लगा रहा। प्रति दिन उस होटल पर धावा मारता रहा। एक तो मुझे अपनी प्रतिष्ठा का ख्याल था दूसरे इनाम भी भरपूर था। मैंने तलाशी का यह सिलसिला तब तक जारी रखा जब तक मुझे यह विश्वास नहीं हो गया कि चोर मुझ से भी चतुर है। मैंने उस कागज की तलाश में होटल का कोना कोना छान डाला।

मैंने कहा—हो सकता है कि उसने उस पत्र को कहीं छिपा कर रख दिया हो।

मि० जी०—इसकी संभावना कम है। क्योंकि दरबार में आज कल जिस तरह के षड्यन्त्र चल रहे हैं उसमें किसी भी क्षण उस पत्र की आवश्यकता पड़ सकती है। यह सबसे मुख्य बात है।'

मैंने कहा—तब तो वह कागज निश्चय ही उसी होटल में है। वह अपने पास तो कभी भी नहीं रखता होगा।

मि० जी०—कभी नहीं। दो बार उस पर आक्रमण किया गया। मेरी आंखों के सामने उसकी तलाशी ली गई पर कुछ नहीं मिला।

डूपिन—तुम इस झंझट में क्यों गये। तुम्हें समझ लेना

चाहिये था कि वह इतना बेवकूफ नहीं है। इस तरह के आक्रमण की तो उसने संभावना ही की होगी।

मि० जी०—वह कवि है। इसलिये बेवकूफ होना असंभव नहीं।

डूपिन—तुमने ठीक कहा। यद्यपि यह रोग अंशतः मुझ में भी है।

मैं—तुम अपनी तलाशी का विवरण तो दो।

मि० जी०—मैंने हरेक कमरे की तलाशी ली। एक एक कमरे में हफ्ते हफ्ते लगाये। हर एक चीज की जांच की। हम लोगों ने पहले हरेक कमरे के सामानों की जांच की। हरेक दराज को झाड़पोंछ कर देखा। यहां तक कि गद्दों में छेद कर करके उनकी जांच की। इतना ही नहीं चारपाई, कुर्सी और आलमारियों के ऊपर के लट्टुओं तक को उखाड़ कर देखा कि कहीं उनके भीतर तो उसने छिपा कर नहीं रखा है। दरारों तक में झांक झांक कर देखा कि कहीं इसमें न खोंस दिया हो।

"तुमने आईने को भी देखा ही होगा कि कहीं उसके भीतर न रख दिये हों।"

"हम लोगोंने एक भी चीज नहीं छोड़ी। उसके बाद मकान का कोना अँतरा छान डाला। यहां तक कि बगलके दो मकानों की भी जांच हम लोगों ने की।

"तुम लोगों को बहुत ज्यादा परीशानी उठानी पड़ी।"

"करता क्या? इनाम कितना ज्यादा है!"

"तब तो तुमने फर्शकी भी जांच की होगी।"

"हां, लेकिन उसमें ज्यादा परीशान नहीं होना पड़ा क्योंकि

१४

सभी मकानों के फर्श पर ईंटे बिछाये हैं । हम लोगोंने दो ईंटों के बीचके खांच की जांच की। वे खोदे खादे नहीं निकले ।

"तुमने उनके कागजात और पुस्तकों की जांच भी की होगी।

"हरेक पुस्तकको पन्ने पन्ने उलट गया। जिल्दों की जांच की। जिन पुस्तकों पर नये जिल्द थे उन्हें खोदखाद कर भी देखा गया।"

"तब तो तुम्हारा ख्याल गलत है। मकान के अन्दर वह खत नहीं हो सकता।"

मि० जी,—आपकी बात मुझे जंचती है डूपिन ! अब क्या करना चाहिये।

"उस मकानकी दो बारा तलाशी ली जाय।"

"उससे कोई लाभ नहीं है। यदि मेरा सांस लेना सही है तो यह भी सही है कि होटल में वह खत नहीं है।"

"इससे अधिक मुझे कुछ कहना नहीं है।" क्या तुम उस खतका विवरण ठीक ठीक दे सकते हो?"

"हां, इतना कह कर उसने अपनी डायरी निकाली और उस खोये दस्तावेजका विवरण पढ़ना शुरू किया। यह काम समाप्त करके उसने अपने घर की राह ली। मैंने उतना निराश उसे कभी नहीं देखा था।

एक महीने बाद वे फिर हम लोगों से मिलने आये। हम उसी दशामें आज भी बैठे थे। हम लोगों के पास ही कुर्सी पर बैठकर वे बातें करने लगे। थोड़ी देर बाद मैंने पूछा:—तुम्हारे उस चुराये पत्र का क्या हुआ? शायद तुमने मान लिया कि उससे वह पत्र वापस पानेका तुम्हारे पास कोई उपाय नहीं है?"

उसने भर्राये स्वर में कहा:—डूपिन की सलाह के अनुसार

मैंने दो बारा उसी तरह जांच पड़ताल की लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ मैं तो पहले से ही यही समझता था।"

डूपिन—तुम्हें कितना पुरस्कार मिलने वाला था।"

"बहुत ज्यादा! मैं रकम तो बतलाना नहीं चाहता लेकिन जो कोई वह खत लाकर मुझे दे दे उसे मैं पचास हजार फ्रैंक का चेक तुरत दे दूंगा। उस खत के लिये प्रतिदिन परेशानी बढ़ रही है। इस लिये पुरस्कार पहले से दूना कर दिया गया है। चाहे वह तिगुना भी कर दिया जाय तो भी जो कुछ मैंने किया है उससे ज्यादा कुछ नहीं कर सकता था।"

डूपिन—तुमने पूरी कोशिश नहीं की। तुम इससे ज्यादा कर सकते थे।"

"किस तरह?"

"तुम्हें एक वकील रख लेना चाहिये था। अवर्नेथी की कहानी तो तुम्हें याद ही होगी।

"जहन्नुम में जाय वह आवर्नेथी।"

"तुम जो चाहो कहो। पर एक मर्तबा एक कंजूस उसके पास अपनी बीमारी के बारेमें मुफ्त सलाह लेने गया। साधारण बात चीत के बाद उसने अपनी सारी बीमारी उससे कह डाली और पूछा!—यदि किसीको ऐसी बीमारी हो तो वह क्या करे?"

अवर्नेथी—क्यों? सलाह ले।"

जी० ने मुँह बनाकर कहा:—मैं उस तरह की सलाह लेने और उसकी फीस देनेके लिये सदा प्रस्तुत हूँ। जो इस मामले में मेरी सहायता करे उसे मैं पचास हजार फ्रैंक देने के लिये तैयार हूँ।"

डूपिन ने चेक बुक दराज से निकाल कर उसके आगे बढ़ाते हुए कहा:—यदि ऐसी बात है तो आप पचास हजार की रकम इस पर दर्ज करके सही कर दें में उसी क्षण वह खत आपके हाथ पर रख दूंगा।"

मैं तो अवाक् हो गया। मि० जी० भी अवाक् थे। क्षण भर तक वह मुँह बाये डूपिनका चेहरा देखते रहे। उसके बाद उन्होंने कलम उठाई और पचास हजारकी रकम भरकर डूपिनके सामने रख दी। उसने चेकको क्षण भर देखा। उसे उठाकर दराज के हवाले किया। सामनेका दराज खोला और एक खत निकाल कर मि० जी० के हवाले कर दिया। उसने आंखें फाड़कर खतको देखा। खुशी से लोट पोट हो गया और एक शब्द मुंहसे निकाले बिना उठकर भागा।

उसके चले जाने पर मेरे मित्रने यों कहना शुरू किया। पेरिस की पुलिस अपने काममें बड़ी चौकस और मुस्तैद है। वे ईमानदार और मेहनती हैं। अपने कर्तव्यका पालन करना पूरी तरह जानते हैं। इस लिये जब उसने मिनिस्टर डी० के निवास स्थान की तलशी का विस्तृत वर्णन किया तो मैंने समझ लिया कि जहाँ तक मिहनत से संबंध है इन लोगों ने कोई बात उठा नहीं रखी होगी।

मैने पूछा—"जहाँ तक मिहनत का संबंध है।" तुम्हारा क्या मतलब है?"

डूपिन—जितना परिश्रम इन लोगों ने किया वह पर्याप्त ही नहीं था बल्कि पूर्णता के साथ किया गया था। यदि उसने इस पत्र को वहाँ छिपा कर रखा होता तो वह इनके हाथ अवश्य लग गया होता।"

"उसकी बातें सुन कर मैं हँस रहा था लेकिन वह सारी बातें गंभीरता से कह रहा था।

"लेकिन जिस आदमी के साथ इनका मोकाबला पड़ा था उसे देखते हुए इनका तरीका दोषपूर्ण था। काम करने का उसका अपना एक खास तरीका है जिसे दूसरा नहीं कर सकता लेकिन इसमें एक दोष है या तो यह बहुत गहराई तक चला जाता है या ऊपर ही तैरता रहता है। इसलिये कभी-कभी साधारण समझदार स्कूल का विद्यार्थी भी इससे अच्छा काम कर सकता है।

बहुत सोच विचार के बाद मैं। एक हरा चश्मा पहना और अचानक उस होटल में जा पहुँचा जहाँ मि० डी० रहते थे। [illegible] शिकायत की। मैं बातें तो उनसे कर रहा था लेकिन मेरी नजर उनके टेबुल पर थी। उस पर रखे सभी सामानों को मैं गौर से देख गया पर मेरे मतलब की कोई चीज वहाँ न मिली। तब मैं इधर उधर नजर दौड़ाने लगा। मेरी निगाह दीवाल में खूँटी पर टँगे कार्ड बोर्ड के एक बक्स पर पड़ी जो निहायत गन्दी थी। उसमें चार पाँच विजिटिंग कार्ड और एक खत रखा हुआ था। वह खत तोड़ा-मरोड़ा था। बीच से फटा हुआ भी था। मानों बेमतलब की चीज समझ कर किसी ने उसे फाड़ डालना चाहा हो पर कुछ सोच कर रख दिया हो। उस पर एक बड़ी-सी काली मुहर लगी थी और उस पर डी० का नाम मोटे अक्षरों में लिखा था। हरफ जनाना था। मानों किसी रमणी ने डी० को वह खत लिखा हो। एक दम लापरवाही के साथ वह खत ऊपर के खाने में रखा था।

उसे देखते ही मैंने समझ लिया कि यह वही खत है जिसकी तलाश में मैं गया था। लेकिन उसका जो विवरण जी० ने हम लोगों को सुनाया था उससे यह एकदम भिन्न था। इस पर के हरूफ मोटे और लाल रंग के थे और उस पर डी० का नाम था लेकिन जी० ने अपने विवरण में ऊपर का हरूफ छोटा और हरा बतलाया था। नाम भी सी० का बतलाया था। लेकिन उसका आकार विवरण से एकदम मिलता था। एक तरफ तो उसका विवरण जी० के विवरण से मिलता नहीं था लेकिन दूसरी तरफ वह जिस लापरवाही से मिनिस्टर डी० की आदत के खिलाफ रखा हुआ था, दोनों को मैं अपने मन में तौलने लगा तो मुझे यही प्रतीत हुआ कि यह वही खत है और इसपर किसी का ध्यान न [illegible]

इतना स्थिर करने के बाद मैं प्रति दिन उसके पास जाने लगा। मैं उनसे ऐसे ही विषय पर बहस छेड़ देता था। मैं सदा उन्हें उत्तेजित करने का यत्न करता। पर स्वयं सदा शान्त रहता और निगाह उसी खतपर रखता। कई दिन लगातार देखते रहने से उसका आकार प्रकार मेरी ध्यान में पूरी तरह बैठ गया और जिस प्रकार वह रखा हुआ था वह भी मुझे याद हो गया। एक दिन मुझे कुछ ऐसा सबूत मिल गया जिससे उसके असली होने में मेरा रहा सहा सन्देह भी दूर हो गया। एक दिन मैंने गौर करके उसे देखा तो वह मुझे जरूरत से ज्यादा मोड़ा हुआ मालूम हुआ। इस तरह की बात उन पत्रों के साथ होती है जो दोबारा दूसरी तरफ से मोड़ दिये जाते हैं। मैंने समझ लिया कि खत दोबारा मोड़कर नये सिरे से उसपर यह पता लिख

"लेकिन इतनी देर में वे जो कुछ कर सकते हैं उस पर भी आपने ध्यान दिया है।"

"क्या ?"

"मैं आपसे क्या बतलाऊँ ! वे सब कुछ कर सकते हैं ?"

वह बहुत डरी हुई-सी थीं। यदि उनका कहना सही था तो भय का यथेष्ट कारण भी था। मैंने कहा—कभी कभी एक को देख कर दूसरे का धोखा हो जाता है। आपको इस तरह भयभीत नहीं होना चाहिये। यदि वे इस गाड़ी से यात्रा करते भी होंगे तो अपनी भलाई के लिये चुप ही रहेंगे। जो संकट उन पर आनेवाला है उससे दूर ही रहना चाहेंगे

मेरी बातों से भी उन्हें शान्ति नहीं मिली। लेकिन कुछ समझ कर चुप हो रहीं।

मैंने अपना अखबार खोला और लूपिन के मोकदमे का वृत्तान्त पढ़ने लगा। अखबार में जो कुछ छपा था वह मैं जानता था। इसलिये मेरा मन नहीं लगा। इसके साथ ही पहली रात को नींद नहीं आई थी। इसलिये मेरी आंखें झपने लगीं।

इस पर उस भद्र महिला ने कहा—क्या आप सो रहे हैं ? इतना कह कर उसने मेरे हाथ से अखबार छीन लिया और मेरी ओर तरेर कर देखने लगीं।

मैंने कहा—नहीं, मैं सोऊँगा नहीं।

उन्होंने कहा—यह आपकी सबसे बड़ी भूल होगी।

"मैं इसे मानता हूँ।"

मैं अभी आकाश की ओर देखता और कभी सामने के मैदान की ओर। इसी तरह मैं नींद भगाने का यत्न करता रहा कि न जाने कब मेरी आँखें बन्द हो गईं और स्वप्न देखने लगा।

कि लूपिन नाम का कोई आदमी उसी गाड़ी के किसी डब्बे में बैठा है। उसके बाद ढेर का ढेर रुपया लेकर वह आकाश की तरफ उड़ा और देहातों में जाकर बाँटने लगा।

लूपिन का आकार स्थायी नहीं रहा। चित्रपट बदल गया और दूसरी सूरत सामने आ गई। लेकिन अब वह केवल सपना नहीं रह गया। वह साक्षात् रूप धारण करने लगा। वह मेरी ओर बढ़ने लगा। उसका आकार अधिकाधिक स्पष्ट होने लगा। वह धड़ाम से गाड़ी में कूद पड़ा और मेरी छाती पर चढ़ बैठा।

मैं दर्द से चीख उठा। मेरी नींद टूट गई। मैंने देखा कि वह यात्री मेरे सीने पर सवार होकर मेरा गला घोंट रहा है। मैंने यह अस्पष्ट देखा क्योंकि दम घुटने से मेरी आंखें लाल हो गई थीं। मैंने उस भद्र महिला को एक कोने में चीखते देखा। वह भी बेहोश हो रही थी। मैंने छुड़ाने की कोशिश नहीं की। यदि मैंने चाहा भी होता तो मुझमें ताकत नहीं थी। मेरी कनपटी भाथी की तरह उछल रही थी। मेरा दम घुट रहा था। मेरी गर्दन टूट रही थी। यदि वह उसी तरह क्षण भर और रहता तो मेरा काम तमाम हो जाता।

शायद उसे यह मालूम हो गया। उसने अपना हाथ ढीला कर दिया। एक हाथ से वह मेरी गर्दन पकड़े रहा और दूसरे से उसने एक रस्सी निकाली जिसमें उसने पहले से ही मुद्धी बना रखी थी। उसने उससे वेग के साथ मेरे दोनों हाथ बांध दिये। क्षण भर में उसने मुझे बाँधकर हर तरह से लाचार कर दिया। उसके बाद इतमीनान के साथ उसने अपना काम किया। न तो उसे कुछ कर डालने की जल्दीबाजी थी, न उसके चेहरे पर डर भय या परीशानी थी। एक दम निश्चिन्त होकर वह अपना काम

कर रहा था। और मैं अरसीन लूपिन गठरी की तरह बँधा हुआ, बेंच पर पड़ा यह सब तमाशा देख रहा था।

इससे बढ़ कर शर्म की बात क्या हो सकती है। इस चिन्ता· जनक अवस्था में भी सारी बातें याद कर मुझे हंसी आ गई। अर्सीन लूपिन! इस तरह अजनबी की तरह! मानों गाड़ी में पहले-पहल चढ़ा हो! उसने मेरी डायरी और रुपये की थैली ले ली। लूपिन भी आज चोर का शिकार हो गया। ठगा गया और हराया गया!

उसने उस स्त्री की तरफ देखा तक नहीं। उसने बेंच पर से उसका छोटा बेग उठा लिया और उसमें जो कुछ था, एक-एक करके निकाल लिया। भद्रमहिला ने एक बार अपनी आँखें खोलीं उसे देखा और धीरे से अपनी अँगूठी निकाल कर उसकी तरफ इस तरह बढ़ा दिया मानों वे उसे निकालने का भी कष्ट नहीं देना चाहती थीं। उसने अँगूठी ले ली। उसकी तरफ देखा। रमणी बेहोश हो गई।

यह सब करके वह चुपचाप अपनी जगह पर लौट गया। सिगरेट जलाया और लूट के माल की जांच करने लगा। जो कुछ वह प्राप्त कर सका था उससे वह सन्तुष्ट प्रतीत हुआ।

मैं बहुत क्षुब्ध था। मुझे अपने बारह हजार फ्रैंक तथा अन्य जरूरी कागजात जो उसने निकाल लिये थे, कोई चिन्ता नहीं थी। यद्यपि डायरी में अनेक जरूरी कागजात थे। क्योंकि मैं जानता था कि कुछ ही दिन बाद मय सूद के वे वापस आ जायेंगे। उस समय मुझे इस बात की चिन्ता थी कि आगे क्या होने वाला है।

गेयर सेण्ट लजारे स्टेशन पर मुझे देखकर जो हलचल मची थी वह अभी तक मुझे याद थी। मैं जिन मित्रों के यहां जा रहा था, वे मुझे गुईलामे वर्लाट के नाम से जानते थे। अर्सीन लूपिन से मेरा चेहरा बहुत कुछ मिलता-जुलता था इसलिये मित्र मंडली में इसे लेकर काफी दिल्लगी रहती थी। मैं अपने को छिपाकर नहीं रख सका और मेरी उपस्थिति का पता वहाँ लोगों को लग ही गया। इधर एक आदमी को जो संभवतः अर्सीन लूपिन था, लोगों ने दूसरी गाड़ी से कूद कर इसमें चढ़ते देखा था। यहाँ की पुलिस ने रुवेन की पुलिस को तार से अवश्य सूचित किया होगा और रुवेन की पुलिस स्टेशन को घेर कर गाड़ी की तलाशी लिये बिना नहीं रहेगी।

इसकी कल्पना मैंने शुरू में ही कर ली थी और अपने बचाव का उपाय भी मैंने सोच लिया था। जिस तरह पेरिस की पुलिस की आंखें बचाकर मैं चुपचाप निकल जाता था उसी तरह वहाँ भी निकल जाने की आशा में मैं निश्चिन्त बैठा था। लेकिन अपनी वह अवस्था नहीं रही। मेरे हाथ पाँव बँधे थे। इसलिये मेरी एक भी युक्ति काम नहीं आ सकेगी। गाड़ी की तलाशी लेते समय पुलिस के अफसर अर्सीन लूपिन को गठरी की तरह बंधे हुए इस डब्बे में पावेंगे। इस विपत्ति से रक्षा का कोई भी उपाय मुझे नहीं सूझ रहा था। उधर गाड़ी रुवेन स्टेशन के निकट होती जा रही थी।

एक प्रश्न मेरे मन में और उठ रहा था। मेरा व्यक्तिगत संबंध उस प्रकार से नहीं था लेकिन मेरे पेशे का संबंध वह उत्सुकता मुझ में पैदा कर रहा था। वह यह था कि मेरे साथी यात्री का और क्या इरादा था।

अनोखा मोकदमा

उस समय इन्सपेक्टर जेराड नं० ३७ एल्मउड एवेन्यू के किसी मकान में उपस्थित थे। यह नये तर्ज का बहुत छोटा मकान था। यह झाड़ियों की टट्टी से इस तरह घिरा था कि बाहर वालों की नजर भी इस पर नहीं पड़ती थी। बहुत ही कम लोगों का आना जाना यहाँ होता था। जिस समय इन्स्पेक्टर स्लेड वहाँ पहुँचे फाटक पर पुलिस का पहरा था।

"पहरे पर की पुलिस को अपना परिचय देकर पूछा—क्या इन्स्पेक्टर साहब भीतर हैं ?"

कान्स्टेबुल ने फौजी सलाम देकर कहा—वे आपका ही रास्ता देख रहे हैं।"

इतना कह कर उसने लोहे का फाटक खोल दिया और मि० स्लेड भीतर दाखिल हुए। आहाते की बेतरतीबदारी देखकर उन्हें विस्मय-सा हुआ। मैदान में जहाँ-तहाँ झाड़ियाँ उग आई थीं। फूलों के पेड़ मुर्झा रहे थे। घास काटी तक नहीं गई थी। वे बटन दबाना ही चाहते थे कि दरवाजा खुली और इन्स्पेक्टर बाहर निकल आये।

स्लेड ने हँसकर हाथ मिलाया और कहा—"तुम तो उसी तरह दिखाई देते हो जेराड !

"मि० जेराड ने उत्तर में मुस्करा दिया और उन्हें लेकर भीतर गये। बोले—मैं नहीं समझता कि इस मामले में विशेष झंझट होगी। यह तो आत्म-हत्या का सीधा-सादा मामला है। तुम्हें ज्यादा परीशान नहीं होना पड़ेगा।"

जेराड उसी प्रकार नीरस थे। स्लेडने अपना ओवरकोट उतारा और बैठते हुए पूछा—किसने आत्म-हत्या की है ?

"एक बूढ़े आदमी ने। नाम हेलोन! प्रसिद्ध कंजूस था। लोगों का कहना है कि वह सनकी भी था। उसका सारा झंझट दूर हो गया। दम तोड़ कर वह पड़ा है।"

जेराड ने सामने के कमरे की तरफ इशारा किया जिसमें उसकी लाश पड़ी थी। कमरा छोटा था। मामूली दो चार कुर्सियाँ पड़ी थीं। कोने में एक टेबुल था। लाश के बगल में कुर्सी पर एक सज्जन बैठे थे।

वे डिवीजन के सर्जन मि० क्रैंसिल हेपुल थे। जेराड ने दोनों का परिचय कराया।

मि० हेपुल ने स्लेड से हाथ मिलाते हुए कहा—आपसे मिल कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। जेराड ने तो आपसे कह दिया ही होगा। आत्म-हत्या का सीधा-सादा मामला है। गोली तालू को छेद कर निकल गई है।

"क्या यह कुँवारा था ?"

"हम लोगों को पता नहीं कि उसके घर में कोई और भी था।"

स्लेड लाश पर झुक गया। मुँह और ठुड्डी पर काला खून जम गया था। गाल के भीतर खून जम कर घाव हो गया था और दरी पर भी खून के धब्बे थे। दोनों घुटने मुड़े हुए थे जिससे दाहिना हाथ पंजे की तरह फैला हुआ था। सिर से थोड़ी दूर पर पिस्तौल पड़ी थी।

मि० स्लेड सीधे खड़े हो गये। बोले—मुँह में बारूद के निशान है!"

सर्जन हेपुल दूर पर खड़े सिरहाने की तरफ झुके हुए थे, बोले—मालूम होता है इसने पिस्तौल की घोड़ी को दांतों से कस-

कर दबाया, क्योंकि निशाना बड़े नीचे से गया है। जब मैंने इसे पहले-पहल देखा तब से बारह घण्टा पहले इसकी मृत्यु हुई होगी।

जेराड—हम लोग शाम होने के बाद यहाँ पहुँचे।

स्लेड ने ऊपर की तरफ देखा। बिजली का लट्टू ठीक लाश के ऊपर था। बोले—इसने आत्म-हत्या करने के लिये विचित्र जगह चुनी। ठीक रोशनी के नीचे। आखिर इसने रोशनी जला-कर यह काम क्यों किया?

"अन्धेरे से डरता होगा। ऐसा अक्सर होता है।"

स्लेड ने सिर हिला दिया। वह कुछ सोच रहा था। बोला—सम्भव है।

बड़ा ही डरावना दृश्य था। मृतक के सिर के भूरे केश खून से लथपथ हो रहे थे। उसका दुबला-पतला शरीर इस तरह से सिकुड़ गया था मानों वह डरा हुआ हो। आँखें इस तरह खुली थीं मानों उसमें विस्मय भरा हो। नाक और ललाट पर कोई गीली वस्तु लगी हुई थी। शरीर पर के कपड़े फटे पुराने और मैले-कुचैले थे। पैर में का मोजा कई जगह फटा हुआ था।

स्लेड ने डाक्टर से कहा—आप लाश को धो डालें तब मैं इसकी जाँच करूँगा। उसने जेराड से पूछा—किसने इसका पता दिया?

घर में झाड़ू-बुहारू देने प्रतिदिन एक औरत यहाँ आया करती थी। कल आने पर उसने दरवाजा बन्द पाया, घण्टी दबाने पर भी जब दरवाजा नहीं खुला तो उसने थाने में जाकर खबर दी और हम लोगों ने आकर यह दृश्य देखा। वह औरत बगल के कमरे में है। वह विधवा है, उसका नाम कार्टर है। तुम उससे पूछ-ताछ कर सकते हो।

कार्टर नाटी और दुबली पतली महिला थी। उसकी आँखें विशाल थीं जिन्हें देखकर अचरज हुए बिना नहीं रह सकता था। वह बगल के कमरे में बैठी थी। सार्जेण्ट वेट्स उसकी रखवाली कर रहे थे।

स्लेड और जेराड के कमरे में दाखिल होते ही वेट्स उठ कर खड़ा होगया। वेट्स ने विचित्र तरह से जेराड की तरफ देखा, लेकिन जेराड का ध्यान किसी दूसरी तरफ था।

स्लेड ने कार्टर से पूछा – तुम इनके घर की देखभाल किया करती थी ? ठीक है न ?

"रविवार को छोड़कर मैं प्रतिदिन आठ बजे सुबह आया करती थी। घर में झाड़ू-बुहारु देती थी और दोपहर के लिये कुछ भोजन बना देती थी।"

"तुम यहाँ से जाया कब करती थी ?"

"प्रायः एक बजे के करीब ! शनीचर को दो भी बज जाता था।"

"मि० हेलोन सबेरे घर से बाहर नहीं जाते थे ?"

"इस सवाल से उसे अचरज हुआ। बोली—वे कभी भी बाहर नहीं जाते थे। कंजूस लोग कभी भी बाहर नहीं जाते।"

"स्लेड ने मुस्कुरा दिया। तब हेलोन कंजूस था।"

"यह बात तो सभी लोग जानते हैं।" उसे इस बात से अचरज हो रहा था कि खुफिया विभाग का यह इन्स्पेक्टर इतना भी नहीं जानता। न तो वे कहीं जाते थे और न कुछ करते थे। हमेशा चीजों के भाव पर दाँत पीसा करते थे। वे मुझे उस कमरे में कभी भी नहीं जाने देते थे। खास कर जब वे अपनी उस तिजोरी को खोलकर बैठते थे।"

"तुम कितने दिनों से यहाँ काम कर रही हो ?"

कोई दो साल से ! उन्होंने जब यह टेलीफोन लगवाया उसके थोड़े ही दिन बाद से। उन्होंने अखबारों में विज्ञापन छपवाया था। उसी को देखकर मैं आई। वे विचित्र आदमी थे। सदा अपने मन का काम करते थे। और घड़ी की सूई पर सब काम चाहते थे। आदमी को काम से परेशान रखते थे। बड़ी मुश्किल से मैं टिक सकी थी।

अपने कामों की चर्चा भी तो तुम से नहीं करते थे ? तुम पर विश्वास भी नहीं करते थे ? वे अकेले ही थे ?

वे हर बात का उत्तर "हाँ" या "ना" में देते थे। कभी-कभी तो मैं उन्हें समझ भी नहीं पाती थी। इसी से दो बार मुझे जवाब होते-होते बचा।

स्लेड ने अपने सवाल का जवाब पा लिया।

"क्या इधर वे बहुत चिन्तित रहा करते थे ?"

उसने सोच विचार कर कहा—इधर कई दिनों से जब डाक्टर वेल आ जाते थे तो वे उदास हो जाया करते थे।

"तब उनके यहाँ कोई डाक्टर भी आया करते थे ?"

"डाक्टर वेल दो बार यहाँ आये थे ? अन्तिम बार वे परसों आये थे।"

"क्या वे खत वगैरह ज्यादा लिखा करते थे या उनके पास ज्यादा खत वगैरह आया करते थे ?"

"मैं ठीक-ठीक नहीं कह सकती। पहली डाक मेरे आने के पहले आ जाती थी। दिन की डाक में दो पैसे के टिकट वाले लिफाफे आया करते थे जिनमें बिल वगैरह रहा करते थे।"

कार्टर को वहीं छोड़कर स्लेड जेराड को लिए हुये बड़े कमरे में गये।

जेराड पूछा—"कुछ समझ में आया ?"

"अभी तक तो इतना भी नहीं जान सका कि लोग उसे कंजूस क्यों कहते थे। लेकिन अचरज तो इस बात का है कि इस तरह का आदमी बिना किसी विशेष कारण के आत्म-हत्या क्यों करेगा। अकेला रहता था। कोई बात जरूर होगी। सम्भव है यह डाक्टर बेल कुछ प्रकाश डाल सके।

इसी समय कमरे का दरवाजा खुला और तौलिया से हाथ पोंछते हुए डाक्टर हेपुल बाहर निकले। बोले—मैंने उसे एक आराम कुर्सी पर बैठा दिया है।

स्लेड और जेराड पुनः उस कमरे में गये। लाश धो डाली गई थी। अब उसका चेहरा साफ दिखाई पड़ रहा था। चेहरे का रङ्ग पीला था। बायीं ओर मुँह पर मसा था। जबड़े को अपनी जगह पर रखने के लिये उसे कस कर बाँध दिया गया था जिससे होंठ का रूप भयानक होगया था। टेबुल पर थाली में नकली दाँत रखे हुए थे। स्लेड ने उन्हें देखा। दाँत का ऊपरी भाग गोली से बिखर गया था। उस पर बारूद के निशान थे। थाली में पास ही चश्मा था।

जेराड ने कहा—लाश के बगल में यह चश्मा हम लोगों को मिला था। स्लेड ने उसके बदन की तलाशी ली। जेब में कुछ रेजगी थी और कुञ्जियों का गुच्छा! एक खत भी जेब से निकला खत डाक्टर वेल ने लिखा था—'मैं वादे के अनुसार नहीं आ सका। लेकिन दूसरे दिन ठीक उसी समय आऊँगा।"

स्लेड ने कहा—आज सबेरे डा० वेल यहाँ आवेंगे।

इससे कुछ सहूलियत होगी। दोपहर तक हम लोग यहाँ का काम खतम कर सकेंगे।

इसी समय जेराड की निगाह किसी वस्तु पर पड़ी। वह चौंक कर चिल्ला उठा। स्लेड ने देखा कि परदे के पीछे एक तिजोरी

रखी है। उसने कुञ्जी लगाकर उसे खोला। तिजोरी एक दम खाली थी। जेराड विस्मय के साथ तिजोरी को देखने लगा। बोला—"तब तो आत्म-हत्या का यही कारण मालूम होता है?" तुम्हारा क्या ख्याल है।

"हो सकता है।" इतना कह कर वह आगे बढ़ा और अलमारी खोली। एक दराज को खोल कर बाहर किया। वहाँ से भी सिवा बङ्क के पास-बुक के और कुछ नहीं मिला। बङ्क में पचास पाउण्ड जमा निकला।

जेराड ने पूछा—"किस बङ्क में उसका हिसाब है?"

लण्डन एण्ड नार्दर्न काउण्टीज बङ्क में। उनसे टेलीफोन से बात-चीत कर लेना चाहिये।

मैं करता हूँ। इतना कह कर जेराड कमरे के बाहर होगये। स्लेड खड़ा होकर चारों ओर देखने लगे। एक तरफ एक रेक रखा था। उसने उसे उलटना पुलटना शुरू किया। उसमें केवल बिलें और रसीदें थी। उसने उन्हें छोड़ दिया और पिस्तौल को उठा लिया और उसे उलट-पलट कर देखने लगा। उसी समय उसकी आँख तामचीन में पड़े एक मोटे काग़ज के टुकड़े पर पड़ी। उसने उसे उठा लिया और पढ़ा—

श्रीमती डबल्यू० एन० केम्प

३४, कडोगन पार्क, डबल्यू २

उसकी आँख उसी कार्ड पर गड़ी थी जब जेराड वापस आया। बोला—पाँच साल से बङ्क में उसका कोई हिसाब किताब नहीं रहा है। आज से पाँच साल पहले उसने बंक से कई हजार पाउंड निकाले थे। और भी जो अमानत बंक में रखा था वह भी वापस ले लिया था। उस समय उसने यही कहा था कि अपनी सम्पत्ति मैं अपने पास ही रखना चाहता हूँ। शायद उसी समय

पर तिजोरी भी बैठाई गई। उसके नाम बन्दूक का लाइसेन्स भी था, ऐसा मुझे याद आ रहा है। और यह तुम्हारे हाथ में क्या है? यह ताकिसी का विजिटिंग कार्ड है। तब क्या यही औरत तो उस मामले में नहीं है। जेराड ने हँसने का यत्न किया, लेकिन स्वाभाविक मनहूसियत तुरत ही उसके चेहरे पर दौड़ पड़ी। एक बात और है, कल रात को साढ़े नौ बजे यहाँ से उसे जाते हुए कांस्टेबल टैडमन ने-जो बाहर पहरे पर है—देखा था।

स्लेड ने तेजी से जेराड की तरफ देखा—करीब-करीब यही समय तो आत्म हत्या का निर्धारित किया जाता है।

यही ख्याल जेराड के मन में भी उठा था। लेकिन उसने कहा—आत्महत्या पहले होगई होगी, इतना निश्चय है। कैसा भी गँवार आदमी क्यों न हो किसी महिला के सामने ऐसा करने का साहस नहीं करेगा।

स्लेड ने एक बार घूर कर लाश को देखा। आँखें ऊपर उठा कर जेराड से पूछा—तुम्हें पक्का विश्वास है कि इसने आत्म-हत्या की है?

इस सवाल से जेराड को कुछ अचरज हुआ। पूछा—तब तुम क्या समझ रहे हो।" निश्चय ही इसने आत्म-हत्या की है। कौन ऐसा होगा जो अपने मुँह में चुप-चाप पिस्तौल की नली घुसेड़ने देगा। शायद उस महिला केम्प पर तुम्हारा ख्याल दौड़ रहा है।

इतना कहकर जेराड ने हँस दिया।

स्लेड ने कहा - तिजोरी एकदम खाली है।

जेराड ने मुँह बनाकर कहा—यह तो मैं भी देख रहा हूँ। स्लेड—और तुम्हारा कांस्टेबुल टेडमन कहता है कि उसके हाथ में अटैची थी। फिर भी इसे आत्महत्या माना जायगा।

"सब कुछ गँवाकर वह निराश हो गया होगा ।"

जेराड ने अपना सिर हिलाते हुए कहा—यह कार्ड उसके टेबुल पर पड़ा था। इससे प्रगट होता है कि हेलोन ने उसे बुलाया था। यदि यह बात न होती तो वह इस तरह अपना कार्ड छोड़ कर नहीं जाती।

स्लेड क्षणभर चुप रहा। बोला –"टेडमन को बुलाइये ।"

टेडमन ने कहा – कल रात को करीब नव बजे मैं इस सड़क पर गश्त दे रहा था। जब मैं इस मकान के सामने आया उसी समय एक महिला यहाँ से बाहर निकली। उसके हाथ में चमड़े की अटैची थी। चाँद चमक रहा था। इसलिये उसकी शकल-सूरत देखने के लिए मैं उसकी तरफ घूमा। लेकिन मेरी तरफ उसकी पीठ थी।

वह सड़क को लांघ कर दूसरी तरफ गई और मेरे उलटे चली। वह कालेरंग का बालदार कोट पहने हुई थी। उसके सिर पर छोटा-सा काला हैट था। मकान में बाहर की तरफ कहीं भी रोशनी नहीं थी।

स्लेड—डाक्टर हेपुल को छुट्टी दे देनी चाहिये जिससे तीसरे पहर तक वे अपनी रिपोर्ट दे दें।

जेराड—अच्छी बात है।

स्लेड अपने पैण्ट की जेब में अपने दोनों हाथ डालकर कमरे में टहलने लगे। उनके चेहरे पर चिन्ता और परेशानी थी। लाश के पास जाकर वे रुके और एक बार फिर झुककर उसकी ओर देखा। पिस्तौल के कुन्दे की तरफ देखकर उन्होंने मनही मन कहा—निशान की जाँच के लिये इसे भेजना बेकार-सा ही होगा। यदि कोई निशान मिलेगा भी तो वह इसी मृतक का होगा। अचानक उनके मनमें एक विचार उठा। वह क्षणभर

तक सोचता रहा। उसके बाद उसने जेराड से कहा—तुम थाने से हेलीन की बन्दूक का नम्बर का पता तो लगाओ।"

"इससे क्या फायदा तुमने सोचा है।"

पहले नम्बर तो मँगाओ। पीछे मैं तुम्हें अपना अभिप्राय बतलाऊँगा।"

"तुम अपने मन की बात उसी तरह छिपाकर रखते हो। मैं समझता हूँ कि जब तक मैं टेलीफोन से उसका नम्बर पूछूँगा तब तक कोई नयी बात तुम्हारे दिमाग में आजायगी और तुम इसे भूल जावोगे।"

जब वह लौटा तो उसने स्लेडको टेबुल के पास बैठकर उसी बन्दूक को निहारते पाया।

स्लेड ने जेराड के चेहरे पर सिकुड़न पाया। हँसकर पूछा—

जेराड—तुम्हारी ही जीत रही। उसके नाम एक बहुत पुरानी चाल के रिवाल्वर की रजिस्टरी हुई है जो अब बनती ही नहीं। उसका नम्बर एम ८९६२ है।

इस बन्दूक के ऊपरी भाग की तरफ़ इशारा करते हुए स्लेडने कहा—"इधर देखो' जेराड झुककर देखने लगा। इस पिस्तौल का नम्बर घिसा हुआ था।

स्लेड—इससे तो यही मालूम होता है कि किसी ने बड़ी होशियारी से यह काम किया है?"

जेराड सीधा खड़ा हो गया और अपने जबड़ों को इस तरह दबाया मानों वे टूट कर अलग हो रहे हों। बोला—सम्भव है उसने नई बन्दूक खरीद ली हो।"

इस बार उसकी वाणी में साहस नहीं था।

स्लेड ने अपना सिर हिला कर कहा—जिस आदमी को लाइसेंस मिला हुआ है वह चोरी से नई बन्दूक क्यों खरीदेगा।

यदि यह उसकी अपनी पिस्तौल होती तो यह उसकी रजिस्टरी कराये होता। अभी हाल में ही उसने अपनी पिस्तौल का लाइ-सेंस बदलवाया है।

"जेराड ने बेमन होकर कहा—यह तो ठीक है।"

"इसके अलावा उसकी अपनी पिस्तौल घरमें होनी चाहिए यदि—"

जेराड—"यदि क्या ?"

"यदि हेलोन का हत्यारा उसे अपने साथ लेता नहीं गया।"

जेराड—"तब तुम्हारा ख्याल है कि यह हत्या का मामला है ?"

स्लेड ने उठकर कहा—मेरी आँखें कहती हैं कि 'आत्म-हत्या' है, लेकिन मेरा विश्वास कहता है कि "हत्या" है।

अपनी धारणा पर जोर देते हुए जेराड ने उसे पुष्ट करने का अन्तिम प्रयास किया—भला, यह भी कभी संभव है कि कोई भी आदमी होश-हवाश में इस तरह किसी को अपने मुँह में पिस्तौल डालने देगा और अपना भेजा उड़ा देने देगा ?" इस बात पर सहसा विश्वास नहीं हो सकता, यदि तुम्हारा यही अनु-मान है तो मुझे विवश होकर कहना पड़ेगा कि—"

"तुम्हारा कहना सही है। लेकिन मेरा विश्वास तो यह नहीं कह रहा है कि हत्या उसी तरह की गई ?"

"तब तुम्हारा क्या कहना है ?" क्या तुम समझते हो कि उसे पहले बेहोश किया गया तब—"

"ऐसी हालत में वह इस तरह न गिरता। हाँ, इंजेक्शन देकर ऐसा किया जा सकता था, लेकिन उसके सिर और हाथ में सूई का कोई निशान नहीं है और इसके कपड़े इतने मोटे हैं कि उनमें सुई घुस नहीं सकती थी।"

"जेराड ने ताना देते हुए कहा—तुम वही खुफिया वाली बेतुकी हाँक रहे हो। तुम स्वयं दो विरोधी बातें कह रहे हो। एक बार तुम इसे हत्या बतलाते हो। दूसरी तरफ इसकी संभावना पर सन्देह करते हो। विचित्र तर्क है तुम्हारा !"

स्लेड को जेराड की बातें अच्छी न लगीं। बोला—मेरा यही विश्वास है, लेकिन विरोधी संभावना भी दिखाई देती है।

जेराड—तुम कल्पना-जगत में उड़ रहे हो और मैं प्रत्यक्ष के आधार पर काम कर रहा हूँ। इस लाश को लेकर हम लोग दिन भर यहीं पड़े नहीं रहेंगे। मैं अस्पतालवालों को अम्बुलेंस भेज देने के लिये टेलीफोन कर देता हूँ। वे इसे जाँच के लिये उठा ले जायँ।"

स्लेड—वेल के आने की बात हम लोगों को भूल नहीं जाना चाहिये। शायद उससे कुछ मदद मिल जाय।"

"मुझे सन्देह है। लेकिन तब तक हम लोग रुके रहेंगे।"

जेराड कमरे से बाहर हो गया। स्लेड अकेला रह गया। वह गंभीर होकर सोचने लगा। उसने विजिटिंग कार्ड एक बार फिर उठाया, लेकिन दूसरे ही क्षण उसे रख दिया। उसने रुमाल से उस पिस्तौल का खजाना खोला। वह भी ठीक था। उसके दिमाग में रह-रह कर एकही प्रश्न उठता था जिसका उत्तर उसे नहीं मिलता था। यदि वह हत्या है तो हत्यारे ने उसे उसकी ही पिस्तौल से क्यों नहीं मारा ? इसका एकही उत्तर संभव था। हेलोन की पिस्तौल कहीं बन्द थी और कुंजी प्राप्त किये बिना उसे पाया नहीं जा सकता था।

रिवाल्वर को तिजोरी में नहीं रखा गया होगा। उस कमरे में आलमारी है। उसमें रिवाल्वर रखा जा सकता था। लेकिन इस समय वह रिवाल्वर कहाँ है ? रिवाल्वर को साथ

लेते जाना खरनाक था। लेकिन इस तरह खतरे की संभावना एक दम जाती रही है। हत्यारे को मालूम था कि तिजोरी उस कमरे में है और रिवाल्वर आलमारी में होगी। इसलिये वहाँ जाकर उसे छिपाना मुनासिब न होता। वह या तो यहीं कहीं या बगल के कमरे में छिपाई गई होगी।

स्लेड ने कमरे में चारों ओर नजर दौड़ाई ! अचानक वह आतिशदान के पास घुटने के बल बैठ गया। उसके नीचे राख वगैरह नहीं थीं। मालूम होता है कि कई दिनों से यहाँ आग वगैरह नहीं जलाई गई थी। इसका पता तो कार्टर से लग जायगा। लेकिन एक या दो छड़ पर गर्द के कुछ कण थे। हो सकता है हवा से उड़ कर आ गये हों !

स्लेड खड़ा हो गया। अपना कोट उतार डाला और अपने दाहिने हाथ की कमीज की बाँह चढ़ा ली। वह बोरसी में घुस गया और अपना हाथ चिमनी में डाला। कुछ दूर तो पत्थर की दीवाल के अतिरिक्त उसे और कुछ नहीं मिला। लेकिन जब वह कुछ उचका तो उसकी उँगलियाँ किसी चीज पर जा पड़ीं। बायें हाथ से छड़ों को पकड़ कर उसने थोड़ा और ऊँचा होने की कोशिश की। अब तो उसके हाथ में वह चीज पूरी तरह आ गई। उसने हाथ बाहर खींच लिया। यह हेलोन की पिस्तौल थी। उसका सिर हिल उठा। उसकी आँखें लाश की ओर दौड़ गईं। उस कमरे का क्या रहस्य है ?

उसका मस्तिष्क तेजी से काम करने लगा, क्योंकि उसे तुरन्त किसी निर्णय पर पहुँचना था। उसे देर भी न लगी। सबसे पहले उसने उस पिस्तौल को वहीं रख दिया जहाँ से उसे पाया था। उसके बाद उसने छड़ों पर से वह गर्द फूँक कर उड़ा दी जो उसके हाथों से लग गई थी ताकि उन पर किसी

तरह का निशान न रह जाय और उसकी हरकतों का किसी को पता न लगे। इसके बाद वह कमरे से तेजी से निकला और रसोई घर में गया। उसने अपना हाथ भी धो डाला। भाग्यवश जेराड दूसरे कमरे में वेट्स से बातें करने गया था इसलिये उसने देखा नहीं। कमरे में वापस आकर उसने अपना कोट पहन लिया और आलमारी को गौर से देखने लगा।

दराजों को वह देख चुका था। उसमें उसके मतलब की कोई वस्तु नहीं मिली थी। वह एक बार फिर उसकी जाँच करने लगा, पर उन रसीदों और बिलों में से उसे कोई ऐसी चीज न मिली जिससे इस घटना पर कोई प्रकाश पड़ सके। उन कागजों में कोई ऐसी बात भी नहीं थी जिससे यह मालूम हो सके कि हेलिन का श्रीमती कैम्प से पुराना परिचय था। यह विचित्र बात थी। कार्टर से उसे मालूम हो चुका था कि हेलोन को अपना कोई नहीं था। वह ऐसा व्यक्ति था जिसे अपनी सम्पत्ति की रक्षा का अनोखा ख्याल था। जेराड ने उसे खफ्त और कार्टर ने कञ्जूस कहा था।

लेकिन यह महिला कैम्प कौन है? उसका कार्ड टेबुल पर मिला। वह इस मकान से निकलते समय पुलिस के सामने से होकर गई। उधर हेलोन के यहाँ कोई आता जाता तक नहीं था। क्या वह उसकी कोई संबंधी थी। उसके पास एक बहुत बड़ी अटैची भी थी। क्या वह इस बूढ़े को लूटने आई थी? क्या उसी ने इसकी हत्या की? यदि यह काम उसका है तो उसने इसके मुँह में पिस्तौल किस तरह डाला?

जिस समय स्लेड आलमारी की वस्तुओं को एक-एक करके देख रहा था उसके मन में इस तरह के दर्जनों सवाल उठे।

लेकिन उसके एक भी सवाल का सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिल सका।

उसने अपने मन में कहा, जेक हेलोन मारा गया है। इतना तो दोनों बन्दूकों से साबित हो जाता है। पर यह हत्या क्यों की गई ? तिजोरी में जो रुपये और अमानत की रकम थी उसी के लिये ! लेकिन इसका क्या सबूत है कि उसमें कुछ था।

इसका कोई उत्तर उसके पास नहीं था। यही उलझन थी। अन्त में उसे एक सोख्ता मिला। वह दराज के एक कोने में रखा था। उसने उसे निकाला और उलट-पुलट कर उसे देखने लगा। सोख्ता एक दम सादा था। केवल बीच में एक धब्बा था। उस धब्बे के दाहिने कोने पर कुछ धुँधले चिह्न थे। क्षण भर तक उसने उसे गौर से देखा। नीली स्याही का फीका निशान था। वह अचरज में पड़ गया।

वह तेजी से दूसरे कमरे में गया। वहाँ जेराड वेट्स के साथ कुछ बहस कर रहा था और कार्टर आँखें फाड़कर उसे देख रही थी। स्लेड को इस तरह आते देख उसने पूछा—क्या बात है भाई।

"वहाँ उस टेबुल पर मैंने एक बोतल स्याही देखी थी। उसके पास दो कलम भी रखे हैं। इतना कह कर वह उस पर झुक-सा गया। उसके बाद उसने घूमकर कार्टर से पूछा—क्या हेलोन कभी फाउण्टेन पेन का भी इस्तेमाल करते थे ?"

कार्टर—'जी-नहीं ?" जब कभी उन्हें लिखना होता था, वे उसी टेबुल पर जाकर उसी कलम से लिखा करते थे।

"ठीक है ! क्या घर में कोई और भी कलम दवात है।"

"जहाँ तक मैं जानती हूँ, यही एक कलम दावात है। अभी उस दिन मैं ही तो इस बोतल को ले आई थी।"

"बस यही मैं तुमसे जानना चाहता था।"

जेराड स्लेड के पीछे-पीछे बड़े कमरे में गया। पूछा—"क्या तुम्हारी कल्पना तरक्की कर रही है।"

"एकान्त में यह अच्छा काम करती है जब उसके रास्ते में कोई बाधा नहीं रहती।"

"मैं तुम्हारा मतलब समझ गया। तुम कुछ देर के लिए एकान्त चाहते हो। इसके लिये मैं तुम्हें दोषी नहीं ठहराता।"

इतना कहकर उसने स्लेड की गर्दन पर जोर से हाथ पटक दिया। पूछा—"अच्छा तो यही बतला दो कि तुम्हारी कल्पना रूपी उल्लू कब काँव-काँव करना चाहता है। मैं उस समय खिसक जाऊँगा।"

स्लेड ने भिन्नाकर कहा— उल्लू कांव-काँव नहीं किया करते। वे तो बोलते हैं।

स्लेड ने अपनी जेब से एक लेंस निकला और आलमारी के पास बैठ गया। टेबुल पर वाली रोशनाई साधारण ब्लू ब्लैक स्याही थी। अर्थात् उससे नीले अक्षर निकलते थे जो सूखने पर काले हो जाते थे। लेकिन सोख्ता पर की स्याही निखालिस नीली थी अर्थात् उससे नीले अक्षर भी निकले थे और सूखने पर भी नीले ही रह गये थे।

अपने लेंस से वह सोख्ते के धब्बे की जाँच करने लगा। सूक्ष्म जाँच के बाद उसे कुछ लिखावट मिल सकी—"जिससे यह कोई मतलब नहीं निकाल सका।"

क्षण भर तक वह चुप-चाप कुछ सोचता रहा। उसकी कल्पना में एक नया विचार आया और वह धीरे-धीरे स्पष्ट होने लगा। इसी समय बाहर घंटी की आवाज हुई। वह चौंक पड़ा। उसने सोख्ता को वहीं रख दिया जहाँ से उसे निकाला

था। आलमारी को बन्द कर दिया। वह बन्द कमरे में गया। देखा, जेराड दो आदमियों से बातें कर रहा है। उनके हाथ में स्ट्रेचर था।

उसी समय एक तीसरे व्यक्ति ने भी कमरे में प्रवेश किया। उसके हाथ में दवाओं का एक वक्स था।

नया आदमी चकित खड़ा हो गया, उसने सापेक्ष दृष्टि जेराड और उस स्ट्रेचर पर डाली। बोला—"मुझे जेकर हेलोन ने बुलाया था। मैं उन्हीं को देखने आया था, लेकिन यहाँ का रंग-ढंग देखकर तो मैं हैरान हूँ।"

जेराड ने मुंह बनाकर कहा—"हेलोन की मृत्यु हो गई। क्या आपका ही नाम डाक्टर बेल है?"

"जी हाँ, मेरा ही नाम हेनरी बेल है। पर आप यह क्या सुना रहे हैं! क्या सचमुच हेलिन की मृत्यु हो गई? बात मेरी समझ में नहीं आती। उनकी आर्थिक दशा जरूर खराब थी। लेकिन उनका स्वास्थ्य तो इतना खराब नहीं था कि······"

जेराड—उनकी मृत्यु भयानक तरीके से हुई है। मुंह में पिस्तौल मारी गई है।

डाक्टर बेल के भौहों पर बल पड़ गया। बोले—"मुँह में गोली लगी है! तब क्या उन्होंने आत्म-हत्या कर ली?" इतना कहकर उन्होंने गहरी साँस ली। अभागा आदमी! मैं उन्हें बराबर समझाता और तसल्ली देता रहा। लेकिन मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि······"

स्लेड—"आप उनकी लाश देखना चाहेंगे।"

"जरूर, आप तो उसे ले जाने की तैयारी में हैं। क्या आपको मुझसे सर्टिफिकेट लेने की जरूरत है?"

उनकी ये बातें एक दम पेशेवर की तरह थीं।

जेराड—डिविजनल सर्जन मि० हेपुल इस संबंध में आपसे बातें करेंगे ! उस कमरे में लाश है। आप मेरे साथ आवें। तब तक ये लोग स्ट्रेचर लेकर यहीं ठहरेंगे।"

जब वे लाश वाले कमरे में चले गये तो स्लेड ने टेलीफोन डायरेक्टरी उठाई और एच० सेक्सन देखने लगा। उसे वह नाम मिल गया जिसकी तलाश में वह था यानी "हार्डस्टोन अमरोज महाजन ६४ ग्राडवरी चेम्बर डब्ल्यू ?" उसने नम्बर लगाया और अधिकार के साथ मि० हार्ड स्टान से बातें करने लगा। उसने साफ साफ कुछ ऐसी बातें कहीं जिससे वह महाजन घबरा गया। इसलिये उसने सारी बातें कबूल कर लीं। इसके बाद स्लेड ने एक जगह और टेलीफोन किया और कुछ दरयाफ्त किया। वहाँ से जो कुछ उत्तर मिला वह हार्डस्टोन के उत्तर की तरह भी उसकी कल्पना को पुष्ट कर देता था।

स्लेड फौरन लाश वाले कमरे में पहुंचा। हास्पिटल के आदमी लाश को स्ट्रेचर पर लाद रहे थे। उन्होंने लाश को लादकर बाहर किया। तब स्लेड ने जेराड से कहा—मेरे साथ चलो। आतिशदान के भट्ठी में राख है। मैं कार्टर से पूछना चाहता हूँ कि यह चिमनी कब साफ की गयी थी। जेराड चकित होकर स्लेड का चेहरा देखने लगे। लेकिन उसने उनका हाथ पकड़ कर खींचते हुए बोला—"चलो जल्दी करो। दिन भर यहीं नहीं मरना है। डाक्टर बेल क्षण भर को गैरहाजिरी माफ करेंगे। आप से भी दो बातें करनी हैं।"

डाक्टर बेल ने अपना बक्स टेबुल पर रख दिया और एक कुर्सी पर बैठ गये। अपना हाथ हिलाते हुए उन्होंने कहा—आप लोग अपना काम करें। मैं आपकी सेवा में हूँ। मैं तो घबरा-सा गया हूँ। उस अभागे हेलिन ने यह क्या कर डाला। भला कौन इस पर विश्वास करेगा।"

वह सचमुच पछता रहा था कि कहाँ वह आ फँसा। बोला—न जाने क्यों मैंने कल आना स्थगित कर दिया और आज के लिये रखा और आज यह देखना पड़ा।"

स्लेड जेराड को लिये तेजी से कमरे से बाहर हो गया। बड़े कमरे में पहुँचते ही जेराड का पारा और भी चढ़ गया। उसने क्रोध से कहा—जब हर तरह से तुम असफल रहे तो यह क्या बेवकूफी करने चले हो। क्या समझते हो कि इस तरह तुम अपनी बात प्रमाणित कर लोगे ?"

स्लेड ने अपने होंठ पर अँगुली रख कर उसे चुप रहने का इशारा किया। इस पर जेराड का चेहरा तमतमा उठा। और जब स्लेड ने अपना कान कमरे के दरवाजे के छेद पर रखा तो जेराड बिगड़ कर कुछ कहने चला। लेकिन उसके पहले ही स्लेड ने हैण्डिल घुमा दिया और दरवाजा खुल गया और स्लेड उछल कर उसी कमरे में चला गया। डाक्टर बेल आतिश-दान पर खड़े थे। उनकी पीठ दरवाजे की ओर थी। स्लेड के पैर की आवाज सुनते ही वह घूम पड़ा। क्षण भर की घबराहट के बाद ही उसने एक काली चीज तान दी। उसी क्षण भर ने स्लेड की जान बचा दी। ज्योंही उसने पिस्तौल का घोड़ा दबाया, स्लेड ने उसकी कलाई पकड़ ली। गोली जाकर छत से लगी। दूसरे क्षण सार्जेण्ट वेट्स ने डाक्टर बेल के दोनों हाथों में हथकड़ी भर दी।

इस घटना के डेढ़ घण्टे बाद डाक्टर बेल का चालान कर दिया गया और स्लेड जेराड के दफ्तर में बैठकर आराम से सिगरेट पीने लगे।

जेराड ने पूछा—मैं अभी तक नहीं समझ सका कि तुम्हें डाक्टर बेल पर किस तरह सन्देह हुआ ?"

"उस खत ने मुझे चिन्ता में डाल दिया। पहले तो खत लिफ़ाफे में नहीं था। दूसरे जब उसके सभी बिल दराज में थे तो सिर्फ वही उसकी जेब में क्यों था। हम लोगों की नजर पड़ने के लिये वह वहाँ रखा गया था। यही बात केम्प के कार्ड के साथ थी। दोनों बातें मिल जाती थीं। दोनों विचित्र थीं। इससे मैं उन पर विचार करने लगा। जब कैम्प इस मकान से निकली तो वह सतर्क नहीं थी, जैसा ऐसा काम करने पर होना चाहिये। वह इस तरह गई ताकि पुलिस की निगाह उन पर पड़ जाय। यह तीसरी बात थी। यदि हेलोन ने आत्महत्या की तब तो कैम्प का प्रश्न ही नहीं उठता है। पर यदि हत्या का सन्देह होता है तो पहला ख्याल केम्प पर जाना स्वाभाविक है। ये चतुरता की बातें थी और इसे समझने के लिये बड़ी तीव्र बुद्धि की आवश्यकता थी। इसके साथ ही जिस तरह उसकी हत्या की गई थी। वह प्रश्न भी था।

"वही तो मेरी समझ में नही आ रहा है।"

पर बात साधारण है। साधारणतः यही मानना पड़ेगा कि हेलोन ने अपना मुँह राजी से खोल दिया। डाक्टर लोग मरीज को मुँह खोलने के लिये कब कहते हैं? जब वे जीभ देखना चाहते हैं। रोशनी के नीचे ही जीभ अच्छी तरह देखी जा सकती है। इससे मैंने यह नतीजा निकाला कि कल शाम को डाक्टर यहाँ जरूर आया था। जीभ देखने के बहाने उसने हेलोन से मुँह खोलवाया और पिस्तौल मूँह में घुसेड़ कर घोड़ा दबा दिया। किसी बूढ़े आदमी को मारने के इस तरीके के लिये बहुत बड़े साहस की आवश्यकता होती है। लेकिन बेल बहुत संकट में था। वह जुए में हार गया था अ र हाईस्टेन से रुपया कर्ज लिए हुए था। हाईस्टेन जल्लाद है। पैसा पैसा गिना लेता है। सोख्ते पर जो निशान

मुझे मिला उससे मेरा ध्यान हार्डस्टेन की तरफ गया। उसने सारी बातें कबूल दीं। आज ही वेल को साढ़े चार हजार पाउण्ड मय सूद के उसे देना था। इसलिये उसे कल शाम के ही डाक से रुपया भेजना था। उसने यहीं उसी कमरे में लिफाफे पर उसका पता लिखा और अपने घर से जो खत लिख कर ले आया था उसके साथ उतनी रकम रखकर यहीं से रवाना किया। आलमारी में उसे हेलिम की पिस्तौल मिली। वह भी एक बाधा थी। उसे रास्ते से अलग करना था। इसलिये उसने उसे चिमनी में छिपा दिया। वहीं वह मुझे मिली। यह सब करके उसने आलमारी और तिजोरी को बन्द कर दिया और कुंजी इसकी मेज में रख दी। साथ ही उसने वह चिट भी वहीं रख दिया जिसमें उसने अपने दूसरे दिन आने की बात लिखी थी।

केम्ब के नाम का उसने कार्ड छपवाकर रख लिया था। यह दूसरी चाल थी। उसने उसे भी टेबुल पर रख दिया। उस अटैची में वह वही जनाना कपड़ा लेकर आया था। उसे उसने पहन लिया और अपना कपड़ा उसी में रख लिया। यदि तुम पता लगावो तो तुम्हें मालूम होगा कि डाकखाने में खत गिराने के बाद उसने एल उड एवेन्यू के छोर पर टैक्सी भी की होगी और तिजोरी का बचा माल लेकर चम्पत हो गया।

वेल ने इस हत्या का मंसूबा कई दिन पहले ही बाँधा होगा क्योंकि उसने यह निश्चय कर लिया होगा कि पुलिस का कांस्टेबुल इस मकान के पास से किस समय गुजरता है। उसने इस हत्या का पूरा प्रबन्ध कर लिया था। अपने काम में वह सफल भी हो चुका था। रोशनी को भी नहीं भूल जाना होगा। हेलिन रोशनी के नीचे पड़ा था। यदि रोशनी बुझा दी गई होती तोभी यह मामला इतना आगे नहीं बढ़ाया जा सकता था।

वेल जानता था कि बूढ़ा मालदार आदमी है। उसके यहाँ आने जाने के बाद ही उसके मन में यह विचार पैदा हुआ होगा।

जेराड—पर केस को तुमने बनावटी कैसे मान लिया ?

मैंने टेलिफोन से पूछा था और मालूम हुआ कि इस नाम की कोई जगह नहीं है। एक बात और ध्यान देने की है। उसने पिस्तौल का नम्बर उड़ा दिया था। इससे भी हत्या का प्रमाण मिलता था। लेकिन सबसे बड़े साहस का काम तो था उसका उस समय यह देखने आना कि मामला क्या रुख पकड़ रहा है। बड़ी होशियारी और साहस से उसने काम लिया था। यदि वह आधा घंटा पहले आया होता तो उस पर सन्देह करना कठिन होता।

तेरहवाँ ताश

दोस्तों की एक छोटी जमात लवेण्डर क्लब में भोजन करके ताश खेलने बैठ गई। ताश बाँटा ही जा रहा था कि दरवान ने कमरे में प्रवेश करके कहा :—सरजेम्पर स्लेन को कोई सज्जन टेलीफोन पर बुला रहे हैं।

स्लेन को ताज्जुब हुआ, क्योंकि शाम के बाद उनकी इस तरह खोज नहीं हुआ करती थी। पूछाः—क्या अपना नाम भी बतलाया ?"

"नाम तो नहीं बतलाया, लेकिन आवाज लार्ड मिंचिंघम की मालूम होती थी। काम बहुत जरूरी बतलाया।"

"आप लोग खेल शुरू करें तब तक मैं उनकी बातें सुन लूँ। इस वक्त न जाने कौन-सी आफत आ पड़ी जो पुकार मच गई।"

वे उठकर टेलीफोन पर चले गये। पूछा—कौन है ?

उत्तर मिला:—विजार्ड ! क्या तुम किसी जरूरी काम में लगे हो ?"

"ताश खेलने जा रहा था, इससे ज्यादा जरूरी इस वक्त क्या हो सकता है ?"

"हम लोग भी ताश ही खेलने जा रहे थे, लेकिन भाग्य में लिखा नहीं मालूम होता। तुम फौरन यहाँ चले आवो। मैं इस वक्त नं० ६ के कनिंघम मैंसन से बातें कर रहा हूँ।

"क्या तुरत आना होगा या कुछ देर बाद ?"

"तेज से तेज टैक्सी लेकर फौरन चले आओ! कुछ ऐसी घटना यहाँ हो गई है जिसने हमलोगों को चक्कर में डाल दिया

है। शायद तुम कुछ रास्ता निकाल सको। हम लोग बुरी तरह परेशान हैं, लेकिन—"

स्लेन—"मैं आ रहा हूँ ?"

अपने साथियों से छुट्टी लेकर स्लेन टैक्सी पर सवार हुए और कनिंघम मैंसन पहुँचे। कनिंघम मैंसन छोटा सा मकान है। नीचे दूकानें हैं। निचले तल्ले में दफ्तर है, दूसरे तल्ले में एक गृहस्थी रहती है और तीसरे तल्ले में लार्ड मिंचिंघम। दालान में स्लेन ने हलचल देखी। कमिश्नर कुड़बुड़ा रहा था और लिफ़्टमैन के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। स्लेन चुपचाप लिफ्ट पर सवार होकर तितल्ले पर पहुँच गया। मिंचिंघम का चेहरा पीला पड़ गया था। वे अपने दो मित्रों के साथ ब्रिज टेबुल पर बैठे थे। चौथी जगह खाली थी।

स्लेन—क्या आप लोग कटथ्रोट* खेल रहे हैं ?

"हम लोगों को कँपकपी लगी है। यह काम तो कोई तीसरा ही कर रहा है। करीब पैंतालीस मिनट पहले हम लोग ब्रिज खेलने बैठे। हम तीनों और कार्ट राइट। कार्ट राइट को तुम जानते हो ?"

"खूब मजे में।"

"कार्ड बँट गया था। उसी समय मेरा खानसामा थामसन ने आकर कहा कि मि० कार्ट राइट से कोई सज्जन टेलीफोन पर बात करना चाहते हैं। अपना कार्ड सरियाते हुए वे टेलीफोन पर चले गये। टेलीफोन बगल वाले छोटे कमरे में है। दस मिनट तक हम लोग प्रतीक्षा करते रहे। अन्त में ये लोग अधीर होने लगे। तब मैं उठ कर उस कमरे में गया। कार्ट राइट

* ब्रिज का, एक तरह का खेल जो तीन आदमियों में खेला जाता है। अंग्रेजी में कट थ्रोट (cut throat) का अर्थ होता है गला कटौवल।

के कार्ड टेलीफोन के पास छोटे टेबुल पर पड़े थे। सामने का दरवाजा खुला था, पर कार्ट राइट का पता नहीं था। मैंने थामसन को बुलाया। वह भी कुछ नहीं बतला सका। हम लोगों ने चारों ओर ढूँढ़ा, लेकिन कार्ट राइट का पता न चला। मैं नीचे कमिश्नर के पास गया। वह करीब पैंतालीस मिनट से अपने दफ्तर में था। उसने किसी को आते-जाते नहीं देखा था। हम लोग तभी से परेशान हैं कि आखिर वह कैसे गायब हो गया।"

ब्लेन ने हँसकर कहा--"कहीं बहुत दूर नहीं जा सकते।"

मिंचिघम--तब तो तुम्हारा काम हलका ही है। मैं यही चाहता हूँ कि उसे खोजकर निकालो। इस मकान का नक्शा तुम्हें अच्छी तरह मालूम है। नीचे दूकानें हैं जो तीन घंटा पहले ही बन्द हो गईं। एक तल्ले में दफ्तर है जो सात बजे बन्द हो गया। दो तल्ले में पोलैण्ड की राजकुमारी रहती हैं जहाँ राजघराने के लोग भी आते जाते हैं। सबसे ऊपर हम रहते हैं।

"क्या राजकुमारी से कार्ट राइट का परिचय था?"

"मैं समझता हूँ कि नहीं, क्योंकि अभी उस दिन उसने मुझसे पूछा था कि दो तल्ले पर कौन रहता है। शायद खाली होने पर वह उसी तल्ले को लेना चाहता था। नीचे दूकानें हैं। एक तल्ले में ताला लगा है जो एक दम खाली है। राजकुमारी शान्ति-प्रिय और सीधी-सादी हैं। ज्यादा कहीं आती-जाती नहीं। शाम के बाद से तो घर से बाहर भी नहीं निकलतीं। तब कार्ट राइट कहाँ चला गया?"

"पता लगाने की कोशिश करता हूँ।"

इतना कहकर वह कार्ट राइट वाली खाली जगह पर बैठ

गया। सिगरेट जलाया। वह अपनी जगह से इस तरह उठा मानो थामसन ने अथवा कमरे में प्रवेश करने वाले किसी ने बुलाया हो और वह टेलीफोन वाले कमरे में गया। उस कमरे में टेबुल पर ताश ठीक उसी तरह रखे थे जिस तरह कार्ट राइट रखकर गायब हो गये थे। उसने ताशों को गौर से देखा। हरे रंग के ताश एक जगह सजा कर रखे थे। लेकिन हाथ में लेते ही उसने देखा कि वहाँ सिर्फ बारह कार्ड थे। उसने टेबुल के ऊपर तथा नीचे चारों ओर ढूँढा, परन्तु रखे कार्ड का कहीं पता नहीं चला। उसने ताश को वहीं रख दिया और टेलीफोन की डण्डी उठायी। न घंटी बजी और न कोई शब्द हुआ। उसने बारबार उसे दबाया, पर कोई उत्तर नहीं। तब उसने थामसन को बुलाया—"जब तुमने कार्टराइट को बुलाया था तब यही घंटी बजी थी।"

"जी हाँ, इसे छोड़कर इस तल्ले पर कोई दूसरा टेलीफोन नहीं है। उसी को बढ़ा कर मालिक के कमरे में लाया गया है।"

"जाकर देखो कि वहाँ घंटी बजती है?"

थामसन ने वापस आकर कहा—"वहाँ भी घंटी नहीं बजती?" "मालूम होता है कि कहीं से कटा हुआ है।"

"क्या तुम्हारे मालिक ने यहीं से मुझे टेलीफोन किया था यह तो बिगड़ा हुआ है।"

वे कमिश्नर से पूछ-ताछ करने नीचे गये थे। वहीं से उन्होंने टेलीफोन किया था।"

"तुम अच्छी तरह जानते हो कि कार्ट राइट ने यहीं से बात-चीत की थी?"

"जी हाँ, मैंने उनकी आवाज स्पष्ट सुनी थी।"

"तुमने उनकी बातें नहीं सुनी?"

"जी नहीं", उसने मुँह बनाकर कहा ।

"ठीक है। पर मामला संगीन है। कार्ट राइट यहीं से लापता हो गये हैं। यदि यह मालूम हो जाय कि वे किससे बातें कर रहे थे तो बड़ी सहूलियत हो।"

"मुझे खेद है कि मैं इस संबंध में कुछ नहीं जानता।"

"क्या कार्ट राइट के चेहरे पर घबराहट थी ?"

"मैंने उधर ध्यान ही नहीं दिया था क्योंकि मैं दूसरे कमरे में टेबुल साफ करने चला गया था। मैंने केवल उनकी बोली सुनी और जब दो मिनट बाद यहाँ आया तो कमरा सूना पाया। टेबुल पर ताश इसी तरह पड़े थे।"

"उनका कोट और हैट ?"

"दोनों सामने टँगे हैं। इतनी सर्दी में कोट छोड़ कर कोई भी बाहर जाने का साहस नहीं करेगा।"

"किसी निश्चित धारणा के आधार पर ही काम करना अच्छा होता है। कार्ट राइट इसी मकान में कहीं हैं। यदि हम लोग चटपट मकान की तलाशी में तो अवश्य मिल जायँगे।"

स्लेन के वापस आने पर लार्ड मिंचिंघम ने पूछा—"क्या मतलब निकाला ?"

स्लेन—"तुम्हारा कहना ठीक है। कार्ट राइट गायब है। उनका कोट-पैण्ट अपनी जगह पर टँगा है, टेबुल पर उनके ताश पड़े हैं और तुम्हारा फोन बिगाड़ दिया गया है। इससे सुन्दर नाटक और क्या हो सकता है ?"

सभी के चेहरे पर बेकली थी। सभी एक दूसरे का चेहरा देखने लगे।

गोरिंग ब्रेट ने कहा—जादू टोना वाले दिन बीत गये।

कोई असाधारण या दैवी घटना नहीं हुई है कि इसका पता नहीं लग सकता।

ग्लेन—तुम्हारा कहना ठीक है। हम लोगों को काम में लग जाना चाहिये। मिंचिंघम अपने तल्ले में ढूँढें। मैं नीचे जाकर कमिश्नर से बातें करता हूँ। उसके बाद मैं राजकुमारी से मिलने का यत्न करूँगा।"

मिंचिंघम अपने दोनों साथियों को लेकर अपने तल्ले की जाँच करने लगे।

कमिश्नर इतना मुस्तैद और साफ दिल का आदमी निकला कि उस पर असावधानी या साजिश दोनों की शंका नहीं की जा सकती थी। उसने कहा कि उन तीनों सज्जनों के बाद न तो कोई भीतर आया है और न बाहर ही गया है। लिफ्ट वाले ने भी उसकी बातों का समर्थन किया। बीच में वह सिर्फ एक बार लार्ड मिंचिंघम को ऊपर से नीचे लाने और नीचे से ऊपर पहुँचाने गया था। दरबान को लेकर ग्लेन एक तल्ले पर गया और प्रत्येक दफ्तर के दरवाजे की जाँच की। सभी में ताला जकड़ा था और भीतर अँधेरा था। ग्लेन फिर निचले तल्ले पर उतर गया और पूछा—ये किरायेदार लोग कैसे आदमी हैं? क्या सभी भले आदमी हैं?

"जो भले आदमी नहीं हैं उन्हें इस मकान में जगह नहीं मिलती। इस तल्ले में सिर्फ चार किरायेदार हैं—मि० हबुल, मि० सिम्पसन, मि० ग्वाइल, मि० माइकल। चारों सज्जन और प्रतिष्ठित आदमी हैं। इनके दफ्तर के सभी कर्मचारी सज्जन हैं।

"गृहस्थ तो दो ही तल्ले में रहते हैं। उनके बारे में तुम्हारा या क विचार है?"

"राजकुमारी विधवा हैं। उनका स्वभाव नेक है। बहुत

एखलाक से बातें करती हैं। वे स्वयं बाहर बहुत कम जाती हैं, लेकिन उनके यहाँ बहुत लोग आते हैं। बड़ी उदार हैं। इस तरह का किरायेदार इस तल्ले में कभी नहीं आया था। बड़े बड़े रईस इनके यहाँ आते हैं।"

"ये लोग कितने आदमी हैं?"

"स्वयं राजकुमारी, एक संगिनी, दो दासियाँ और तीन नौकर।"

"तब तो अन्य रूसियों की तरह वह गरीब नहीं मालूम होतीं।"

"जी नहीं, बहुत अमीर हैं। बड़ी शान से रहती हैं। दो-दो मोटरें हैं। पानी की तरह रुपया बहाती हैं।"

दरवान के हाथ में एक पाउण्ड का नोट रखते हुए स्लेन ने उसे धन्यवाद देकर कहा—"यद्यपि अभी तक मेरी उलझन जरा भी सुलझ नहीं सकी है और मैं अभी तक कोरा ही हूँ तथापि तुम्हारी बातों से मुझे बहुत सहायता मिलेगी।

उसने अदब से सलाम किया और नोट की तरफ देखकर कहा—"इन दो-चार सवालों के जवाब के लिये इतना इनाम बहुत ज्यादा है।"

स्लेन—"एक सवाल का जवाब और दे दो बस उनका पूरा मूल्य हो जायगा। इस मकान में जितने भी टेलीफोन हैं सभी को अदलने-बदलने का यहीं खजाना है। जिन मकानों में अलग अलग तल्ले हों उनमें यह तरीका बहुत सुविधाजनक होता है। क्या तुम बतला सकते हो कि लार्ड मिंचिंघम के तल्ले पर जो तार गया है वह जमीन से दो इंच ऊपर क्यों कटा हुआ है?"

दरवान टेलीफोन का तार देखने के लिये घूम पड़ा। वह कटे तार को आँखें फाड़ कर देखने लगा। वह किंकर्तव्यविमूढ

सा प्रतीत हुआ। उसने कहा - "भगवान जाने क्या बात है। इससे पहले जब मैंने उसे देखा था, ठीक था।"

स्लेन - सवा नौ बजे तक तो वह जरूर ठीक था क्योंकि उसी समय लार्ड मिंचिंघम ने ऊपर से मुझे टेलीफोन किया था। उसके बाद यहाँ और कौन आया था?"

दरवान की सूरत देखने ही लायक थी। उसकी आँखें कटे तार पर गड़ी थीं। बोलाः—"मेरे और लिफ्टमैन विलियम के सिवा तो वहाँ कोई जाता नहीं। राजकुमारी की दासी दोनों कुत्तों के साथ नीचे आई थी। लेकिन वह तो अकसर आती जाती रहती है। एक नौकर सिगरेट पीने नीचे आया था, जो दासी के लिये बाहर सड़क पर खड़ा था। इनके अलावा तो कोई बाहर नहीं गया। बाहर का कोई भी आदमी भीतर नहीं आया है और भीतर से भी जो बाहर गये थे सभी भीतर आ गये।"

"अच्छी बात है। तुम्हें नहीं मालूम कि किसने टेलीफोन काटा। यह भी एक पहेली ही है। क्या तुम अपनी साधारण बुद्धि से यह अन्दाज लगा सकते हो कि कार्ट राइट कहाँ गये?"

दरवान—मेरी समझ में तो आता है कि वे खिड़की से कूद गये। नहीं तो जब इधर से नहीं गये तो दूसरी तरह से बाहर नहीं निकल सकते थे। एक बात मेरे मन में और आती है, शायद राजकुमारी से उनकी मैत्री हो। शायद टेलीफोन उन्होंने ही किया हो। वे उनके यहाँ गये हों और अचानक बीमार पड़ गये हों। यह अनहोनी सी बात है क्योंकि आपके अनुसार वे ताश खेलने के लिये बैठे थे। पर कोई भी बात समझ में नहीं आती।"

स्लेन ने अपना सिर हिला कर कहाः—"तुम्हारा कहना

ठीक ही है कि बात समझ में नहीं आती। अभी एक घंटा तो तुम यहाँ जरूर रहोगे ?"

दरवान ने जोर देते हुए कहा:—जब तक आप यहाँ से बाहर नहीं जायँगे तब तक मैं यहीं रहूँगा चाहे कितना ही बज जाय।"

स्लेन ऊपर मिंचिंघम के कमरे में गया। तीनों आदमी उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। मिंचिंघम ने कहा—"हम लोगों ने इस तल्ले का कोना-अँतरा छान डाला। कार्ट राइट का कहीं पता नहीं लगा। क्या तुम्हें कुछ सुराग मिल सका ?"

स्लेन—कुछ भी नहीं, लेकिन हम लोग का काम समेटा जा रहा है। अब हम राजकुमारी के पास जा रहे हैं। वहीं मेरी अन्तिम आशा अँटकी है।"

"ग्यारह बजे रात को इतना बड़ा काम करने जा रहे हो; इसलिये एक ग्लास ब्राण्डी पी लो जिसमें ताकत बनी रहे।"

स्लेन बैठ गया। ब्राण्डी का ग्लास हाथ में लेते हुए पूछा—"कार्ट राइट किसी संकट में तो नहीं थे ?"

"नहीं, मेरी समझ से उसका कामकाज मजे में चल रहा था। इतना प्रसन्न तो हमने उसे कभी देखा ही नहीं था।"

"किसी स्त्री के पीछे तो नहीं पड़ा था ?"

"अपनी पत्नी के सिवा किसी के पीछे नहीं। बड़ी हसीन पत्नी उसे मिली है। दोनों में प्रगाढ़ प्रेम है।"

शराब की अन्तिम बूँद समाप्त कर स्लेन ने ग्लास टेबुल पर रख दिया और नीचे की तरफ चल पड़ा। रास्ते में वे अनेक तरह की बातें सोचते जाते थे। उन्हें ऐसा प्रतीत होता था कि वे पहेली के निकट पहुँचते जा रहे हैं, पर वे स्पष्ट कुछ नहीं कह

सकते थे। इतने में वे राजकुमारी के दरवाजे पर पहुँच गये और घंटी बजाई। नौकर ने आकर दरवाजा खोला।

स्लेन—"क्या राजकुमारी हैं ?"

स्लेन को देखकर नौकर को अचरज हुआ। उसने कहा—"राजकुमारी हैं तो। पर वे साधारणतः किसी से मिलती-जुलती नहीं। क्या आपसे मिलने की बात थी ?"

स्लेन—"मेरा आना अचानक ही हुआ है। मेरा कार्ड उन्हें देकर पूछो कि क्या वे थोड़ा समय मुझे दे सकती हैं ?"

नौकर कार्ड लेकर चला गया। कमरे के अन्दर से किसी रमणी के ताज्जुब भरे शब्द सुनाई पड़े। दूसरे ही क्षण नौकर वापस आया और स्लेन को लेकर अन्दर गया।

कमरा सजा सजाया था। एक गद्देदार आराम कुर्सी पर राजकुमारी बैठी थीं और उनकी बगल में एक सुन्दरी युवती पुस्तक हाथ में लिये बैठी थी मानों वह उन्हें कुछ पढ़कर सुना रही हो। स्लेन ने कहा—इस समय आपके आराम में बाधा देने के लिये आप मुझे क्षमा करेंगी। लेकिन काम ऐसा आवश्यक है कि मैं हर तरह से लाचार था। आपको मालूम होगा कि ऊपर वाले तल्ले पर मेरे मित्र लार्ड मिंचिंघम रहते हैं। ब्रिज खेलने के लिये उन्होंने अपने तीन साथियों को बुलाया था। दो घण्टे पहले की बात है ज्योंही वे लोग खेलने बैठे त्योंही उनमें से एक आदमी कार्ट राइट के नाम टेलीफोन आया। वे कमरे से बाहर गये, पर वापस नहीं आये। उनकी खोज की गई पर उनका पता नहीं लगा। नीचे दरवान और लिफ्टमैन का कहना है कि इधर से बाहर कोई नहीं गया। सदर दरवाजे को छोड़कर बाहर जाने का कोई रास्ता नहीं है। इससे यही साबित होता है कि कार्ट राइट कहीं इसी मकान में है।

बड़ी सावधानी से राजकुमारी ने कहा—बड़ी विचित्र बात है। ब्लेन ने उस लड़की की तरफ जो अन्यमनस्क होकर सारी बातें सुन रही थी गौर से देखकर कहा—मैं तो इस घटना से दंग हूँ। कार्ट राइट इस मकान से बाहर नहीं गये। तब वे कहाँ हैं? ब्लेन :—लार्ड मिंचिघम के तल्ले को हम लोगों ने देख डाला नीचे के दोनों तल्लों में दूकानें और दफ्तर हैं। सभी में ताले बन्द हैं। दरवान और लिफ्टमैन का कहना है कि वे मामूल समय पर दूकानें बन्द करके चले गये। कमरों में पूरा अँधेरा है। भीतर कोई नहीं है। सिर्फ आपका तल्ला रह गया है। आपके नौकरों की सहायता से मैं इसे भी जाँचना चाहता हूँ।"

राजकुमारी के चेहरे पर विस्मय की रेखा दौड़ गई। उसने मुस्करा कर कहा—मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि आज शाम के बाद मेरे यहाँ कोई सज्जन नहीं आये। मैं अपना यह कमरा छोड़ कर कहीं गई भी नहीं। अपने अन्तरंग मित्रों के अलावा आज कल मैं किसी से मिलती जुलती तक नहीं। आपने जिस सज्जन की अभी चर्चा की है मैं उन्हें जानती तक नहीं। आप उनके यहाँ होने की बात किस तरह सोचते हैं?"

"आपका कहना एकदम सही है। लेकिन इसके दूसरे पहलू पर विचार कीजिये। आदमी तिनका तो नहीं है कि हवा में उड़ जायगा। इस लिये वे कहीं इसी मकान में हैं। केवल इस तल्ले को छोड़ कर हम लोगों ने सारा मकान ढूँढ़ डाला। इस लिये मैंने आपके सामने यह प्रस्ताव रखा, यद्यपि यह उचित नहीं प्रतीत होता।"

राजकुमारी ने ब्लेन का कार्ड हाथ में ले लिया। बोली—आपका नाम मुझे परिचित मालूम होता है। मेरा परिचय बहुत

कम लोगों से है तो भी आप परिचित से मालूम होते हैं, क्या आप पत्रों में लिखते रहते हैं ?

कभी-कभी एकाध लेख अपराध विज्ञान के भिन्न-भिन्न पहलू पर लिख दिया करता हूँ। लेकिन काउण्टेस माण्टज्निो से मेरा परिचय है। वे तो आपके मित्रों में हैं।

"प्यारी सखी ओलग के आप मित्र हैं। बड़ी खुशी की बात है ! अन्ना ! घंटी बजाकर ग्राब्लिन को बुलाओ। उसे इनके साथ कर देती हूँ। ये अपनी दिल जमई कर लें।"

स्लेन उठकर खड़े हो गये। बोले—मैं आपका अतिशय कृतज्ञ हूँ। मैं आपको ज्यादा असुविधा में नहीं डालूँगा।"

राजकुमारी ने मुस्कुरा दिया।

"मेरे तल्ले मे आपके मतलब की कोई बात नहीं मिलेगी। आप जी भर कर जाँच कर लें। जाते समय मुझसे मिलते जाइयेगा।"

ग्राब्लिन हाजिर हुआ। वह देखने में बहुत ही चुस्त और चालाक प्रतीत हुआ। जर्मन या रूसी था। राजकुमारी ने उसे सारी बातें समझा दीं। उसे किसी तरह का विस्मय नहीं हुआ।

ग्राब्लिन को लेकर मि० स्लेन उस तल्ले की जाँच करने चले। राजकुमारी के सोने के कमरे में कोई ऐसा निशान नहीं मिला जिससे किसी मर्द के आने की कल्पना की जा सके। अन्ना के सोने का कमरा भी उसी तरह निर्दोष मालूम पड़ा। उसके बाद वे नौकरों के कमरे में गये और पूरी तरह से उनकी जाँच की।

ग्राब्लिन ने कहा—हम लोग चारों तरफ हो आये। यहाँ तो कोई जगह देखने के लिये बाकी नहीं रह गई।"

स्लेन ने उसके हाथ पर एक पाउण्ड का नोट रख दिया।

उसने चुप चाप नोट अपनी जेब में रख लिया और स्लेन को राजकुमारी के कमरे में ले गया।

राजकुमारी ने ताना देते हुए कहा--क्या आप अपने दोस्त को मेरे बिस्तरे के नीचे या अलमारी में छिपे हुए तो नहीं पाया? मालूम होता है कि वे बड़े हसीन हैं। मेरा दुर्भाग्य कि मुझे उनका दर्शन नहीं मिला।"

स्लेन ने नम्रता के साथ कहा—मालूम होता है मेरे दोस्त इधर नहीं आये! आपको इससे जो असुविधा हुई, उसके लिये क्षमा चाहता हूँ।"

राजकुमारी ने अपनी अँगुली बढ़ा दी। स्लेन ने उसे चूमा और अपना रास्ता लिया। अन्ना के चेहरे पर किसी भाव का उदय नहीं हुआ।

राजकुमारी—"किसी और दिन भी आने का कष्ट उठाइयेगा। कम से कम उनके मिल जाने की सूचना तो जरूर दीजियेगा।"

स्लेन—"यदि आपकी आज्ञा हो तो वह खुशखबरी मैं अवश्य देने आऊँगा।"

जब स्लेन वहाँ से बाहर होने लगे तो वे बहुत चिन्तित थे। उनका अनुमान एक दम गलत निकला। उन्हें लेशमात्र भी शंका नहीं रह गई थी कि कार्ट राइट उस तल्ले में नहीं थे, लेकिन उनका दिल गवाही नहीं देता था। एक गोलमेज पर कमल के फूल का गुलदस्ता रखा हुआ था। उसकी छाया में कोई वस्तु मरोड़ कर रखी हुई मालूम हुई जो मुश्किल से पहचानी जाती थी। वे ठहर गये और फूल को सूंघने के बहाने उस पर झुके और राजकुमारी की आँख बचाकर उसे उठा लिया। म्राब्लिग दरवाजा खोलकर खड़ा था, अन्ना अपनी किताब सम्हाल रही थी और राजकुमारी

बक्स में से सिगरेट निकाल रही थी। स्लेन ने नमस्कार किया और कमरे से बाहर हो गया।

(२)

जब स्लेन ऊपर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि उनके तीनों मित्र उनकी प्रतीक्षा में अधीर होकर बैठे हैं। मिंचिंघम ने उछल कर पूछा—"कुछ पता लगा ?"

स्लेन—पहले कुछ पिलाओ।"

मिंचिंघम ने चटपट ह्विस्की बना कर दी। पूछा—क्या कुछ पता लगा ?"

स्लेन—कुछ नहीं कह सकते। जरा मुझे सोचने दो। तुम लोग अपना अपना ताश गिनो तो !"

इस विचित्र बात पर सब चकित थे, लेकिन चुपचाप सबों ने अपना अपना ताश गिन डाला। सभी के ताश तेरह तेरह थे। स्लेन कार्ट राइट का कार्ड अपने साथ लेता आया था। उसने एक एक करके उसे जमीन पर गिरा दिया और अपनी जेब से एक मरोड़ा हुआ कार्ड निकाला, जिसकी पीठ ठीक उन्हीं कार्डों के समान थी। बोला—यही तेरहवाँ कार्ड है न ?

सभी विस्मय के साथ उसका चेहरा देखने लगे।

उस कार्ड को हाथ में लेकर मिंचिंघम ने कहा—इससे तुम्हारा मतलब क्या है ?"

स्लेन— एक मिनिट धैर्य धरो। पहले यह तै कर लो कि यह वही कार्ड है न ? यह काला पान का दुक्का है ! क्या और कोई काला पान का दुक्का तुम लोगों के कार्ड में है।

सबों ने अपना अपना कार्ड देखा। काला पान का दुक्का किसी के कार्ड में नहीं था।

"जब किसी के कार्ड में दुक्का नहीं है। तब यही कार्ड कार्ट राइट के हाथ में था। टेबुल पर वह बारह कार्ड छोड़ गया था। यह एक कार्ड उसके हाथ में था। यह मुझे तोड़ा मड़ोरा राजकुमारी के तल्ले पर मिला। मालूम होता है कि किसी उत्ते-जना के समय वह इसे कस कर पकड़े हुए था।

सभी अवाक् थे। किसी के दिमाग में बात नहीं समा रही थी।

मिंचिघम हम लोगों से बिना कुछ कहे वह नीचे क्यों चला गया।"

गोरिंग ब्रेट—"और लौट कर आया भी नहीं।"

स्लेन—पर इस वक्त वह वहाँ नहीं है। चाहे वे हवा में मिला दिये गये या उनके सैकड़ों टुकड़े काटकर बिखेर दिये गये। जब मैंने अपना प्रस्ताव पेश किया तो राजकुमारी को कुतूहल हुआ। उन्होंने अपना नौकर साथ कर दिया और वह चारो ओर मुझे घुमा लाया। मैंने इंच इंच जमीन छान डाली। उन्होंने अपने आदमियों के सामने मुझसे कहा कि उनके यहाँ कोई मुलाकाती नहीं आया। वह कार्ट राइट का नाम तक नहीं जानतीं। उन्होंने यह भी कहा कि आज वे अपने कमरे से निकलीं भी नहीं। तोभी यह कार्ड उनके कमरे में ही मिला।

मिंचिंघम ने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया। बोले:—जल्दी अपनी बात कह डालो। तुम मुझे पगला बना रहे हो।

स्लेन—मैं कह ही तो रहा हूँ। हम लोगों को एक बार फिर दरवान से मिलना होगा। उसकी बात मुझे सच मालूम होती है कि उधर से कोई बाहर नहीं गया। बाहर जाने का वही एक रास्ता भी है।"

गोरिंग ब्रेट—तब क्या वह खिड़की से कूद कर भाग गया ?"

स्लेन—कार्टराइट ठंढे मिजाज का आदमी है। बिना किसी घोर संकट के वह साठ फुट नीचे कूदने का दुस्साहस कभी नहीं करेगा। तोभी हम लोगों को एक बार सड़क पर चल कर देखना चाहिये।"

उठते उठते मिंचिंघम ने पूछा—कुछ अनुमान कर सकते हो।

"सिर्फ कल्पना की धुँधली छायामात्र।"

लिफ़्ट का दरवाजा खोलते हुए लिफ्टमैन ने पूछा :—कुछ पता चला हुजूर ?"

"अभी तक तो कुछ नहीं।"

दरवान ने उठ कर पूछा—"क्या वे लौट आये ?"

"अभी तक तो नहीं। तुम यहीं रहो। हम लोग तुरत वापस आयेंगे "

बाहर आकर वे लोग पटरी पर खड़े हो गये। अँधेरी रात थी। चारों ओर सन्नाटा था। लेकिन बर्फ का गिरना रुक गया था। स्लेन सड़क की तरफ बढ़ा और ऊपर की ओर देखने लगा। एक तल्ले पर दफ्तरों की खिड़कियों के शीशे चमक रहे थे। उसके ऊपर राजकुमारी के कमरे की खिड़कियाँ थीं। उन पर परदे पड़े थे। उनसे छन कर रोशनी का मन्द प्रकाश आ रहा था। स्लेन की दृष्टि राजकुमारी के तल्ले के नीचे वाली खिड़की पर गयी थी। उसने दरवान को बुलाकर ऊपर की तरफ इशारा किया।

उसने कहा—यह रोशनी तो राजकुमारी के कमरे से आती हुई मालूम पड़ती है।

दरवान—मालूम तो ऐसा ही पड़ता है।"

"उसके नीचे किसका दफ़्तर है ?"

माइकल का दफ्तर है। वह समूर और पूर्वी अलभ्य वस्तुओं का एजेण्ट है।"

"वह कैसा आदमी है?"

'उसका एक साझीदार विदेशी है। हट्टा-कट्टा दाढ़ी रखे विदेशी पोशाक भी पहनता है। उसने तीन साल के लिये किराया लिया है। उसके दफ़्तर में दो क्लर्क और एक टाइपिस्ट काम करते हैं।

स्लेन की उत्सुकता जाती रही। वह वहाँ से सदर दरवाजे पर आया। बोला—देखो, हम लोग क्षण भर के लिये ऊपर जाते हैं। तुम यहीं मुस्तैद रहना। जरा भी लापरवाही मत दिखाना। किसी को बाहर मत जाने देना।

"जो आज्ञा।"

वे तीनों ऊपर चले गये और दरवाजा बन्द करके बैठे।

स्लेन- क्या तुम्हारे पास टार्च और कोई हथियार है?"

"मेरे पास रिवाल्वर है और अनेक टार्च हैं। पर तुम करने क्या जा रहे हो?"

दो चार मिनट धैर्य धारण करो। हो सकता है मैं मूर्ख बनूं पर मुझे आजमाने दो।

मिंचिंघम ने रिवाल्वर और टार्च स्लेन के हवाले किया।

स्लेन—मैं एक दुस्साहस का काम करने जा रहा हूँ। यदि तुम लोग चाहो तो मेरे साथ नीचे चल सकते हो। मुझे माइकल के दफ़्तर में कुछ शक हो रहा है। यदि वहाँ कोई नहीं है तो कुछ नहीं किया जा सकता।

कोई भी रुका रहने के लिये राजी नहीं था। वे लोग दबे पैर नीचे उतरे और माइकल के दफ़्तर के दरवाजे पर खड़े हो गये। न तो भीतर कोई रोशनी थी और न थोड़ी देर तक कुछ

सुनाई ही पड़ा। स्लेन घुटने के सहारे हाथ पर जोर देकर बैठा था। चुपचाप उठकर खड़ा हो गया। उसकी आँखों में प्रकाश था और गति में चंचलता। उसने अपना अनुसरण करने का इशारा किया। वे लोग नीचे पहुँचे। दरवान अपनी जगह पर बैठा था और लिफ़्टमैन ऊंघ रहा था।

"स्लेन—ऊपर कुछ गड़बड़ी है ?"

उसने चकित होकर पूछा—कहाँ हुजूर ?"

"कोई परवा नहीं, इस रिवाल्वर को सम्हालो। तब तक मैं टेलीफोन करता हूँ। किसी को बाहर मत जाने देना।

"मुझे रिवाल्वर की जरूर नहीं है। मेरी मर्जी के खिलाफ यहाँ से कोई बाहर नहीं जा सकता।"

स्लेन—यदि कोई रिवाल्वर लेकर तुम्हारे सामने आ जाय तो बिना इसके तुम उसे किस तरह रोकोगे ? इसे सम्हालो ! मिंचिंघम मैं स्काटलैण्ड यार्ड को टेलीफोन कर रहा हूँ। घटना का क्रम बँध जाने दो तब मैं तुम्हें अपने मन की बात बतलाऊँगा।

स्लेन टेलीफोन की तरफ बढ़ा। सहसा उसके पैर रुक गये। सभी लोग चौंक पड़े। बात साधारण थी, लेकिन उससे सभी लोग सहम गये। लिफ्ट की घंटी बजी।

सभी चुप थे। स्लेन ने पूछा—इस वक्त कौन बाहर जायगा ?

दरवान—"मैं नहीं कह सकता।"

लिफ़्ट ऊपर चढ़ा और क्षण भर में नीचे उतरा। लिफ़्ट में से अन्ना निकली। उसके शरीर पर मोटा ओवरकोट था, हाथ में छाता था और बगल में छोटा कुत्ता था। वह दरवाजे की तरफ बढ़ी। स्लेन रास्ता रोककर खड़ा हो गया।

उसने स्लेन पर कड़ी नजर डाली। बोली—इसे कई बार

बाहर ले जाना पड़ता है। आपके ही कारण आज देर हो गई ? सड़क के नुक्कड़ तक तो इसे ले जाना ही होगा।"

वह धक्का देकर निकल जाना चाहती थी, लेकिन स्लेन अटल। रहा बोला :—

कुत्ता कोई बड़ी चीज नहीं है। जब तक यह उलझन सुलझ नहीं जाती तब तक कोई यहाँ से बाहर नहीं जा सकता।

उसने क्रोध भरी दृष्टि स्लेन पर डाली। बोली—'ऐसी आज्ञा कौन दे सकता है।' वह जाने का यत्न करने लगी।

स्लेन न तो तुम बाहर जा सकती हो और न वापस ऊपर ही। दरबान ! तुम इन्हें सम्हालो। यदि कोई संकट आयेगा तो उसकी जिम्मेदारी तुम पर नहीं रहेगी।

उसने चिल्लाना चाहा, लेकिन दरवान ने उसका मुँह बन्द कर दिया। स्लेन टेलीफोन पर गये। और इन्स्पेक्टर सिम्पसन को तीन-चार आदमियों के साथ बुलाया।

टेलीफोन करके वे वापस आये। वह लड़की दरवान से हाथापाई कर रही थी। स्लेन—इससे अब कोई लाभ नहीं है। तुम लोगों का खेल बिगड़ गया। कार्ट राइट कहाँ है ?

अन्ना—मुझे क्या मालूम कि कार्टराइट कहाँ हैं ?

स्लेन ने अपनी गर्दन हिलाई और उधर से हट गये। उसने घृणा के साथ उनकी ओर देखा। थोड़ी देर में इन्स्पेक्टर सिम्पसन चार सिपाहियों के साथ आ पहुँचे।

सिम्पसन ने आतुरता से कहा—माइकेल एण्ड सन्स ही पर तुम्हारा सन्देह है न ? चार दिनों से उसके खिलाफ हमारे यहाँ रिपोर्ट पहुँच रही है।

स्लेन—दरवान अपनी कुंजी इन्हें दे दो। उस लड़की को छोड़ दो। यदि वह चाहे तो जा सकती है।

छिपकर जाने की आवश्यकता नहीं थी। ऊपर पहुँचते ही उन लोगों ने बरामदे की रोशनी जला दी। सिम्पसन ने चारों ओर देखकर कहा—यदि मैं आपकी जगह होता तो इन लोगों को हटा देता। वे लोग लड़ाई झगड़ा कर सकते हैं। ऐसी हालत में इन लोगों को भी चोट आ सकती है!

लेकिन किसी ने हटने का नाम नहीं लिया। दरवान की कुंजी से सिम्पसन ने ताला खोला। भीतर घुसते ही उन लोगों ने स्विच दबाकर रोशनी की। उसी समय एक आलमारी के पीछे से रोशनी आई और वह तुरत गायब हो गई।

ग्लेन—दो आदमियों को बीच दालान में भेज दो। ऊपर से यहाँ तक रास्ता है। उससे वे ऊपर जाकर सीढ़ियों द्वारा नीचे उतरने का यत्न करेंगे।

दो सिपाहियों को नीचे भेजकर वे लोग आगे बढ़े। सिम्पसन ने अपनी पिस्तौल सम्हाली और सावधानी से आगे बढ़े। सारा कमरा खाली मिला। एक कोने में कार्ट राइट पड़ा था। उसके हाथ पैर बँधे थे। छत से पतली रस्सी की सीढ़ी लटक रही थी।

कार्टराइट के बन्धन खोले गये। उसने कहा—यहाँ से राजकुमारी के रसोई घर में रास्ता गया है। उसका खानसामा उसी रास्ते से मुझे यहाँ ले आया। माइकल के साथ वह ऊपर गया है। जल्दी कीजिये नहीं तो वे भाग जायँगे।

ग्लेन इस बात पर हँस पड़ा। बोला—तुम उनकी चिन्ता मत करो। नीचे उनके स्वागत का पूरा इन्तजाम है।

मिंचिंघम—इस तरह घटना को रबर की तरह फैलाकर तोड़ने से तुमने क्या लाभ सोचा था?

ग्लेन—जो लाभ तुमने बोल्शेविकों के बीच में रहने से सोचा था। ऊपर चलो। एक ग्लास ह्विस्की पिलाओ।

(३)

दूसरे दिन केबिनेट मिनिस्टर के यहाँ स्लेन की दावत थी।

मिनिस्टर ने कहा—आपने कल रात को जो सेवा की है उसके लिये यह सरकार आपकी अतिशय कृतज्ञ है। हमारे सभी अफसर धोखे में थे। उन्हें इस दल की जानकारी थी। इनसे देश को जो क्षति हो रही थी वह भी हमलोग महसूस कर रहे थे। लेकिन राजकुमारी पर हमलोगों को कभी सन्देह नहीं हुआ। हम लोग समझते हैं कि वह रूस से भाग कर यहाँ आई और बोल्शेविक बनकर धन कमाने लगीं। लेकिन धीरे धीरे वह उनमें विश्वास करने लगीं जो हो। वह सोवियट सरकार तथा यहाँ के बोल्शेविकों को अनेक तरह की सरकारी खबरें बराबर देती रही हैं। इस मामले को तो कार्ट राइट ने बतला ही दिया होगा।

स्लेन—पूरी तरह नहीं।

"दस लाख रुपये का सोना रूस से जहाज पर लदा आ रहा है। रूस का राजदूत यह जानने के लिये व्यग्र था कि उसे जब्त करने के बारे में केबिनेट ने क्या निर्णय किया है। केबिनेट के मेम्बरों के अलावा कार्ट राइट को केबिनेट का निर्णय मालूम था। इसलिये ये लोग कई दिन से उसके पीछे पड़े थे। कल रात को बड़ी चालाकी से उन लोगों ने उन्हें पकड़ लिया!

कार्ट राइट—जो फोन मुझे मिंचिंघम के यहाँ मिला उसमें विदेशी विभाग का सांकेतिक शब्द दोहराया गया। अभी तक उस शब्द से धोखा नहीं हुआ था, इसलिये मैंने उस पर विश्वास कर लिया और जो आदमी आया था उससे बातें करने के लिये सीढ़ियों से राजकुमारी के तल्ले पर आया। इसके बाद

क्या हुआ सो मैं नहीं जानता। जब वे लोग मुझे उस दफ़्तर में ले आये तो मुझे होश हुआ। एक घंटे तक वे लोग मुझे अनेक तरह से तंग करते रहे। अनेक तरह की धमकी देते रहे। वे उससे भी घोर अत्याचार करने की तैयारी कर रहे थे। उसी समय तुम लोग आ गये।

स्लेन—उन लोगों का क्या होगा ?

मिनिस्टर—उन लोगों के साथ राजनीतिक कारणों से नरमी से पेश आना पड़ा है। इस समय हम लोग किसी तरह का संकट नहीं उपस्थित होने देना चाहते। आज सवेरे ही राजकुमारी दक्षिणी फ्रांस के लिये रवाना हो गईं। वे अब इंगलैण्ड में पैर नहीं रखेंगी। ग्राब्लिन, माइकल, उसका लड़का और राजकुमारी के अन्य नौकर-चाकर इस देश से निकाल दिये गये। आज तीसरे पहर 'हेल' नामक जहाज से वे रवाना कर दिये गये। सरकार की ओर से आपको उचित पुरस्कार दिया जायगा। लेकिन इस घटना का कोई भी जिक्र प्रकाशित नहीं होगा।

कार्ट राइट—पर तुमने यह कैसे जाना स्लेन ! कि मैं राजकुमारी के कमरे में गया था ?

स्लेन—तुम्हारे तेरहवें ताश, काला पान के दुक्के ने बतलाया।

—*—*—

गोरख धन्धा

अगर कभी तुम्हें "ट्वेल्ह ट्रू फिशरमैन" के किसी सदस्य को बेरनन होटल में वार्षिक भोज के अवसर पर जाते हुए देखने का अवसर मिले तो तुम देखोगे कि वे लोग काला कोट के स्थान पर अब हरा कोट पहनते हैं। यदि इस परिवर्तन का उनसे कारण पूछो तो वे यही कहेंगे कि वे खानसामा समझे जाने के धोखे में नहीं पड़ना चाहते। आपके सामने एक पहेली उपस्थित हो जायगी। इस पहेली का उद्घाटन फादर ब्राउन कर सकते हैं, क्योंकि इस भूल-भूलैया के कारण जो भयंकर हत्याकांड होनेवाला था उसे फादर ब्राउन ने पैर की आवाज के आधार पर बचाया था, लेकिन फादर ब्राउन को पाना आपके लिये आसान नहीं होगा। इसलिये आपकी उत्सुकता मिटाने के लिये मैं ही वह कहानी कह देता हूँ।

बेरन होटल—जहाँ ये ट्वेल्ह ट्रू फिशरमैन अपना वार्षिक भोज करते थे—केवल उन बड़े आदमियों के लिये था जो फैशन और मर्यादा के पीछे पागल रहते है। इसकी प्रसिद्धि और इसकी आमदनी का जरिया जनता को अपनी ओर आकृष्ट करने में नहीं था, बल्कि उन्हें अपने से दूर रखने में। बहुत से ऐसे चालाक और धूर्त होते हैं जो अनोखी शर्तें लगाकर मालदारों को बेवकूफ बनाया करते हैं और अपनी गाँठ मजबूत बनाते हैं। धनिक समाज में ऐसे बेवकूफ निकल भी आते हैं जिन्हें इस तरह की बंधेजों में ही अपनी मर्यादा की प्रतिष्ठा दीखती है।

यों तो बेरन होटल एक छोटा और साधारण होटल था।

यदि और होटलों की तरह इसे चलाया जाता तो आमदनी की उसमें विशेष गुंजायश नहीं थी। इसीलिये होटल के मालिक ने कायदा कानून के आडम्बर से उसे बाँध रखा था और हमारे समाज के उगते सितारे उसी आडम्बर में अपना गौरव समझते थे। उस होटल का सबसे बड़ा आडम्बर यह था कि उसमें एक साथ केवल बीस आदमी भोजन कर सकते थे। इससे चुने ही लोग इसमें जाने पाते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि होटल के मालिक, यहूदी लीवर ने इससे लाखों रुपये बनाये। अपनी इस कमी को छिपाने के लिये उसने ठाटबाट का अच्छा आडंबर बाँधा था। भोजन की सामग्री उत्तम रहती थी। खानसामा चुने हुए रहते थे। लीवर अपने खानसामों को अपनी अँगुली की पोर की तरह पहचानता था। कुल पन्द्रह खानसामा थे। उस होटल में खानसामा का पद पाना पार्लमेंट का सदस्य होने से भी कठिन था।

ऐसे ही एकान्त स्थान को इन लोगों ने अपने लिये चुना था। इन लोगों को यह सह्य नहीं था कि कोई दूसरा दल भी इस होटल में भोजन करे। वार्षिक भोज के अवसर पर तो इनकी लक्ष्मी का यहाँ प्रत्यक्ष दर्शन होता था मानो ये लोग अपने घर पर ही हों। कम से कम इनके काटें-छुरी तो दर्शनीय होते थे। मछली के आकार के चाँदी के बने हुए होते थे और प्रत्येक की मूँठ पर मोती जड़ा रहता था। जब मछली परसी जाती थी तब इसी से काम लिया जाता था। इस क्लब का सदस्य होने के लिये अनेक रस्में अदा करनी पड़ती थीं जिनके कोई माने मतलब नहीं थे।

ऊपर की बातों को पढ़ने के बाद लोगों के मन में यह आशंका उठ सकती है कि मुझे वहाँ का हाल कैसे मिला और

फादर ब्राउन के समान साधारण पादरी का प्रवेश वहाँ कैसे हुआ। यह स्वाभाविक है। एक दिन की बात है कि उस होटल के एक खानसामा को लकवा मार गया। उसे बचने की आशा नहीं रही। इसलिये लीवर ने उसके लिये पादरी बुलाया। अन्तिम समय उसने जो कुछ फादर ब्राउन से कहा उसे लिख लेने की आवश्यकता पड़ी। फादर ब्राउन ने लिखने का सामान और एकान्त जगह की प्रार्थना की। लीवर कठिनाई में पड़ गया। वार्षिक भोज का दिन था। ऐसे समय होटल में किसी अजनबी का रहना उतना ही खटकता था जितना साफ-सुथरी भूमि पर गर्द का जमा हो जाना। कोई ऐसी जगह होटल में नहीं थी जहाँ फादर ब्राउन की गुंजायश वह कर दे। खासकर फादर ब्राउन की पोशाक भी एकदम साधारण थी। इसकी एक झलक भी होटल के भविष्य के लिये घातक थी। लीवर को एक उपाय सूझी।

अगर आपको कभी बरेन होटल में जाने का सौभाग्य प्राप्त हो तो आप देखेंगे कि बरामदे से एक तंग रास्ता गया है जो आगे चलकर दो भागों में बँट गया है। दाहिना रास्ता भोजनालय में गया है और बायाँ रसोई घर में और होटल के दफ़्तर में। बायीं तरफ बाहर को निकला हुआ एक छोटा-सा कमरे के भीतर कमरा है। दफ्तर में मालिक या उसका प्रतिनिधि बैठता है। थोड़ा आगे बढ़ने पर नौकरों के रहने की जगह की तरफ कपड़ा उतारने का कमरा है। दफ्तर और कपड़ा उतारने वाले कमरे के बीच में एक छोटी कोठरी थी जिसका रास्ता दफ्तर से ही था। इस कमरे में लीवर अपना खानगी लेन-देन का काम किया करता था। यही कमरा उसने फादर ब्राउन को दे दिया।

फादर ब्राउन कलम और कागज लेकर उसी कोठरी में बैठ गये और वह दास्तान लिखने लगे। भोज में शामिल होने वाले मेहमान आये और अपनी अपनी जगह पर बैठ गये। खानसामों को बिना बुलाये आने-जाने की स्वतन्त्रता नहीं थी। फिर भी फादर ब्राउन को किसी के पैर की आहट मिलने लगी। इस आहट से फादर ब्राउन को अचरज हुआ, क्योंकि यहाँ का सारा कारखाना नियमित था। तब यह अनियमित पग-ध्वनि कैसे सुनाई पड़ी। फादर ब्राउन कान लगाकर उसे सुनने लगे और उसका अनुसरण करते हुए कलम से टेबुल पर ताल देने लगे। पैर की ध्वनि कभी तेज हो जाती थी और कभी मन्द। मानो कोई आदमी पहुँचने के लिये दौड़ पड़ता है, लेकिन कुछ दूर बढ़ने पर उसे ज्ञात होता है कि वह जल्दी कर रहा है तो रुक कर धीरे-धीरे चलने लगता है। पैर एक ही के थे केवल ध्वनि तेज और मन्द हो जाती थी। फादर ब्राउन के मन में कौतूहल उत्पन्न होने लगा कि आखिर मामला क्या है।

फादर ब्राउन अधीर हो उठे। उनके मन में अनेक तरह की शंकायें उठने लगीं। वे बाहर आने के लिये व्यग्र हो उठे, लेकिन दरवाजा बाहर से बन्द था। इसलिये वे खिड़की पर आ डटे और वहीं खड़े होकर अपना काम पूरा करने लगे। इसी समय वह विचित्र शब्द उन्हें फिर सुनाई पड़ा।

उस समय एक तीसरी समस्या उपस्थित हो गई। पहले तो तेज और मन्द चलने की आवाज थी, पर इस बार उन्हें दौड़ने के से शब्द सुन पड़े। लेकिन दफ्तर के पास आते-आते पग-ध्वनि पुनः मन्द पड़ गई।

फादर ब्राउन के लिये यह स्थिति असह्य हो उठी। उन्होंने अपना कागज पत्र अलग रख दिया और कपड़ा उतारने वाले

कमरे की तरफ चले। इस कोठरी का एक दरवाजा उधर भी खुलता था। यहाँ का खानसामा अपनी जगह से हट गया था, क्योंकि मेहमान लोग भोज पर बैठ गये थे। इसलिये उसकी आवश्यकता नहीं थी। वे चुपचाप आगे बढ़े और बरामदे के दरवाजे पर जा पहुँचे। दरवाजे के ऊपर रोशनी टँगी थी जिसका प्रकाश फादर ब्राउन के ऊपर भी पड़ता था। यहाँ से बरामदे में खड़े सज्जन को वे मजे में देख सकते थे।

बहुत ही सुन्दर जवान. रातकी पोशाक पहने एक कोने में खड़ा था। उसकी शक्ल सूरत परदेशी की-सी थी। ब्राउन की परछाईं देखते ही उसने कागज का टुकड़ा आगे बढ़ाकर कहा—मेरा कपड़ा उठाओ। मुझे तुरत बाहर जाना है।

फादर ब्राउन ने चुपचाप कागज ले लिया और उस पर लिखे नम्बर के अनुसार कपड़ा तलाशने अन्दर गये। कपड़ा लाकर उन्होंने उसके हवाले किया। उसने अपनी जेब से आधी गिन्नी निकालकर फादर ब्राउन के हाथ पर रखते हुए कहा—चाँदी का कोई सिक्का मेरे पास नहीं है, इसलिये यही तुम्हें इनाम देता हूँ।

फादर ब्राउन—मैं समझता हूँ कि आपकी जेब में चाँदी है?

अजनवी—बड़े पागल मालूम होते हो। क्या सोना तुम्हें काटता है?

फादर ब्राउन—कभी-कभी चाँदी सोने से अधिक मूल्यवान् हो जाती है।

अजनवी ने गौर से फादर ब्राउन की तरफ देखा। उससे भी ज्यादा गौर से उसने बाहर जाने के रास्ते की ओर देखा। उसने फिर ब्राउन की तरफ देखा। तब उसने उस खिड़की की ओर देखा जो ब्राउन के सिर के ऊपर थी। उसने अपना कर्तव्य

क्षण भर में निश्चय कर लिया। वह फादर ब्राउन पर झपट पड़ा। उसका गला दबा कर बोला—मैं तुम्हें डराना नहीं चाहता। बस चुप रहो।

फादर ब्राउन—लेकिन मैं तुम्हें डराना चाहता हूँ। मैं तुम्हें नर्क की यंत्रणा की याद दिलाना चाहता हूँ।

अजनवी—होटल के एक मामूली खानसामा का इतना बड़ा हौसला !

फादर ब्राउन—मैं खानसामा नहीं हूँ। मैं पादरी हूँ और तुम्हारा अन्तिम बयान सुनने आया हूँ।

अजनवी लड़खड़ा कर कुर्सी पर धम्म से बैठ गया।

भोजन का सिलसिला सरगर्मी से चल रहा था। लोग खाने में कम व्यस्त थे, बहस ज्यादा चल रही थी। चंडूखाना का दृश्य साक्षात् उपस्थित था। होटल के कायदे के अनुसार मेहमानों को भोज पर बैठाकर लीवर वहाँ से चले गये थे। खानसामों की टोली भी हट गई थी। एक दो खानसामे तश्तरियों को हटाने बढ़ाने के लिये रह गये थे। बीस आदमियों के बैठने की जगह थी। पर मेहमान बारह ही थे। इसलिये सभी लोग फैलकर आराम से बैठे थे। मछली की मिठाई अन्त में परोसी गई। सबों ने अपना चाँदी वाला काँटा-छुरी उठाया और उसके सहारे इसे पेट में उतारना शुरू किया।

भोजन समाप्त कर चुकने पर ड्यूक आफ चेस्टर ने कहा—"इस तरह का भोज अन्यत्र कहीं नहीं हो सकता ?"

इसका समर्थन करते हुए मि० अडले ने कहा—"इस तरह का भोज केवल काफे अंग्लेइस में मिल सकता है। एक बार वहीं मुझे नसीब हुआ था।"

कर्नल पाउण्ड—"वह इसका मोकाबला क्या करेगा ?"

इसी समय एक खानसामा आगे बढ़ा और काँटा छुरी समेटने लगा। इसकी कड़कड़ाहट से वे चिल्ला उठे।

ड्यूक—यहाँ दूसरे तरह का आनन्द है, पर इसे वह नहीं दबा सकता।

एक खानसामा तेजी से कमरे में आया और निस्तब्ध खड़ा हो गया। वह बड़ी सावधानी से खड़ा हुआ था, लेकिन वे लोग इतने सुनसान और मन्द गति के आदी हो गये थे कि यदि कोई भी खानसामा कोई असंभावित काम कर बैठता था तो वे लोग उसी तरह चौंक उठते थे, कि जिस तरह हम लोग कुर्सी को दौड़ते हुए देखकर चौंक उठेंगे।

खानसामा क्षण भर आँखें फाड़कर उनकी ओर देखता रहा। इतनी देर में तो भोज में बैठे भलेमानस शर्म से गड़े हुए से प्रतीत होने लगे। भला किसी साधारण आदमी का उस तरह उनकी ओर देखना कैसे सह्य हो सकता था। पुराने जमाने के रईस तो उसकी इस गुस्ताखी पर उसे मार ही बैठते। आधुनिक जमाने के उदार रईस शिष्टता दिखाते तो कम से कम उससे इस तरह घूरने का कारण तो जरूर पूछते। लेकिन उन लोगों को इस समय उसका यहाँ आना अच्छा न लगा। उन लोगों ने यही समझा कि इस नौकर का दिमाग खफ्त हो गया है। पर वे किसी तरह का हंगामा नहीं चाहते थे। वे उसे यहाँ से दूर देखना चाहते थे और वह हो गया, क्योंकि दूसरे ही क्षण वह पागलों की तरह पीछे की तरफ भागा।

जब वह बरामदे में पुनः वापस आया तो उसके साथ दूसरा खानसामा भी था जिसे अँगुली का इशारा करके उसने कुछ दिखलाया। वह उसे वहीं छोड़कर चला गया और तीसरे को ले आया। उसके बाद चौथा भी आया। मि० आडले ने

उस निस्तब्धता को भंग करना आवश्यक समझा। खाँसते हुए बोले—"बर्मा में नव-जवान मूचर बहुत बढ़िया काम कर रहा है। संसार की कोई भी जाति ऐसा काम……"

इसी समय पाँचवें खानसामा ने उनके पास आकर उनके कान में कहा—"क्षमा करेंगे, काम बहुत जरूरी है, मालिक आपसे बातें करना चाहते हैं।"

उस क्लब के सभापति मि० अडले अस्त-व्यस्त हो गये? उसी समय मि० लीवर हाँफते हुए उनके पास पहुँच गये। उनके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। उन्होंने विह्वल स्वर से कहा:—"मैं देखता हूँ कि आप लोगों के टेबुल पर से तश्तरियाँ, काटे और छुरियाँ उठा ली गई हैं।"

"हाँ।"

"क्या आप उस खानसामा को पहचानते हैं जो इन्हें उठा ले गया?"

मि० अडले ने बिगड़ कर कहा—"मैं क्या जानूँ कि कौन खानसामा ले गया।"

मि० लीवर ने सिर पीटते हुए कहा—"मैंने यहाँ किसी को नहीं भेजा था। मुझे पता तक नहीं कि वह कब यहाँ आया। जब मैंने अपने खानसामा को उन्हें उठाने लिये भेजा तो टेबुल साफ मिला।"

सभी आवाक् थे। किसी के मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे। इसी समय मि० पाउण्ड अपनी जगह से उठे और अपना चश्मा सँभालते हुए बोले—"तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि इन चीजों को कोई चुरा ले गया।"

मि० लीवर ने हाथ के इशारे से इस कथन का समर्थन किया। सभी लोग उठ खड़े हो गये।

कर्नल पाउण्ड ने घुड़ककर पूछा—क्या तुम्हारे सभी खान-सामा यहाँ मौजूद हैं ?"

ड्यूक आफ चेस्टर—"वे सभी मौजूद थे। जब मैं आता हूँ तो उन्हें गिन लेता हूँ। विचित्र सूरत बनाकर वे दीवाल से सटे रहते हैं।"

मि० अडले ने झिझक कर कहा—"लेकिन यह किसे याद रहता है। असंभव !"

ड्यूक आफ चेस्टर—"मुझे खूब याद है। यहाँ पन्द्रह से ज्यादा खानसामा कभी नहीं थे। आज भी पूरे पन्द्रह थे।"

मि० लीवर ने घबरा कर पूछा—"आप क्या कहते हैं ? आज भी आपने पन्द्रह खानसामा देखा ?"

ड्यूक—"यही बात सदा रहती है। तुम चौंक क्यों उठे ?"

लीवर—"मैं समझता हूँ कि आपने भूल की है, क्योंकि एक खानसामा ऊपर मरा पड़ा है।"

क्षण भर के लिये सभी सन्नाटे में आ गये। मौत का नाम ही भयंकर है। ड्यूक ने धीमे स्वर से कहा—"क्या हम लोगों के करने लायक कुछ है ?"

मि० लिवर—"पादरी को बुला दिया था।"

कर्नल पाउण्ड—यदि पन्द्रहवाँ खानसामा भी था तो वह निश्चय ही चोर था। इस मकान को चारों ओर से घेर लेना चाहिये। उसे इसी तरह छोड़ देना उचित नहीं होगा।"

मि० अडले सोचने लगे कि उन चीजों के पीछे इस तरह दौड़ पड़ना मर्यादा के विरुद्ध तो नहीं होगा। लेकिन जब उन्होंने ड्यूक को तेजी से आगे बढ़ते देखा तो वे भी चल पड़े।

इसी समय छठाँ खानसामा दौड़ा हुआ आया और बोला—कोने के टेबुल पर तश्तरियाँ पड़ी मिलीं पर काँटा छुरी का पता नहीं है।

सभी लोगों ने दो दल बाँध कर इधर उधर से मकान को घेर लिया। कुछ लोग सदर दरवाजे की तरफ गये और कुछ लोग नौकरों के कमरे की तरफ गये। जो लोग कपड़ा उतारने वाले कमरे की तरफ गये उन्होंने एक आदमी को उसकी छाया में खड़े देखा। उन्होंने उसे खानसामा ही समझा और पूछा—क्या तुमने इधर किसी को जाते देखा है ?"

उस व्यक्ति ने उनके प्रश्न का कोई उत्तर न देकर कहा—जिस चीज को आप लोग खोज रहे हैं शायद उसे मैंने पा लिया है।"

इतना कह कर वह उस कमरे के पीछे चला गया और अपने दोनों हाथ में काँटा छुरी लाकर उनके सामने रख दिया।

कर्नल आपे से बाहर हो गये। वे उसे कुछ बुरा भला कहना ही चाहते थे कि उनकी निगाह उसकी पोशाक पर गई। वह व्यक्ति पादरी की पोशाक में था। साथ ही उन्होंने कमरे की खिड़की को इस तरह खुला पाया मानो कोई झटका देकर उधर से गया हो।

पादरी ने मुस्कुराकर कहा—क्या ये चीजें इस कमरे में रखने लायक नहीं थीं ?

मि० अडले ने आँखें फाड़कर उसकी ओर देखा। पूछा—क्या तुमने इन्हें चुराया था ?"

पादरी हँस पड़ा। बोला—यदि मैंने चोरी की ही, पर मैं वापस भी तो दे रहा हूँ।"

टूटी हुई खिड़की की ओर देखते हुए कर्नल ने कहा—परन्तु तुमने चोरी नहीं की है।"

पादरी ने मुस्कुराकर कहा—"सच बात यही है कि मैंने इन्हें नहीं चुराया था।" इतना कह कर वह चुपचाप एक तिपाई पर बैठ गया।

कर्नल—"पर तुम चोर को जानते हो।"

पादरी—मैं उसका नाम तो नहीं जानता, लेकिन मुझे उसके शारीरिक और आत्मिक-बल का परिचय है। उसके शारीरिक बल का परिचय मुझे तब मिला जब उसने मेरा गला घोंटना चाहा और उसके आत्मिक-बल का परिचय तब मिला जब उसने अपना अपराध मुझसे कबूल कर लिया।

"पश्चात्ताप किया?" इतना कह कर ड्यूक खिलखिला कर हँस पड़ा। इस पर फादर ब्राउन उठकर खड़े हो गये। अपने दोनों हाथों को पीछे फेरते हुए बोले—आपको यह बात नहीं जँची कि चोर और आवारे पश्चात्ताप करें, जब कि कितने ही धनी और संपन्न आवारागर्दी का जीवन बिताते रहते हैं, न उन्हें समाज का भय रहता है और न ईश्वर का। लेकिन यहाँ आप मेरे क्षेत्र में दस्तन्दाजी करने लगते हैं। यदि आप पश्चात्ताप पर विश्वास नहीं करते तो न करें। ये आपके सामान पड़े हैं। जिस तरह आप लोग सोना चाँदी फँसाने के लिये बने हैं उसी तरह उस परम पिता ने मुझे आदमियों को फँसाने के लिये भेजा है।"

कर्नल ने भौहें टेढ़ी करके पूछा—क्या तुमने इस आदमी को पकड़ लिया था।"

फादर ब्राउन ने उनकी तरफ स्थिर-दृष्टि से देखा। बोले—"हाँ मैंने अज्ञात काटे में उसे फँसा लिया है। मेरी रस्सी इतनी बड़ी

है कि वह संसार के किसी कोने में तैरता हुआ जा सकता है. लेकिन एक झटके में ही वह फिर अपनी जगह पर लौट सकता है।"

सभी लोग चुप थे। कुछ तो उन खोये हुए सामानों को लेकर अपने अन्य साथियों के पास चले गये और कुछ मि० लीवर से इस विचित्र घटना के बारे में सलाह करने चले गये। लेकिन कर्नल मुँह बना कर वहीं बैठा रह गया। उसने धीरे से पादरी से कहा—"वह बड़ा ही चतुर आदमी रहा होगा। लेकिन मैं उससे भी चतुर आदमी को जानता हूँ।"

पादरी – "वह जरूर चतुर आदमी था, लेकिन आप का इशारा किसकी तरफ है सो मैं नहीं जानता।"

"मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मैं उस पर मोकदमा नहीं चलाऊँगा। लेकिन मैं यह जानने के लिये उत्सुक हूँ कि तुम इसके बीच कैसे आ पड़े। केवल इतना जान लेने के लिए इसका चौगुना काँटा छुरी मैं देने के लिये तैयार हूँ।"

पादरी—मैं उस आदमी का न तो परिचय ही देना चाहता हूँ और न उसका वृत्तान्त ही कहना चाहता हूँ। लेकिन जो कुछ यहाँ मैंने अपनी आँखों देखा उसे कहने में कोई हर्ज़ नहीं है।"

"मैं उस छोटी कोठरी में बैठा कुछ लिख रहा था उसी समय मुझे किसी के पैर की आहट मालूम हुई। पहले तेज, फिर मन्द मानो कोई पंजे के बल चल रहा हो। उसके बाद चाल इस तरह गंभीर हो गई मानों कोई बड़ा आदमी सिगार पीता हुआ इतमीनान से जा रहा हो लेकिन सभी ध्वनि एक ही पैर थी। मैं सोचने लगा कि एक ही आदमी अपनी चाल इस तरह क्यों बदल रहा है। एक चाल तो ठीक आपकी तरह थी, ठीक मोटे ताजे आदमी की जो किसी वस्तु की प्रतीक्षा में टहल रहा हो।

वह उस तरह इसलिये नहीं टहलता कि वह चौकन्ना है। बल्कि वह अधीर है। दूसरी चाल भी मैं पहचान गया, लेकिन उसकी उपमा नहीं दे सकता। उसी तरह की चाल चलते भी मैंने किसी जन्तु को देखा है, पर इस समय वह मुझे याद नहीं। इसी समय मेरे कान में तस्तरियों के खड़खड़ाहट की आवाज पड़ी। मैंने सामने खानसामा की तरह किसी को खड़े देखा, वह चल पड़ा। चाल तो ठीक खानसामा की सी थी। उसका शरीर सामने की ओर झुका हुआ, आँखें जमीन की तरफ, पंजे जमीन पर घूमते हुए, कोट और नैपकिन फहराता हुआ, मैंने क्षण भर सोचा। सारी बातें मेरी आँखों के सामने इस तरह स्पष्ट हो गई मानों मैं ही यह पाप करने जा रहा हूँ।"

कर्नल ने गौरसे पादरी की ओर देखा लेकिन उनकी आखें छत से लगीं थीं।

"पाप भी एक कला है। अचरज न कीजिये। नर्क कुण्ड से केवल इसी कला का ज्ञान नहीं होता। प्रत्येक कला—चाहे वह पापमय हो या पुण्यमय—का केन्द्रविन्दु सरल है चाहे उसको पूरा करना कितना भी पेचीदा क्यों न हो। यहाँ भी सारे खुराफात की जड़ काली पोशाक है। मेंहमानों और खानसामों की पोशाक समान थी, यही सारी घटना के तहमें है यद्यपि इसे पूरा करने में कई पेंचीदगी आ गई, जैसे एक होटल के एक खानसामा का अचानक मरजाना, बनावटी खानसामा का प्रगट होना, टेबुल साफ करना और सारा सामान लेकर हवा में मिल जाना वगैरह।"

कर्नल ने मुँह बनाकर कहा—"बात मेरी समझ में ठीक ठीक नहीं आई।"

पादरी—वह साहसी आदमी जिसने इन सामानों की चोरी की, रोशनी के इस प्रचण्ड प्रकाश में बीसों बार आया गया। उपस्थित मण्डली के प्रत्येक व्यक्ति ने उसे देखा। जाकर कहीं ऐसी जगह नहीं छिपा था कि लोगों को उस पर किसी तरह का सन्देह हो। वह निश्चिन्त होकर चारों ओर चलता फिरता रहा मानों ऐसा करने का उसे अधिकार प्राप्त था। उसकी हुलिया मुझसे मत पूछिये। आज आपने भी उसे कमसे कम आधा दर्जन मर्तबा देखा होगा। आप रास्ते के उस तरफ दालान में सभी प्रतिष्ठित आदमियों के साथ बैठे थे। जब वह आप लोगों के बीच में आता था तो वह खानसामा बन जाता था इधर उधर कुछ करने लगता था। जब वह दफ्तर की तरफ जाता था तब वह साहब बहादुर बन जाता था। वह अन्यमनस्क होकर इधर उधर घूमने लगता था। होटल के आदमी उसे मेहमानों में से एक समझते थे क्योंकि इन लोगों को ऐसा करते उन्होंने अकसर देखा था। चिड़िया घरके जानवरों की तरह चारों ओर उसे घूमते देखकर उन्हें अचम्भा नहीं मालूम हुआ क्योंकि इस तरह इधर उधर घूमना आप लोगों के लिये साधारण बात थी। कभी वह इस रास्ते पर टहलता और कभी दफ्तर के उस तरफ चला जाता। वहाँ से बिजली की तरह वह आप लोगों की तरफ खानसामा बनकर चला जाता। न तो खानसामों ने इस पर ध्यान दिया और न आप लोगों ने ही। एक दो बार उसने बड़े साहस का परिचय दिया। वह मि० लिवर के दफ्तर में चला आया और प्यास का बहाना करके सोडा वाटर का बोतल खुद ले गया। वह आपके बीच से होकर निर्भीक चला गया। मानों कुछ लेकर खानसामा गया हो। इसी तरह उसे समय काटना था ताकि मछली परसने का समय आ जाय और काँटा छुरी का काम हो जाय।

जिस समय सभी खानसामे दीवाल से सटकर खड़े थे, वह उसके लिये संकटकाल था, लेकिन उसे भी उसने बड़ी सावधानी से निबाहा। वह कुछ दीवाल से सटकर और कुछ आप लोगों की तरफ झुककर इस तरह खड़ा हुआ कि खानसामों ने उसे मेहमान समझा और मेहमानों ने खानसामा। रास्ते में या इधर उधर यदि किसी खानसामा ने उसे देखा तो उसने उसे मेहमान समझा। मछली का भोजन समाप्त होते ही वह खानसामा बनकर सामने आ गया और सारी चीजें उठा ले गया। तश्तरियों को ले उसने वहाँ पटका और बाकी सामान अपनी जेब के हवाले किया, लेकिन उससे उसकी जेब फूल गई। वह वहाँ से तेजी से चम्पत बना और कपड़ा पहनने वाले कमरे के सामने आया। मैंने उसके पैर की आवाज सुनी। वहाँ आकर वह शरीफ बन गया। अब उसे अपना टिकट खानसामा को देकर अपना कपड़ा लेना था और जिस तरह आया था उसी तरह चला जाना था। लेकिन उस समय खानसामा की जगह पर मैं था।

कर्नल ने तीव्रता से पूछा—"तुमने क्या प्रश्न किया और उसने क्या उत्तर दिया"

पादरी ने स्थिर होकर कहा—यहीं किस्सा समाप्त हो जाता है।

कर्नल—मैं समझता हूँ कि इस रोचक कहानी का यहीं आरम्भ होता है। मैं उसकी चालबाजी तो समझ गया, लेकिन तुम्हारी नहीं समझ सका।

पादरी—अब मुझे जाना चाहिये।

दोनों वहाँ से बाहरी दालान में पहुँचे। वहीं दोनों की भेंट ड्यूक से हो गई जो मुस्कुराता उन्हीं की ओर आ रहा था। बोला—कर्नल! मैं तुम्हें ही खोज रहा था। भोज का नये सिरे से प्रबन्ध होने जा रहा है। काँटा छुरी के मिल जाने के

उपलक्ष में मि० आडले उस दिन भाषण भी देंगे। तुम भी हम लोगों से सहमत होगे कि इस उपलक्ष में उत्सव जरूर मनाया जाना चाहिये। लेकिन हम लोगों को कोई नई बात शुरू करनी चाहिये।"

कर्नल—मेरी सलाह है कि हमलोग अपनी पोशाक बदल दें। काला कोट न पहनकर हरा पहना करें। खानसामा की तरह प्रतीत होने में इससे भी भयानक धोखा हो सकता है।

ड्यूक—तुम भी क्या बात करते हो। शरीफ आदमी की सूरत कभी भी खानसामा से नहीं मिल सकती।

कर्नल ने हँसकर कहा—और यह खानसामा ही शरीफ आदमी की तरह हो सकता है। फादर ब्राउन का दोस्त शरीफ बनने की कला में बहुत ही दक्ष रहा होगा।

पादरी—शरीफ बनना बहुत ही कठिन काम है, लेकिन मेरा ख्याल है कि कभी-कभी खानसामा बनना भी उससे कम कठिन नहीं।

— - —

वह मनहूस बाग

उस दिन डाक्टर पेण्डर की बारी थी। रविवासर क्लब के सभी मेम्बर अपनी अपनी जगह पर बैठ गये। जायसलेम्परे ने शान्ति भंग करते हुए कहा—

"डाक्टर साहब से हमलोग कोई अनोखी कहानी सुनने की आशा करते हैं।

डाक्टर पेण्डर ने मुस्कुरा कर कहा—मेरा जीवन शान्तमय रहा है। बहुत कम ही अवसर ऐसे आये हैं जिनका कोई महत्त्व हो। लेकिन जवानी में एक बार अनोखी घटना घटी थी। वह चित्र आज भी मैं नहीं भूल सका हूँ।

जायस—वही सुनाइये।

डाक्टर—जवानी के दिन उमंग के होते हैं तोभी उस घटना से मैं काँप उठा। आज भी उसकी याद कर मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। कितना भयानक था वह दृश्य। मेरी आँखों के सामने ही वह तड़प कर मर गया। वह हट्टा-कट्टा आदमी। न बीमार था, न कोई रोग उसे था।

हेनरी—डाक्टर आपकी बातें सुनकर ही मुझे कंपकंपी हो रही है।

डाक्टर—तब मेरी हालत का आप सहज में ही अनुमान कर सकते हैं। उसी समय से मैं वातावरण पर विश्वास करने लगा हूँ। नहीं तो इससे पहले जो इस शब्द का इस्तेमाल करता था मैं उसकी खिल्ली उड़ाये बिना नहीं रहता था। कुछ स्थान

ऐसे हैं जो मनहूस होते हैं और कुछ प्रज्वलित होते हैं और वहाँ के रहनेवाले लोग उसका प्रभाव अनुभव करते हैं।

मिस मार्पुल—लार्च को ही ले लीजिये। बड़ा ही मनहूस मकान है। उसमें कोई भी सुख से नहीं रह सका। मि० स्मिथर उसमें दरिद्र हो गये और लाचार होकर उन्हें वह मकान छोड़ देना पड़ा। उनके छोड़ने पर मि० कारस्लेक ने उसे लिया। अचानक उनका पैर टूट गया और उनकी पत्नी सदा बीमार रहीं। अन्त में उन्हें भी उसे छोड़ना पड़ा। आजकल मि० वेडन उसमें हैं। सुना है कि प्रवेश करते ही उन्हें फोड़ा हो गया और उसे चिरवाकर रोग शय्या पर पड़े हैं।

मि० पंथरिक—लोगों को वहम हो जाता है। इसका फल यह होता है कि लोग अण्टसण्ट प्रचार करने लग जाते हैं। कितने ही मकान बेकार पड़ गये और मकान मालिक को असीम क्षति उठानी पड़ी।

हेनरी—"मुझे कई प्रेतों के वृत्तान्त मालूम हैं जो बड़े ही भयानक काम करते थे।"

रेमाण्ड—अपनी अपनी बातें छोड़कर यदि हम लोग डाक्टर पेण्डर की कथा सुनें तो बहुत अच्छा हो।

इसपर जायस ने उठकर दोनों बत्तियाँ बुझा दीं। केवल आतिशदान का मन्द प्रकाश कमरे में रह गया।

मिस मार्पुल—"तब आप वातावरण के सम्बन्ध में क्या कह रहे थे।"

डाक्टर ने मुस्कुरा कर उसकी ओर देखा। अपना चश्मा उतार कर रख दिया और आराम कुर्सी पर लेटकर मधुर स्वर में अपनी कथा यों आरम्भ की:—

"आप लोगों में से कुछ ने डार्टमूर का नाम सुना होगा। इसी डार्टमूर के आस-पास की यह घटना है। यह जमींदारी बहुत ही अच्छी है, यद्यपि बहुत दिनों तक कोई इसका खरीद-दार नहीं मिला। अन्त में इस जमींदारी को सर रिचार्ड हेडन ने खरीदा। वे मेरे साथ कालेज में पढ़ते थे। उसके बाद हम लोगों को मिलने का अवसर नहीं मिला था तो भी हम लोग एक दूसरे को भूल नहीं गये थे। उन्होंने मुझे अपनी नई जमींदारी—माइलेएट ग्रोव में निमंत्रित किया। मैंने निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

उनके निमंत्रितों में बहुत ज्यादा लोग नहीं थे। रिचार्ड हेडन, उनके चचेरे भाई इलियट हेडन, लेडी मैनारदो, उनकी पुत्री वायलेट, कैप्टेन रोगर और उनकी पत्नी। जवानी में रोगर को घोड़ा चढ़ने और शिकार खेलने का बड़ा शौक था। पर अब तो वे बुढ़ौती के दिन काट रहे थे। इनके अलावा डाक्टर साइएड और मिस डायना आशले। मिस डायना के बारे में मैं कुछ-कुछ जानता था। उनके चित्र बहुधा पत्रों में निकला करते थे और उनके सौन्दर्य की उस समय के समाज में बड़ी चर्चा रहती थी। उनकी आकृति बड़ी आकर्षक थी। उनकी वाणी में मिठास और माधुर्य था। लम्बा कद, काले घुँघराले केशपाश और रसीली आँखें, चिकने कपोल और पतले उनके अधर थे।

मैंने देखा कि मेरे मित्र उनकी ओर आकर्षित से थे, बल्कि यह जलसा उन्हीं के लिये किया गया था। उनके भाव मेरे मित्र के प्रति क्या थे यह मैं नहीं कह सकता। पर उनकी कृपा-दृष्टि अस्थिर थी। कभी-कभी वे रिचार्ड से इस तरह घुल-मिल जातीं मानो उसके सिवा दुनिया में कोई और नहीं था। लेकिन दूसरे ही क्षण वे उसके भाई से इस तरह मिलतीं मानो रिचार्ड से उनका

कभी का परिचय भी नहीं था। अचानक सबको दूर करके डाक्टर साइमण्ड के गले का हार बन जातीं।

जिस दिन हम लोग पहुँचे उसके दूसरे ही दिन हमारे मित्र ने सारी जगह घूम-घूम कर हम लोगों को दिखलाई। मकान बहुत ही मजबूत बना था। डेवनशायर के संगमर्मर का बना वह मकान था। मकान में सजावट ज्यादा नहीं थी, पर आराम-देह था। खिड़कियों से सामने की पहाड़ी का दृश्य बड़ा ही मनोरम था।

पहाड़ी के ढालू पर झोपड़ियों का समूह मानो प्राचीन पत्थर-युग की याद दिलाता था। दूसरी पहाड़ी पर वह गाँव था। जिसकी हाल में ही खुदाई हुई थी और जिसमें से अनेक तरह के ताँबे के हथियार निकले थे। रिचार्ड का पुरानी चीजों से बहुत ज्यादा प्रेम था। इसलिये उसने बड़े उत्साह से उनका इतिहास सुनाया। उसने बताया कि—"यहाँ प्राचीन-युग के बहुत से स्मारक पदार्थ पाये गये हैं। इनमें भी यह जगह खासकर प्रसिद्ध है। इसका नाम "साइलेण्ट ग्रोव" क्यों पड़ा, यह भी सहज में ही समझ में आ जाता है।"

हाथ के इशारे से एक स्थान को दिखलाते हुए उन्होंने कहा—इस प्रदेश का यह हिस्सा एकदम पहाड़ी था। लेकिन इस मकान से कोई सौ गज के फासले पर पेड़ों का एक कतार था। यह पुराने जमाने की बात है। वे सब पेड़ सूख गये, लेकिन उनके स्थान पर जो पेड़ लगाये गये वे उसी तरीके से लगाये गये। शायद पेथियन लोगों ने उन पेड़ों को लगाया था।"

इतना कहकर वह उन्हें दिखाने चला। हम लोग उनके पीछे हो लिये। वहाँ पहुँचते ही उसकी सन्नाटगी का गहरा प्रभाव मेरे ऊपर पड़ा। एक चिड़िया भी वहाँ नहीं थी। इस

तरह की सन्नाटगी मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखी थी। उसके भीतर प्रवेश करते डर लगता था। हेडन मेरी ओर देखकर विचित्र तरह से मुस्कुराने लगा। पूछा—"यहाँ आकर तुम्हारे मन में क्या भाव पैदा हो रहे हैं पेण्ट? घृणा या अशान्ति के?"

मैंने कहा—"मुझे यह स्थान एकदम पसन्द नहीं?"

रिचार्ड—"तुम्हारी भावना सही है। यह तुम्हारे धर्म के शत्रु अस्टार्टे का किला था।"

अस्टार्टे?

"अस्टार्टे, इश्टार, आटोस्केया जो कोई नाम देना चाहो दे सकते हो। फोनेशियन नाम अस्टार्टे ही है। बल्कि उत्तर में अस्टार्टे के नाम पर एक बाग है। यह मैंने देखा नहीं है। पर मेरी समझ में अस्टार्टे का असली बाग यही है। इन्हीं पेड़ों के बीच में उसके धार्मिक यज्ञ हुआ करते थे।"

डायना—"धार्मिक यज्ञ?" क्या धार्मिक यज्ञ यहाँ हुआ करते थे?"

कैप्टेन रोगर ने बेमतलब की हँसी हँस कर कहा—कोई प्रशंसनीय यज्ञ नहीं होता रहा होगा। कोई भयानक काम ही होता रहा होगा।

हेडनने उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया।

उसने कहा:—इस बाग के बीच में एक मन्दिर रहा होगा। मुझे मन्दिर का कोई चिह्न नहीं मिला। यह मेरी कल्पनामात्र है।

इस समय तक हम लोग बाग के बीच में पहुंच गये थे जहाँ थोड़ा खुला मैदान था। इसके बीच में एक छोटा सा गरमी में

रहने लायक बँगला था। डायनाने अभिप्रायपूर्ण दृष्टि हेडन पर डाली।

रिचार्ड—मैं इसे मूर्तिगृह के नाम से पुकारता हूँ। यहीं अस्टार्टे ने अपने देवता की मूर्ति स्थापित की थी।

वह हम लोगों को लेकर भीतर गया। सामने एक स्त्री की प्रतिमा खम्भे के सहारे खड़ी थी। उसके सिर पर सींग थी और वह शेर पर सवार थी।

"यही फोनेशियन के देवता अस्टार्टे हैं। इन्हें वे लोग चन्द्र देवता भी कहते थे।"

डायना—चन्द्र देवता! आज हम लोगों को यहीं जंगल में मंगल मनाना चाहिये। अच्छा पोशाक बनवाकर हम लोगों को आज चाँदनी रात में अस्टार्टे का उत्सव मनाना चाहिये।

मैं लौट पड़ा। रिचार्ड का चचेरा भाई इलियन ने मेरे पास आकर कहा—"आपको यह सब अच्छा नहीं लग रहा है?"

मैंने गम्भीर होकर कहा—नहीं!

उसने विचित्र तरह से मेरी ओर देखकर कहा—यह सब बेवकूफी की बातें हैं। भला रिचार्ड कैसे जान सकता है कि यह धार्मिक स्थान है। यह उसकी कल्पनामात्र है। उसे कल्पना के साम्राज्य में तैरने में बड़ा मजा आता है। और यदि हो भी तो—"

"हाँ, यदि उसकी बात सच हो तब?"

"क्या पादरी होकर भी आप इस तरह की बातों में विश्वास करते हैं?"

"मैं स्वयं नहीं जानता कि पादरी होने के नाते मुझे इन चीजों में विश्वास करना चाहिये या नहीं।"

"लेकिन इन सब बातों का अब लोप हो गया। मैंने उद्विग्न

होकर कहा—मैं कुछ निश्चय पूर्वक नहीं कह सकता, मैं बहमी नहीं हूँ। लेकिन यहाँ आते ही यहाँ के वातावरण का प्रभाव मुझ पर पड़ा है। जिसे मैं मनहूस कह सकता हूँ। न जाने क्यों इस बाग में प्रवेश करते ही मुझे भय सा लगने लगा है।

उसने बेचैनी से अपने कन्धों को देखा। बोला—इतना तो मैं भी मानता हूँ कि यह स्थान मनहूस है। लेकिन इसका कारण हम लोगों की मानसिक कल्पना है। आपका क्या ख्याल है, साइमण्ड !

साइमण्ड क्षण भर चुप रहा। उसने धीरे से कहा—मैं कोई पर्याप्त कारण नहीं बता सकता, पर यह जगह मुझे भी अच्छी नहीं लगती।

इसी समय वायलेट मेरे पास आकर कहने लगी—मुझे इस जगह से घृणा हो रही है। हम लोगों को यहाँ से बाहर चलना चाहिये।

हम लोग वहाँ से बाहर निकले। केवल डायना पीछे रह गई। मैंने घूमकर देखा वह मूर्ति के सामने खड़ी उसे ध्यानपूर्वक देख रही थी।

वह दिन बड़ा ही सुन्दर और मनोरम था। डायना की सलाह सबको पसन्द आई। दिन भर सभी लोग चुपचाप अपनी तैयारी में लगे रहे। शाम को जब सब लोग अपनी अपनी पोशाक पहन कर बाहर निकले तो खासी खिल-खिलाहट रही। रोगर और उनकी पत्नी ने नियोलिथिक ढङ्ग की पोशाक पहनी थी। रिचार्ड ने फोनेशियन जहाजी का वेष धारण किया था। इलियट सैनिकों का अफसर बना था। डाक्टर सैमाण्ड पिच थे और श्रीमती मेनरिंग अस्पताल की नर्स बनी थीं। उनकी पुत्री वायलेट सरकासियन गुलाम की लड़की थी। मैं संन्यासी के

रूप में था। डायना सबसे पीछे आई। उसका पहनावा देखकर सब लोगों को असन्तोष हुआ। उसकी पोशाक एक दम बेढङ्गी थी। मैं अज्ञात रूप धारण करके आई हूँ, उसने कहा! सबसे पहले हम लोगों को भोजन कर लेना चाहिये।

भोजन के उपरान्त हम लोग बाहर निकले। बड़ी सुहावनी रात थी। चाँद निकल रहा था।

हम लोग इधर-उधर घूमने और गप्प लड़ाने लगे। समय बीतने लगा। एक घंटे बाद हम लोगों को मालूम हुआ कि डायना साथ नहीं है।

रिचार्ड—"वह सोने तो नहीं चली गई।"

वायलेट ने अपना सिर हिलाया। बोली—प्रायः पन्द्रह मिनिट होते हैं मैंने उन्हें उस तरफ जाते देखा था।

उसने बाग की तरफ इशारा किया। बाग इस चाँदनी रात में भी मलिन दिखाई दे रहा था।

रिचार्ड—इस समय वहाँ वह क्यों गई है। क्या खुराफात वह करना चाहती है। चलो, चलकर देखा तो जाय।

सबके मन में उत्सुकता पैदा हो गई कि डायना क्या उत्पात करना चाहती है। सब लोग इकट्ठा होकर आगे बढ़े, पर न जाने क्यों उस अन्धकार-पूर्ण बाग में जाने से मेरा मन हिचकता था। कोई अज्ञात बलवान् हाथ मुझे पकड़ कर पीछे खींच रहा था और आगे बढ़ने से रोक रहा था। उस स्थान की मनहूसियत को इस समय मैं और भी अधिक अनुभव करने लगा। मेरा ख्याल है कि मेरे ही समान औरों के दिल में भी यही भावनायें उठ रही थीं यद्यपि किसी को मुँह खोलने का साहस नहीं था। बाग इतना घना था कि चन्द्रमा की किरणें उसमें घुस नहीं सकती थीं। हम लोग गुनगुनाते और बातें करते आगे बढ़

रहे थे। सबके मन में दहशत थी इसलिये सभी एक दूसरे से सटकर चल रहे थे।

अब हम लोग बाग के बीच वाले मैदान में पहुँच गये। वहाँ जो कुछ हम लोगों ने देखा उससे सभी काँप उठे। मन्दिर के द्वार पर एक पतली मूर्ति खड़ी थी। उसके शरीर पर विचित्र पोशाक थी और उसके केशपाश में से दो सींगें बाहर निकली हुईं थीं।

रिचार्ड के मुँह से एक चीख निकली। वह पसीने-पसीनें हो गया।

लेकिन वायलेट की आँखों से असली बात छिपी न रही। उसने कहा—यह तो डायना है। लेकिन उसने अपनी सूरत कैसी बना रखी है। पहचानी भी नहीं जाती।

इतने में उस मूरत ने अपना हाथ उठाया। दो कदम आग बढ़ कर उसने सुरीली आवाज में कहा—मैं अस्टार्टे की देवी हूँ। मेरे निकट सम्हल कर आना, क्योंकि मेरे हाथ में मृत्यु है।

श्रीमती मैनरिंग—ऐसा न करो डायना! हम लोग डर से काँप रहे हैं।"

रिचार्ड उसकी तरफ लपका। बोला—शाबाश डायना! तुमने असाधारण रूप बनाया है।

चन्द्रमा की रोशनी यहाँ स्पष्ट पड़ रही थी, और मैंनें प्रकाश में देखा कि डायना की आकृति एक दम बदली हुई थी। जैसा वायलेट ने कहा था, उसकी आँखों में क्रूरता भरी थी, चेहरा एकदम विक्रित हो गया था। उसकी मुस्कुराहट में व्यंग था।

उसने कड़क कर कहा—सावधान! जो देवी को स्पर्श करने का साहस करेगा उसकी मृत्यु निश्चित है

रिचार्ड—तुमने असाधारण काम किया है। पर अब इस खेल को बन्द करो। यह मुझे अच्छा नहीं लग रहा है।

रिचार्ड उसकी तरफ बढ़ रहा था। उसने अपना हाथ रिचार्ड की तरफ फैला कर कहा—सावधान ! यदि एक कदम भी आगे बढ़े तो अस्टार्टे का जादू तुम पर चला दूँगा।

इस पर रिचार्ड खिलखिला कर हँस पड़ा और तेजी से आगे बढ़ा। लेकिन उसी समय एक विचित्र घटना हुई। वह सहम कर रुक गया और दूसरे ही क्षण लड़खड़ा कर गिर पड़ा।

वह फिर नहीं उठा। जहाँ गिरा था वहीं जमीन पर पड़ा रहा। अचानक डायना खिलखिला कर हँस पड़ी। उसकी वह वीभत्स हँसी चारों ओर गूँज उठी।

इलियट झपटकर आगे आया और रुखाई से बोला—"इस तरह का मजाक मुझे पसन्द नहीं।" वह रिचार्ड को उठाने लगा।

लेकिन रिचार्ड जहाँ का तहाँ पड़ा रहा। इलियट उसके शरीर पर झुक गया और उसके चेहरे को गौर से देखने लगा। वह अचानक उठकर खड़ा हो गया और जरा पीछे हटकर चिल्ला उठा—डाक्टर ! देखो, मेरी समझ में उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।"

सायमण्ड आगे बढ़ा। इलियट हम लोगों के साथ पीछे-पीछे चला। वह अपने हाथों को रह-रह कर देखता था, लेकिन मैं उसका मतलब नहीं समझ सका।

इसी समय डायना के मुँह से चीख निकली—"बाप रे बाप ! मैंने उसे मार डाला ! मैंने कभी नहीं समझा था कि इसका यह फल होगा।"

इतना कहते-कहते वह बेहोश होकर वहीं घास पर गिर पड़ी।

श्रीमती रोगर चीख उठीं—"इस भयानक स्थान से हम लोगों को फौरन हट जाना चाहिये। बड़ी खूँखार जगह है। किसी को भी कुछ हो सकता है।

इलियट मेरी गर्दन से लिपट कर बोला—"क्या यह भी कभी संभव है ? भला, इस तरह भी कोई मारा जा सकता है ! यह प्रकृति के सर्वथा विरुद्ध है।"

मैंने उसे शान्त करने का यत्न किया। कहा—"मैं समझता हूँ कि तुम्हारे भाई का हृदय कमजोर था। उत्तेजना की अधिकता के कारण उसकी गति बन्द हो गई।"

उसने मुझे रोककर कहा—"तुम जानते नहीं। यह देखो।"

इतना कहकर उसने मुझे अपना हाथ दिखाया। उस पर खून के दाग थे। बोला—"वह उत्तेजना से नहीं मरा है। उसे छूरा लगा है। छुरा दिल में धँस गया है, पर यहाँ कोई हथियार नहीं है।"

मुझे विश्वास नहीं हुआ। मैं आँखें फाड़-फाड़कर उसकी ओर देखने लगा। इसी समय सायमण्ड शव के पास से उठकर हम लोगों की तरफ आया। वह थरथर काँप रहा था। उसका चेहरा विवर्ण हो गया। बोला—"क्या हम लोग सभी पागल हो गये हैं। यह कैसी जगह है जहाँ इस तरह की घटनायें हो सकती हैं !"

मैंने पूछा—"तब इलियट का कथन सच है ?"

उसने अपना सिर हिला दिया। बोला—इतना बड़ा घाव लम्बी-पतली कटार से ही हो सकता है पर वहाँ कोई कटार नहीं मिली।"

हम लोग एक दूसरे को देखने लगे।

इलियट—"वह वहीं कहीं गिरी होगी। हम लोगों को घास पर खोजना चाहिये।"

हम व्यर्थ घास में चारों ओर खोजते रहे। इसी समय वायलेट ने कहा—"डायना के हाथ में कोई चीज़ थी। वह भी एक तरह का कटार था। मैंने उसे उसके हाथ में देखा था। जब वह उन्हें धमका रही थी तब कटार चमक उठी थी।

इलियट ने अपना सिर हिलाकर कहा—"वह तो उससे कम से कम तीन गज दूर ही थे।"

श्रीमती मेमरिंग डायना की ओर झुकी हुई थीं। बोलीं—"इस समय तो इसके हाथ में कुछ नहीं है। जमीन पर भी कुछ दिखाई नहीं देता वायलेट तुम्हें अच्छी तरह याद है? मैंने तो कुछ नहीं देखा था।"

डाक्टर सायमण्ड ने कहा—इसे उठाकर मकान में ले चलना चाहिये।

हम लोग पहले डायना को उठाकर ले आये। उसके बाद रिचार्ड की लाश।

इतना कहकर डाक्टर पेण्डर ने चारों ओर नजर दौड़ाई और बोले—आजकल तो जासूसी की भरमार है। इसलिये बच्चा बच्चा यह बात जानता है कि लाश को उसी हालत में वहीं पर छोड़ देना चाहिये। लेकिन उस समय ये सब बातें कोई नहीं जानता था। हम लोग उसकी लाश उठा लाये और पुलिस थाने में खबर भेज दी। थाना वहाँ से १२ मील था।

इतना हो चुकने पर इलियट ने मेरे पास आकर कहा—"मैं बाग में जा रहा हूँ। कटार वहीं कहीं होगी।"

मैंने अन्यमनस्क होकर कहा—यदि कटार लगी हो तब न?

उसने मेरा हाथ पकड़ कर झकझोर दिया और कहा—

तुम्हारे मन में वही वहम बैठा हुआ है। तुम्हारा ख्याल है कि उसकी मृत्यु अदृश्य कारण से हुई है। मैं कटार खोजने बाग में जा रहा हूँ।

मुझे उसका यह साहस जरा भी पसन्द नहीं था। उसे रोकने की मैंने भरपूर चेष्टा की लेकिन उसने मेरी एक न सुनी। बाग के नाम से ही मैं काँप उठता था। मेरे मन में दूसरे अमंगल की आशंका उठने लगी। लेकिन इलियट हठो था। मुझे पक्का विश्वास है कि उसका कलेजा दहल गया था फिर भी वह बाज नहीं आया। हथियार से लैस होकर वह इस रहस्य के तह तक जाने के लिये तैयार हो गया।

बड़ी भयावनी रात थी। हम लोग बैठे जागते रहे। किसी की आँख में नींद नहीं आई। पुलिस को सहसा विश्वास नहीं हुआ। वे डायना से जिरह करना चाहते थे। लेकिन डाक्टर सायमण्ड ने उसका तीव्र प्रतिवाद किया। बड़े यत्न के बाद वह होश में आई थी। उसके बाद उसने उसे नींद की दवा देकर सुला दिया था। वह रात भर उसे किसी भी तरह की बाधा देना नहीं चाहता था।

रात भर किसी को भी इलियट की फिक्र नहीं थी। प्रातः काल सायमण्ड ने उसके बारे में पूछा। मैंने उसे सारी बात बता दी। उसका चेहरा और भी गम्भीर हो गया। उसने कहा—इलियट को यह नहीं करना चाहिये था। यह मूर्खता की पराकाष्ठा हुई।

मैं–"उस पर कोई विपत्ति आने की सम्भावना तो नहीं है।"

सायमण्ड—मुझे ऐसी आशा तो नहीं है तो भी हम लोगों को चलकर देखना चाहिये।

उसका प्रस्ताव उचित ही था। तो भी मुझे वहाँ जाने के लिये अपना सारा साहस बटोरना पड़ा। हम दोनों चल पड़े

और एक बार पुनः उस अभागे बाग में घुसे। हम लोगों ने इलियट का नाम लेकर कई बार पुकारा लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। तब हम लोग बाग के बीचवाले मैदान में पहुँचे जो प्रातः काल के सुहावने समय में भी साँय साँय कर रहाथा। सायमण्ड ने दोनों हाथों से मेरी भुजा कसकर पकड़ ली और मेरे मुँह से एक चीख निकल पड़ी। कल की चाँदनी रात में यहीं हम लोगों का एक साथी मुँह के बल गिरा और समाप्त हो गया था। आज प्रातः काल उसी जगह पर वही दृश्य देखने को मिला। इलियट उसी जगह उसी दशा में पड़ा था।

सायमण्ड ने चिल्लाकर कहा—यह भी उसी गति को प्राप्त हुआ। हम दोनों घास पर दौड़ पड़े। इलियट बेसुध जमीन पर पड़ा था लेकिन उसकी साँस चल रही थी। जिस कटार से वह आहत हुआ था वह उसी तरह जख्म में पड़ा था।

सायमण्ड ने कहा—खैरियत हुई कि कटार कलेजे में न लग कर कन्धे में लगी। मेरी अक्ल काम नहीं कर रही है। भाग्य-वश वह मरा नहीं है। इसलिये सारा रहस्य इससे मालूम हो जायगा।

लेकिन इलियट हम लोगों को कुछ भी नहीं बतला सका। जो कुछ उसने कहा एकदम अस्पष्ट था। उसने इधर उधर तमाम तलाशा, पर कटार का कहीं पता न चला। अन्त में निराश होकर मन्दिर के सामने खड़ा हो गया। उस समय उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि पेड़ों की आड़ से कोई उसका पीछा कर रहा है। उसने उसे अपना भ्रम समझा और उसे दूर करना चाहा, पर उसका प्रभाव उसके मस्तिष्क से हट नहीं सका। इसी समय बहुत ही ठंढी हवा बही। हवा पेड़ों की तरफ से नहीं आ रही थी, बल्कि मन्दिर के भीतर से। वह घूम कर भीतर की ओर देखने लगा।

उसने देखा कि प्रतिमा हिली और लंबी होने लगी। उसी समय कोई चीज़ सनसनाती उसकी तरफ आई और कनपटी के पास उससे उसे चोट लगी। वह बेहोश होकर गिर पड़ा।

यह कटार ठीक उसके समान थी जो खोदाई में पहाड़ी पर मिली थी और जिसे रिचार्ड उठा ले आया था। पर यह किसी को मालूम नहीं था कि उस कटार को उसने अपने घर में रखा था या इस मन्दिर में।

पुलिस का अनुमान था, जैसे इस तरह के मामलों में होता है—कि डायना ने ही उस पर कटार से प्रहार किया था। लेकिन हम सबका एक ही बयान था कि वह उससे कम से कम तीन गज की दूरी पर थी। पुलिस को कोई गवाह नहीं मिल सका, इस लिये वह डायना पर मोकदमा नहीं चला सकी। आज तक उसका पता न लग सका।

इतना सुनकर सब लोग चुप हो गये।

अन्त में जायस ने पूछा—आपकी कहानी तो समाप्त हो गई अब कुछ कहना बाकी नहीं रह गया। बड़ा ही रोमांचकारी वर्णन है। पर क्या आप उसका कुछ कारण भी बता सकते हैं ? पेण्डर—कुछ कह तो जरूर सकता हूँ। बहुत-सी बातें मुझे मालूम हो गईं। पर दो एक बातों का खुलासा आज तक नहीं हो सका।

जायस—संसार में विचित्र विचित्र घटनायें हुआ करती हैं। उन सबका कोई न कोई खुलासा हो सकता है। मेरी समझ में तो वह हिपनाटिक का प्रभाव था। वह रमणी सचमुच अस्टार्टे की देवी बन गई और उसीने उस पर कटार चलाई। वायलेट ने उसके हाथ में कटार देखा भी था।

रैमण्ड—चाँदनी रात की रोशनी बहुत तेज तो नहीं होती। इसके हाथ में भाला रहा होगा। उसीसे उसने उसके कलेजे को

चीर दिया होगा। और सबको मिसमराइज कर दिया होगा जिससे भाला किसी को दिखलाई न दिया होगा। तुम लोगों के दिल में पहले से ही वहम घुसा हुआ था। इसलिये तुम लोगों ने महान् घटना से उसकी मृत्यु माना।

सर हेनरी—तमाशों में मैंने छूरों तथा अन्य हथियारों से बहुत से अचरज के काम होते देखे हैं। बाग में कोई छिपा रहा होगा। वहीं से उसने निशाना साधकर कटार चलाई हो। इस तरह की बातों की संभावना कम रहती है, पर असंभव नहीं है। एक बात ध्यान देने की है कि इलियट को यह भ्रम हुआ था कि पेड़ों के पीछे छिपकर कोई इसका पीछा कर रहा है। डायना के हाथ में कटार का होना या न होना कोई महत्त्व नहीं रखता। एक ही बात को यदि पाँच आदमियों से पूछा जाय तो किसी का वर्णन एक दूसरे से नहीं मिलेगा।

मि॰ फेडरिक ने खाँसते हुए कहा—लेकिन एक बात पर किसी का ध्यान नहीं जा रहा है। आखिर वह हथियार कहाँ गया। यदि डायना ने उसे मारा होता तो हथियार उसके हाथ में रहता। वह बीच मैदान में खड़ी थी। इसलिये हथियार छिपाने का उसे मौका नहीं था। यदि किसी ने छिपकर हथियार चलाया होता तो वह लाश के साथ रहता। इसलिये ये सब ख्याली पोलाव हैं। इन्हें स्वीकर नहीं किया जा सकता। हम लोगों को घटना की जाँच करनी चाहिये। पहली बात तो यह है कि जब वह लड़खड़ा कर गिरा उस समय उसके निकट कोई नहीं था। इसलिये उसने अपने ही हाथ से अपने ऊपर कटार चलाई अर्थात् उसने आत्महत्या की।

रैमण्ड—वह आत्म-हत्या क्यों करेगा।

फ्रेडरिक—यह भी कल्पना की बात है और इस समय में

कल्पना के क्षेत्र में नहीं जाना चाहता। किसी अज्ञात शक्ति द्वारा मृत्यु होने की बात पर मुझे विश्वास नहीं। इसलिये यही सम्भावित कारण मृत्यु का हो सकता है। उसने कटार अपने कलेजे में घुसेड़ दी। जब वह गिरने लगा तो हाथ के झटके से कटार कहीं दूर पेड़ों की आड़ में फेंका गई।

मिस मार्पुल-मेरा दिल इन बातों पर पूरी तरह नहीं जमता। इस तरह की रहस्यपूर्ण घटनाओं को होते देखकर दिमाग चकरा जाता है। पारसाल श्रीमती शार्वली के बाग में भोज था। जो आदमी गोल्फ का कार्क ठीक कर रहा था वह नम्बर एक पर आकर अचानक बेहोश हो गया और पाँच मिनट तक उसे होश नहीं हो सका।

रैमण्ड ने कहा—आपका कहना सही है, पर उसे जख्मी तो नहीं किया गया था।

मिस मार्पुल—नहीं, लेकिन तुमने मेरी पूरी बात तो सुनी नहीं। इसमें तो कोई शक नहीं की रिचार्ड की हत्या केवल एक ही प्रकार से हो सकती था। लेकिन यदि मुझे उनके लड़खड़ा कर गिर जाने का डर मालूम हो जाता। सम्भव है वह पेंडकी गड़ से ठोकर खाकर गिर गये हों। रात चाँदनी थी और वे उस लड़की की तरफ देख रहे थे। इसलिये संभव है कि पेड़ की गड़ की ओर उनका ध्यान न रहा होगा।

पेण्डर—अभी आपने कहा है कि उनकी हत्या केवल एक ही तरह से हो सकती थी? किस तरह?

मिस मार्पुल—उसकी चर्चा करना मुझे अच्छा नहीं लगता। इलियट को बायें कन्धे पर चोट लगी थी। इससे यह मालूम होता है कि वह अपने दाहिने हाथ से ही हथियार चलाता था। जैक वाइन्स के लिये मुझे सदा वेदना रही। आपस में घनघोर

युद्ध करके उसने अपने पैर में आप गोली मार ली थी। बाद मैं अस्पताल में उसे देखने गई तो उसने यह बात खुद कबूल की और वह उसके लिये शर्मिन्दा था। इलियट ने यह जघन्य पाप कर के कोई लाभ नहीं उठाया होगा।

रैमंड—तब आपका ख्याल है कि इलियट ने यह काम किया ?

मिस मार्पुल—दूसरा कोई यह काम नहीं कर सकता था। मिस्टर कोथरिक के अनुसार अन्य बातों को किनारे रखकर केवल घटनावली पर हम लोग विचार करें। सबसे पहले इलियट उनके पास गया और उन्हें हिलाने डुलाने लगा। अन्य लोगों की तरफ उसकी पीठ थी। वह सैनिक अफसर बना था। इसलिये उसके पास हथियार का होना स्वाभाविक था। बचपन में इसी तरह एक अफसर के साथ मुझे नाचने का अवसर पड़ा था। उसके कमर में पाँच तरह के छुरे और कटार लटक रहे थे।

अब सब लोग डाक्टर पेण्डर की तरफ उत्सुकता से देखने लगे।

उन्होंने कहा:-- हत्या का सारा वृत्तांत मुझे पाँच साल बाद ही मालूम हो गया था। इलियट ने मुझे एक खत में सारा वृत्तांत लिखकर भेज दिया था। उसने लिखा था:—मुझे भय है कि आप मुझ पर हत्या करने का संदेह कर रहे हैं। मैंने हत्या अवश्य की। लेकिन मैंने पहले से उसकी हत्या की तैयारी नहीं की थी। उसी समय अचानक मेरे मन में यह बात उठी। मैं भी डायना को प्यार करता था। लेकिन मेरी आमदनी इतनी नहीं थी कि वह किसी भी तरह मेरा ख्याल करती। मैंने देखा कि यदि रिचार्ड इस दुनियाँ से उठ जाय तो उसकी सारी सम्पत्ति का मैं ही मालिक होऊँगा। तभी मेरी मुराद पूरी हो सकती है। ज्योंही मैं रिचार्ड

को देखने के लिये झुका मेरी कमर में कटार खनक उठी। मैं सोच भी न पाया था कि मेरा हाथ उस पर चला गया और कटार उसके कलेजे में भोंक कर मैंने फिर उसी तरह कमर में उसे लटका लिया। लोगों के सन्देह को दूर रखने के लिये मैंने उसी से अपने को भी जख्मी कर लिया। मैं दक्षिण ध्रुव की यात्रा करने जा रहा हूँ। शायद मैं न लौटूँ। इसलिये सारा वृत्तान्त सच सच लिखकर आपको सूचित कर देता हूँ।

इलियट उस यात्रा से वापस नहीं आया और मिस मार्पुल के शब्दों में इस जघन्य कर्म से उसे कोई लाभ नहीं हुआ।

अन्त में उसने लिखा था—गत पाँच साल से मैं नर्क की यन्त्रणा भोग रहा हूँ। शायद अपने पाप को इस तरह प्रगट करके मैं शान्ति से मर सकूँ।

हेनरी—और वह शान्ति से मरा। अपनी कहानी में आपने उस आदमी का नाम बदल दिया है। लेकिन मैं उसे जानता हूँ।

पेण्डर—रिचार्ड के गिरने का जो कारण मिस मार्पुल ने बतलाया है वह सम्भव भी है। लेकिन इससे मुझे सन्तोष नहीं होता है। इतना तो मैं निश्चय पूर्वक कह सकता हूँ कि उस बाग का वातावरण शुद्ध नहीं था नहीं तो इलियट के मन में पाप की भावना अचानक उदय न होती। आज भी जब मुझे अस्टार्ट के उस मन्दिर की याद आती है तो मेरा हृदय काँप उठता है और रोंगटे खड़े हो जाते हैं।